

“सातारा जिल्ह्यायातील नगरपरिषदेच्या वित्तीय व्यवहाराचे
अर्थशास्त्र”
(२००१-०२ ते २०१०-११)

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
तात्त्विक व सामाजिक शास्त्रे विद्याशाखांतर्गत
अर्थशास्त्र विषयात विद्यावाचस्पती या पदवीसाठी सादर केलेला प्रबंध

अभ्यासक
श्री. प्रमोद रघुनाथराव घाटगे
एम.ए. (अर्थशास्त्र)

मार्गदर्शक
डॉ. अनिलकुमार कृष्णराव वावरे
एम.ए.पीएच.डी., सेट., जी.डी.सी.अॅण्ड.ए.
सहाय्यक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग,
छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा

डिसेंबर २०१३

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येते की, श्री. प्रमोद रघुनाथराव घाटगे यांनी "सातारा जिल्ह्यातील नगरपरिषदेच्या वित्तीय व्यवहाराचे अर्थशास्त्र" या विषयावर केलेले संशोधन कार्यमूळ आणि अस्सल आहे. हा प्रबंध माझ्या मार्गदर्शनाखाली पूर्ण केला असून सदर प्रबंध अन्य कोणत्याही विद्यापीठात पदवी किंवा पदवीकेसाठी सादर केलेला नाही. सदर प्रबंध पीएच.डी.पदवीसाठी सादर करण्यास माझी अनुमती आहे.

स्थळ :

दिनांक :

डॉ. अनिलकुमार कृष्णराव वावरे
एम.ए.पीएच.डी.,सेट.,जी.डी.सी.ॲण्ड.ए.
सहाय्यक प्राध्यापक,अर्थशास्त्र विभाग,
छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा

प्रमाणपत्र

मी श्री. प्रमोद रघुनाथराव घाटगे यांनी "सातारा जिल्ह्यातील नगरपरिषदेच्या वित्तीय व्यवहाराचे अर्थशास्त्र" या विषयावरील प्रबंध मी स्वतः लिहलेला असून, तो टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे या विद्यापीठात अर्थशास्त्र या विषयात पीएच.डी. पदवीसाठी सादर करित आहे. हा प्रबंध अन्य कोणत्याही विद्यापीठात पदवी किंवा पदवीकेसाठी सादर केलेला नाही.

स्थळ :

दिनांक :

श्री. प्रमोद रघुनाथराव घाटगे

ऋणनिर्देश

मी पीएच.डी. पदवीसाठी निवडलेला प्रबंधाचा विषय “सातारा जिल्ह्यातील नगरपरिषदेच्या वित्तीय व्यवहाराचे अर्थशास्त्र” हा असून सादर प्रबंध टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ सादर करताना हा माझ्या आयुष्यातील सर्वात मोठा आनंदाचा क्षण आहे.

हा आनंदाचा क्षण माझ्या आयुष्यात निर्माण करणारे आदरणीय गुरुवर्य डॉ. अनिल वावरेसर यांचे ऋण कधीही फेडता येणार नाही. त्यांनी पीएच.डी. पदवीसाठी मी सादर केलेला प्रबंध पूर्ण करण्यासाठी दिलेली प्रेरणा, अमूल्य असावेळ, निरपेक्ष वृत्तीने आणि परखडपणे केलेले बहुमुल्य असे मार्गदर्शन यामुळेच मी हे संशोधन कार्य पुर्ण करू शकलो याची मला जाणीव आहे. मी त्यांचा ऋणी आहे.

संशोधन कार्य हे दृढ निश्चयाशिवाय पूर्ण होत नाही. याची जाणीव करून देणारे, आपल्या कुशाग्र व्यक्तिमत्त्वातून कार्यशिलतेचा मंत्र देणारे माझे आधारस्थान आमच्या जयवंत प्रतिष्ठान हुमगांव या संस्थेचे अध्यक्ष नामदार श्री. शशिकांत शिंदेसो, संस्थेच्या सचिव सौ. वैशाली शिंदे, विश्वस्त श्री. ऋषिकांत शिंदे, श्री. अशोकराव नवले, श्री. राहुल जगताप यांच्याबद्दल मी कृतज्ञता व्यक्त करणे हे माझे कर्तव्य मानतो. या शिवाय आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. एम. बी. वाघमोडे, प्रा. प्रमोद चव्हाण, प्रा.संग्राम शिंदे, अर्थशास्त्र विभागाचे सहकारी प्रा. संजय धोंडे, प्रा. सुजित कसबे यांचे सहकार्य लाभले त्यांचे ऋण व्यक्त करतो.

कोणत्याही उद्दिष्टाच्या पूर्ततेसाठी अनेक व्यक्तींचे सहकार्य आवश्यक असते. माझ्या संशोधन कार्यासाठी माझ्या महाविद्यालयातील ग्रंथपाल श्री. सुधीर नगरकर, सर्व प्राध्यापक,

शिक्षकेत्तर कर्मचारी यांचे सहकार्य मिळाले त्यांचा मी ऋणी आहे. तसेच सातारा जिल्हयातील नगरपरिषदेचे नगराध्यक्ष, उपनगराध्यक्ष, सदस्य, नगरपरिषदेचे मुख्य अधिकारी, कर्मचारी वर्ग यांचेही ऋण व्यक्त करतो.

कुटुंबातील सदिच्छा ही यशाच्या शिखरावर मार्ग दाखविणारी असते असा मार्ग दाखविणारे माझे आदरणीय कै. वडील आदरणीय आई, मोठे बंधू दत्तात्रय, मेव्हणे श्री. शिवाजीराव देशमुख, पत्नी सौ. निलम, मुलगा प्रणव, मुलगी मुग्धा यांचा मी अत्यंत ऋणी आहे.

या प्रबंधतील मुद्रित शोधन श्री. विठ्ठल कोकरे, श्री. शैलेश जुनेघरे यांनी करून आपला बहुमूल्य वेळ दिला त्याबद्दल त्यांचेही मनःपूर्वक आभार मानतो. संशोधन कामी ज्या ज्ञात व अज्ञात व्यक्तींनी सहकार्य केले अशा सर्वांचे मनःपूर्वक आभार.

अनुक्रमणिका

| प्रकरण | शीर्षक | पान क्रमांक |
|--------|--|-------------|
| | मार्गदर्शकाचे प्रमाणपत्र | II |
| | अभ्यासकाचे प्रतिज्ञापत्र | III |
| | ऋणनिर्देश | IV |
| | अनुक्रमणिका | VI |
| | तक्तासूची | IX |
| | आलेख सूची | XI |
| १ | प्रस्तावना व संशोधन पध्दती | १ ते १२ |
| | १.१ प्रस्तावना | |
| | १.२ विषय निवडीचे कारण | |
| | १.३ अभ्यासाचे महत्त्व | |
| | १.४ अभ्यासाची उद्दिष्टे | |
| | १.५ अभ्यासाची गृहितके | |
| | १.६ संशोधन पध्दती | |
| | १.७ प्रकरण रचना | |
| | १.८ संदर्भ | |
| २ | संशोधन साहित्याचे पुनर्विलोकन | १३ ते २९ |
| | २.१ प्रस्तावना | |
| | २.२ संशोधन साहित्याचे पुनर्विलोकन | |
| | २.३ संदर्भ | |
| ३ | नगरपालिकांचे स्वरूप व शहरी विकास आणि सातारा जिल्ह्यांची थोडक्यात ओळख | ३० ते ५४ |
| | ३.१ प्रस्तावना | |

| | | |
|----------|--|-------------------|
| | ३.२नगरपालिकेची उत्पत्ती | |
| | ३.३नगरपालिकेची व्याख्या आणि संकल्पना | |
| | ३.४नगरपालिकेची रचना | |
| | ३.५ नागरी विकासाचे घटक | |
| | ३.६सातारा जिल्हयाची थोडक्यात ओळख | |
| | ३.७ समारोप | |
| | ३.८ संदर्भ. | |
| ४ | नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे स्वरूप आणि दिशा | ५५ ते १११ |
| | ४.१ प्रस्तावना | |
| | ४.२नगरपालिकेचे अंदाजपत्रक व उत्पन्नाची साधने | |
| | ४.३नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे विकासातील योगदान | |
| | ४.४फलटण नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ४.५सातारा नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ४.६रहिमतपूर नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ४.७महाबळेश्वर नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ४.८सारांश | |
| | ४.९संदर्भ. | |
| ५ | नगरपालिकांच्या खर्चाचे स्वरूप आणि दिशा | ११२ ते १८८ |
| | ५.१ प्रस्तावना | |
| | ५.२नगरपालिकेच्या खर्चाचे कार्यानुसार वर्गीकरण | |
| | ५.३फलटण नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ५.४सातारा नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ५.५रहिमतपूर नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप व दिशा | |
| | ५.६महाबळेश्वर नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप व दिशा | |

| | | |
|---|--|------------|
| | ५.७सारांश | |
| | ५.८संदर्भ. | |
| ६ | निष्कर्ष व शिफारशी | १८९ ते २११ |
| | ६.१ प्रस्तावना | |
| | ६.२ नगरपालिका उत्पन्नाच्या बाबतीतील निष्कर्ष | |
| | ६.३ नगरपालिका खर्चाच्या बाबतीतील निष्कर्ष | |
| | ६.४ नगरपालिका विकासाबद्दल शिफारशी | |
| | ६.५ सारांश | |
| | संदर्भ सूची | २१२ ते २२१ |

तक्ता सूची

| तक्ता क्र. | तक्त्याची नावे | पान.न |
|------------|---|-------|
| ४.१ | फलटण नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ६२ |
| ४.२ | फलटण नगरपालिका एकूण उत्पन्न | ६५ |
| ४.३ | फलटण नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ६७ |
| ४.३.१ | फलटण नगरपालिका कर उत्पन्न | ७० |
| ४.३.२ | फलटण नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ७३ |
| ४.४ | सातारा नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ७५ |
| ४.५ | सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न | ७७ |
| ४.६ | सातारा नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ७९ |
| ४.६.१ | सातारा नगरपालिका करापासून उत्पन्न | ८२ |
| ४.६.२ | सातारा नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ८६ |
| ४.७ | रहिमतपूर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ८८ |
| ४.८ | रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न | ९० |
| ४.९ | रहिमतपूर नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ९२ |
| ४.९.१ | रहिमतपूर नगरपालिका करापासून उत्पन्न | ९४ |
| ४.९.२ | रहिमतपूर नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ९६ |
| ४.१० | महाबळेश्वर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ९८ |
| ४.११ | महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण उत्पन्न | १०० |
| ४.१२ | महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | १०२ |
| ४.१२.१ | महाबळेश्वर नगरपालिका कर उत्पन्न | १०५ |
| ४.१२.२ | महाबळेश्वर नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | १०८ |
| ५.१ | फलटण नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | ११६ |
| ५.२ | फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | ११९ |
| ५.३ | फलटण नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १२३ |
| ५.४ | फलटण नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च | १२६ |
| ५.५ | फलटण नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १३० |
| ५.६ | सातारा नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १३२ |
| ५.७ | सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १३५ |
| ५.८ | सातारा नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १४० |
| ५.९ | सातारा नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च | १४३ |

| | | |
|------|---|-----|
| ५.१० | सातारा नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १४६ |
| ५.११ | रहिमतपूर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १४८ |
| ५.१२ | रहिमतपूर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १५२ |
| ५.१३ | रहिमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १५७ |
| ५.१४ | रहिमतपूर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च | १६० |
| ५.१५ | रहिमतपूर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १६४ |
| ५.१६ | महाबळेश्वर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १६७ |
| ५.१७ | महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १७० |
| ५.१८ | महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १७४ |
| ५.१९ | महाबळेश्वरनगरपालिकेचासामान्य प्रशासनवसुली खर्च | १७७ |
| ५.२० | महाबळेश्वर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १७९ |
| | | |

आलेख सूची

| आलेख क्र. | आलेखाचेनाव | पानक्र. |
|-----------|---|---------|
| ४.१ | फलटण नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ६३ |
| ४.२ | फलटण नगरपालिका एकूण उत्पन्न | ६५ |
| ४.३ | फलटण नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ६८ |
| ४.४ | फलटण नगरपालिका कर उत्पन्न | ७१ |
| ४.५ | फलटण नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ७४ |
| ४.६ | सातारा नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ७६ |
| ४.७ | सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न | ७८ |
| ४.८ | सातारा नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ८० |
| ४.९ | सातारा नगरपालिका करापासून उत्पन्न | ८४ |
| ४.१० | सातारा नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ८६ |
| ४.११ | रहिमतपूर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ८८ |
| ४.१२ | रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न | ९० |
| ४.१३ | रहिमतपूर नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | ९२ |
| ४.१४ | रहिमतपूर नगरपालिका करापासून उत्पन्न | ९५ |
| ४.१५ | रहिमतपूर नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | ९७ |
| ४.१६ | महाबळेश्वर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक | ९९ |
| ४.१७ | महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण उत्पन्न | १०१ |
| ४.१८ | महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण कर उत्पन्न | १०३ |
| ४.१९ | महाबळेश्वर नगरपालिका कर उत्पन्न | १०७ |
| ४.२० | महाबळेश्वर नगरपालिका करेत्तर उत्पन्न | १०९ |
| ५.१ | फलटण नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | ११७ |
| ५.२ | फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १२० |
| ५.३ | फलटण नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १२४ |
| ५.४ | फलटण नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च | १२७ |
| ५.५ | फलटण नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १३० |
| ५.६ | सातारा नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १३३ |
| ५.७ | सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १३६ |
| ५.८ | सातारा नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १४१ |
| ५.९ | सातारा नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च | १४४ |
| ५.१० | सातारा नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १४६ |
| ५.११ | रहिमतपूर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १४९ |
| ५.१२ | रहिमतपूर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १५३ |

| | | |
|------|---|-----|
| ५.१३ | रहमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १५८ |
| ५.१४ | रहमतपूर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च | १६१ |
| ५.१५ | रहमतपूर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १६५ |
| ५.१६ | महाबळेश्वर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च | १६८ |
| ५.१७ | महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक | १७१ |
| ५.१८ | महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च | १७४ |
| ५.१९ | महाबळेश्वरनगरपालिकेचासामान्य प्रशासनवसुली खर्च | १७७ |
| ५.२० | महाबळेश्वर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च | १८० |

प्रकरण पहिले

प्रस्तावना व संशोधन पद्धती

- १.१ प्रस्तावना
- १.२ विषय निवडीचे कारण
- १.३ अभ्यासाचे महत्व
- १.४ अभ्यासाची उद्दिष्टे
- १.५ अभ्यासाची गृहितके
- १.६ संशोधन पद्धती
- १.७ प्रकरण रचना
- १.८ संदर्भ

प्रकरण पहिले

प्रस्तावना व संशोधन पद्धती

१.१ प्रस्तावना :

भारत हा लोकशाहीचे आस्तित्व असणारा जगातील एक महत्त्वपूर्ण देश आहे. ज्यामध्ये त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था कार्यरत आहे. यामध्ये केंद्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा समावेश होतो. यापैकी स्थानिक स्वराज्य संस्था म्हणजे ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिल्हा परिषद, नगरपालिका व महानगरपालिका यांची ग्रामीण विकासामध्ये महत्त्वपूर्ण भूमिका आहे. त्याचबरोबर शहरी भागातील लोकांचे जीवनमान उंचावण्यामध्येही नगरपालिका व महानगरपालिकांनी महत्त्वाचे कार्य पार पाडले आहे.

परंतु स्थानिक स्वराज्य संस्थांची कार्ये व त्या कार्यासाठी उपलब्ध असणारा निधी किंवा संसाधने यामध्ये असंथुलन असल्याचे दिसून येते. स्थानिक स्वराज्य संस्थांना विविध प्रकारची कार्ये तर अनेक करावी लागतात. परंतु त्यासाठी आवश्यक तेवढा निधी उपलब्ध न झाल्याने देशात सार्वजनिक आयव्ययामध्ये स्तंभात्मक असमतोल निर्माण झाल्याचे दिसून येते. त्याचबरोबर स्थानिक स्वराज्य संस्थांसमोर अनेक आर्थिक अरिष्टे असल्याचे दिसून येते. भारत किंवा जगातील इतर देश असोत या सर्वांच्या बाबतीत एक साम्य दिसून येते की या सर्वांनी स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या निधी पुरवठ्याकडे जेवढे लक्ष देणे गरजेचे होते तेवढे दिले नाही. जगातील अनेक संशोधकांच्या संशोधनातून हे दिसून आले आहे की, जगातील संघराज्यीय वित्तीय व्यवस्था असणाऱ्या देशांनी केंद्र सरकार व राज्य सरकारच्याच वित्त पुरवठ्यावर भर दिला आहे. तुलनेने स्थानिक स्वराज्य संस्था त्या लाभापासून वंचित राहिल्या आहेत. त्याचा त्यांच्या विकासावर विपरीत परिणाम झालेला दिसून येतो. ही समस्या सोडवण्यासाठी केंद्र व राज्य शासनाने स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या वित्तपुरवठ्याकडे विशेष लक्ष देणे गरजेचे आहे यात काही शंका नाही. कारण ग्रामीण भाग व शहरी भागाच्या विकासामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या कार्याला अनन्यसाधारण महत्त्व आहे.

स्थानिक स्वराज्य संस्थांची विभागणी त्यांच्या कार्यक्षेत्रानुसार होते. ज्या स्थानिक स्वराज्य संस्था ग्रामीण भागात कार्य करतात त्यांना ग्रामीण स्थानिक स्वराज्य संस्था असे

म्हणतात. यामध्ये ग्रामपंचायत, पंचायत समिती व जिल्हा परिषद यांचा समावेश होतो. तर ज्या स्थानिक स्वराज्य संस्था शहरी भागात कार्य करतात त्यांना शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्था असे म्हणतात. यामध्ये नगरपालिका व महानगरपालिका यांचा समावेश होतो. यापैकी दोन्ही प्रकारच्या स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे वित्तीय प्रश्न तितकेच महत्त्वाचे आहेत. परंतु भारतासारख्या विकसनशील देशाचा विचार करता शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे प्रश्न गंभीर आहेत. कारण १०० कोटी पेक्षा अधिक लोकसंख्या असणाऱ्या देशात नागरिकरण, औद्योगिकरण झपाट्याने वाढत आहे. त्यामुळे या शहरी भागातील लोकांना पाणीपुरवठा, वाहतूक, टाकाऊ पदार्थ विल्हेवाट व्यवस्था, आरोग्य, शिक्षण, सार्वजनिक वाचनालये, बगीचे इ. अनेक स्वरूपाच्या व्यवस्था पुरवण्याचे दृष्टीने शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या विकासावर भर देणे गरजेचे आहे.

त्याच अनुषंगाने भारत सरकारने १९९२ मध्ये भारतीय राज्यघटनेमध्ये दोन महत्त्वाच्या दुरुस्त्या केल्या. त्या म्हणजे ७३ वी व ७४ वी घटना दुरुस्ती होय. यापैकी ७३ व्या घटना दुरुस्तीत ग्रामीण स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या संदर्भातील तरतुदींचा समावेश होतो. तर ७४ व्या घटना दुरुस्तीत शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांसंदर्भातील तरतुदींचा समावेश होतो. वरील घटना दुरुस्तीनुसार घटक राज्यांनी स्थानिक स्वराज्य संस्थांकडे सोपवावयाची कार्ये व वित्तीय अधिकार याविषयी योग्य शिफारशी करण्यासाठी व वेळोवेळी त्यामध्ये बदल करण्यासाठी राज्य वित्त आयोगाची स्थापना करणे प्रत्येक घटक राज्यावर बंधनकारक करण्यात आले आहे.

प्रस्तुत संशोधन हे शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांशी संबंधित असल्यामुळे त्यादृष्टीने ७४ व्या घटना दुरुस्तीचा विचार करणे क्रमप्राप्त आहे. ज्यामध्ये नागरी शासन संस्थांची रचना, कार्ये, विभागीय समित्या, जिल्हा नियोजन व विकास समिती, महानगर प्रादेशिक क्षेत्र यासंदर्भात तरतुदी आहेत.

वरील सर्व संदर्भ लक्षात घेऊन प्रस्तुत संशोधनामध्ये नगरपरिषदांच्या वित्तीय व्यवहारांचा अभ्यास करण्याचा प्रयत्न केला आहे. त्यासाठी महाराष्ट्र राज्यातील सातारा जिल्ह्यामधील सातारा, महाबळेश्वर, रहिमतपूर व फलटण या चार नगरपालिकांचा खर्च व

उत्पन्नाचा आढावा घेऊन त्याचा सामाजिक जीवनावर होणारा परिणाम अभ्यासण्याचा प्रयत्न केला आहे.

१.२ विषय निवडीचे कारण

महाराष्ट्र राज्यातील विविध जिल्हयांपैकी सातारा जिल्हा हा एक ऐतिहासिक वारसा लाभलेला जिल्हा आहे. जिल्हयाचे प्रमुख ठिकाण म्हणून सातारा शहराला विशेष महत्त्व आहे. सातारा शहरामध्ये पंचायत समिती, जिल्हा परिषद, आणि नगरपरिषद या प्रमुख स्थानिक स्वराज्य संस्था कार्यरत आहेत. त्यापैकी सातारा नगरपरिषद ही एक ऐतिहासिक नगरपरिषद असून तिची स्थापना सन १ ऑगस्ट १८५३ रोजी झालेली आहे. या नगरपरिषदेच्या माध्यमातून सातारा शहराचा सामाजिक व आर्थिक विकास घडवून आणण्याचा प्रयत्न झालेला आहे. अलीकडील काळात सातारा शहराचा विस्तार झपाट्याने होत आहे. राष्ट्रीय महामार्ग क्र. ४ शहराजवळून जात असल्यामुळे या शहराच्या अजूबाजूस विविध उद्योगांची झपाट्याने वाढ होत आहे. त्यामुळे औद्योगिकरणाला वेग आलेला आहे. त्यामुळे सातारा शहरातील सामाजिक व आर्थिक रचनेत बदल घडून येत आहे. अशा बदलत्या स्थितीमध्ये सातारा नगरपरिषदेची भूमिका निश्चितपणे महत्वपूर्ण ठरत आहे. नगरपरिषदेच्या कार्यामध्ये विस्तार घडून येत आहे. त्यामुळे शहरी भागातील लोकसंख्येत मोठ्या प्रमाणात वाढ घडून येत असताना अपनाला दिसून येत आहे. त्या वाढत्या लोकसंख्येला मुलभूत पायाभूत सेवा व सुविधा देणे आवश्यक आहे. त्यामुळे नगरपालिकेला मोठ्या प्रमाणात खर्च करावा लागत आहे. त्यामुळे नगरपालिकांना अधिकचा खर्चाचा भार सोसावा लागत आहे. मात्र त्या प्रमाणात उत्पन्नात वाढ घडून येत नाही. त्यामुळे नगरपालिकांना मोठ्या प्रमाणात अडचणींना सामोरे जावे लागत आहे. सन २००१-०२ च्या अंदाज पत्रकानुसार सातारा नगरपरिषदेचा एकूण खर्च रूपये १४,९९,४७,३३७ इतका आसून तो २००५-०६ ला रूपये १५,५२,४६,००० ऐवढी वाढ झाली आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात रूपये २५,३६,१०,००० पर्यंत वाढत गेल्याचे आपणास दिसून येते. दिवसेंदिवस नगरपरिषदेच्या वित्तीय स्थितीचा विस्तार होत आहे. म्हणून सातारा शहराच्या आर्थिक व सामाजिक विकासातील या ऐतिहासिक नगरपरिषदेची भूमिका समजून घेण्याच्या उद्देशाने प्रस्तुत अभ्यासासाठी या नगरपरिषदेची निवड करण्यात आलेली आहे.

महाबळेश्वर हे सातारा जिल्हयातील थंड हवेचे पर्यटन स्थळ म्हणून प्रसिध्द आहे. सहयाद्रिच्या पर्वत रांगांमध्ये घनदाट अरण्यामध्ये हे शहर वसले आहे. महाबळेश्वर गिरीस्थान नगरपरिषद ही ब्रिटीशकालीन नगरपरिषद असून तिची स्थापना सन २९ मे १८६४ रोजी झाली आहे. अर्थात नगरपरिषदेला शहराच्या विकासासाठी मुलभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी खर्चही मोठया प्रमाणात करावा लागत आहे. सन २००१-०२ च्या अंदाज पत्रकानुसार महाबळेश्वर नगरपरिषदेचा एकूण खर्च रूपय ७,१८,०२,००० इतका असून तो २००५-०६ ला रूपये १८,०९,३१,००० एवढी वाढ झाली आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात रूपये १५,८७,७७,००० पर्यंत वाढत गेल्याचे आपणास दिसून येते. तसेच फलटण नगरपरिषदे ची स्थापना सन १८६८ ला झाली. अर्थात नगरपरिषदेला शहराच्या विकासासाठी मुलभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी खर्चही मोठया प्रमाणात करावा लागत आहे. सन २००१-०२ च्या अंदाज पत्रकानुसार फलटण नगरपरीषदेचा एकूण खर्च रूपये ४,२९,२७,००० इतका आसून तो २००५-०६ ला रूपये ६,०७,१६,००० ऐवढी वाढ झाली आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात रूपये ३०,५३,३७,००० पर्यंत वाढत गेल्याचे आपणास दिसून येते. आणि रहिमतपूर नगरपरिषदेला शहराच्या विकासासाठी मुलभूत सुविधा निर्माण करण्यासाठी खर्चही मोठया प्रमाणात करावा लागत आहे. सन २००१-०२ च्या अंदाज पत्रकानुसार रहिमतपूर नगरपरीषदेचा एकूण खर्च रूपये १,२५,४७,००० इतका आसून तो २००५-०६ ला रूपये ८,६,१०,००० ऐवढी वाढ झाली आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात रूपये ७,६७,१७,००० पर्यंत वाढत गेल्याचे आपणास दिसून येते. नगरपरिषदेच्या एकूण उत्पन्न आणि खर्च यांचे आकडे विचारात घेता या नगरपरिषदेचे वित्तीय व्यवहार खूप मोठे आहेत. महाराष्ट्रातील आर्थिकदृष्टया सक्षम अशी एक प्रमुख नगरपरिषदे म्हणून याकडे पाहिले जाते. म्हणूनच तिच्या वित्तीय व्यवहाराची रचना अभ्यासणे आणि शहराच्या अर्थिक व सामाजीक विकासातील या नगरपरिषदेची भूमिका काय आहे. हे समजून घेण्याच्या उद्देशाने या नगरपरिषदेची निवड प्रस्तुत अभ्यासासाठी केली आहे.

प्रस्तुत अभ्यासासाठी चार नगरपरिषदांची निवड करत असताना सातारा नगरपरिषद एक शहरी विभागातील नगरपरिषद म्हणून तसेच महाबळेश्वर गिरिस्थान नगरपरिषद डोंगरी विभागातील नगरपरिषद म्हणून निवडण्यात आलेली आहे. तसेच कोरडवाहू विभाग (दुष्काळी विभाग) म्हणून फलटण नगरपरिषद आणि ग्रामीण विभागातून रहिमतपूर नगरपरिषद या

नगरपरिषदांची निवड करण्यात आलेली आहे. आणि दिवसेंदिवस वाढत असलेल्या नगरपरिषदाच्या कर्तव्य आणि जबाबदा'—या व त्याचबरोबर मोठ्या प्रमाणात खर्च ही वाढत आसल्याचे चित्र आपणास दिसून येत आहे. मात्र उत्पन्नांची साधने मर्यादित आहेत या दोहोंचा मेळ घालण्यासाठी संशोधन होणे आवश्यक असल्याने प्रस्तुत विषयाची निवड करण्यात आली आहे.

१.३ अभ्यासाचे महत्त्व

सार्वजनिक अर्थशास्त्राच्या संशोधनामध्ये सार्वजनिक वित्त व त्याचे व्यवस्थापन हा एक दुर्लक्षित पैलू आहे. त्यामुळे सार्वजनिक आर्थशास्त्राच्या संशोधन शाखेमध्ये स्थानिक वित्त या विषयावर संशोधन करण्यासाठी या अभ्यासाचे महत्त्वाचे योगदान आहे. या अभ्यासामळे नगरपरिषदांची शहरी विकासातील भूमिका स्पष्ट होते. या अभ्यासामळे नगरपरिषदां मार्फत पुरवल्या जाणा—या मुलभूत पायाभूत सेवा सुविधांची गुणवत्ता अभ्यासण्यास मदत होते. अभ्यासामळे नगरपरिषदांना शहरी विकासात येणा—या अडचणी ओळखण्यासाठी मदत होते. आणि नगरपालिकांच्या वाढत्या कार्य आणि जबाबदा—यामुळे आर्थिक खर्चाचे सुयोग्य व्यवस्थापन करता येते. हा अभ्यास शहरी विकासाचे धोरण अवलंबण्यासाठी उपयुक्त ठरतो.

१.४ अभ्यासाचे उद्देश :

प्रस्तुत संशोधन हे पुढील उद्देश ठेऊन करण्यात आले आहे.

१. नगरपालिकांच्या उत्पन्न व खर्चाचा आढावा घेणे.
२. नगरपालिकांच्या उत्पन्नाची साधने वाढविण्यासाठी उपाय योजना सुचविणे.
३. नगरपालिकांच्या खर्चाचे योग्य व्यवस्थापन करण्यासाठी मार्गदर्शन करणे.
४. सातारा, फलटण, महाबळेश्वर व रहिमतपूर या चार नगरपरिषदांची त्या भागाच्या विकासातील भूमिका अभ्यासणे.

१.५ अभ्यासाची गृहीते :

प्रस्तुत संशोधन हे पुढील गृहीतांवर आधारित आहे.

१. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे कमी असून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने आधिक आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळीवरील (केद्रं सरकार आणि राज्य सरकार)संस्थावर अवलंबून राहावे लागते.
२. सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या अपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले आहे.
३. नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या अर्थिकदृष्ट्या सक्षम असणे गरजेचे आहे.
४. स्थानिक स्वराज्य संस्थच्या सर्व आर्थिक उलाढाली ह्या नागरी लोकसंख्येच्या राहणीमाणावरती प्रभाव पाडत असतात.

१.६ संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्रामुख्याने सातारा जिल्हयातील चार नगरपालिका ह्या हेतू नमुना पद्धतीने निवडलेल्या आहेत. संशोधनासाठी निवड केलेल्या चार नगरपालिका ह्या भौगोलिक दृष्टीकोनातून निवडलेल्या आहे. निवडलेल्या नगरपालिकांचे भौगोलिक वैशिष्ट्ये खालील कोष्टकावरून स्पष्ट करता येईल.सातारा जिल्हयातील एकूण अकरा तालुके आहेत. पण सर्वच तालुक्याच्या ठिकाणी नगरपालिका आस्तिवात आहेतच असे नाही. नगरपालिकेच्या संदर्भात प्रामुख्याने चार विभाग पडतात विभागानुसार नगरपालिकांचे वर्गीकरण आणि अभ्यासासाठी निवडलेल्या नगरपालिका पुढील तक्त्यात दर्शविल्या आहेत.

अ) संशोधन आराखडा

तक्ता क्र १.१

सातारा जिल्हयातील अभ्यासाठी निवडलेल्या नगरपरिषदा

| अ.क्र | विभाग | नगरपरिषदा | निवडलेल्या नगरपरिषदा |
|-------|----------------|-----------------------|----------------------|
| १ | शहरी विभाग | सातारा कराड वाई | सातारा |
| २ | डोंगरी विभाग | महाबळेश्वर पाचगणी | महाबळेश्वर |
| ३ | दुष्काळी विभाग | म्हसवड फलटण | फलटण |
| ४ | ग्रामीण विभाग | रहिमतपूर | रहिमतपूर |

वरील तक्त्यावरून असे स्पष्ट होते की,सातारा जिल्हयाचे भौगोलिक दृष्ट्या चार प्रमुख विभागामध्ये वर्गीकरण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये शहरी विभागातून सातारा ही नगरपालिका अभ्यासासाठी निवडलेली असून अनुक्रमे डोंगरी, दुष्काळी आणि ग्रामीण भागातून महाबळेश्वर,फलटण आणि रहिमतपूर या नगरपालिकांची निवड करण्यात आली आहे.

ब) माहिती संकलन

प्रस्तुत संशोधन हे प्रामुख्याने दुय्यम साधनसामग्रीवर आधारित आहे. आवश्यक असणारी दुय्यम साधनसामग्रीचे संकलन हे प्रामुख्याने नगरपालिकांच्या वार्षिक अहवालातून, संदर्भग्रंथ मासिके, पाक्षिके, इंटरनेट, दैनिके, या विषयावर अगोदर झालेले संशोधन प्रबंध तसेच भारत सरकारच्या आणि महाराष्ट्र सरकारच्या प्रसिध्द झालेल्या वेगवेगळ्या अहवालांचा आधार घेण्यात आला आहे. शिवाय काही माहिती मिळवण्यासाठी नगरपालिका कार्यालयाला भेट, अधिकाऱ्यांच्या मुलाखती, पदाधिकाऱ्यांच्या मुलाखती, नागरिकांशी संवाद, संबंधित तज्ञांशी चर्चा इ. मार्गांचाही अवलंब केला आहे.

क) माहितीचे पृथक्करण

अभ्यासासाठी प्राप्त झालेल्या माहितीचे पृथक्करण करण्यासाठी वेगवेगळ्या सॉफ्टवेअरचा वापर करण्यात आला आहे. यामध्ये एम.एस.एक्सेल व एस.पी.एस.एस चा समावेश करण्यात आला आहे. त्याचबरोबर प्राप्त सांख्यिकीय आकडेवारीच्या आधारे योग्य विश्लेषणासाठी सरासरी, प्रचरण गुणांक, विचलण गुणांक संयुक्त वृद्धीदर, सहसंबंध आणि साधा वृद्धीदर आणि टक्केवारी यासारख्या संख्याशास्त्रीय साधनांचाही वापर करण्यात आला आहे.

Compound Growth Rate Formula

$$CAGR = \left(\frac{\text{Ending Value}}{\text{Beginning Value}} \right)^{\frac{1}{t}} - 1$$

CAGR = Compound Annual Growth Rate
t = number of periods

Mean Formula

$$\bar{X} = \frac{\sum X_i}{n}$$

Where

\bar{X} is the mean

n is the number of observations and

$\sum X_i$ is the sum of all the observations

Standard Deviation Formula

$$S = \sqrt{\frac{\sum (X - \bar{X})^2}{N}}$$

where S = the standard deviation of a sample,

Σ means "sum of,"

X = each value in the data set,

\bar{X} = mean of all values in the data set,

N = number of values in the data set.

Coefficient Of Variation Formula

$$CV = \left(S / \bar{X} \right) \times 100$$

ड) अभ्यासाची व्याप्ती :

प्रस्तुत अभ्यासामध्ये सातारा जिल्ह्यातील एकूण आठ नगरपालिकांपैकी चार नगरपालिकांचा अभ्यास केला आहे. यामध्ये सातारा, फलटण, महाबळेश्वर व रहिमतपूर या चार नगरपालिकांचा समावेश आहे. म्हणून सदरचे संशोधन हे सातारा जिल्ह्यातील या निवडक नगरपालिकेच्या अभ्यासापुरते मर्यादित आहे.

इ) अभ्यासाचा कालावधी :

सदर संशोधन हे सन २००१-०२ ते २०१०-११ या कालावधीतील या चार नगरपालिकांच्या आर्थिक व्यवहारांवर करण्यात आले आहे.

१.७ प्रकरण रचना :

प्रस्तुत संशोधनाची मांडणी ही पुढील प्रकरणामध्ये केलेली आहे.

प्रकरण पहीले – प्रस्तावना व संशोधन पद्धती

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा थोडक्यात आढावा, अभ्यासाची गृहीते, कालावधी, व्याप्ती, उद्देश, अभ्यासपद्धती व प्रकरण रचना यांची मांडणी केली आहे.

प्रकरण दुसरे – संशोधन साहीत्याचे पुनर्विलोकन

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या संदर्भात आतापर्यंत झालेल्या संशोधनाचा आढावा घेतला आहे. यामध्ये वेगवेगळ्या स्वरूपाचे लेख, संशोधन प्रबंध, पुस्तके, संशोधन लेख इ. चा आढावा घेतला आहे.

प्रकरण तिसरे – नगरपालिकांचे स्वरूप व शहरी विकास आणि सातारा जिल्हयांची थोडक्यात ओळख

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये नगरपालिकांचे स्वरूप व शहरी विकास आणि सातारा जिल्हयांची थोडक्यात ओळख आणि व शहरी विकासाच्या काही निवडक संकल्पना मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे.

प्रकरण चौथे – नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे स्वरूप आणि दिशा

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये २००१-०२ ते २०१०-११ या कालावधीतील सातारा, फलटण, महाबळेश्वर व रहिमतपूर या चार नगरपरिषदांच्या उत्पन्नाचा आढावा घेतला आहे. यामध्ये त्यांच्या उत्पन्नाचे मार्ग, करापासून मिळणारे उत्पन्न, वेगवेगळे कर, करेत्तर उत्पन्न त्याची साधने, उत्पन्नाच्या साधनांची सैद्धांतिक मांडणी, उत्पन्नात झालेले बदल, नवीन कर, नगरपालिकांनी उत्पन्न वाढविण्यासाठी केलेले प्रयत्न इ. अनेक घटकांचा आढावा सदर प्रकरणामध्ये घेतला आहे.

प्रकरण पाचवे – नगरपालिकांच्या खर्चाचे स्वरूप आणि दिशा

प्रस्तुत प्रकरणात वर नमूद केलेल्या चार नगरपालिकांच्या २००१-०२ ते २०१०-११ या कालावधीतील खर्चाचा आढावा घेतला आहे. यामध्ये नगरपालिकांच्या खर्चाचे घटक, खर्चाच्या तरतुदी, खर्चातील बदल, खर्चाची टक्केवारी, खर्चातील वाढ इ.ची मांडणी केली आहे.

प्रकरण सहावे – निष्कर्ष व शिफारशी

प्रस्तुत प्रकरणामध्ये संपूर्ण अभ्यासातून काही निष्कर्ष काढले आहेत. त्याची मांडणी केली आहे. शिवाय उत्पन्न वाढविण्यासाठी, त्याची साधने वाढविण्यासाठी व खर्चाचे योग्य व्यवस्थापन करण्यासाठी, खर्च नियंत्रित करण्यासाठी काही शिफारशी सदर प्रकरणामध्ये सुचविल्या आहेत.

१.८ संदर्भसूची :

१. सामाजिक आर्थिक समालोचन – सातारा जिल्हा परिषद सातारा.
२. वार्षिक अहवाल सातारा नगरपरिषद – २००१-०२ ते २०१०-११
३. वार्षिक अहवाल महाबळेश्वर नगरपरिषद – २००१-०२ ते २०१०-११
४. वार्षिक अहवाल फलटण नगरपरिषद – २००१-०२ ते २०१०-११
५. वार्षिक अहवाल रहिमतपूर नगरपरिषद – २००१-०२ ते २०१०-११
६. Lekhi R. K. (2002) Public Finance, Kalyani Publication, Ludhiana, 10 Edition .
७. Sundaram K.P.M. and Sundaram C.N.(1990) Indian Public Finance and Financial Administration — S. Chand and Son Publishers, New Delhi.
८. Kamble, P. S. (2001), Finances of Kolhapur Municipal Corporation, unpublished Ph. D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur.
९. Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur.
१०. Lodade Anand (1990), Study of Deficit Financing in India, unpublished M. Phil. Dissertation submitted to Shivaji University, Kolhapur.

प्रकरण दुसरे

संशोधन साहित्याचे पुनर्विलोकन

२.१ प्रस्तावना

२.२ संशोधन साहित्याचे पुनर्विलोकन

२.३ संदर्भ

प्रकरण दुसरे

संशोधन साहीत्याचे पुनर्विलोकन

२.१ प्रस्तावना

नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था अर्थव्यवस्थेत महत्त्वाची भूमिका पार पाडतात. त्याचबरोबर ग्रामीण भागात स्थानिक स्वराज्य संस्था आपली जबाबदारी कार्यक्षमपणे पार पाडत असतात. त्यांचे आर्थिक व्यवहार आणि त्यासंबंधीचे काही बाबीचे सार्वजनिक अर्थकारण हे संशोधनामध्ये ठळकपणे दुर्लक्षित भाग आहे. तथापि शहरी भागात राहणा'—या सर्वच लोंकाचा नगरपालिकेसारख्या स्थानिक स्वराज्य संस्थाशी अगदी जवळचा संबंध येत असतो. म्हणून त्यांचा अभ्यास हा महत्त्वपूर्ण मानला जातो. याच पार्श्वभूमीवर शहरी भागातील नगरपालिकांची विकासातील भूमिका अभ्यासणे अत्यंत गरजेची बाब आहे. म्हणून नगरपालिकांचा विकासातील भूमिका अभ्यासण्याचा प्रयत्न केला आहे.

२.२ संशोधन साहीत्याचे पुनर्विलोकन

प्रस्तुत प्रकरणात संशोधन विषयासंबंधातील महत्त्वपूर्ण संशोधन साहीत्याचा आढावा घेतला आहे तो खालीलप्रमाणे

जैन.आर.बी (२००१)^१ यांनी आपल्या अभ्यासामध्ये आधुनिकीकरण प्रक्रियेच्या परिणामातून आधिक व्यापक प्रमाणात संपूर्ण जगभर घडत असलेले नागरिकरण ह्या विसाव्या शतकाच्या ठळक वैशिष्ट्याचे विश्लेषण केले आहे. यांनी दिल्ली शहराच्या बाबतीत नागरिकरणाचे सामाजिक आणि पर्यावरणीय परिणाम विशद केले असून असे सुचित केले की, जागतिक नागरिकरण हा निमंत्रित घटक आहे. नागरिकरणाच्या धोरणाबाबत विकसनशील राष्ट्रांनी आर्थिक, सामाजिक, आणि पर्यावरणीय धोरणाच्या बाबतीत दक्ष असणे आवश्यक आहे. त्यांच्या मते शहरांचा विकास आरोग्यदायी पर्यावरणात घडून येणे गरजेचे आहे. मानव संसाधन विकास निर्देशांकात वाढ घडवून आणण्याच्या दृष्टीने सामाजिक क्षेत्रातील आरोग्य आणि शिक्षण या बाबीवर विकसनशील राष्ट्रांनी नागरी क्षेत्रात अधिक लक्ष देणे गरजेचे आहे.

विद्या हीतेश व विद्या चेतन (२००२)^२ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासात नगरपालिकांचे सुरुवातीचे बाजारातील निधी वाढवण्याच्या वेगवेगळ्या मार्गांच्या अड्डानातील कार्यक्षमता, जबाबदा-या आणि त्याधील लोकसहभाग ह्या सेवांचे विश्लेषण केले आहे. अलिकडच्या काळात भारतातील बँकींग व्यवस्था ही अधिक तरल आणि व्यापारी बँका अधिक कर्जाच्या संधी उपलब्ध करून देत असल्याचे निदर्शनास आले आहे. या सर्व बाबींच्या यशासाठी स्थानिक सरकार हे भांडवल बाजाराच्या माध्यमातून पर्यावरणीय मूलभूत सेवा सुविधाची उभारणी करू शकतात असे त्यांनी स्पष्ट केले.

ब्रॉड ऑलन (२००२)^३ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासामध्ये आशिया, पूर्वीय आणि मध्य युरोप व लॅटिन अमेरिका येथील मोठ्या शहरातील सरकारची नियोजनकांची आणि अर्थव्यवस्थेची भूमिका गुंतवणूकदारांची भूमिका गुंतवणूक व्यूहरचना गृहनिर्माण आणि पायाभूत उदयोग यामधील भूमिका विशद केली आहे. त्यांनी नागरी नियोजन करणा-या सरकारची विकसनशील शहराच्या वास्तव मालमत्तेबाबत भूमिकांची चर्चा केली आहे. तसेच सरकारची कृती आणि वास्तव मालमत्ता बाजार यांच्यामध्ये होणा-या सुसंवादाने शहराचा विकास होवू शकतो असे स्पष्ट केले आहे. तसेच बाजार अर्थव्यवस्थेच्या बाबतीत सरकारची आणि नागरी नियोजनकांराची विकासातील भूमिका स्पष्ट केली आहे. शेवटी त्यांच्या कार्यात्मक कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी नागरी नियोजन कारांना वास्तव मालमत्ता बाजाराबाबत कोणत्या गोष्टी जाणून घेणे गरजेचे आहे यावरती लक्ष केंद्रीत केले आहे.

गुलाठी.आय.एस. (१९९४)^४ यांच्या अभ्यास संशोधन शीर्षकामध्ये वित्तीय वाटपातील स्थानिक सरकार आणि राज्य वित्त आयोग यामध्ये कार्यात्मक विकेंद्रिकरण, कागदोपत्री राहिल्याचे स्पष्ट केले आहे. जर संबंधित वित्तीय आधिकाराचे केंद्र सरकारकडून स्थानिक सरकारकडे हस्तांतर नाही झाल्यास राज्य वित्त आयोगाने त्याची खात्री करून दिलेल्या कार्याचे वाटप आणि जबाबदारी राज्य सरकारकडून स्थानिक सरकारकडे हस्तांतरित करण्याबाबत व त्याची अंमलबजावणी करण्याबाबत सूचना केल्या आहेत.

प्रसाद.आर.सी.(१९८०)^५ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासामध्ये अलिकडील काळातील बदल दर्शविले आहेत. स्थानिक सरकारची विकासातील भूमिका की जी प्रांत परत्वे आणि शहरी आणि ग्रामीण भागात घटत आहेत. त्यांनी असे निष्कर्ष काढले आहेत. की, प्रभावी विकासाच्या साधनांची भारतातील स्थानिक सरकारकडून कायदयाप्रमाणे अंमलबजावणी होणे

आवश्यक आहे. तसेच नागरिकांची क्षमता कला आणि व्यवसायिकताही विशेषत लहान शहरे आणि पंचायत राज्य सरकारणी वाढीसाठी अधिक प्रयत्नशील असणे गरजेचे आहे.

सिंग जितेद्र .(२००१)^६ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासात स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या नागरिकांचे राहणीमान सुधारण्यासाठी उपलब्ध तांत्रिक व्यवस्थापन आणि वित्तीय आधार यांचा विचार करून विकेंद्रीकरणाचे धोरण अवलंबल्यास ते अधिक फायदेशीर ठरेल. निर्धारित वेळेत नगरपालिकांनी शहरी भागातील विशेष सेवा वितरकाच्या माध्यमातून वेगवेगळ्या सेवा पुरविणे आवश्यक आहे. सामाजिक समायोजनासाठी, विकास प्रक्रीयेसाठी नावीन्यतेच्या चालनेसाठी हे माध्यम महानगरपालिकेच्या बाबतीत अधिक प्रभावी आणि कार्यक्षम होवू शकेल.स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या विकासाबाबत सार्वत्रिक मान्य असणारे कोणतेही संघटित प्रतिमाण आस्तित्वात नाही. स्थानिक स्वराज्य संस्था नागरिकांचे उच्चतम राहणीमान साध्य करण्यासाठी आवश्यक असणारी बलस्थाने आणि उणीवा लक्षात घेउन विकास प्रतिमानांची मांडणी करण्यात यावी.

जॅनिज.फ.लिन .(१९८१)^७ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासात विकसनशील राष्ट्रांना नागरी व्यवस्थापनाच्या बाबतीत एका समान संकटांना सामोरे जावे लागत आहे. की जे ओधोगिकरण झालेल्या राष्ट्रांनी या पूर्वीच अनुभवली आहेत. हा निष्कर्ष काढला आहे. त्यांच्या नागरी लोकसंख्येपैकी ३० ते ९० टक्के लोकसंख्या ही गलिच्छ वसाहतीमध्ये राहत आहे. मोठ्या प्रमाणात वाढणारी लोकसंख्या ही नागरी सेवांच्या मध्ये उणिवांची वाढ घडवून आणण्यास प्रोत्साहित करते.जोपर्यंत नागरी सेवा सुविधा वंचित लोकांपर्यंत पोहचवण्याबाबत ठळक उपाय केले जात नाहीत तो पर्यंत नागरी सेवा सुविधांमध्ये उणीवा ह्या वाढतच जातील.तसेच उपलब्ध साधनांचा स्थानिक स्वराज्य संस्थाकडून अकुशल व्यवस्थापन आणि मनुष्यबळातील अभाव यामुळेच नेहमीच अकार्यक्षम वापर होतो असे आढळून येते.

गोविंद रॉय व रिचर्ड बर्ड .(२०१०)^८ यांनी आपल्या संशोधन अभ्यासात वेगवेगळ्या महत्त्वाच्या बाबींवर लक्ष केंद्रीत करण्याचा प्रयत्न केला आहे. यामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या यंत्रणेतील सुधारणा आणि पर्याप्त वित्तीय साधनांची भारतीय शहरांना आवश्यकता विशद केली आहे.तसेच स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या बाबतीत झालेल्या सुधारणांचा उहापोह केला आहे. न्याय, त्याचबरोबर नागरी सामाजिक सेवांची पूर्तता करणारी वितरण प्रणाली

अधिक कार्यक्षम करण्यासाठी खर्चाचे आणि त्याच्या सुयोग्य व्यवस्थापणाचे विश्लेषण केले आहे.

डॉ. कांबळे. पी. एस. (२००१)^९ यांनी त्यांच्या संशोधनात “कोल्हापूर नगरपालिकेचे खर्चव्यवहार ” या शिवाजी विद्यापीठास सादर केलेल्या पीएच.डी. प्रबंधामध्ये कोल्हापूर नगरपालिकेच्या आर्थिक व्यवहारांचे परीक्षण केले आहे. त्यांनी १९८० ते २००० या २० वर्षांच्या कालावधीमधील कोल्हापूर महानगरपालिकेच्या वित्तीय व्यवहारांचा आढावा आपल्या प्रबंधात घेतला आहे. त्यांनी कोल्हापूर नगरपालिकेच्या उत्पन्न साधनांचे स्वरूप आणि त्यातील वाढ तसेच खर्चाची रचना त्यातील वाढ याविषयी परीक्षण केलेले आहे. कोल्हापूर नगरपालिकेच्या अंदाजपत्रकीय स्थितीचा तसेच नगरपालिका आकारीत असलेल्या करांचे स्वरूप इ.चा सविस्तर आढावा घेतला आहे. त्यांनी आपल्या प्रबंधात असे मांडले आहे की, कोल्हापूर नगरपरिषदेला जवळपास मागील २० वर्षांपासून वित्तीय तुटीची समस्या भेडसावत आहे. तसेच भविष्यातसुद्धा नगरपालिकेचा एकूण खर्च हा एकूण उत्पन्नापेक्षा नेहमीच जास्त राहणार आहे.

अली आशरफ (१९६०)^{१०} यांनी आपल्या संशोधन “कोलकत्ता महानगरपालिकेच्या वित्तीय व्यवहारांचा अभ्यास” केला. त्यांनी आपल्या अभ्यासात मुख्य भर कोलकत्ता नगरपालिकेच्या वित्तीय तुटीवर दिला. त्यांनी आपल्या संशोधनातून असा निष्कर्ष काढला की, या नगरपालिकेकडून उत्पन्नाच्या साधनांचा योग्य वापर केला जात नाही. त्याचबरोबर घेतलेल्या कर्जाचा योग्य वापरही केला जात नाही. यासाठी त्यांनी आपल्या संशोधनाच्या शेवटी या नगरपालिकेने कर्जाचा वापर जास्तीत-जास्त उत्पादक कार्यासाठी करावा अशी सूचना केली आहे.

राव आणि हजारीका (१९८०)^{११} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये “भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा अभ्यास” करीत असताना नगरपालिकांचा आढावा घेतला आहे. त्यामध्ये त्यांनी नगरपालिकांची ऐतिहासिक पार्श्वभूमी, त्यांची कार्ये, उत्पन्नाची साधने, नगरपालिकांचे अंदाजपत्रक, राजकोषीय धोरण इ. चा आढावा घेतला आहे. त्यांनी आपल्या अभ्यासातून असा निष्कर्ष काढला आहे की, नगरपालिकांच्या प्रशासनात सक्षमता नाही व ती यावी यासाठी तशी सरकारकडून कोणतीही तरतूद केली नाही. त्यामुळे नगरपालिकेच्या प्रशासकीय विभागाकडून नगरपालिकेच्या विकासात योग्य ती भूमिका बजावली जात नाही.

त्याचबरोबर नगरपालिकांची प्रशासकीय रचना शास्त्रीय आधारावर नाही असेही त्यांनी आपल्या अभ्यासात मत मांडले आहे.

दसरती भुयान (१९६०)^{१३} यांनी आपल्या संशोधनातून त्यांच्या "ओरिसामधील पंचायत राज व्यवस्था" या पुस्तकामध्ये पंचायत व्यवस्थेसमोरील आव्हाने याबाबत परीक्षण केले आहे. त्यांच्या मते ओरिसातील पंचायत व्यवस्थेसमोर अनेक आव्हाने आहेत. त्यासाठी त्यांना पुरेसी उत्पन्न साधने निर्माण करणे आवश्यक आहे. विकास कार्यासाठी त्यांनी जास्तीत-जास्त उत्पन्नाचा विनियोग करावा तसेच त्यांनी आपल्या अंदाजपत्रकामध्ये स्वावलंबी बनणे आवश्यक आहे. जर त्यांच्या अंदाजपत्रकामध्ये तूट निर्माण झाली तर सरकारने त्यांना कोणत्याही दडपणाखाली मदत करणे आवश्यक आहे.

नांनजुडप्पा आणि नाडकर्णी (१९६५)^{१३} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "हुबळी धारवाड नगरपालिकेच्या करांचा अभ्यास" केला. त्यामध्ये त्यांनी नगरपालिकेकडून आकारल्या जाणाऱ्या वेगवेगळ्या करांचा आढावा घेतला, त्यापासून मिळणारे एकूण उत्पन्न, त्याचे करेत्तर उत्पन्नाशी असणारे प्रमाण इ. चे सखोल विवेचन केले. त्याचबरोबर काही निवडक करांचा भार कोणत्या घटकावर पडतो याचेही विवेचन केले. त्याचबरोबर या नगरपालिकेने कोणते नवीन कर आकारवेत व कोणते जुने कर बंद करावेत याविषयी नगरपालिकेला सूचनाही केल्या आहेत.

अभिजीत दत्त (१९६०)^{१४} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "कोलकत्ता नगरपालिकेच्या आर्थिक व्यवहारांचा अभ्यास" केला. त्यांनी आपल्या अभ्यासात विशेष भर हा नगरपालिकांना राज्य व केंद्र सरकारकडून मिळणाऱ्या अनुदानावर दिला. त्यांनी आपला अभ्यास स्थानिक स्वराज्य संस्था व राज्य सरकार यांच्या संबंधावर प्रकाश पडावा यादृष्टीने केला. त्यांनी आपल्या संशोधनात निष्कर्ष काढला आहे की, सरकार नगरपालिकांना योग्यप्रकारे अनुदान देत नाही. ते देत असतानाही सरकारचे धोरण बऱ्याचदा संदिग्ध आढळून येते. यासाठी सरकारचे नगरपालिकांच्या अनुदानाविषयीचे धोरण बदलण्याची आवश्यकता आहे. त्यांच्यामते शासनाने नगरपालिकांना अनुदान देताना ते विशिष्ट तत्त्वांच्या आधारे द्यावे व अनुदानाचे दोन विभागात विभाजन करावे ते म्हणजे महसुली अनुदान व भांडवली अनुदान ज्यायोगे नगरपालिकांची आर्थिक स्थिती सुधारण्यास मदत होईल.

अमरिश बगेहीयांनी (१९९०)^{१५} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये १९६५.६६ ते १९८६.८७ या कालखंडातील "भारतातील नगरपालिकांची प्रगती " यावर संशोधन केले. त्यांच्यामते, नगरपालिकांच्या अधिकारात वाढ करण्याची गरज आहे. कारण नगरपालिकांच्या तुलनेने राज्य सरकारकडे नगरपालिकांच्या निर्णयासंबंधी अधिक अधिकार आहेत. त्यामुळे या अधिकारांचे जर विकेंद्रीकरण केले तर त्याचा नगरपालिकेला अधिकाधिक लाभ होईल व नगरपालिका आपल्या अधिकारांचा वापर करून आपली प्रशासन व्यवस्था अधिक सक्षम बनवेल. त्याचा सकारात्मक परिणाम एकूणच नगरपालिकांच्या कार्यावर होईल.

तपन कुमार घोष आणि प्रमिता दास (१९८०)^{१६} यांनी आपल्या संशोधन पेपरमध्ये 'द. आय.यु.पी. जर्नल ऑफ पब्लिक फायनान्स ' मध्ये लिहीलेल्या त्यांच्या पश्चिम बंगालमधील स्थानिक सरकारांचे अर्थव्यवहार या लेखामध्ये पश्चिम बंगालमधील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या खर्च आणि उत्पन्न या दोन्ही वित्तीय व्यवहारांचे स्वरूप स्पष्ट केले आहे. त्यांना पश्चिम बंगालमधील स्थानिक स्वराज्य संस्थांची वित्तीय साधने फारच मर्यादित असल्याचे आढळले. उत्पन्न साधने फार मोठ्या प्रमाणात गोळा करण्यात तेथील सरकार फारसे यशस्वी झाले नाही. याचाच अर्थ अंतर्गत उत्पन्न साधने निर्माण करण्यात तेथील पंचायत व्यवस्था सर्व बाबतीत दुर्बल ठरली आहे. म्हणूनच त्यांनी आपल्या लेखामध्ये पश्चिम बंगालमधील स्थानिक सरकारांच्या वित्तीय व्यवस्थापनामध्ये सुधारणा घडवून आणण्यासाठी महत्त्वाच्या शिफारशी केल्या आहेत. त्यांच्यामते नगरपालिकांची नवीन उत्पादन साधने विस्तारीत होण्यासाठी राजकीय इच्छाशक्ती प्रबळ असण्याची गरज त्यांनी व्यक्त केली आहे.

माथूर एम्. पी.(१९९८)^{१७} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये १९७९.८० ते १९९२.९३ या कालखंडातील भारतातील नगरपालिकांचे राजकोषीय धोरण या विषयावर एक संशोधन लेख लिहीला. त्यांनी आपल्या लेखात नगरपालिकांची कार्ये, उत्पन्नाची साधने, खर्चाच्या बाबी, आर्थिक तूट, नगरपालिकांची उपलब्ध संसाधने, त्यांची बलस्थाने, कमकुवत बाजू अशा अनेक बाबींवर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न केला आहे. व त्या अनुषंगाने काही मौलिक शिफारशीही केल्या आहेत.

माधव आपटे (१९७५)^{१८} यांनी पुणे विद्यापीठास सादर केलेल्या आपल्या संशोधनामध्ये " मराठा सरकारचे अर्थव्यवहार " या पीएच.डी. प्रबंधामध्ये त्यांनी १७६३ ते १७७३ या

ब्रिटीशकालीन मराठा सरकारच्या अर्थव्यवहाराचा आढावा घेतलेला आहे. त्यांनी पानिपतानंतर १२ वर्ष माधवराव पेशव्यांची कारकीर्द लक्षात घेतली आहे. पेशवेकालीन मराठा सरकारच्या जमेच्या बाजू व खर्चाच्या बाजू यावर प्रकाश टाकला आहे.

शर्मा के. एस्. आर. एन्. (१९७५)^{१९} यांनी सादर केलेल्या आपल्या संशोधनामध्ये नगरपालिकांची करेत्तर उत्पन्न साधने वाढविण्याविषयी शिफारशी केल्या आहेत. त्यांच्यामते नगरपालिकांना आपली करेत्तर उत्पन्न साधने वाढविण्यास बराच वाव आहे. ती वाढवली तर लोकांवरील कराचा भारही कमी होईल. नगरपालिकांचा बराचसा खर्चही भरुन येईल शिवाय करेत्तर मार्गाने उत्पन्न मिळविण्यासाठी नगरपालिकांना फारसा महसुली खर्च करण्याची गरजही शासनावर नाही.

सुभ्रबाला बेहरा (१९७९)^{२०} त्यांच्या " पंचायत राज व्यवस्था सद्यस्थिती आणि आव्हाने " या पुस्तकामध्ये ओरिसामधील पंचायत राज व्यवस्थेची रचना तसेच पंचायत राज व्यवस्थेसमोरील आव्हाने याबाबतीत विवेचन केले आहे. त्यांनी आपल्या संशोधनातून असे सांगितले आहे की, फक्त ओरिसातीलच नव्हे तर संपूर्ण भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांची प्रगती अत्यंत हळूवारपणे होत आहे. सरकारे स्थानिक स्वराज्य संस्थांवरील अतिरिक्त नियंत्रण, निधीची कमतरता, लोकांचा अशिक्षितपणा आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांमधील अप्रशिक्षित कर्मचारी वर्ग या भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांसमोरील प्रमुख समस्या आहेत असे त्यांचे मत आहे. त्यासाठी त्यांनी स्थानिक स्वराज्य संस्थांना पुरेशी वित्तीय साधने असणे आवश्यक आहे असे सुचविले आहे. शिवाय स्थानिक स्वराज्य संस्थांवरील सरकारी नियंत्रण कमी करण्याची गरज व्यक्त केली आहे.

कमलेश मिश्रा (१९९६)^{२१} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये १९९१-९२ ते १९९३-९४ या कालावधीतील भारतातील नगरपालिकांची उत्पन्न साधने व खर्चाच्या बाबी यावर प्रकाश टाकण्याचा प्रयत्न केला. त्यांनी नगरपालिकांना उत्पन्न वाढविण्यासाठी उपलब्ध संसाधनांचा महत्तम वापर करण्याचा सल्ला दिला आहे. त्याचबरोबर खर्चावर नियंत्रण ठेवण्याची गरज व्यक्त केली आहे. तरच नगरपालिकांची वित्तीय तूट भरुन निघू शकते असे त्यांचे मत आहे.

दांडेकर व्ही. जी. (१९७९)^{२२} यांनी जिल्हा परिषद एक स्थानिक सरकार व विकास संस्था या पुणे विद्यापीठास सादर केलेल्या पीएच.डी. प्रबंधामध्ये जिल्हा परिषदेच्या

कार्यपद्धतीवर प्रकाश टाकला आहे. त्यांनी आपल्या प्रबंधामध्ये पंचायत राज व्यवस्था, प्रशासकीय संघटन, विकासाच्या बाबतीत जिल्हा परिषदेची भूमिका, पंचायत राज्याचे वित्त व्यवहार, जनता आणि पंचायत राज व्यवस्था, पंचायत राज व्यवस्था आणि राज्य सरकार या बाबींचे विवेचन केले आहे.

मॉन्टी पी. के .(१९८०)^{२३} यांनी केलेल्या आपल्या संशोधनामध्ये “भारतातील नगरपालिकांचे वित्त व्यवहार ” या विषयावर भर दिला आहे. त्यामध्ये त्यांनी ७४ व्या घटना दुरुस्तीचा दाखला दिला आहे. त्यांच्यामते, या घटना दुरुस्तीने नगरपालिकांच्या अधिकारात वाढ झाली आहे. परंतु या वाढलेल्या अधिकारांचा नगरपालिका प्रशासनाने योग्य वापर करुन घेण्याची गरज आहे. हे अधिकार वापरुन नगरपालिकांनी आपली प्रशासन व्यवस्था सक्षम बनविली तर नगरपालिका आपल्या नागरिकांचे जीवनमान उंचावण्यात नक्कीच यशस्वी होतील असे मत त्यांनी आपल्या संशोधनात व्यक्त केले आहे.

गुलाटी आय. एस. .(१९८०)^{२४} यांनी “ स्थानिक संस्थांचे वित्तीय हस्तांतरण आणि राज्य वित्त आयोगाची भूमिका” यावरील लेखामध्ये इकॉनॉमिक आणि पॉलिटिकल विकली १ ऑक्टोबर १९९४ खंड ४० या मासिकामध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे कार्यात्मक विकेंद्रीकरण आणि वित्तीय हस्तांतरण यावर भर दिलेला आहे. त्यांच्या मते विकेंद्रीकरण हे प्रामुख्याने वित्तीय हस्तांतरणासंबंधीची बाब आहे. ते अजूनही सर्वत्र स्वीकारले गेले नाही. वित्तीय हस्तांतरणामध्ये राज्य वित्त आयोगाची भूमिका अतिशय महत्त्वपूर्ण आहे. राज्य वित्त आयोगाने स्थानिक स्वराज्य संस्थांना त्यांच्या अधिकारांचा योग्य विनियोग करता येईल अशाप्रकारे प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

शेखर आणि विदारकर.(१९९८)^{२५} यांनी १९८९.९० ते १९९५.९६ या कालखंडातील “देशातील पाच महानगरपालिकांच्या अंदाजपत्रकाचा अभ्यास” केला. त्यांच्या अभ्यासामध्ये त्यांनी या नगरपालिकांची उत्पन्न साधने व खर्चाच्या बाबी अभ्यासल्या त्यामध्ये त्यांना असे आढळून आले की नगरपालिकांचे उत्पन्नाचे किंवा खर्चाचे अंदाज व प्रत्यक्ष आकडेवारी यामध्ये नेहमीच तफावत असल्याचे दिसून येते. अंदाजित उत्पन्नापेक्षा प्रत्यक्ष उत्पन्न हे नेहमी कमी असल्याचे आढळून येते. तर अंदाजित खर्चापेक्षा प्रत्यक्ष खर्च हा नेहमी जास्त असल्याचे

दिसून येते. त्याचबरोबर त्यांनी नगरपालिकांच्या विकासासाठी पायाभूत सुविधांमध्ये अधिक गुंतवणूक करण्याची गरज व्यक्त केली आहे.

कृष्णस्वामी के. एस्. (१९९३)^{२६} यांनी इकॉनॉमिक आणि पॉलीटिकल विकली ९ ऑक्टोबर १९९३ खंड ४१ यामध्ये लिहीलेल्या पंचायतीसाठी अजूनही पहाट झालेली नाही या संशोधन लेखामध्ये पंचायतीसाठी सर्वसमावेशक असणाऱ्या कायद्यावर भर दिला आहे. त्यांच्यामते राज्य सरकारे पंचायतींना प्रभावी हस्तांतरणाचे अधिकार देणारे कायदे सहजासहजी स्वीकारण्यास तयार होत नाही. राज्य सरकारे पंचायतीवर दबाव आणण्याचा प्रयत्न करतात. त्यामुळे पंचायती संदर्भातील सर्व समावेशक कायदांची सर्व राज्यांनी काटेकोर अंमलबजावणी करणे आवश्यक असल्याचे त्यांनी आपल्या लेखात मांडले आहे.

सिताराणी. पी. (१९९८)^{२७} यांनी १९ जून १९९८ च्या इकॉनॉमिक अँड पॉलिटिकल विकली या मासिकामध्ये राज्य वित्त आयोग आणि ग्रामीण स्थानिक स्वराज्य संस्था : वित्तीय साधनांचे हस्तांतरण यावर प्रकाश टाकला आहे. त्यांच्यामते ७३ वी आणि ७४ व्या घटना दुरुस्तीने स्थानिक स्वराज्य संस्थांना नवीन अधिकार बहाल केले आहेत. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या वित्तीय हस्तांतरणामध्ये सुलभता निर्माण झालेली आहे. राज्य सरकारे आणि स्थानिक सरकारे यांच्यात वित्तीय हस्तांतरण योग्यप्रकारे घडविण्यासाठी राज्य वित्त आयोगाची भूमिका व महत्त्वपूर्ण असल्याचे त्यांनी मत व्यक्त केले आहे.

सौ.पळसुले-देसाई. (१९९३)^{२८} यांनी त्यांच्या पीएच.डी. प्रबंधासाठी कल्याण महानगरपालिकेचा अभ्यास केला आहे. त्यांनी आपल्या अभ्यासातून कल्याण महापालिकेचे आपली उत्पन्न साधने विस्तारण्याचा सल्ला दिला आहे. कारण त्यांच्या अभ्यासात असे दिसून आले आहे की, या नगरपालिकेच्या अंदाजपत्रकातील तूट दिवसेंदिवस वाढतच आहे. ती कमी करण्यासाठी खर्चावर नियंत्रण आणणे देखील गरजेचे आहे. परंतु कल्याण महानगरपालिकेचे झपाट्याने वाढणारे नागरिकरण व औद्योगिकरण लक्षात घेता या नगरपालिकेने आपली वित्तीय तूट भरून काढण्यासाठी आपली उत्पन्नाची साधने जास्तीत-जास्त विस्तारीत करण्याची गरज असल्याचे त्यांनी आपल्या संशोधनातून व्यक्त केले आहे.

जोशी एस्. एस्. (१९७९)^{२९} यांनी महाराष्ट्र सरकारच्या अर्थव्यवहार या पुणे विद्यापीठास सादर केलेल्या पीएच.डी. प्रबंधामध्ये त्यांनी १९६०.६१ ते १९७४.७५ या कालावधीतील महाराष्ट्र सरकारच्या आर्थिक व्यवहारांचा आढावा घेतला आहे. त्यांनी आपल्या प्रबंधामध्ये केंद्र व राज्य सरकार यातील वित्तीय समस्या व वित्तीय संबंध, महाराष्ट्र सरकारचे वार्षिक अंदाजपत्रक, राज्य सरकारच्या उत्पन्न साधनांची रचना, महाराष्ट्र सरकारच्या खर्चाचे विश्लेषण व रचना, महाराष्ट्र सरकारची सर्वसाधारण अंदाजपत्रकीय स्थिती या प्रमुख घटकांवर प्रकाश टाकलेला आहे.

इंदिरा राजारामन, ओ.पी. भोरा, व्ही.एस्. रंगनाथन (१९९६)^{३०} यांनी ४ मे च्या इकॉनॉमिक्स अँड पॉलीटिकल विकली या मासिकामध्ये पंचायत उत्पन्न साधनांची वृद्धी यावर लिखाण केले आहे. या विशेष लेखामध्ये त्यांनी पंचायतीच्या उत्पन्न साधनांवर भर दिला आहे. त्यांनी आपल्या लेखामध्ये पंचायत राज्यांसाठी करण्यात आलेल्या ७३ व्या घटना दुरुस्तीचा आधार घेऊन पंचायतींना अधिकाधिक उत्पन्न वाढविण्यासाठी तसेच आपल्या वित्तीय हस्तांतरण सुलभ करण्यासाठी काही महत्त्वपूर्ण उपायही सुचविले आहेत.

सौमेन बागी (१९९०)^{३१} यांनी महानगरपालिकेच्या गुंतवणुकीसंबंधी एक संशोधन लेख लिहिला व त्यांनी आपल्या लेखात मुख्य भर नगरपालिकांच्या पायाभूत सुविधांवरील गुंतवणुकीवर दिला. त्यांच्यामते भारतातील सर्वच नगरपालिकांची सद्यस्थिती पाहता कोणत्याही नगरपालिकेला पायाभूत सुविधांमध्ये मोठी गुंतवणूक करणे शक्य नाही. परंतु जलद गतीने वाढणारी लोकसंख्या व नागरिकरण लक्षात घेऊन शहरी भागातील लोकांना जर चांगल्या सोयी-सुविधा पुरवावयाच्या असतील तर नगरपालिकांनी पायाभूत सुविधांवरील गुंतवणुकीवर भर देण्याची गरज आहे. तरच येणाऱ्या काळात भारतातील शहरांची चांगली अवस्था पहावयास मिळेल असे त्यांचे मत आहे.

नाकुडकर बी. एस .(२००६)^{३२} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "सिंधुदुर्ग जिल्हा परिषदेचे अर्थव्यवहार या " शिवाजी विद्यापीठास सादर केलेल्या पीएच.डी. च्या प्रबंधामध्ये सिंधुदुर्ग जिल्हा परिषदेच्या उत्पन्न व खर्चावर प्रकाश टाकला आहे. तसेच जिल्हा परिषदेला सरकारकडून मिळालेल्या विविध प्रकारच्या अनुदानाचा आढावा त्यांनी आपल्या प्रबंधामध्ये घेतलेला आहे. तसेच त्यांनी जिल्हा परिषदेच्या खर्चाचे, जिल्ह्याच्या ग्रामीण विकासावर

झालेले आर्थिक व सामाजिक परिणामांचे परीक्षण केले आहे. त्यांच्या अभ्यासातून त्यांनी असा निष्कर्ष काढला की, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या आर्थिक, सामाजिक व ग्रामीण विकासात सिंधुदुर्ग जिल्हा परिषद महत्त्वाची भूमिका बजावत आहे.

धोंडे एस. व्ही. (२०००)^{३३} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "ग्रामपंचायत अर्थव्यवहारच्या" शिवाजी विद्यापीठास सादर केलेल्या एम.फिल. प्रबंधामध्ये सातारा जिल्ह्यातील ग्रामपंचायतीच्या आर्थिक व्यवहारांचा आढावा घेतला आहे. त्यांनी आपल्या अभ्यासामध्ये ग्रामपंचायतीचे अंदाजपत्रक, ग्रामपंचायतीची उत्पन्नाची साधने, ग्रामपंचायतीच्या खर्चाच्या बाबी, उत्पन्न व खर्च यांची रचना, ग्रामपंचायतीची कररचना व कराचे दर या बाबींचे विवेचन केले आहे. त्यांनी त्यांच्या अभ्यासामध्ये ग्रामपंचायतीच्या अर्थव्यवहारामध्ये वित्तीय असमतोल मोठ्या प्रमाणात असल्याचे आढळले आहे.

राजशिकें एन. वाय. (२०००)^{३४} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "कोल्हापूर महानगरपालिका परिवहन (के.एम.टी) च्या प्रशासनाचा अभ्यास" केला आहे. त्यांनी हा अभ्यास ५ वर्षांच्या कालखंडाचा केला आहे. त्यांनी आपल्या संशोधनातून असे नमूद केले आहे की, परिवहन हे कोल्हापूर महानगरपालिकेने त्याचे योग्य व्यवस्थापन न केल्याने त्यावरील खर्च अधिक व उत्पन्न कमी असे तोट्याचे चित्र दिसून येत आहे. हे जर चित्र बदलावयाचे असेल तर परिवहन व्यवस्थापनात महत्त्वाचे बदल करण्याची गरज त्यांनी व्यक्त केली आहे. शिवाय कोणते बदल करावेत यासाठी नेमक्या सूचनाही त्यांनी आपल्या प्रबंधामध्ये केल्या आहेत.

शराविकर वाय. जी. (१९८६)^{३५} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "नाशिक जिल्हा परिषदेचे अर्थव्यवहार" पुणे विद्यापीठास सादर केलेल्या पीएच.डी. प्रबंधामध्ये नाशिक जिल्हा परिषदेच्या आर्थिक व्यवहारांचे विवेचन केले आहे. त्यांनी नाशिक जिल्हा परिषदेच्या वित्तीय कल, जिल्हा परिषदेची वित्तीय साधने, उत्पन्नाची रचना, खर्चाची रचना यावर प्रकाश टाकला आहे. तसेच नाशिक जिल्हा परिषदेने ग्रामीण विकास, शेती, शिक्षण, आरोग्य, सामाजिक कल्याण, सिंचन पाणीपुरवठा, औद्योगिकरण या विविध क्षेत्रामध्ये पार पडलेल्या भूमिकेचे परिक्षण प्रस्तुत शोधनिबंधात केले आहे. तसेच जिल्हा परिषदेने राबविलेल्या योजनांचे

मूल्यमापनही केले आहे. त्यांच्या या प्रबंधामध्ये त्यांना नाशिक जिल्हा परिषदेच्या एकूण विकास खर्चापेक्षा बिगर विकास खर्चाचे प्रमाण जास्त असल्याचे दिसून आले आहे.

श्री. विनयकुमार महामुनी (१९८७)^{३६} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये "कोल्हापूर महानगरपालिका कर अभ्यास", विशेष संदर्भ जकात या आपल्या संशोधन प्रबंधात जकात या कराचे सविस्तर विवेचन केले आहे. त्या अगोदर त्यांनी एकूणच नगरपालिकांच्या बदलत गेलेल्या कररचनेचा आढावा घेतला आहे. व नंतर ऑक्ट्रायचे सविस्तर विवेचन केले आहे. त्यामध्ये ऑक्ट्रायची रचना अभ्यासली आहे. त्याबरोबर ऑक्ट्रायच्या अंमलबजावणीतील दोष सांगून त्यात सुधारणा करण्यासाठी उपाययोजनाही सांगितल्या आहेत. त्यांच्यामते, कोल्हापूर महानगरपालिकेचा विचार करता ऑक्ट्राय हा कर उत्पन्नाचा मुख्य स्रोत ठरू शकतो. कारण बदलत्या काळानुसार नगरपालिकांना वेगवेगळ्या कराच्या माध्यमातून आपल्या उत्पन्न वाढविण्यासाठी गरज आहे. त्यासाठी ऑक्ट्रायच्या माध्यमातून जास्तीत-जास्त कर गोळा करणे गरजेचे आहे.

बेला मिना (१९९५)^{३७} त्यांनी आपल्या एम्. फिल. प्रबंधामध्ये "मुंबई महानगरपालिका अर्थव्यवहाराचा अभ्यास" केला. त्यांच्यामते, मुंबई महानगरपालिकेची वाढ ही देशातील इतर कोणत्याही नगरपालिकेचा विचार करता अधिक जलद गतीने झाल्याचे दिसून येते. मुंबई महानगरपालिकेचे अंदाजपत्रक हे एका छोट्या राज्याच्या अंदाजपत्रकाएवढे असल्याचे दिसून येते. त्यामुळे नगरपालिका अंदाजपत्रकामध्ये वित्तीय तूट पडल्याचे दिसून येते. ही तूट भरून काढण्यासाठी मुंबई महानगरपालिकेने आपल्या खर्चाचे योग्य व्यवस्थापन करण्याची गरज सौ. बेला यांनी आपल्या संशोधनात व्यक्त केली आहे.

चंद्रशेखर टि. (२०००)^{३८} यांनी आपल्या पीएच.डी. प्रबंधासाठी मध्ये "ठाणे महानगरपालिकेच्या आर्थिक व्यवहाराचा अभ्यास" केला. त्यामध्ये त्यांनी ठाणे महानगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने, मिळणारी अनुदाने, खर्चाचे घटक, पायाभूत सुविधांमधील गुंतवणूक खर्च व उत्पन्नात झालेले बदल इ. घटकांचे सविस्तर विवेचन त्यांनी आपल्या प्रबंधामध्ये केले आहे. शिवाय महानगरपालिका प्रशासनाला काही सूचनाही केल्या आहेत. ज्याचा नगरपालिका प्रशासनाला प्रशासन सुधारण्यासाठी उपयोग होईल.

मरिअम ई रॉबर्ट (१९७६)^{३९} यांनी आपल्या अभ्यासामध्ये तीन विभाग असणा—या धोरणावर भर दिला आहे. त्यांनी असा निष्कर्ष काढला की,राज्य सरकार नियुक्त पण स्थानिक पातळीवरील सरकार नियंत्रित पध्दतीने नेमून दिलेली कामगिरी पार पाडते. त्याच बरोबर स्थानिक पातळीवरील सरकार जिल्हयातील कार्य पध्दतीचा तसेच सरकारी आधुनिकीकरण या कार्यावर मोठया प्रमाणात भर देते. त्यामध्ये आर्थिक वर्षात वेगवेगळया क्षेत्रात वेगवेगळी धोरणे अवलंबून विकास साध्य करता येतो. विकास करणे सोपे आहे कारण त्याची धोरणे काही मजबूत प्रणाली मध्ये तयार आहेत. त्यांना असे आढळले की आमच्या स्थानिक स्वराज्य संस्था मोठया प्रमाणावर आपली कामगिरी योग्यरित्या पार पाडत आहेत. त्यांच्याकडे कमी प्रमाणात भागभांडवल आहे तरी त्या प्रादेशिक पेच प्रसंग आणि आर्थिक तसेच वेगवेगळया प्रकारच्या अडचणीवर मात करत आहेत. आणि त्यामध्ये केंद्र व राज्य सरकारे योग्य पध्दतीने मदत व मार्गदर्शन करून येण—या अडचणी वर मात करण्यासाठी मदत करणे गरजेचे आहे.

कुलकलनिसे.ए.आर. (१९७१)^{४०} यांना आपल्या अभ्यासामध्ये असे आढळले की, स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या काही मूलभूत अडचणी हया समाज आणि अर्थव्यवस्थेच्या परिवर्तनामध्ये एक नवीन ट्रेंड निर्माण करू पाहत आहेत.त्यांच्या या विचारांच्या मुद्दयावरून प्रादेशिक व राष्ट्रीय दृष्टिकानातून स्थानिक सरकारच्या समस्या या विषयावर शीर्षक मांडण्यात आले आहे.त्यांनी आधुनिक स्थानिक सरकारी पारंपारिक स्थित्यंतर यावर लक्ष केंद्रीत केले आहे. त्यामुळे आंतरराष्ट्रीय तुलना दृष्टीकोण, स्थानिक प्रशासनाची परिस्थितीत मुल्यांकनाची परिस्थितीत मुल्यांकन करण्याची फार अवघड गोष्ट आहे.गेल्या पन्नास वर्षांमध्ये पारंपारिक स्थानिक सरकार एक प्रयोग करणे सरकारला फारसे कठीण नाही.या अशा अनेक कारणामुळे स्पष्टीकरण देता येईल. संस्थेचे मुख्य तत्व भौगोलिक होते.त्यामुळे स्थानिक सरकारला मोठया प्रमाणावर विकासाची गती वाढीस मदत होते. पारंपारिक सोसायटी मध्ये मुलभूत समस्या सोडवण्यामध्ये स्थानिक सरकारला गती मिळते. केंद्र सरकार क्रियाशीलता व्याप्ती ऐवजी स्थानिक सरकारी स्वायत्त निर्णय झाले.त्यामुळे स्थानिक सरकारला मोठया प्रमाणात आर्थिक चढ—उतारांना तोंड द्यावे लागले.

बॉलल रॉय (१९८१)^{४१} यांनी आपल्या संशोधनामध्ये असे आढळले की,१९८० च्या कालावधीत राज्य आणि स्थानिक सरकार यांनी आर्थिक समायोजन योग्य प्रकारे केले गेले.

पूर्वीच्या काळी श्रीमंत राज्ये सार्वजनिक सेवा व त्यांच्यामध्ये गुणवत्ता आणण्यासाठी मोठया प्रमाणात संघर्ष करत आसत. त्याच बरोबर पूर्वीच्या काळी गरीब राज्यांनी नवीन लोकसंख्येच्या मागण्या आणि सर्व पुरवठ्याचा उच्चदर आणि अमेरिकन अर्थव्यवस्थाशी समायोजन करण्यासाठी मोठया प्रमाणावर प्रयत्न केला जाण्याची आवश्यकता वाटत होती. त्यांनी राज्याच्या वित्तीय धोरणात काही महत्त्वाच्या सूचना केल्या आहेत. राज्य आणि स्थानिक स्वराज्य, राष्ट्रीय नागरी धोरण व चांगल्या आर्थिक वर्षाच्या ऍडजेष्ट तत्त्वे आणि वास्तववादी वातावरण होत गेले त्यामुळे सरकार मोठया प्रमाणात सकारात्मक धोरण अवलंबण्यात सुरुवात झाली.

सारांश

प्रस्तुत संशोधन साहीत्यातून असे स्पष्ट होते की नागरी विकासाची व्याप्ती ही व्यापक स्वरूपाची आहे. प्रस्तुत संशोधनामध्ये काही मोजक्या बाबींचा समावेश केला असून नागरी वित्ताच्या स्रोतावर भर देण्यात आला आहे. नागरी विकास हा एक अत्यंत महत्त्वाचा घटक आहे. परंतु हा घटक संशोधन अभ्यासातून दुर्लक्षित झालेला आहे. एकूणच स्थानिक स्वराज्य संस्थासंदर्भात झालेल्या संशोधनात भर टाकण्याचा प्रयत्न केला आहे. म्हणून प्रस्तुत संशोधन अभ्यास हा नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिका व नागरी स्वराज्य संस्थांचा शहरी विकास आणि वित्तीय घडामोडींचा अभ्यास करण्याचा प्रयत्न केला आहे.

References

1. Jain R. B. (2001), Sociological and Environmental Implications of Urban Growth : A Study of Metropolitan Delhi, edited by Arora K. R. "People Centred Government" Alekh Publishers Jaipur, Duggar Building M. I. Road, Jaipur (India), p. 265.
2. Cheth Vaidya and Hitesh Vaidya (2002), Management Innovations for Municipal Resource Mobilization in India, Indian Infrastructure, Vol. 4, p. 58.
3. Gulati I. S. (1994), Economic and Political Weekly, Vol. 29, No. 40, pp. 2622-2624.

4. Prasad R. C. (1980), International Political Science Review/Revue International de science politique, Vol. 1, No. 2, p. 265.
5. Campbell Alan and Birkhead Guthrie (1976), Municipal Reform Revisited : The 1970, Compared with the 1920, edited by Alan and Bahl Roy, State and Local Government, The Political Economy of Reform, published by A Division of Macmillan Co. Inc. 866, Third Avenue, New York, p. 1.
6. Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur, p. 1.
7. Bahl W. Roy and Campbell K. Alan (1976), The Implication of Local Government Reform : Equity Cost and Administrative Dimensions, edited by Campbell and K. Alan and Bahl Roy, State and Local Government The Political Economy of Reform, A Division of Macmillan Publishing Co. Inc., 866, Third Avenue, New York, N. Y. 10022.
8. Kuklinsky A. R. (1971), Local Government as Promoter of Economic and Social Development, published by The International Union of Local Authorities, The Hague Netherlands.
9. Merriam E. Robert (1976), Multipurpose Districts Modernized Local Government and a More Systematic Approach to Servicing Assignments A Tripartite Strategy for Urban and Rural America, edited by Campbell K. Alan and Bahl W. Roy in his book State and Local Government The Political Economy of Reform, A Division of Macmillan Publishing Co. Inc., 866, Third Avenue, New York, N. Y. 10022.
10. Kamble, P. S. (2001), Finances of Kolhapur Municipal Corporation, unpublished Ph. D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur.
11. Ashraf ali (1960) Study of Kolkata Municipal corporation, unpublished Ph. D. thesis submitted to Mumbai University, Mumbai.

12. Madhav apte (1765) A study of Maratha Governments Economy, unpublished Ph. D. thesis submitted to pune University,pune
13. व्ही.जी.दांडेकर (१९७९) जिल्हा परिषद एक स्थानिक सरकार व विकास संस्था, अप्रकाशित पीएच.डी.प्रबंध पुणे विद्यापीठ, पुणे.
14. Miss. Palsuledesai (1920) a study of kalyan municipal corporation unpublished Ph. D. thesis submitted to Mumbai University, Mumbai.
15. Joshi.S.S (1979) Finance of Maharashtra Government, unpublished Ph. D. thesis submitted to pune University,pune
16. Nakudkar.B.S.(2006) A study Finances of Sindhudurg Zilla parishad , unpublished Ph. D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur.
17. Dhonde.S.V(2000) A study Finances of Village panchayat unpublished M.PHIL Dissertaion submitted to Shivaji University, Kolhapur.
१८. राजशिके.एन.वाय. (२०००) कोल्हापूर महानगरपालिका परिवहन (KMT) च्या प्रशासनाचा अभ्यास अप्रकाशित एम.फिल.प्रबंध शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर.
१९. शराविकर.वाय.जी.(१९८६) नाशिक जिल्हापरिषदेचे अर्थव्यवहार, अप्रकाशित पीएच.डी. प्रबंध पुणे विद्यापीठ, पुणे.
२०. महामुनी विजयकुमार (१९८७) कोल्हापूर महानगरपालिका कर अभ्यास विशेष संदर्भ ऑक्ट्राय अप्रकाशित पीएच.डी.प्रबंध शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर
२१. बेला मिना (१९९५) मुंबई महानगरपालिका अर्थव्यवहाराचा अभ्यास अप्रकाशित एम. फिल.प्रबंध, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई दृ
२२. चद्रशेखर.टी..(२०००)ठाणे महानगरपालिका अर्थव्यवहाराचा अभ्यास, अप्रकाशित पीएच. डी.प्रबंध मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्रकरण तिसरे

नगरपालिकांचे स्वरूप व शहरी विकास आणि सातारा जिल्हयाची

थोडक्यात ओळख

३.१ प्रस्तावना

सामाजिक शास्त्राच्या अनेक शाखा आहेत. त्यातील अर्थशास्त्र ही अत्यंत महत्त्वाची शाखा म्हणून ओळखली जाते. सामाजिक व राजकीय सलोखा व्यवस्थित राखण्याचे कार्य अर्थशास्त्र करते. सामाजिक शास्त्रातील अर्थशास्त्राचे संशोधन हा निरीक्षण, चिंतनाचा आणि अवलोकनाचा भाग आहे. अर्थशास्त्र ही समाजाची रक्तवाहीनी म्हणून ओळखली जाते. याषिवाय कुटुंबाचा, गावाचा, राज्याचा, राष्ट्राचा व जगाचा कारभार चालू शकत नाही. हा कारभार चालविण्यासाठी प्रत्येक टप्प्यावर आर्थिक नियोजन केलेले असते. त्यानुसार कार्यभार चालविला जातो. भारत हा जगातील सर्वात मोठा देश म्हणून ओळखला जातो. लोकसंख्येच्या दृष्टीने भारत हा जगात दुसऱ्या क्रमांकाचा देश आहे. स्वातंत्र्योत्तर काळामध्ये द्विगृही शासनप्रणाली भारतामध्ये आस्तित्वात आली. लोकसभा, विधानसभा, राष्ट्रीय व राज्य पातळीवरील लोकांच्या समस्या सोडविण्यात उत्तरोत्तर काळामध्ये कठीण होत चालले म्हणून भारतात नगरपालिकेची स्थापना करण्यात आली. भारतीय लोकशाही प्रशिक्षणाच्या स्तरावर स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या भूमिका व महत्त्वाविषयी लक्ष देवू शकले नाही व वर्तमान इतिहास विषेशत्त्वाने सांगतो की, स्थानिक स्वराज्य संस्थांची शक्ती यशस्वी व स्थिर लोकशाही प्रधान करण्यास सहाय्यभूत ठरते.

भारत देशामध्ये नगरपालिकेची व्यवस्था ही ब्रिटिशांच्या काळापासूनच चालू झाली असून ब्रिटिशांच्या काळामध्ये शिक्षण, नियंत्रण आणि जबाबदारी या वेगवेगळ्या उद्दिष्टांसाठी नगरपालिका कार्य करित असे. भारतामध्ये १९६५ च्या कायदानुसार नगरपालिकेची स्थापना झाली. त्या आधारावरच महाराष्ट्रातही याची सुरुवात झाली ती आजतागायत चालू आहे. नगरपालिका आपल्या वेगवेगळ्या माध्यमातून मिळणाऱ्या उत्पन्नातून आपले उद्दिष्टे पूर्ण करित असते. नगरपालिका हे नगरविकासाचे इंजिन मानले जाते. कारण शहराचा विकास हा नगरपालिकेवर अवलंबून असतो. सामाजिक विकास, शैक्षणिक विकास, सांस्कृतिक विकास, आर्थिक विकास इत्यादी विकासासाठी नगरपालिका कार्य करते. नगरपालिकेच्या माध्यमातून

चालणाऱ्या विविध उपक्रमांच्या माध्यमातून रोजागाराची उपलब्धता होते व स्थानिकांना रोजगार प्राप्त होतो.

भारत हा कृषिप्रधान देश आहे. जगाच्या अर्थव्यवस्थेचा विचार केल्यास केवळ कृषी क्षेत्रावर देशाचा विकास होवू शकत नाही. हे अमेरिका, इस्त्राईल, राष्ट्रांनी सिद्ध केले. सध्या भारतात नागरिकरणाची प्रक्रिया झपाट्याने सुरु झालेली आहे. वाढत्या लोकसंख्येबरोबरच वाढत्या प्रश्नांना नगरपालिकेला सामोरे जावे लागत आहे. त्यामुळे स्थानिक जनतेला नागरी सुखसोयी उपलब्ध करून देणे अवघड होत चाललेले आहे. नगरपालिका शहराच्या विविध विकासाची उद्दिष्टे साध्य करताना कर आकारत असते. करांच्या मात्रा नागरिकांना पेलतात का व कराच्या प्रमाणात लोकांना सेवा मिळतात. कोणत्याही देशाचा व राज्याचा विकास हा विविध भौगोलिक क्षेत्र, शिक्षण, स्वास्थ्य, दळणवळण यावर अवलंबून असतो. साधारणतः नगरपालिकेच्या माध्यमातून विकासाचा कायापालट कीतपत झाला, विकासात्मक कार्यांवर नगरपालिकेची होणारी गुंतवणूक, कमीतकमी गुंतवणूकीमध्ये शहराचा विकास कसा करता येईल, नगरपालिकेमुळे झालेला सामाजिक विकास, शैक्षणिक विकास, सांस्कृतिक विकास, आर्थिक विकासाचा अभ्यास करणे, नगरपालिकेचे खर्च उत्पन्नाच्या अंदाजपत्रकाचा अभ्यास करणे महत्वाचा आहे. स्थानिक नेतृत्वामध्ये कुशलतेचा अभाव, संधीसाधू राजकारण, नियोजनाचा अभाव, निधीचा अभाव, अशिक्षित कर्मचारी वर्ग, पाणी पुरवठ्याची समस्या या अनेक समस्यांनी नगरपालिका सध्या ग्रासलेल्या आहेत. त्यामुळे ज्या उदात्त हेतुने नगरपालिका स्थापन करण्यात आल्या आहेत त्या हेतू साध्य झालेले दिसून येत नाही. या संबंधित कार्याचा व अडचणीचा अभ्यास होणे आवश्यक ठरते.

महानगरपालिकांनी अनेक मुदयाविषयी ज्या श्रेणीवर महापालिकाचे प्रतिनिधी मर्यादित स्वरूपात निर्णय घेऊ शकतात व शहरातील विविध पायाभूत सुविधा आणि सेवांची उपलब्धता मध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ करू शकतात. तसेच मोठ्या-मोठ्या शहरामध्ये भांडवली बाजारातून संसाधने वाढवण्याची क्षमता आहे. त्या तुलनेने लहान शहरामध्ये संसाधनाची कमतरता आसुण त्यामुळे त्यांच्यावर मर्यादा पडतात. नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि राज्य विकास संस्था ह्या शहरी पायाभूत विकास सुविधा पुरवण्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात आपली योग्य भूमिका पार पाडत आसताना अपनाला दिसून येत आहेत. त्यासाठी राज्य सरकारने शहरी आव्हान फंड हा शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या विकासासाठी २००१-२००२ मध्ये तयार करण्यात आला. शहरी आव्हान फंड हा थेट स्थानिक स्वराज्य

संस्थाच्या सामान्य माणसापर्यंत विकास खर्च करण्यासाठी समर्थन आणि एक नवनिर्माण कार्यक्रमास त्यांच्या अंमलबजावणीचे महत्त्वाचे कार्य करते.आणि स्थानिक शहरी संस्था मुलभूत पायाभूत सुविधा पुरवण्यासाठी मोठया प्रमाणात मदत करते.

सन २००० मध्ये सर्वात अधिक शहरी व ग्रामीण लोकसंख्या म्हणून भारत देश हा जगात दुस-या क्रमांकावर होता. २००१ मध्ये भारतातील एकूण लोकसंख्ये पैकी २७.२८ टक्के लोक नागरी भागात राहत होते. तथापी, भारतातील शहरीकरणच्या प्रमाणात विकसित राष्ट्राच्या पेक्षा खूपच कमी होते.जागतिग शहरीकरणाच्या अहवाला मध्ये २००३ च्या आवृत्ती मध्ये असा अंदाज करण्यात आला की, २०३० साली भारत हा चिनच्या तुलनेत ग्रामीण लोकसंख्येत अग्रेसर राहिल. याचा अर्थ आसा की, जरी भारत हा जास्त शहरी लोकसंख्या तो कीमान काही वर्षे ग्रामीण म्हणूनच राहिल. भारतीय शहरीकरणाची २००१ ते २०११ ची परिस्थिती आपण खाली दाखवलेल्या तक्त्यात सविस्तर पणे पाहूया.

(लोकसंख्या कोटी मध्ये)

| | २००१ | २०११ | फरक |
|---------|-------|-------|------|
| भारत | १०२.९ | १२१.० | १८.१ |
| ग्रामीण | ७४.३ | ८३.३ | ९.० |
| शहरी | २८.६ | ३७.७ | ९.१ |

Census of India 2011 Rural Urban Distribution of Popoliation (Provisional Popoliation Total)

एकूण लोकसंख्येमध्ये गतीने वाढ होत असताना अपणाला दिसून येते. तर ग्रामीण भागात तर ती मंद गतीने वाढत आहे. पण शहरी भागात राहणा-या लोकसंख्येमध्ये जवळ-जवळ जास्त प्रमाणात वाढ होत असल्याचे आपणास वरील तक्त्यात दिसून येते.

लोकसंख्या वाढीचा दर

(लोकसंख्या वाढीचा टक्केवारीत)

| | १९९१-२००१ | २००१-२०११ | फरक |
|---------|-----------|-----------|-------|
| भारत | २१.५ | १७.६ | - ३.९ |
| ग्रामीण | १८.१ | १२.२ | -५.९ |
| शहरी | ३१.५ | ३१.८ | +०.३ |

(Census of India 2011 Rural Urban Distribution of Population (Provisional Population Total))

एकूण लोकसंख्येमध्ये मंद गतीने वाढ होत असताना आपणाला दिसून येते. तर ग्रामीण भागात तर ती अति मंद गतीने वाढत आहे.पण शहरी भागात राहणा-या लोकसंख्येमध्ये जवळ-जवळ सारख्या प्रमाणात वाढ होत आसल्याचे आपणास वरिल तक्त्यात दिसून येते.

३.२ नगरपालिकेची उत्पत्ती :-

इ.स.पूर्व काळात तसेच हाडप्पा संस्कृती आणि त्यात अंतर्भूत होणाऱ्या अनेक घटकाचे स्वरूप फार व्यापक आणि गुंतागुतीचे झाले होते. त्याचबरोबर प्राचीन कालखंडात भारतात सुमारे ५५०० हजार वर्षापूर्वी सिंधू संस्कृतीच्या कालखंडात नगरे अस्तित्वात होती. नागरी सुख-सोयी, स्वास्थ्य, आरोग्य, दळणवळण, धार्मिक वास्त, शासकीय संस्था या वेगवेगळ्या स्वरूपाचे कार्य हे नगरातील विशिष्ट संस्था करत असे यातच स्थानिक स्वराज्य संस्थेचे कार्य हे नगरातील विशिष्ट संस्था करत असे यातच स्थानिक स्वराज्य संस्थेचे अस्तित्त्व दिसून येते. मात्र खाजगी विश्वासाहर्ता लोकशाहीकृत नसलेली संस्था हे कार्य करत असे. त्यामुळे ही संस्था कायदेशीर नसली तरी नगरपालिकेचेच कार्य करताना दिसून येते.

भारतीय नागरी स्वराज्य संस्थेच्या उत्क्रांतीचा हा अतिशय प्राचीन आणि वैदिक काळात जेव्हा सर्वत्र 'ग्रामगणराज्याची' स्थापना होत होती. त्यावेळी राज्यसत्ताक पद्धती अस्तित्वात येवून लहान लहान गणराज्ये स्थापन होत होती. स्वातंत्र्यपूर्व काळात ब्रिटीष सरकारही विविध स्वराज्य संस्थेचे कायदे करून स्थानिक कार्यभार सुरळीत करण्याचे प्रयत्न

करत होते. “१६८७ साली मद्रासमध्ये ‘म्युनिसिपल कार्पोरेशन स्थापन करण्यात आले होते.” १८४२ साली बंगालमध्ये म्युनिसिपालटी स्थापन करण्याचा कायदा करण्यात आला होता पण त्याचा उपयोग झाला नाही. म्हणून १८५० च्या कायद्याने भारतात नगरपालिका स्थापन करण्याचा अधिकार केंद्र सरकारला मिळाला. १८५० च्या नंतरच्या काळात १५ ते २० वर्षांनी अनेक शहरात पुणे, सोलापूर, ठाणे, नाशिक, बारशी, सातारा, कोल्हापूर, वाई इ. ठिकाणी नगरपालिका स्थापन झाल्या होत्या.

नगरपालिका स्थापन करण्याचा सरकारने निर्णय घेतला. गव्हर्नर नऊ ते पंधराजणांची ‘म्युनिसिपल कमिशनर’ म्हणून नियुक्ती करित असते. वेगवेगळ्या जातीधर्मातील लोकांमधील जे प्रतिष्ठित नागरिक असतील त्यांना ‘पंच’ म्हणून नेमणूक केले जात होते. पूर्वी नगरपालिकेचा अध्यक्ष हा जिल्हाधिकारी असे. हे अधिकारी सरकार नियुक्त करत असल्याने त्यात जनतेचा सहभाग राहत नसे म्हणून १८७० या कायद्याने ‘लॉर्ड मेयो’ याने या संस्थेमध्ये जे कर भरतात त्यांनाच मतदानाद्वारे प्रतिनिधी निवडण्याचा अधिकार दिला होता. परंतु लॉर्ड रिपनच्या ठरावामुळे नागरी प्रशासनात अधिक सुधारणा झाल्या आहेत. तसेच लॉर्ड मेयोच्या ठरावात स्वातंत्र्याच्या प्रेरणेला जीवनदान देण्याचा प्रयत्न केला. परंतु त्याचा मुख्य उद्देश नेहमी साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्थेला सहाय्य करणे हाच होता. भारतातील निवडणूक पद्धती सुरु करण्यासाठी व नागरी कार्य वाढविण्यासाठी १८७१ ते १८७४ या काळात नागरी कायदे करण्यात आले याचा कायदा मुंबई सरकारने घेऊन जुन्या कायद्यात बदल केला. १८७३ मध्ये एक नवीन कायदा तयार केला. या कायद्यामुळे काही कोर्टाचा इतरावर दावा करण्याचा अधिकार या सस्थांना प्राप्त झाला. १० हजारांवर लोकसंख्या असलेल्या शहरांचा शहरपालिका आणि २ हजारांपेक्षा पण १० हजारांपेक्षा कमी लोकसंख्या असलेल्या शहरांना नगरपालिका असे म्हणण्यात येऊ लागले. ही पद्धत शहर पालिका शहर पालिकात निवडणूक पद्धती १८८२ पासून सुरु झाली.

लॉर्ड रिपनने १८८३ साली व्यवस्थित पद्धतीवर स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे धोरण आखण्याचे प्रयत्न केले. छोट्या शहरांचाही विकास व्हावा यासाठी आवश्यक ती तरतूद करणारा ‘बॉबे डिस्ट्रिक्ट’ म्युनिसिपॅटिज अॅक्ट’ १९०१ मध्ये करण्यात आला. या कायद्यामुळे नगरपालिकेच्या कार्यात व रचनेस स्वातंत्र्य देण्यात आले होते.

१९१८-१९ च्या मॉटेग्यु-चेम्सफर्ड सुधारणेनुसार नगरपालिकेत संपूर्ण तथा निवडणूकीचे तत्त्व स्वीकारले गेले. यामध्ये मतदानाचा हक्क विशिष्ट कर कींवा आयकर भरणाऱ्यांना देण्यात होता. याचवेळी नगरपरिषदासाठी आवश्यक आणि ऐच्छिक कार्याची सूची तयार करण्यात आली. करदात्याची मर्यादीत रक्कम कमी केल्यामुळे मतदारांची संख्या वाढली. म्हणून सदस्यांची संख्या वाढली होती. एकूण सदस्यांपैकी एक पंचमांश सदस्यांची नेमणूक सरकार तर्फे होऊ लागली. मोठ्या शहरातील नगरपालिकांसाठी सुधारलेला कायदा १९२५ मुंबई शहर पालिका कायदा १८ (Bombay City Municipality Act. XVII) करण्यात आला. नगरपालिकेच्या निवडणूकीत प्रौढ मताधिकाराचे तत्त्व स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर स्वीकारले गेले.

महाराष्ट्राच्या विविध भागामध्ये नगरपालिकेविषयक वेगवेगळे कायदे होते. (पश्चिम महाराष्ट्रात बाँबे डिस्ट्रिक्ट म्युनिसिपल ॲक्ट १९०१ व बाँबे म्युनिसिपल बेरोज ॲक्ट १९२५, विदर्भात सेंट्रल प्रॉव्हिन्सेस ॲंड बेरार म्युनिसिपॅलिटीज ॲक्ट १९२२ आणि मराठवाड्यात हैदराबाद म्युनिसिपॅलिटिज ॲक्ट १९५६ अस्तित्वात होते. या सर्व कायद्यांचे एकसुत्रीकरण करणे व यात काही महत्त्वाच्या सुधारणा करणे याबाबत अभ्यास करून सरकारकडे शिफारशी करण्यासाठी त्यावेळचे तत्कालीन नगरविकासमंत्री डॉ. झकेरिया यांच्या अध्यक्षतेखाली १९६३ मध्ये एक समिती नेमण्यात आली. त्यांच्या या शिफारशी अहवालातील मुख्यशिफारशी स्वीकारून महाराष्ट्र सरकारने १९६५ साली महाराष्ट्र नगरपालिका अधिनियम हा कायदा करून घेतला व महाराष्ट्रातील सर्व नगरपालिकांना एकसुत्रीकरण प्राप्त झाले व त्याची अंमलबजावणी ही जून १९६७ पासून करण्यात आली.

३.३ नगरपालिकेची व्याख्या आणि संकल्पना (Some Definitions and Concept about Urbanization)

शहरातील नागरिकांना सुख-सोयी पुरविण्याचे कार्य करणे म्हणजेच घरबांधणी, दिवे, पाणी पुरवठा, गटारे, प्राथमिक शिक्षण इत्यादी सोयी पुरविण्याचे काम हे नगरपालिका करीत असते. शहरात नागरी सुख-सोयी पुरवण्याचे काम करणाऱ्या स्थानिक स्वराज्य संस्थेलाच नगरपालिका असे म्हणतात. नगरपालिका हे शहराचे पालकत्व करीत असते. या पालकत्वाच्या कार्याबरोबरच ते सुख-सोयी, न्याय आणि संरक्षण या संदर्भातही कार्य सुरळीतपणे करते. या कार्यामुळे नगरपालिकेचे महत्त्व मोठ्या प्रमाणात दिसून येते. “शहरात

नागरी सुख-सोयी बरोबरच न्याय आणि संरक्षण या संदर्भातही कार्य करणाऱ्या एक कायदेशीर सल्लागार मंडळाच्या स्थानिक स्वराज्य संस्थेला नगरपालिका असे म्हणतात.”

शहरीकरण आणि नागरी वृद्धी; (Urbanization and urban Growth)

शहरीकरणाच्या संकल्पनेमध्ये सर्वसाधारण पणे असे समजले जाते की शहरी भागातील लोकसंख्येचे प्रमाण हे एकूण लोकसंख्येमध्ये वाढणे कींवा नागरी लोकांचे राहणीमान वाढणे होय. एखादी व्यक्ती कींवा कुटूंब हे भौगोलिक दृष्ट्या ग्रामीण भागात कींवा खेड्यात राहात असेल आणि उच्चतम आर्थिक राहणीमाणे जगत असेल त्या व्यक्ती कींवा कुटुंबाला नागरिकरणाच्या संकल्पनेत समाविष्ट करता येते. अर्थशास्त्राच्या परिभाषेत कृषी व्यतिरीक्त इतर व्यवसायातील जसे दुय्यम कींवा तृतीय क्षेत्रातील लोकांचे वाढते अवलंबन म्हणजे शहरीकरण होय.

नागरी वृद्धी ही सर्वसाधारणपणे नागरी भागाच्या विकासावरती भर देते. थोडक्यात नागरी वृद्धी होऊ शकते जर लोकसंख्या वृद्धी दर हा ग्रामीण आणि शहरी भागात जास्त कींवा कमी फरकाने एकच असल्याचे अपणास दिसून येते.

१. **अँडरसन नेलसन** (१९५७) यांच्या मते नागरिकरण हे फक्त लोकांना ग्रामीण भागातून शहरामध्ये स्थानांतर करणे आणि शेती आधारीत कामावरून लोकांना शहरी भागातील व्यवसायामध्ये गुंतवणे इतकेच अपेक्षित नसून ते व्यापक स्वरूपाचे आहे. त्यांच्यामते शहरीकरणाच्या प्रक्रीयेत लोकांची सामाजिक मूल्ये, विचार आणि वर्तन यामधील मूलभूत बदलांचा समावेश करावा लागेल.
२. **जाकोबसन आणि वेदप्रकाश** (१९७१) यांनी नागरिकरणाचे वर्णन असे केले की नागरिकरण ही एक प्रक्रीया असून जिच्यामध्ये लोकसंख्येच्या बदलणा-या सामाजिक निर्बंधाने जास्त प्रमाणात असतात. नागरी करणाचा अभ्यास हा स्थूल पातळी दर्शवतो. आणि एकदया शहराचा अभ्यास हा सूक्ष्म पातळीवरील इंद्रिय गोचर अभ्यासाचे प्रतिनिधित्व करतो की, ज्याची रचना अखंड आहे.
३. **मिचेल जस्टिन सी ब्रीसे जेराल्ड** (१९६९) त्यांच्यामते, कृषी क्षेत्रातील लोकांचे अवलंबन कमी करून त्यांना शहरांमध्ये वेगवेगळ्या व्यवसायासाठी प्रेरित होणे आणि स्थानांतर करणे म्हणजेच शहरीकरणाची प्रक्रीया होय.

प्राचीन काळामध्ये नगरपालिकेचे कार्य हे सभेद्वारे चालविले जात असते. यामध्ये एक मुख्यअधिकारी व त्याच्या मदतीत तीन अध्यक्ष नेमलेले असत यांच्या मदतीने नगरात शांतता व सुव्यवस्था राखला जात असे. "प्राचीन काळी प्रत्येक नगराची व्यवस्था पाहण्यासाठी एक सभा असे, तिला पौरसभा असे नाव होते. त्या सभेचे कार्य हे नगरपालिकेप्रमाणेच होते." "नगरपालिका म्हणजे प्रातिनिधिक लोकशाहीचे शिक्षण व अनुभव देणारी स्थानिक स्वराज्य संस्था होय."

वरील प्रमाणे नगरपालिकेचा अर्थ देण्यात आले आहे. नगरपालिकामध्ये जे प्रतिनिधी नागरिकांकडून प्रत्यक्ष पद्धतीने निवडून येतात. त्यामुळे त्यांना लोकशाही पद्धतीचे माहिती व अनुभव या संस्थाकडून मिळते.

३.४ नगरपालिकेची रचना :-

विसाव्या शतकाच्या सुरुवातीपासूनच नागरी भागात 'स्थानिक स्वराज्य संस्था' स्थापन करण्याकडे लक्ष देण्यात आले. ब्रिटीश शासनाने भारतीय नागरिकांना राजकीय शिक्षण व अनुभव देण्यासाठी प्रथमतः स्थानिक स्वराज्य संस्था स्थापन करण्याचा प्रयत्न सुरू केला होता. १९०१ मध्ये 'बॉम्बे डिस्ट्रीक्ट मुन्सिपॅलिटीज ॲक्ट' कायदा करण्यात आला व त्यानुसार वेगवेगळ्या राज्यात यासंबंधीचे कायदे मान्य करण्यात आले. स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर इ.स. १९५६ मध्ये राज्याची पुनर्रचना करण्यात आली आणि या बदललेल्या परिस्थितीत राज्याच्या वेगवेगळ्या भागात एकसुत्रता आणण्यासाठी नगरपालिकासाठी कायदा करण्यात आला.

एखाद्या भाग नागरी म्हणून जाहीर करण्यासाठीचे त्या ठिकाणी लोकसंख्येची जी अट घातली आहे ती अट ज्या भागात पूर्ण असेल त्या भागात नियमानुसार नगरपालिका आस्तित्वात आणली जाते. भारतामध्ये वेगवेगळ्या राज्यात वेगवेगळ्या संख्यानुसार नगरपालिका स्थापन करण्यात येतात.

तक्ता क्र. १.१.

भारतातील नगरपालिकांच्या स्थापनेसाठी राज्यनिहाय आवश्यक लोकसंख्येचा तक्ता

| अ. क्र. | राज्य | लोकसंख्या (हजारात) |
|---------|-------------|--------------------|
| १. | महाराष्ट्र | १५००० |
| २. | पंजाब | १०००० |
| ३. | बिहार | ५००० |
| ४. | उत्तरप्रदेश | २०००० |
| ५. | आंध्रप्रदेश | २५००० |

वरील तक्त्यामध्ये नगरपालिका स्थापन करण्यासाठी वेगवेगळ्या राज्यात समंत केलेल्या कायदानुसार महाराष्ट्रात १५००० लोकसंख्येची आवश्यकता आहे व त्याच प्रकारची नगरपालिका स्थापन करण्यासाठी पंजाब मध्ये १०,००० लोकसंख्येची आवश्यकता आहे. बिहारमध्ये ५०००, उत्तरप्रदेशात २०,००० व आंध्रप्रदेशामध्ये २५००० लोकसंख्येची अट आहे. आपल्या लक्षात येईल की, भारतामध्ये वेगवेगळ्या राज्यामध्ये नगरपालिका स्थापन करण्यासाठी वेगवेगळ्या लोकसंख्येच्या अटी यावरून दिसून येतात.

१९६० मध्ये महाराष्ट्र राज्याचे आस्तित्व निर्माण झाले. १९६५ च्या कायदानुसार महाराष्ट्रामध्ये १५००० पेक्षा कमी लोकसंख्या नसलेल्या क्षेत्राला महाराष्ट्र शासन नगरपालिका म्हणून जाहीर करू शकते. १९६५ च्या पूर्वी नगरपालिका स्थापन करण्यासाठी लोकसंख्येची अट ही १०००० होती. आस्तित्वात आलेल्या नवीन कायदानुसार यामध्ये वाढ करण्यात आली. शासकीय राजपत्रामध्ये ही घोषणा करण्यात आली. १५००० पेक्षा कमी लोकसंख्या असलेल्या ठिकाणी नगरपालिका आस्तित्वात असेल तर त्या रद्द करून त्या ठिकाणी ग्रामपंचायत स्थापन करण्याचा अधिकार देण्यात आला.

महाराष्ट्रामध्ये नगरपालिकाचे लोकसंख्येनुसार 'अ-वर्ग, ब-वर्ग व क-वर्ग' अशी विभागणी करण्यात आली. ही विभागणी आपल्याला पुढील कोष्टकात पाहता येईल.

तक्ता क्र. १.२

महाराष्ट्रातील नगरपालिकेची वर्गानुसार लोकसंख्या व सभासदसंख्या दर्शविणारा तक्ता

| वर्ग | लोकसंख्या | सभासद संख्या |
|------|---------------------------|------------------|
| अ | ७५००० पेक्षा अधिक | कीमान ४० कमाल ६० |
| ब | ३०००० ते ७५००० | कीमान ३० कमाल ४० |
| क | ३०००० कीवा त्यापेक्षा कमी | कीमान २० कमाल ३० |

संदर्भ :- महाराष्ट्र म्युनिसिपल कौन्सिल, नगरपंचायत अँड इंडस्ट्रीयल टाऊनशीप अँक्ट १९६५.

३.५ नागरी विकासाचे घटक : Factors of Urban Development

१९९२ च्या घटना दुरुस्ती कायदानुसार महापालिका सरकारला घटनात्मक दर्जा प्राप्त झाला आहे.त्यांच्या विस्तृत अटीमध्ये महापालिकांच्या जबाबदारीची विस्तृत स्वरूपामध्ये आणि स्वतंत्र राज्य वित्त आयोग, खर्च आणि उत्पन्न सोपवून त्यांचे कार्य व राज्य आणि स्थानिक स्वराज्य संस्था यांच्या दरम्यान आर्थिक संबधाविषयी विचार व्यक्त केले आहेत. परिणामी वेगवेगळ्या राज्यात अमेरिका मधील असणा-या शहरी भागातील कामाची गुणवत्ता यामध्ये मोठ्या प्रमाणात तफावत आसल्याचे चित्र आढळून आले आहे.त्यावर राज्य वित्त आयोगाच्या शिफारसी व त्यांचे स्वरूप यावर मार्गदर्शन करण्यांचा प्रयत्न करण्यात आला आहे. अनेक राज्यामध्ये महापालिका सेवा देण्यात आणि त्यांच्या व्यवस्थपणात नियोजन संबंधित प्रशासकीय शक्तीच्या एकाकडून दुस-याकडे सोपवण्याच्या कृती आढाप यशस्वी झालेल्या नाहीत. स्थानिक स्वराज्य संस्था कडून पुरवल्या जाणा-या सेवा सुविधामध्ये अपेक्षित सुधारणांचा एक भाग म्हणून विकेंद्रीकरणाच आधारावर खर्च करण्याची जबाबदारीची जाणीव विकसीत करून देण्यात आली.

१. नागरी पाणी पुरवठा :(Urban Water Supply)

मानवाच्या तीन मुलभूत गरजा आहेत.त्यापैकी पाणी ही अत्यंत महत्त्वाची गरज मानली आहे.शहरी भागामध्ये लोक मोठ्या प्रमाणावर राहात असून त्यामुळे त्यांना मुबलक पाणी वेळेवर अवश्यक पुरवणेही अत्यंत महत्त्वाचे काम आहे. कारण त्यांचे राहणीमान उच्च प्रतिचे असते. भारतामध्ये स्वच्छ पिण्याचे पाणी आणि आरोग्य विषयक सार्वजनिक स्वच्छता ही राज्य आणि महापालिका सरकारचे महत्त्वाचा विषय बनलेला अपणाला दिसून येत आहे. तथापि भारत सरकारच्या नगर विकास मंत्रालयाच्या

माध्यमातून नागरी पाणी पुरवठा व स्वच्छता कार्यक्रमाच्या देखरेखीसाठी राज्य सरकारला स्वच्छतेविषयी व स्वच्छता कार्यक्रमांच्या अमलबंजावणी साठी मार्गदर्शन करते.

२. नागरी वाहतूक : (Urban Transport)

देशातील अनेक मोठी शहरे ,नगरे एकमेकांना जोडणे हे रस्ते, रेल्वे, आणि हवाई मार्ग यांचा मोठ्या प्रमाणात विकास झाल्यामुळे मोठी मोठी शहरे एकमेकांना जोडणे हे सहज शक्य झाले आहे.मोठ्या प्रमाणात अर्थव्यवस्थेच्या सुधारणेला गती देण्यासाठी आणि अर्थव्यवस्थेच्या विकासासाठी मोठ्या प्रमाणात वाढणा-या लोकसंख्येला आळा घालून शहरी भागाच्या आर्थिक प्रगतीवर लक्ष केंद्रीत करणे आवश्यक बाब बनली आहे.नागरी वाहतूक ही शहरी भागाच्या विकासाचा मुलभूत पाया आहे .वाहतुकीचा विकास न करता प्रादेशिक विशेषीकरण करणे ही अशक्य बाब आहे. म्हणून वाहतुकीचे स्थान,कार्य,घनता व आकार यावर मोठ्या प्रमाणात नागरी भागात संसाधने पुरवणे गरजेचे आहे. त्यामुळे नागरी कार्यक्षमता आणि वाहतुक व शहरीकरण यांच्या मध्ये उच्चस्तारिय कार्यक्षमता निर्माण करणे गरजेचे आहे.

३. नागरी गृहनिर्माण (Urban Housing)

स्वतंत्र घर ही मानवाच्या मुलभूत गरजांपैकी एक गरज मानली जाते. भारतामध्ये साधारणतः स्टाईल कीवा आर.सी.सी छप्पर आणि छप्परांच्या भिंतीच्या, विट कीवा चिखल अशा प्रकारच्या साधनांचा वापर केला जातो. गृहनिर्माणाची आधुनिक संकल्पना ही कुटुंबातील सर्व मुलभूत गरजा पूर्ण करणे हा त्या मागील मुलभूत उद्देश असतो. भारतात शहरी भागातील सर्वात जास्त लोकसंख्या झोपडपट्टीत राहते. सध्या शहरामध्ये मोठ्या प्रमाणात घरांची व जागेची कमतरता जाणवत आहे. आणि जी उपलब्ध जागा आहे त्या मध्ये पोटमाळे प्रकारच्या दर्जाच्या इमारती आहेत म्हणून मोठ्या प्रमाणात औद्योगिकीकरण ही शहरी भागात झाल्यामुळे गृहनिर्माणाच्या समस्या शहरीभागामध्ये मोठ्या प्रमाणात जाणवू लागल्या आहेत.

४. शहरी पर्यावरण (Urban Environment)

पर्यावरणाचा सर्वात मोठा परिणाम हवा, पाणी, जमीन यांच्यावर अधिक प्रभाव पाडत आहे. त्यामुळे मानवी आरोग्यावर शहरी भागात राहणा-या लोकांच्या जीवनात परिणाम

जाणवत असलेला आपणास दिसून येत आहे. त्यालाच भौतिक पर्यावरण असे म्हणतात. त्यामध्ये जमीन, हवा आणि पाणी यांचा अगदी जवळचा संबंध आहे. सांस्कृतिक वातावरणामध्ये मानवी नियंत्रित उद्योग रस्ते, घरे इत्यादीचा मोठ्या प्रमाणावर समावेश होतो. दिवसेंदिवस शहरी भागातील लोकसंख्या वाढत चाललेली दिसून येत आहे. त्यामुळे शहरी भागातील प्रदुषणामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ होत चाललेली आहे. ती रोखणे कींवा नियंत्रित करणे अत्यंत आवश्यक बाब आहे.

५. शहरी रोजगार (Urban Employment)

शहरी भागामध्ये उपलब्ध होणारा रोजगार ही शहरी भागात राहणा-या लोकांसाठी एक वरदान बनून आलेली संधी आहे. शहरी भागात उपलब्ध असलेल्या रोजगार सध्या वेगवेगळ्या स्वरूपात म्हणजे प्रशासकीय कामकाज, वाहतूक कामगार, औद्योगिक कामगार, घरगुती औद्योगिक कामगार, शैक्षणिक कामगार, मनोरंजन कामगार आणि व्यापार व वाणिज्य. घरकाम इत्यादी मध्ये मोठ्या प्रमाणात रोजगार संधी उपलब्ध असल्याचे चित्र आहे. शहरी भागातील लोकांना सांस्कृतिक कार्यांमधून सुध्दा रोजगार उपलब्ध होतो. बहुतांशी शहरी भागातील मुले आणि अकुशल कामगार सदस्य म्हणजेच कायदयानुसार ज्यांना कामगार म्हणून मान्यता नसलेल्या कामगारांची संख्या सुध्दा जास्त प्रमाणात आढळते. आणि त्याच्या वरून आपणाला असे दिसून येते की शहरी भागातील लोकसंख्येमध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ होत असल्याचे धोतक असल्याचे आढळते.

६. शहरी शिक्षण (Urban Education)

भारताच्या राज्यघटनेनुसार शासन सर्वांना शिक्षण मोफत उपलब्ध करून देण्यात आलेले आहे. हे राज्य सरकारचे आणि केंद्र सरकारचे काम आहे. पण वैज्ञानिक व तांत्रिक उच्च शिक्षण क्षेत्रात समन्वय आणि मानक देखरेखीसाठी राष्ट्रातील महत्त्वाची केंद्रीय विद्यापीठे आणि संस्थादेखील केंद्र सरकारच्या व राज्यसरकारच्या कामात सिंहाचा वाटा उचलत असल्याचे चित्र आपणास दिसून येत आहे. त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात उच्च शिक्षण आणि चांगल्या प्रकारचे संशोधन या बाबींना अत्यंत महत्त्वाचे स्थान देण्यात आलेले आहे. इतर देशांतील संस्कृती आणि शैक्षणिक करार हे इतर देशांबरोबर करत असताना भारतातील विद्यापीठाचे कल्याण व विविध राज्यातील संशोधन व दुय्यम शिक्षणा दरम्यानचे शैक्षणिक आणि उच्च शिक्षण हे विद्यापीठाच्या निर्देशन आणि नियंत्रण याबाबीवर मार्गदर्शन

करते. एका उच्च स्तरीय सल्लागार समितीच्या वतीने विद्यापीठ व विद्यापीठआंतर्गत येण्या-या सर्व शैक्षणिक सुधारणांसाठी विविध समित्या आढावा घेत असतात. आणि त्यामुळेच देशामध्ये मोठ्या प्रमाणात उच्च विद्याविभूषित पदवी विद्यापीठाकडून पुरवण्याचे अखंडपणे सुरु आहे. आणि त्यामुळेच तर शहरी भागात रोजगार संधी उपलब्ध होत आहेत.

७. शहरी सार्वजनिक आरोग्य (Urban Public Health)

सध्याच्या जगामध्ये मानवी इतिहासात शहरी भागातील लोकसंख्या उच्च पातळीच्या दराने व शहरी भागात मोठ्या प्रमाणात लोकसंख्या वाढत असल्याचे चित्र आपणास दिसून येत आहे. आणि आपण ही वाढ शहरीकरण म्हणून ओळखत आहोत शहरी भागाची वाढ ही शहरी करणाची ओळख म्हणून पहात असताना शहरी पर्यावरणाकडे सुध्दा लक्ष देणे अत्यंत महत्त्वाची बाब आहे. वाढत्या शहरी करणामुळे मोठ्या प्रमाणावर पर्यावरण दुषित होवून त्याच्या परिणाम शहरी भागात राहणा-या लोकांच्या आरोग्यावर होत असल्याचे चित्र दिसत आहे. त्यामुळे महानगरपालिका आणि सरकारला मोठ्या प्रमाणात आरोग्य विषयक सुविधामध्ये वाढ करण्याची आवश्यकता भासणार आहे तरच शहरी भागातील पर्यावरण प्रदुषण विरहीत आणि सार्वजनिक आरोग्य चांगल्या प्रकारचे राहण्यास मदत होईल.

८. घनकचरा व्यवस्थापन (Solid Waste Management (SWM))

घनकचरा संकलन उपचार आणि विल्हेवाट खर्च हा महापालिका सरकारकडून विविध माध्यमातून कमी करण्याचा प्रयत्न करण्यात येत आहे. घनकचरा व्यवस्थापनासाठी सुधारित नाविन्यपूर्ण तांत्रिक सुधारणा करून महापालिकांचे उत्पन्न वाढवण्यासाठी मोठ्या प्रकल्पांचा शोध घेण्याचा प्रयत्न करण्यात येत आहे. महापालिका अनेक पध्दतीने खाजगी स्वरूपात शहरी भागातील घनकचरा प्रक्रीया व्यवस्थापन खर्च कमीत कमी करून जास्तीत जास्त उत्पादन करण्याचा प्रयत्न करत असल्याचे आपणास दिसून येत आहे आणि त्यातून नगरपालिकांचे शहरी भागातील घनकचरा व्यवस्थापन योग्य रितीने केल्यास शहरी भागात राहणा-या लोकांच्या आरोग्यावर कोणत्याही प्रकारचा परिणाम होणार नाही याची दखल घेत आहे.

९. वेगवान वाहतूक प्रणाली (Mass Rapid Transport System)

बहुतांश प्रमुख शहरात सध्या वेगवान जलद वाहतूक प्रणाली विकसित झाल्याचे आढळून येत आहे. अनेक मोठी व विकसित शहरे या दिशेने वाटचाल करत असताना

आपणाला दिसून येत आहे. खरतर शहरी वाहतूक ही नागरी पायाभूत सुविधा यांच्या कणा मानला जातो. परंतु नागरी मुलभूत सुविधा ह्या सर्वात महत्त्वाचे घटक म्हणून विविध कारणांच्यामुळे यांच्याकडे दुर्लक्ष होत असल्याचे आपणास दिसून येत आहे. तथापि रस्ते व रेल्वे वाहतूक यांच्यात अत्यंत मर्यादित प्रमाणात वाढ व विकास झाल्याचे आपणास आढळून आले आहे. देशातील केवळ मोजक्याच मोठ्या शहरात शहरी बस सेवांचे आयोजन करण्यात आले आहे. आणि फक्त मुंबई, कलकत्ता आणि चेन्नई या उपनगरामध्ये अंतर्गत रेल्वे सुविधा उपलब्ध करून देण्यात आलेली आहे. त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात विकास करण्याची गरज असल्याचे दिसून येते.

१०. शहरी लघु व्यवसाय (Scheme for Urban Micro Enterprises)(SUME)

१९८९ मध्ये सुरू करण्यात आलेल्या नेहरू रोजगार योजनेअंतर्गत शहरी भागातील लोकांना रोजगार उपलब्ध करून देण्यात आला. ही योजना दारिद्र्य रेषेखालील लोकांच्या राहणीमानामध्ये व आर्थिक सक्षमीकरणासाठी सुरू करण्यात आली. या योजनेचा मुख्य उद्देश बेरोजगारांना प्रोत्साहित करणे हा होता आणि लोकांना या योजनेअंतर्गत अनुदान आणि बँक कर्ज यांच्या मदतीने स्वयंरोजगार उपलब्ध करून देण्यास मदत झाली १९८९ च्या जनगणना अहवालानुसार १०००० हून अधिक महानगर भागात व शहरात आणि गावांमध्ये दारिद्र्यरेषे खालील लोकांना रोजगार मिळाला होता. या योजना जनतेपर्यंत योग्य रितीने पुरविण्याचे काम स्थानिक स्वराज्य संस्था करत असताना आपणास दिसून येते.

११.आपत्ती व्यवस्थापन (Disaster Management)

सामाजिक सुरक्षा योजनांची अंमलबजावणी करत असताना अनेक मोठ्या प्रमाणावर निर्माण होणा-या नैसर्गिक संकटाना मोठ्या प्रमाणात सामोरे जावे लागत आहे. त्यामुळेच मोठ्या प्रमाणात जिवित व वित्तीय हानी होत असल्याचे आपणास दिसून येते . दर वर्षी निर्माण होणा-या नैसर्गिक दुष्काळ, चकीग्र वादळ, पूर, भूकंप या मुळे मोठ्याप्रमाणात जीवित हानी होत असते. त्यामुळे आपत्तीग्रस्त लोकांना मदत व पुनर्वसन करण्यासाठी योग्य प्रकारे राष्ट्रीय सेवा योजनेअंतर्गत एक प्रभावी मॉडेल तयार करण्याची आवश्यकता असल्याचे चित्र निर्माण झाले आहे. त्यामध्ये बहुधा वैद्यकीय मदत, विधीग्राहयता लाभ वाचलेल्या लोकांचे संगोपन व मातृत्व संरक्षण, बालक संरक्षण तसेच सामाजिक सुरक्षितता वाढवण्यासाठी

मोटया प्रमाणात प्रयत्न करणे सरकारला आवश्यक आहे. त्या दृष्टीने स्थानिक स्वराज्य संस्थांनी राज्य व केंद्र सरकारकडून योग्य ती मदत व मार्गदर्शन घेणे आवश्यक आहे.

३.६ सातारा जिल्ह्याची थोडक्यात ओळख

१. जिल्ह्याच्या पुनर्रचनेचा इतिहास

भारताच्या एकूण लोकसंख्येपैकी १/३ पेक्षा जास्त लोकसंख्या शहरी भागात राहात आहे. भारतामध्ये एक दशलक्षपेक्षा जास्त लोकसंख्या आसणारी ३५ शहरे असून या शहरामध्ये जवळपास एकूण नागरी लोकसंख्येच्या ३७ टक्के लोक या शहरामध्ये राहतात. सध्या भारतामध्ये शहरीकरण हे काहीशा माध्यमातून गती प्राप्त झालेली आपणास दिसून येत आहे. यामुळे भारत सरकारच्या नविन अर्थिक धोरणाचा शहरी उत्पादकता आणि लोकसंख्येची सभाव्य वाढ ही शहरी केंद्रामध्ये आधारभूत संरचनेच्या गतीरोधामुळे उत्पादकता वाढवण्यामध्ये व शहरी विकासाचा वेग वाढवण्यामध्ये मोठया प्रमाणात अडथळा ठरत असल्याचे आपणास दिसून येत आहे. सन १८४८ मध्ये सातारा जिल्ह्याचे (पूर्वी या जिल्ह्यास सातारा प्रांत म्हणून संबोधले जात होते) पुढीलप्रमाणे ११ शासकीय विभाग होते. विजापूर (सध्या कर्नाटक), जावली, कराड, खानापूर, खटाव, कोरेगाव, पंढरपूर, सातारा, तासगाव, वाळवा, व वाई. सन १८५६ मध्ये नवीन १२ महाल निर्माण करण्यात आले. सन १८६२ मध्ये वरील शासकीय विभागाच्या सीमांमध्ये फेरबदल करण्यात आले. सन १८६३ मध्ये तासगाव तालुका बेळगाव जिल्ह्यातून काढून सातारा जिल्ह्यास जोडण्यात आला. १८८४ मध्ये माल्कम पेठ नावाची पेठ निर्माण करण्यात आली. तिलाच पुढे महाबळेश्वर हे नाव पडले. सन १९२७ मध्ये खंडाळा पेठ विसर्जित करण्यात आली पण १९४७ मध्ये पुन्हा तिचे तालुक्यात पुनर्घटन करण्यात आले.

स्वातंत्र्योत्तर काळात पूर्वीच्या भारतीय मांडलिक संस्थांनाचे विलिनीकरण झाल्यावर सातारा जिल्ह्यास फलटण संस्थानाचा काही भाग, जमखंडी, अक्कलकोट, भोर, औंध, सांगली या संस्थांनाचा प्रदेश आणि पुणे जिल्ह्यातील एक खेडे जोडण्यात आले. सन १९४९ मध्ये नवीन फलटण तालुका निर्माण करण्यात आला. सन १९४९ मध्येच या जिल्ह्याचे उत्तर सातारा व दक्षिण सातारा जिल्हा असे दोन भाग पाडण्यात आले. दक्षिण सातारा जिल्ह्याचे मुख्यालय सांगलीला होते व त्यात खानापूर, तासगाव, वाळवा हे तालुके आणि शिराळा पेठ

याचा समावेश होता. उर्वरित उत्तर भागास उत्तर सातारा जिल्हा असे संबोधित. सन १९५६ मध्ये राज्याची पुनर्रचना झाल्यावर वरील दोन्ही जिल्ह्यांचा तत्कालीन मुंबई राज्यात समावेश करण्यात आला. सन १९५८ मध्ये दक्षिण सातारा जिल्ह्यातील खानापूर तालुक्यातील एक खेडे कराड तालुक्यात समाविष्ट करण्यात आले. सन १९६० मध्ये उत्तर सातारा जिल्ह्याचे नाव सातारा आणि दक्षिण सातारा जिल्ह्याचे नाव सांगली असे ठेवण्यात आले.

सन १९६१ च्या जनगणनेच्या वेळी सातारा जिल्ह्यात ९ तालुके व २ महाल होते. सन १९६१-७१ या दशकात महालाचा दर्जा वाढवून त्याचे तालुके बनविण्यात आले. सध्या सातारा जिल्ह्यात ११ तालुके आहेत.

२ क्षेत्रफळ आणि शासकीय विभाग

२०११ च्या जनगणनेनुसार सातारा जिल्ह्याचे एकूण भौगोलिक क्षेत्र १०४८० चौ. की. मी. असून ते महाराष्ट्र राज्याच्या ३.४० आहे. आकारमानाच्या दृष्टीने राज्यातील एकूण ३५ जिल्ह्यांमध्ये या जिल्ह्याचा १२ वा क्रमांक लागतो. जिल्ह्यात एकूण ११ तहसिल असून तहसिल व पंचायत समित्या ह्यांचे कार्यक्षेत्र सर्वत्र समान असल्यामुळे तेवढ्याच पंचायत समिती कार्यरत आहेत. जिल्ह्याचे सातारा, वाई, कराड व फलटण असे ४ महसूल विभाग असून सातारा विभागामध्ये सातारा, कोरेगाव व जावली, कराड विभागामध्ये कराड, पाटण, वाई विभागात महाबळेश्वर, वाई, खंडाळा, आणि फलटण विभागामध्ये फलटण, माण, खटाव तालुक्यांचा समावेश आहे. सातारा हे जिल्ह्याचे ठिकाण मुंबई बेंगलोर या राष्ट्रीय महामार्गावर वसलेले आहे. जिल्ह्याच्या एकूण भौगोलिक क्षेत्राच्या टक्केवारीप्रमाणे तहसिल निहाय विभागणी पुढीलप्रमाणे आहे. सातारा ८.८, वाई ५.७, खंडाळा ५.०, कोरेगाव ९.०, फलटण ११.४, माण १३.८, खटाव १२.६, कराड १०.२, पाटण १२.७, जावली ८.६ व महाबळेश्वर २.२.

३. उद्योग

कराड, सातारा व वाई येथे महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाच्या औद्योगिक वसाहती आहेत. शिरवळ तालुका खंडाळा येथील शिर्के पेपर मिल, कराड येथील कीर्लोस्कर ब्रदर्सचा हेमिटिक सिल्ड कॉम्प्रेसर हैड्रोलिक प्रॉडक्ट कारखाना, जरंडेश्वर येथील भारत फोर्ज इत्यादी अन्य मोठे व मध्यम स्वरूपाचे ३७ कारखाने आहेत.

उद्योग क्षेत्रास जिल्ह्यात उपलब्ध असलेल्या पोषक वातावरणामुळे गेल्या काही वर्षांमध्ये मोठ्या प्रमाणावर औद्योगिक गुंतवणूक होऊ लागली आहे. खंडाळा व फलटण

तालुक्यामध्ये प्रत्येकी एक याप्रमाणे दोन विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) स्थापन करण्यात आले असून फलटण तालुक्यामध्ये १०१ हेक्टर तर खंडाळा तालुक्यामध्ये केसुर्डी टप्पा क्र. १ करिता ११०.७४ हेक्टर क्षेत्र आरक्षित करण्यात आले आहे. सन २०११-१२ अखेर रु. ९३३६ कोटी एवढ्या विदेशी थेट गुंतवणुकीचे २३ प्रकल्प मंजूर असून त्या व्यतिरिक्त रु. १८० कोटी गुंतवणुकीचे १६९ एवढे उद्योग जिल्ह्यात कार्यरत आहेत. जिल्ह्यात ६ सहकारी व ५ खाजगी साखर कारखाने असे एकूण ११ साखर कारखाने कार्यरत असून २०११-१२ मध्ये ५६.६५ लाख टन ऊसाचे गाळप करून ६.८७ लाख मेट्रिक टन साखर उत्पादन झाले आहे.

४ .उद्योगधंदे

सन २०१० अखेर फॅक्टरी ॲक्ट खाली नोंदविलेली एकूण ५२८ उद्योगांपैकी ७२ उद्योगधंदे बंद होते. चालू असलेल्या ४५६ कारखान्यामध्ये अंदाजे ३१८७६ कामगार काम करीत होते.

५. वाहतूक व दळणवळण

कोल्हापूर मुंबई हा दक्षिण मध्य रेल्वेचा १२४.८४ की. मी. लांबीचा ब्रॉडगेज एकेरी रेल्वेमार्ग जिल्ह्यातून जातो. त्या मार्गावर एकूण १४ रेल्वे स्थानके आहेत. त्यामध्ये सातारा व कराड ही दोन महत्त्वाची स्थानके आहेत. सर्व रेल्वे मार्ग पूर्व व मध्य भागातून जात असल्याने पश्चिमेकडे पाटण, जावली, महाबळेश्वर व वाई या तालुक्याचा स्पर्श होत नाही.

सन २०११-१२ अखेर जिल्ह्यातील एकूण रस्त्यांची लांबी (न.पा. हद्दीतील ७१.८५ की. मी. रस्त्यासह) ९७१.४७ की. मी. होती. त्यापैकी ५५५५.२८ की. मी. डांबरी, २६६१.६५ की. मी. खडीचा व १४९४.५४ की. मी. इतर माल वापरून तयार करण्यात आलेला होता. सन २०११-१२ अखेर जिल्ह्यात ५.०० लाख वाहने वापरात होती. यामध्ये सर्वात जास्त म्हणजे ७४.३२ टक्के वाहने दुचाकी आहेत. २०११-१२ मध्ये एकूण ६६५ डाकगृहे आहेत. २०११ ची लोकसंख्या विचारात घेता १ लाख लोकसंख्येमागे २२ डाकघरांचे प्रमाण आहे. एकूण ६५२ गावांना डाकघरांची सुविधा उपलब्ध होती.

२०११-१२ या एका वर्षाच्या कालावधीमध्ये दूरध्वनी संख्या ८९४७० वरून ७६६१३ पर्यंत घटली. ही घट सुमारे १४.३७ आहे. तर गेल्या दोन वर्षातील एकत्रित घट ही १६.१७ आहे.

६ रोजगार

राज्य शासन, जिल्हा परिषद, पंचायत समित्यासह आणि नगरपालिका मध्ये २००८ कर्मचारी गणनेप्रमाणे एकूण कर्मचाऱ्यांची संख्या ३६५५६ एवढी होती. सातारा जिल्ह्यामध्ये सातारा येथे रोजगार विनिमय केंद्र कार्यरत आहे. २०११-१२ या वर्षात ७२८२६ उमेदवार नोंदणी पटावर होते. सन २०११-१२ मध्ये जाहीर केलेल्या रिकाम्या जागांची संख्या ७९४५ होती व निरनिराळ्या व्यवसायामध्ये एकूण २६२२ उमेदवारांना रोजगार उपलब्ध करून देण्यात आला आहे.

७. शाळा, महाविद्यालये

अ) शालेय शिक्षण

सन २०११-१२ अखेर जिल्ह्यात ३१४८ प्राथमिक, ६५३ माध्यमिक, १६७ उच्च माध्यमिक शाळा होत्या. प्राथमिक शाळेतील एकूण विद्यार्थ्यांपैकी ६६.५० विद्यार्थी स्थानिक स्वराज्य संस्थांमध्ये शिक्षण घेत होते, तर माध्यमिक शाळेतील ९१.६१ टक्के विद्यार्थी खाजगी अनुदानित संस्थांमध्ये शिक्षण घेत होते. प्राथमिक शाळेत प्रती शिक्षक विद्यार्थी संख्या २३ होती तर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक संस्थांमध्ये हीच संख्या ३२ एवढी होती.

ब) उच्च शिक्षण

सन २०११-१२ च्या प्राप्त माहितीनुसार जिल्ह्यात सर्वसाधारण उच्च शिक्षणाची ३८ महाविद्यालये कार्यरत आहेत व त्यामध्ये ३९४६५ विद्यार्थी शिकत आहेत.

८. वैद्यकीय व सार्वजनिक आरोग्य

सन २०११-१२ अखेर जिल्ह्यात १८ रुग्णालये, १९ दवाखाने, ७१ प्राथमिक आरोग्य केंद्रे व ४०० प्राथमिक आरोग्य उपकेंद्रे व ६ प्राथमिक आरोग्य पथके कार्यरत आहेत. रुग्णालये व प्राथमिक आरोग्य केंद्रे या संस्थांतील खाटांची संख्या १२६२ इतकी असून संदर्भ वर्षात ७९३८३ आंतररुग्ण व १५४८८८३ बाह्य रुग्णांवर उपचार केले आहेत. प्राप्त झालेल्या अंतिम आकडेवारीनुसार २०११ मध्ये ५००५३ जन्म व १८७३७ मृत्यू नोंदले गेले आहेत.

९. स्थानिक स्वराज्य संस्था

९.१ ग्रामपंचायती

मार्च २०१२ अखेर जिल्ह्यात एकूण ८ नगरपालिका व १ नगरपंचायत आणि १५०९ ग्रामपंचायती व गट ग्रामपंचायती होत्या. २०१०-११ व २०११-१२ वर्षातील ग्रामपंचायतीच्या उत्पन्नाचा व खर्चाचा अभ्यास केला असता उत्पन्न व खर्च यामध्ये वाढ झालेली दिसून येते. उत्पन्नात ९७.६७ कोटी रु. वरून ११२.५६ कोटी रु. पर्यंत म्हणजे १५ टक्के व खर्चात ९०.१७ कोटी रु. वरून १०७.१० कोटी रुपये पर्यंत म्हणजे १९ टक्के वाढ झालेली आहे.

९.२ जिल्हा परिषद

२०११-१२ वर्षामधील जिल्हा परिषदेची उत्पन्न व खर्चाची आकडेवारी अनुक्रमे १२९०.०४ कोटी (सुरुवातीची शिल्लक रु. १२८.२१ कोटी धरून) व ११४८.२९ कोटी रु. याप्रमाणे होती. गतवर्षापेक्षा उत्पन्नात ३३ तर खर्चात ३६ टक्के वाढ झालेली आहे.

९.३ नगरपरिषदा

२०११-१२ मध्ये जिल्ह्यातील सर्व ८ नगरपरिषदा व १ नगरपंचायत यांचे उत्पन्न व खर्च अनुक्रमे २३५.४८ कोटी (सुरुवातीची शिल्लक रु. ४२.५१ कोटी धरून) व १६७.४३ कोटी रु. होते. गतवर्षापेक्षा उत्पन्नात ३० तर खर्चात ३१ टक्के वाढ झालेली दिसून येते. उत्पन्नातील वाढ प्रामुख्याने शासकीय अनुदाने तसेच सर्व प्रकारच्या करातील वाढीमुळे झाली आहे.

महाराष्ट्र हे देशातील सर्वात जास्त नागरिकरण झालेले राज्य असून राज्यातील सुमारे २.२ लोकसंख्या जनगणना २००१ नुसार ही नागरी भागात राहते. त्यामुळे नागरी भागाच्या विकासात नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्था महत्त्वाची भूमिका बजावतात. राज्यात ३१ डिसेंबर २०१० रोजी २३ महानगरपालिका व २२२ नगरपरिषदा होत्या. या नगरपरिषदांपैकी १८ 'अ' वर्गीय (१ लाखापेक्षा जास्त लोकसंख्या असणाऱ्या), ६२ 'ब' वर्गीय (लोकसंख्या ४०,००० पेक्षा जास्त परंतु एक लाखापेक्षा जास्त नाही) आणि १४३ 'क' वर्गीय (लोकसंख्या ४०,००० किंवा त्यापेक्षा कमी असणाऱ्या) नगरपरिषदा होत्या. नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे २००६-०७ व २००७-०८ मधील उत्पन्न व खर्च पुढील तक्त्यामध्ये देण्यात आले आहे.

१०. महानगरपालिका

राज्यातील सर्व महानगरपालिकांची (बृहन्मुंबई महानगरपालिका वगळता) एकूण जमा २००७-०८ मध्ये ८,२७३ कोटी रुपये होती. एकूण जमेमध्ये मोठा वाटा जकातीद्वारे (३८ टक्के), पाणीपट्टी (८ टक्के) आणि मालमत्ता कर (६ टक्के) यांचा होता. याशिवाय, शासकीय अनुदाने व अंशदाने यापासूनची जमा ११ टक्के होती.

राज्यातील सर्व महानगरपालिकांचा (बृहन्मुंबई महानगरपालिका वगळता) २००७-०८ या वर्षातील एकूण खर्च ७,२२० कोटी रुपये होता. एकूण खर्चापैकी आस्थापनेवर झालेल्या खर्चाचे प्रमाण २००७-०८ मध्ये २४ टक्के होते. पाणी पुरवठा, जल व मलनिस्सारण आणि बांधकामांवर झालेला खर्च अनुक्रमे १३ टक्के, ६ टक्के व २२ टक्के इतका होता.

११. नगरपरिषदा

सर्व नगरपरिषदांची २००७-०८ या वर्षातील एकूण जमा २,२१० कोटी रुपये होती व ती आधीच्या वर्षाच्या तुलनेत ७.२ टक्यांनी अधिक होती. सर्व नगरपरिषदांच्या एकूण जमेमध्ये शासकीय अनुदानाचा हीस्सा ६० टक्के इतका सर्वाधिक होता. याशिवाय कर, शुल्क, आणि भाडे यांचा हीस्सा २१ टक्के तर ठेवी, कर्जाचा वाटा १२ टक्के होता.

सर्व नगरपरिषदांचा २००७-०८ वर्षातील एकूण खर्च २,१५३ कोटी रुपये होता व तो आधीच्या वर्षी १,८४० कोटी रुपये होता. नगरपरिषदांच्या एकूण खर्चापैकी ३२ टक्के खर्च आस्थापनेवर, २० टक्के बांधकामावर, ९ टक्के पाणी पुरवठ्यावर व १० टक्के खर्च कर्ज सेवांवर झाला होता. तसेच एक दृष्टीकोन आपण भारत आणि महाराष्ट्र यांच्यातील आकडेवारी वर पण प्रकाश टाकणे आवश्यक आहे.

स्थानिक शासन संस्थांची एकूण संख्या

| अ. क्र. | प्रकार | भारत | महाराष्ट्र |
|---------|--------------|----------|------------|
| १ | ग्रामपंचायत | २,३९,४३२ | ३७,९९३ |
| २ | पंचायत समिती | ६,०८७ | ३५५ |
| ३ | जिल्हा परिषद | ५४३ | ३३ |
| ४ | नगर पंचायत | २,१०८ | ०५ |

| | | | |
|---|-----------------------|-------|-----|
| ५ | नगर परिषद | १,५९५ | २२२ |
| ६ | महानगरपालिका | १३९ | २३' |
| ७ | स्वायत्त जिल्हा मंडळे | १४ | — |

स्रोत महाराष्ट्र आर्थिक पाहणी. २०१०-११

*टीप महाराष्ट्र शासनाने लातूर आणि चंद्रपूरसाठी महानगरपालिका स्थापन करण्याचा निर्णय घेतला आहे. त्यांच्या स्थापनेनंतर महानगरपालिकांची एकूण संख्या २५ होईल.

12. नगर पंचायती व कटक मंडळे

राज्यात ३१ मार्च २००८ रोजी दापोली (रत्नागिरी जिल्हा), कणकवली (सिंधुदुर्ग जिल्हा) आणि शिर्डी (अहमदनगर जिल्हा) अशा तीन नगरपंचायती होत्या.त्यांची २००७-०८ मधील एकूण जमा व खर्च अनुक्रमे २०६ कोटी रुपये व १७१ कोटी रुपये इतका होता.

१३ वित्त आयोग

भारत हे विशालकाय राष्ट्र आहे त्या विविध प्रदेश, समूह यांचा समावेश आहे. या विविध प्रदेशांमध्ये भौगोलिक भिन्नतेबरोबरच आचार विचारांच्या बाबतीत मोठ्या प्रमाणात भिन्नता आढळून येते. म्हणजेच भारतातील विविध प्रदेशांमध्ये सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक भिन्नता ही मोठ्या प्रमाणावर अस्तित्वात आहे. १९४७ ला भारताने ब्रिटीश साम्राज्यापासून स्वातंत्र्य मिळविले. त्यानंतर या विशालकाय राष्ट्राचे शासन सुरळीत चालविण्यासाठी संघराज्य शासन पध्दतीचा स्वीकार करण्यात आला.

महानगरपालिका क्षेत्र नियोजन समिती

कलम २४३ (Z-E) मध्ये महानगर प्रादेशिक क्षेत्र नियोजन समिती स्थापन करण्याचे संबंधित राज्यांना निर्देश देण्यात आले आहेत. ही समिती महानगर प्रादेशिक क्षेत्रातील ग्रामीण आणि नागरी प्रदेशाच्या विकास आणि नियोजनाची जबाबदारी पार पाडेल.

३.७ समारोप

शहरी विकासाची संकल्पना ही अत्यंत मोठ्या स्वरूपाची आहे. त्यामध्ये अनेक मोठ्या-मोठे पैलू आणि समस्यांचा समावेश होतो. म्हणून ही शहरी विकासाची संकल्पना व्यापक अनेक वेगवेगळ्या पध्दतीचा अभ्यास करण्यासाठी मोठ्या प्रमाणावर वाव असल्याचे आपणास दिसून येते. म्हणून या संशोधनामध्ये शहरी विकासाच्या वेगवेगळ्या पैलूंचा अभ्यास

करण्यावर भर देण्यात आला आहे. व ते ठळकपणे स्पष्ट करण्याचा प्रयत्न केला आहे. हा अभ्यास संबंधित नगरपालिकांच्या भावी योजना आणि नियोजनासाठी अत्यंत उपयुक्त असा आहे. त्यामळे संबंधित नगरपालिकांच्या आर्थिक विकासात भर पडण्यास नक्कीच मदत होणार आहे. त्यामुळे या प्रकरणाला विशेष असे महत्त्व प्राप्त झाल्याचे आपणास दिसून आले आहे.

३.८ संदर्भ References

1. Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur, p. 1.
2. Kopardekar H. D. (1986), Social Aspects of Urban Development, PopulaFk Prakashan Private Limited, Bombay, p. 16.
3. Michael Dear and John Scott Allen (1981), Urbanization and Urban Planning in Capitalist Society, Methuen, New York, p. 48.
4. Data.worldbank.org/topic/urban.development
5. Mondul R. B. (2000), Urban Geography, Concept Publishing Company, New Delhi (India), p. 389.
6. Mills, Edwin S. Ent. Mitra, Arup (1997), Urban Development and Urban Ills, Commonwealth Publications, New Delhi, p. 114.
7. Bhole Vijaya (1988), Housing and Urban Development in India, Classical Publication, New Delhi, p. 199.
8. Muttagi P. K. (1976), Urban Development A Perspective, Tata Institute of Social Sciences, Bombay, p. 152.

9. Singh Shamsheer (1992), Urban Planning and Development : Issues and Imperatives, Ashish Publication, New Delhi, p. 153.
10. Bharadwaj R. K. (1974), Urban Development in India, National Publishing House, Delhi (India), p. 145.
11. Dwivedi R. M. (2007), Urban Development and Housing in India, New Century Publications and Printed Sighai, Print Media, New Delhi, p. 17.
12. Sinha S. P. (1984), Processes and Pattern of Urban Development in India : A Case Study of Haryana, The Associated Publication, Ambala, p. 328.
13. Shukla Vibhaooti (1988), Urban Development and Regional Policy in India : An Econometric Analysis, Himalaya Publishing House, Bombay, p. 158.
14. Wallace F. Smith (1980), Urban Development the Process and Problems, University of California Press, Berkeley, Los Angeles, London, p. 88.
15. Joshi Ravikant (1974), Augmenting Capital Resources for Urban Development, Baroda Municipal Corporation Publication, Baroda, p. 276.
16. Chichester (1979), Nature in Cities : The Natural Environment in the Design and Development of Urban Green Space, published by John Wiley and Sons, Chichester, p. 96.
17. Khanna Anoop and Chaturvedi Adesh (2010), Urbanization in India, Challenges and Responses, Shruti Publication, Jaipur, p. 52.
18. Webatomics.com/Jason/images/thesisthree.pdf.

19. Bose Ashish (1970), Urbanization in India : An Inventory of Source Material, Academic Book Limited, Bombay, p. 98
20. Butler W. Edgar (1976), Urban Sociology : A Systemic Approach, Harper and Row Publishers, New York, Hagerstown, San Francisco, London, p. 16
21. Sharma K. Rajendra (2004), Urban sociology, published by Atlantic and Distributors, New Delhi, p.54.
22. Kornhauser David (1976), Japan : Geographical Background to Urban Industrial Development, Edition 2nd, Longman Publisher, London, p. 148.
23. Census of India 2011 Rural Urban Distribution of Population (Provisional Population Total)
24. डॉ. हावा आश्विन जी. २०१२ नगरपालिका स्वरूप आणि समस्या, पहिली आवृत्ती अरुणा प्रकाशन १०३,ओमकार कॉम्प्लेक्स अ खर्डेकर स्टॉफ,औसा लातूर.

प्रकरण चार
नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे स्वरूप आणि दिशा

- ४.१ प्रस्तावना
- ४.२ नगरपालिकेचे अंदाजपत्रक व उत्पन्नाची साधने
- ४.३ नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे विकासातील योगदान
- ४.४ फलटण नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा
- ४.५ सातारा नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा
- ४.६ रहिमतपूर नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा
- ४.७ महाबळेश्वर नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप व दिशा
- ४.८ सरांश
- ४.९ संदर्भ.

प्रकरण चार

नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे स्वरूप आणि दिशा

४.१ प्रस्तावना :-

अर्थशास्त्राच्या अभ्यासात उत्पन्न हा कळीचा मुद्दा आहे. कीर्बहुना तो अर्थशास्त्राच्या निर्मितीचा एक प्रमुख घटक आहे असे म्हणता येईल. उत्पन्न, मग ते एखाद्या कुटुंबाचे असो, उद्योग संस्थेचे असो, सरकारचे असो वा एखाद्या स्थानिक स्वराज्य संस्थेचे असो ते मर्यादित असते आणि तुलनेने गरजांची व्याप्ती ही व्यापक असते. परिणामी त्या गरजांची पूर्तता करण्यासाठी ह्या मर्यादित उत्पन्नाच्या साहाय्याने अधिक गरजांची पूर्तता करण्याचा प्रयत्न हा संबधित घटकांच्याकडून केला जातो. आणि ह्या गरजांच्या पूर्तता करण्याच्या मानवी प्रयत्नांचा अभ्यास करणारे शास्त्र म्हणजे अर्थशास्त्र होय. अभ्यासामधील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या उत्पन्नांचा अभ्यास करत असताना अभ्यास कालावधीत उत्पन्नांच्या बदलांची दिशा आणि उत्पन्नाचे मुख्य घटक ह्यावरती भर देण्यात आला आहे. त्याचबरोबर प्रत्येक नगरपालिकेच्या उत्पन्नाचा तौलनिक आढावा घेण्याचाही प्रामाणिक प्रयत्न करण्यात आला आहे.

भारत हा लोकशाहीप्रधान देश आहे. भारताने लोकशाही शासनपद्धतीचा स्वीकार केल्यामुळे सत्तेचे विकेंद्रीकरण होणे क्रमप्राप्त आहे. सत्तेचे विकेंद्रीकरण करून शहराचे कार्य पाहण्यासाठी नगरपालिकेची रचना करण्यात आली आहे. महाराष्ट्रामध्ये १९६५ साली "महाराष्ट्र नगरपालिका अधिनियम सरकारने मंजूर केला व यानुसार महाराष्ट्रात नगरपालिकेचे कार्य चालते. ७४ व्या घटनादुरुस्तीनुसार आता याचा अधिनियम १९६५ करण्यात आला आहे. कोणत्याही संस्थेत उत्पन्न आणि खर्च महत्त्वाचा असतो. लोकशाही प्रदान देशामध्ये तर कल्याणकारी राज्याचे उद्दिष्टे असल्यामुळे सरकारच्या खर्चाला अनन्यसाधारण असे महत्त्व प्राप्त झाले आहे. लोकशाही व्यवस्थेमध्ये खर्च व उत्पन्न याचा योग्य पद्धतीने समन्वय केला जातो.

४.२ नगरपालिकेचे अंदाजपत्रक व उत्पन्नाची साधने :-

'अंदाजपत्रक या शब्दाला इंग्रजी भाषेत बजेट (Budget) असे म्हणतात.' १ नगरपालिकेचे अंदाजपत्रक हे लोकसभा व विधानसभेसारखेच सादर केले जाते. नगरपालिकेचे अंदाजपत्रक दरवर्षी फेब्रुवारीला सादर केले जाते. या अंदाजपत्रकामध्ये

मागील वर्षीच्या अंदाजपत्रकावरील चर्चा व त्याच्या फलप्राप्तीला संमती बहुमताने दिली जाते. त्यामध्ये पुढील वर्षाचा अंदाजपत्रकही मांडले जातो. या अंदाजपत्रकाचा कालावधी १ एप्रिल ते ३१ मार्च असतो. अंदाजपत्रक सादर करताना नगरपालिकेच्या सभागृहामध्ये नगरपरिषदेचे नगराध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मुख्याधिकारी व नगर परिषदेचे सभासद इत्यादींचा समावेश असतो. या सर्वांच्या मान्यतेनुसार हा अहवाल सादर करून मान्य केला जातो व प्रसिद्ध केला जातो.

४.२.१ नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने :-

भारतीय संविधान कायदा व अधिकारानुसार नगरपालिकेचे कार्यक्षेत्र वेगळे ठेवले आहे. नगराचा अपेक्षित विकास साध्य करण्यासाठी नगरपालिकेला आवश्यकतेनुसार कायद्याच्या चौकटीत उत्पन्नाची साधने निर्माण करता येतात. यामध्ये नगरपालिका आपली जबाबदारी स्वातंत्र्यरित्या पार पाडू शकते. 'झकेरिया ग्रामीण व नागरी समितीने'(१९६३) या सूचनेला संमती दर्शविली, शिवाय असे सूचित केले की, "राज्य सरकारने स्थानिक स्वराज्य संस्थाना पुरेपुर पैसा उपलब्ध करून दिला पाहीजे."^२

"वित्तीय अधिकार प्रदान करून जर स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे हात बळकट करण्यात आले तरच स्थानिक नेतृत्व जबाबदारीने कार्य करू शकेल."^३

साधारणतः नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने पुढील प्रमाणे आहेत.

नगरपालिका व महानगरपालिका यांना पर्याप्त व योग्य वेळी वित्तीय हस्तांतरण करण्यासाठी १९९३ पासून राज्य वित्तीय आयोग आपली भूमिका प्रभावीपणे बजावत आहेत.

- अ). करारोपन
- ब). राज्यवित्त आयोगाकडून होणारे हस्तांतरण
- क). बिगर कर उत्पन्नाची साधने
- ड). सहाय्यक अनुदाने
- इ). कर्जे

अ). करारोपन :-

नगरपालिकेचे करारोपन व राष्ट्रीय सरकारचे करारोपन यात काही महत्त्वाचे फरक आहेत. सर्व साधारणतः केंद्र सरकार कर आकारताना लोकांची कुवत लक्षत घेवून आकारणी करतात. या कराची आकारणी करताना पुढील पद्धतीचा वापर केला जातो.

१. सेवा व्ययाचे तत्त्व

२. लाभ तत्व कींवा मोबदल्याचे तत्त्व

१. सेवा व्ययाचे तत्त्व :-

शासन संस्थेला लोकांना सेवा पुरविण्यासाठी जेवढा खर्च करावा लागतो. तो खर्च भरून काढण्यासाठी लोकांना तेवढ्याच प्रमाणात कर आकारले जाते यासच सेवा व्ययाचे तत्त्व असे म्हटले जाते.

२. लाभ तत्त्व कींवा मोबदल्याचे तत्त्व :-

शासनाने कराचा भार हा लोकांना मिळणाऱ्या लाभानुसार करावा म्हणजेच, ज्यांना अधिक लाभ मिळेल त्यांना अधिक कर व ज्यांना कमी लाभ मिळेल त्यांना कमी कर आकारतात. यासच लाभ तत्त्व असे म्हणतात.

नगरपालिकेच्या उत्पन्न साधनांची दोन भागात विभागणी केली आहे. कर उत्पन्न साधने व बिगर कर उत्पन्नाची साधने ही होय.

१. सक्तीचे कर :-

राज्य शासनाच्या संमतीने असे कर बसविले जातात आणि त्याची आकारणी, वसुली व माफी असे नियमही राज्य शासन करते. १९६५ च्या कायदानुसार महाराष्ट्रात नगरपालिकांना पुढील करांपासून उत्पन्न मिळते. यात मुख्यतः संपत्तीवरील कर, इमारती व जमिनीवरील कर, व्यवसाय कर, नाटयगृहे, चित्रपट, प्रदर्शने, सर्कस, थिएटर करमणूक कर, जाहिरात कर, पाणी पुरवठा कर इत्यादी पासून मिळणारे उत्पन्न सक्तीचे असते.

२. ऐच्छिक कर :-

सक्तीच्या कराशिवाय नगरपालिकेला ऐच्छिक करापासून उत्पन्न मिळू शकते. हे कर पुढीलप्रमाणे आहेत. नगरपरिषद क्षेत्रातील मोटार वाहन सोडून इतर वाहनावरील कर उदा. रिक्षा, सायकल, शिक्षण कर, जलनिःसारण कर, पाळीव प्राणी कर, खाजगी जागेच्या स्वच्छतेसंबंधी विशेष कर, यात्रा कर, सांडपाण्याच्या व्यवस्थेचा कर, इत्यादी कर हे ऐच्छिक कर आहेत. हे कर बसविताना सरकारी आदेशाचे पालन करूनही बसविले जातात.

कर्ज :-

नगरपालिकेला एखादी योजना राबविण्यासाठी कींवा कामकाज पूर्ण करण्यासाठी ती कर्ज काढू शकते. मुद्रा बाजारामध्ये या संस्थाची पत कमी असते. त्यामुळे या सस्थांना

सहजतेने कर्ज उपलब्ध होत नाही. ही परिस्थिती लक्षात घेवून कराररोपन चौकशी आयोगाने अशी शिफारस केली आहे की, नगरपरिषदा जी कर्ज घेतली आहेत त्याची हमी राज्यसरकारने द्यावी. तसेच प्रसंगानुसार त्यांना विशेष मदत द्यावी. आरक्षण, निवडणूक इत्यादी आयोगाची स्थापना यामुळे कार्यकाल निश्चित होण्यास मदत झाली आहे. या सर्व गोष्टींमुळे नगरपालिका कार्यक्षमरित्या कार्य करू शकेल.⁴

नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने :-

नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने हे पुढीलप्रमाणे आहेत.

अ) करापासून मिळणारे उत्पन्न :-

नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नात पुढील बाबीपासून उत्पन्न मिळतो.

मालमत्ता कर, शो टॅक्स, जाहीरात कर, वाहन कर, बोजा नोंदणी शुल्क रोजगार हमी योजना, महाराष्ट्र शिक्षण उपकर, कोंडवाडे, वृक्ष कर, गुंठेवारी विकास आकार, गुंठेवारी दंड इत्यादी चा समावेश होतो.

ब) विशेष अधिनियमाखाली वसुली :-

विषेष अधिनियमाखाली होणारी वसुली ही निश्चित स्वरूपाची नसते. ही अप्रत्यक्षरित्या केंद्र व राज्य सरकारच्या सकारात्मक धोरणावर अवलंबून असते. अर्थात काही विशिष्ट कालावधीतच हे प्राप्त होत असते. यामध्ये विकास शुल्क, मालमत्ता हस्तांतरण फी, दंड इत्यादी चा समावेश होतो.

क) नगरपालिकेच्या सेवा कार्यापासून मिळणारे उत्पन्न :-

सेवा कार्यापासून मिळणारे उत्पन्न नगरपालिकेच्या होणाऱ्या दीर्घ गुंतवणूकीवर अवलंबून असते. ही गुंतवणूक त्यांना होणाऱ्या उत्पन्नातून उभी राहत असते. नगरपालिकेच्या उत्पन्नामध्ये जमिनीचे भाडे, इमारतीचे भाडे, तलावाचे उत्पन्न, बेटरमेंट चार्जेस, वाचनालय, जलाशय व्यवस्था, लायसन्स फी, इमारत बांधकाम फी, पार्कींग फी, भाजी मार्केट, फिश मार्केट, जलतरण तलाव, कलामंदिर, सांडपाण्याचा लिलाव व अग्निशामन वाहनापासून उत्पन्न इत्यादी सेवा कार्यापासून नगरपालिकेला उत्पन्न मिळते.

ड). शासकीय अनुदाने :-

नगरपालिकेच्या अधिकार क्षेत्रात उत्पन्नाची पातळी कमी पडते म्हणून अशा नगराचा अतिरिक्त विकास करण्यासाठी राज्य व केंद्र सरकार वित्तीय संस्था वित्तीय निधीच्या माध्यमातून नगरपालिकेला अनुदान देत असते. नगरपालिकांना त्यांचे कार्य पार पाडण्यासाठी

शासकीय अनुदाने दिली जातात. यामध्ये दलित वस्ती सुधारणा, वाचनालये, ब्लिचिंग पावडर खरेदी, सुवर्ण जयंती रोजगार योजना, खासदार व आमदार निधी, महागाई भत्ता, जकात कर मोबदला, मराठवाडा एकात्मिक विकास कार्यक्रम, वाहन कर, रस्ते बांधकाम व दुरुस्ती, १५ टक्के जमीन महसुल व ७५ टक्के बिगरशेती सारा मुद्रांक शुल्क, एकात्मिक शहर विकास योजना, एन.एस. डी.बी. इत्यादी अनुदान दिले जातात.

इ) संकीर्ण :-

नगरपालिकेच्या उत्पन्नामध्ये संकीर्ण विभागाच्या उत्पन्न साधनामध्ये पुढील बाबींचा समावेश होतो. यात प्रामुख्याने प्रतिलिपी फी, मतदार यादी, संकीर्ण, पाचवी आर्थिक गणना, माहितीचे अधिकार फी इत्यादी चा समावेश होतो.

भांडवली उत्पन्न :-

नगरपालिका नगराचा विकास व नागरिकांना सुविधा पुरवित असताना काही गुंतवणूक दीर्घकाळासाठी करीत असते. या गुंतवणुकीपासून दीर्घ काळात नियमित पद्धतीने उत्पन्न मिळत असते. ही गुंतवणूक करीत असताना नगरपालिका निधी, सरकारी मदत कर्ज, याचा आधार घेत असते. ही मदत भांडवली स्वरूपाची असते. नगरपालिकेच्या भांडवली उत्पन्नामध्ये पुढील घटकांचा समावेश आहे. यात मुख्यतः सरकारकडून मिळविलेली कीर्वा पैशाच्या बाजारपेठेत उभी केलेली कीर्वा इतर मार्गाने मिळविलेली कर्जे, पाणीपुरवठा, पाईपलाईन, नाली बांधकाम, इमारती बांधकाम, नगर रचना योजना, दलित वस्ती सुधारणा योजना इत्यादीचा समावेश होतो.

इतर उत्पन्न :

इतर उत्पन्नामध्ये एक्स्ट्रा ऑर्डनरी अॅन्ड डेबेट्स हेड्स यात वेतन राखीव निधी, ऑफिस डिपॉझिट, पाणी पुरवठा डिपॉझिट, ठेकेदार, भविष्य निर्वाह निधी, निवृत्ती वेतन निधी, अग्रीम रक्कमेचे समायोजन व वसुली इत्यादीचा समावेश इतर उत्पन्नामध्ये केलेला आहे.

४.३ नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे विकासातील योगदान:-

नगरपालिकांच्या उत्पन्नाचे विकासातील योगदान कीर्वा महत्त्व खालील मुद्द्यांच्या आधारे सविस्तरपणे विशद करता येईल.

१). वस्तू व सेवांची पूर्तता करण्याची क्षमता:—

नगरपालिकांचे कीर्वा स्थानिक स्वराज्य संस्थांचे उत्पन्न हे संबधित नगरपालिकेची कीर्वा स्थानिक स्वराज्य संस्थेची नागरिकांना वस्तू व सेवांची पूर्तता करण्याची क्षमता निर्देशित करते. लोकांच्या मूलभुत कीर्वा पायाभुत सेवांची पूर्तता करणे ही स्थानिक स्वराज्य संस्थांची प्रमुख जबाबदारी असते. ह्यामध्ये प्रामुख्याने सार्वजनिक आरोग्य, पिण्याचे स्वच्छ व मुबलक पाणी, रस्त्यावरील दिवाबत्तीची सोय, रस्ते दुरुस्ती ह्या सारख्या बाबींचा समावेश होतो. ह्या जबाबदाऱ्या पार पाडण्याची स्थानिक स्वराज्य संस्थांची क्षमता ही त्यांच्या संबधित उत्पन्नाच्या मात्रेवरती अवलंबून असते. जर नगरपालिकाचे उत्पन्न हे पर्याप्त असेल तर आणि तरच ह्या सर्व जबाबदाऱ्या अधिक कार्यक्षमपणे पार पाडल्या जावू शकतात.

२). स्वावलंबत्व:—

स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या त्यांना आवश्यक असणाऱ्या निधीची उपलब्धता स्वतः हा करू शकल्या तर त्यांना निधीसाठी इतर घटकांवर जसे, राज्य सरकार आणि केंद्र सरकार ह्यांच्यावरती अवलंबून राहावे लागणार नाही. परिणामी ते स्वावलंबत्वकडे वाटचाल करतील.

३). नागरिकांचे कल्याण:—

अर्थशास्त्रात 'कल्याण' ह्या संकल्पनेला अलिकडच्या काळात फार महत्त्व प्राप्त झाले आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या उत्पन्नात वाढ घडून आल्यास ते अधिकाधिक वस्तू व सेवांची पूर्तता करण्यास सक्षम होतील परिणामी ह्या अधिकच्या वस्तू व सेवांच्या उपभोगामुळे नागरिकांच्या कल्याणात वाढ घडून येईल.

४). नागरिकरणाला प्रोत्साहन:—

नागरिकरण म्हणजे पारंपरिक अर्थव्यवस्थेचे आधुनिक अर्थव्यवस्थेत रूपांतरण होय. नागरिकरणाची देशाच्या विकासात वेगवेगळ्या मार्गांनी मदत होत असते. विशेषतः लोकांचे उत्पन्न, रोजगार आणि राहणीमान ह्या बाबींमध्ये नागरिकरणाच्या प्रक्रियेत वाढ घडून येत असते. परंतु प्रभावी नागरिकरणासाठी आवश्यक असणाऱ्या सोई-सुविधांची पूर्तता करण्याची जबाबदारी ही स्थानिक स्वराज्य संस्थेची असते. अर्थात अलिकडे केंद्र सरकार आणि राज्य सरकार यांच्या माध्यमातून जवाहरलाल नेहरू नॅशनल अरबन रिनियुअबल मिशन

(JNNURM)सारख्या मिशन दृष्टिकोन नागरिकरण आधिक प्रभावी करण्याचे प्रयत्न होत असले तरी स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिकाही फार महत्त्वाची असते.

४.४ फलटण नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप

फलटण नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची विस्तृत माहिती पुढील तक्ता क्र.४. १, ४.२, ४.३, ४.३.१, ४.३.२ च्या माध्यमातून मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे.

तक्ता क्र. ४. १ चा अभ्यास केल्यानंतर पुढील बाबी फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत स्पष्ट होतात.

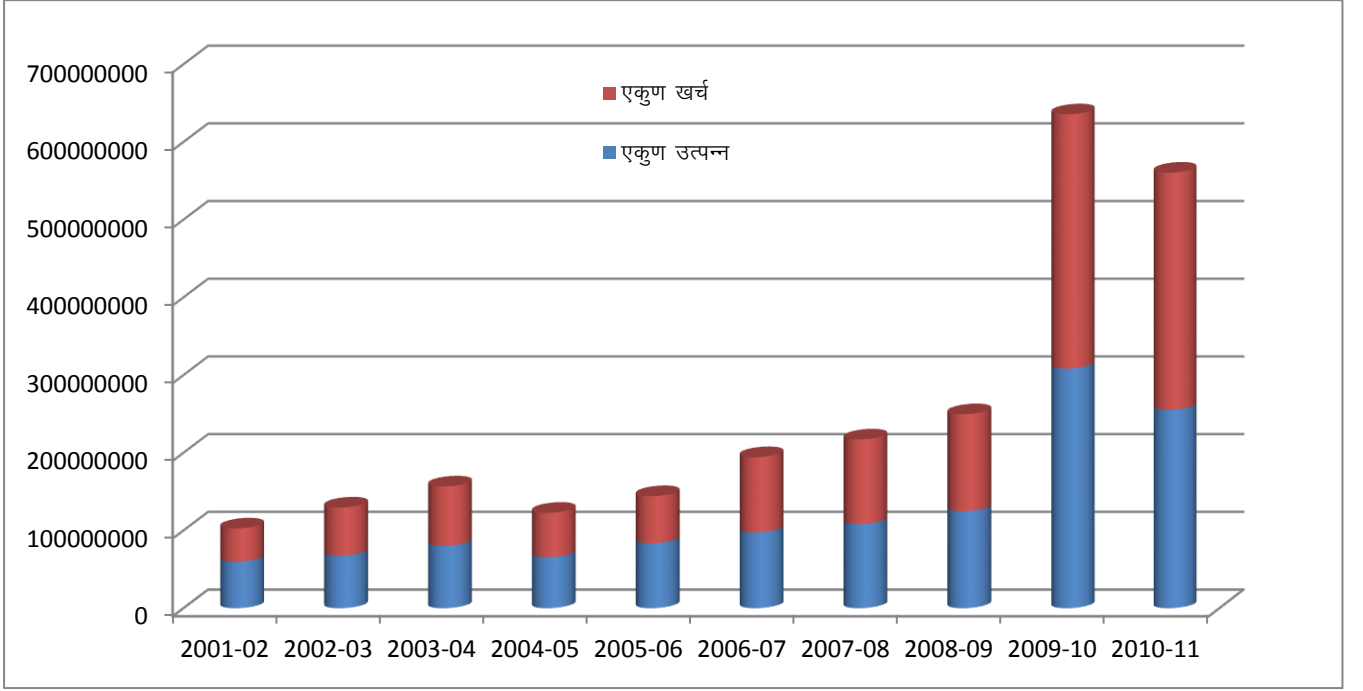
तक्ता क्र. ४. १

फलटण नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक

| वर्ष | एकूण उत्पन्न | एकूण खर्च | वाढ/घट |
|---------|--------------|-------------|-------------|
| २००१.०२ | ५९७४०००० | ४२९२७००० | १६८१३००० |
| २००२.०३ | ६७४४१००० | ६२१७५००० | ५२६६००० |
| २००३.०४ | ८०२२१००० | ७६५७४००० | ३६४७००० |
| २००४.०५ | ६५५३१००० | ५७३१८००० | ८२१३००० |
| २००५.०६ | ८३६३७००० | ६०७१६००० | २२९२१००० |
| २००६.०७ | ९७४३४००० | ९७०६४००० | ३७०००० |
| २००७.०८ | १०८१७३००० | १०९०८२००० | -९०९००० |
| २००८.०९ | १२४८५७००० | १२४८२४००० | ३३००० |
| २००९.१० | ३०८४१३००० | ३२७२५३००० | -१८८४०००० |
| २०१०.११ | २५५३०३००० | ३०५३३७००० | -५००३४००० |
| CGR | १९.८६ | ३९.४३ | -१९.५७ |
| Mean | १२५०७५००० | १२६३२७००० | -१२५२००० |
| SD | ८५९५००६४ | १०३३७९१५९.४ | २०४४००७४.८३ |
| CV | ६८.७१८८१९९१ | ८१.८३४५७१६७ | १६३२.५९३८३६ |

संदर्भ : फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-१४.

आलेख क्र. ४.१
फलटण नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक



तक्ता क्र. ४.१ चा अभ्यास केल्यानंतर पुढील बाबी फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत स्पष्ट होतात. फलटण नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न आणि खर्चाचा संपूर्ण आढावा घेण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला फलटण नगरपालिकेच्या उत्पन्नाचा आढावा घेण्यात आला आहे. २००१-०२ मध्ये एकूण उत्पन्न रु. ५,९७,४०,०००/- इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होत गेली आणि २००५-०६ मध्ये रु. ८,३६,३७,०००/- इतके झाले. त्यानंतर म्हणजे २०१०-११ मध्ये रु. २५,५३,०३,३००/- एवढ्या मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून येते.

दुसऱ्या भागामध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण केल्याचे आपणाला दिसून येते. सन २००१-०२ मध्ये एकूण खर्च रु. ६,२१,७५,०००/- इतका होता. तो त्यानंतर वाढत गेला. तो सन २००५-०६ रु. ६,०७,१६,०००/- झाला होता आणि शेवटी तो २०१०-११ ला रु. ३०,५३,५७,०००/- पर्यंत वाढत गेल्याचे आपणाला दिसून येते. आणि वृद्धीचा दर सुध्दा जास्त असल्याचे आपणास दिसून येते. म्हणजे साधा वृद्धीदर हा ३९.४३ इतका आहे.

फलटण नगरपालिकेचे सरासरी दहा वर्षातील उत्पन्न हे रु. २१,२७,६५,६००.०० इतके होते. तर एकूण खर्चाचा विचार करता ते सरासरी रु. १०,७४,८२,७१४.०० इतके होते.

म्हणजेच फलटण नगरपालिकेचे गेल्या दहा वर्षातील सरासरी उत्पन्न हे सरासरी खर्चाच्या तुलनेत जवळपास रु. २७,७८,१६,०९५.०० इतकी वाढले आहे. एकूण संयुक्त वृद्धीदरांचा विचार करता तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत १९.८६ टक्के तर खर्चाच्या बाबतीत तो ३९.४३ टक्के इतका नोंदवला आहे. ह्याचाच अर्थ उत्पन्नांच्या वाढीचा दर हा खर्चाच्या वाढीच्या दराच्या तुलनेत निमपट आहे असे म्हणता येईल. उत्पन्नातील प्रचरण गुणांकाचा विचार करता १३२ टक्के इतके असून तो सर्वाधिक वाढीच्या बाबतीत म्हणजेच ३०७ टक्के इतका नोंदवला आहे. सन २००६-०७ हे वर्ष वगळता सन २००२-०३ पासून ते २०१०-११ पर्यंत खर्चाचे एकूण उत्पन्नाशी असलेले प्रमाण हे जवळपास ४० टक्के दराने स्थिर असल्याचे आकृती क्रमांक १ वरून स्पष्ट होते. तर सर्वाधिक कमी खर्च हा २००१-०२ मध्ये झाल्याचे दिसून येते. एकूण उत्पन्नाचा विचार करता सन २००६-०७ हे वर्ष फलटण नगरपालिकेसाठी गेल्या दहा वर्षातील सर्वाधिक उत्पन्नाचे वर्ष होते असे म्हणता येईल.

फलटण नगरपालिकेच्या उत्पन्न आणि खर्चाचा आढावा घेत असताना असे स्पष्ट होते. की २००७-०८ मध्ये उत्पन्न आणि खर्च हे दोन्ही जवळपास अनुक्रमे १० आणि १० कोटीच्या इतके होते. तर २००९-१० मध्ये ते अनुक्रमे जवळपास २० आणि २० कोटी पर्यंत पोहचल्याचे दिसून येते. म्हणजे अवघ्या दोन वर्षे फलटण नगरपालिकेचे उत्पन्न आणि खर्च हे दुप्पट झाल्याचे स्पष्ट होते.

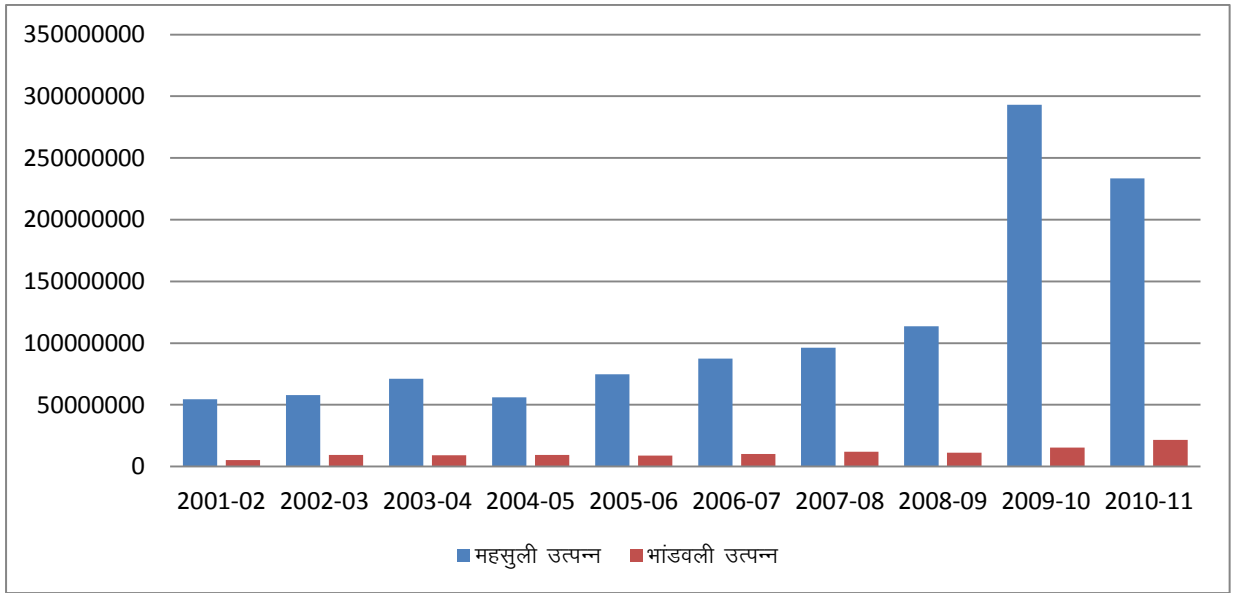
सन २००१-०२ ते २००५-०६ ह्या कालावधीत मात्र खर्च आणि उत्पन्न दोन्ही स्थिर स्वरूपाने आणि काहीषे स्थिर स्थितीत असल्याचे दिसून येते. (Stagnant)
फलटण नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नातील गेल्या दहा वर्षातील वाढ, भांडवली उत्पन्न ह्यांची सविस्तर मांडणी तक्ता क्र. ४.२ मध्ये केली आहे.

तक्ता क्र. ४.२

| फलटण नगरपालिका एकूण उत्पन्न | | | |
|-----------------------------|----------------|-----------------|--------------|
| वर्ष | महसुली उत्पन्न | भांडवली उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
| २००१-०२ | ५४४६९००० | ५२७१००० | ५९७४०००० |
| २००२-०३ | ५७९६०००० | ९४८१००० | ६७४४१००० |
| २००३-०४ | ७१००५००० | ९२१६००० | ८०२२१००० |
| २००४-०५ | ५६०७१००० | ९४६०००० | ६५५३१००० |
| २००५-०६ | ७४८४२००० | ८७९५००० | ८३६३७००० |
| २००६-०७ | ८७३४३००० | १००९१००० | ९७४३४००० |
| २००७-०८ | ९६१७६००० | ११९९७००० | १०८१७३००० |
| २००८-०९ | ११३६९६००० | १११६१००० | १२४८५७००० |
| २००९-१० | २९३०१६००० | १५३९७००० | ३०८४१३००० |
| २०१०-११ | २३३५६१००० | २१४७२००० | २५५०३३००० |
| CGR | १८.९१ | १४.४२ | ३०.३३ |
| Mean | ११३८१३९०० | ११२३४१०० | १२५०४८००० |
| SD | ८२१८६५८४.२८ | ४४२०१५४.५६७ | ८५९०४६३९.६४ |
| CV | ७२.२११३७४२५ | ३९.३४५८४४९५ | ६८.६९७३३१९४ |

संदर्भ : फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ४. २
फलटण नगरपालिका एकूण उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.२ मध्ये फलटण नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नाचे विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये महसुली आणि भांडवली उत्पन्न यांच्या उत्पन्नाचे विवेचन केले आहे. सुरुवातीला महसुली उत्पन्नामध्ये २००१-०२ मध्ये रु.५,४४,६९,०००/- इतके होते त्यानंतर ते

२००५-०६ मध्ये ते रु.७,४८,४२,०००/- पर्यंत वाढले आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ मध्ये ते रु.२३,३५,६१,०००/- पर्यंत वाढल्याचे दिसून येते.

दुसऱ्या भागामध्ये भांडवली उत्पन्नाचे विवेचन केले आहे . त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये भांडवली उत्पन्न रु.५२,७१,०००/- इतके होते. त्यानंतर म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु.८७,९५,०००/- इतके वाढले आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये ते रु.२,१४,७२,०००/- पर्यंत वाढल्याचे दिसून येते. आणि शेवटी एकूण उत्पन्न हे २००१-०२ या वर्षात रु. ५९७४००००/- इतके आहे त्यानंतर त्यामध्ये बरीच वाढ झाली म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ८,३६,८७,०००/- इतके झाले आणि शेवटी ते २०१०-११ मध्ये रु.२५,५०,३३,०००/- एवढे वाढल्याचे दिसून येते आणि साधा वृद्धीदरही ३०.३३ इतका आहे. दहा वर्षातील संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता असे स्पष्ट होते की, एकूण उत्पन्न हे ३०.३३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रत्येक वर्षी वढले आहे. तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत हा वृद्धी दर सर्वात कमी म्हणजेच १४.४२ टक्के इतका आहे. ह्याचाच अर्थ असा होतो की भांडवली उत्पन्न की जे स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या महसुलाचा प्रमुख स्रोत असतो तो वाढवण्यात फलटण नगरपालिकेला अपेक्षित यश आले नाही.प्रचरण गुणांकाचा विचार करता तो सर्वाधिक म्हणजेच ७२.२१ टक्के इतका उत्पन्नाच्या बाबतीत दिसून येतो.

सरासरी भंडवली खर्चाचा विचार करता ते गेल्या १० वर्षात रु. ४४,२०,०९,१०० इतका होता. एकूण उत्पन्नात भांडवली उत्पन्नाचे प्रमाण विचारात घेता असे स्पष्ट होते की, त्यामध्ये चढ-उत्तार जास्त आहेत आणि एकूण उत्पन्नात भांडवली उत्पन्नाचा हीस्सा फक्त ५ ते १० टक्के च्या दरम्यान प्रतिवर्षी राहिला आहे .आकृती क्रमांक ४ चा विचार करता असे स्पष्ट होते की एकूण उत्पन्न हे २००८-०९ नंतर झपाट्याने वाढले असुन ते २०१०-११ मध्ये घटले आहे. सर्वच बाबींचा एकत्रितपणे विचार केल्यास असे दिसते की फलटण नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात १० वर्षात वाढ घडून आली असली तरी भांडवली उत्पन्नात मात्र अपेक्षित वाढ घडून आली नाही. थोडक्यात भांडवली उत्पन्न वाढवण्यात फलटण नगरपालिकेला अपयश आले आहे असे म्हणता येईल.

तक्ता क्र. ४.३

फलटण नगरपालिकेच्या कर आणि करेत्तर उत्पन्नाची स्थिती ह्याचा आढावा तक्ता क्र. ४.३ मध्ये घेतला आहे. तसेच आकृती क्रमांक ४.३ मध्ये बदलाची दिशा दाखविण्याचा प्रयत्न केला असून आकृती क्र. ४.३ मध्ये एकूण उत्पन्नामध्ये कर आणि करेत्तर उत्पन्नाचे शेकडा प्रमाण दाखविण्याचा प्रयत्न केला आहे. तक्ता क्र. ४.३ वरून खालील गोष्टी स्पष्ट होतात.

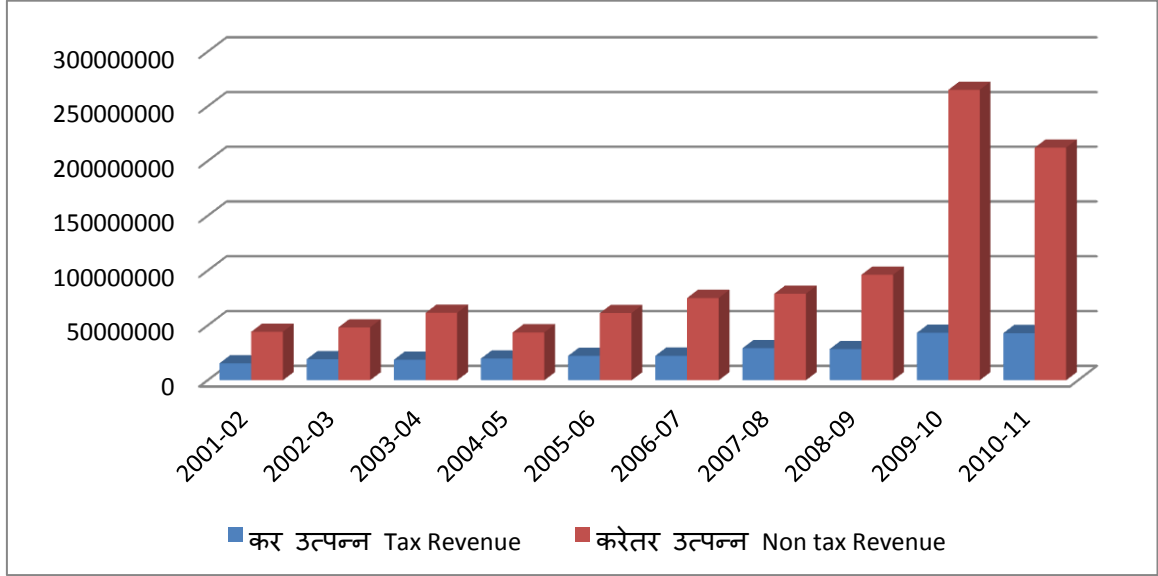
तक्ता क्र. ४.३

फलटण नगरपालिका कर उत्पन्न

| वर्ष | कर उत्पन्न | करेत्तर उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|---------|-------------|-----------------|--------------|
| | Tax Revenue | Non tax Revenue | Total |
| २००१.०२ | १५५१०००० | ४४२२९००० | ५९७३९००० |
| २००२.०३ | १९२१२००० | ४८२२९००० | ६७४४१००० |
| २००३.०४ | १८७०८००० | ६१५१३००० | ८०२२१००० |
| २००४.०५ | १९८४७७७८ | ४३६८३२२२ | ६३५३१००० |
| २००५.०६ | २२३३५००० | ६१३०२००० | ८३६३७००० |
| २००६.०७ | २२३८९००० | ७५०४५००० | ९७४३४००० |
| २००७.०८ | २९२६१००० | ७८९१२००० | १०८१७३००० |
| २००८.०९ | २८४३६००० | ९६२२१००० | १२४६५७००० |
| २००९.१० | ४३३०४००० | २६५१०९००० | ३०८४१३००० |
| २०१०.११ | ४३०१५००० | २१२२८८००० | २५५३०३००० |
| CGR | १४.६१ | २०.१२ | १८.२५ |
| Mean | २६२०१७७७.८ | ९८६५३१२२.२ | १२४८५४९०० |
| SD | ९८८१०२२.२४१ | ७६६४७९५२.३४ | ८६१०६३१०.८७ |
| CV | ३७.७११२६६४५ | ७७.६९४४००९७ | ६८.९६५१०३३९ |

संदर्भ : फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४. ३
फलटण नगरपालिका कर उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.३ वरून खालील गोष्टी स्पष्ट होतात. त्यामध्ये सुरुवातीला कर उत्पन्नातून मिळणारे उत्पन्नाचे विवेचन केले आहे. सुरुवातीला नगरपालिकेला करापासून २००१-०२ या वर्षी रु.१,५५,१०,०००/- उत्पन्न मिळाले होते. त्यानंतर ते २००५-०६ मध्ये रु. १,९८,४७,९३९/- इतके झाले. आणि ते २०१०-११ या वर्षी रु. ४,३०,१५,०००/- पर्यंत वाढत गेला.

दुसऱ्या विभागामध्ये करेत्तर उत्पन्नाचे विवेचन केले त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ या वर्षी रु. ४,४२,२९,०००/- इतके उत्पन्न जमा झाले होते. त्यानंतर त्यात हळुहळू वाढ होत गेली आणि २००५-०६ ते रु.७,५०,४४,०००/- पर्यंत वाढत गेल्याचे दिसते. आणि शेवटी ते २०१०-११ या वर्षी रु.२१,२२,८८,०००/- पर्यंत वाढझाल्याचे दिसून येते. सुरुवातीला २००१-०२ यावर्षी रु. ५,९७,३९,०००/- इतके होते. आणि २००५-०६ मध्ये ते रु. ८,३६,३७,०००/- पर्यंत वाढले आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षी रु.२५,५३,०३,०००/- पर्यंत जाऊन पोहचले आणि एकूण उत्पन्न वाढीचा दर हा १८.२५ टक्के इतका होता.

सरासरी कर उत्पन्न हे अभ्यास कालावधीत रु. २,६२,०१,७३९.०० इतके होते तर करेत्तर सरासरी उत्पन्न हे रु. ९,८६,५३,०२२.०० इतके होते. एकूण अभ्यास कालावधीत करेत्तर सरासरी उत्पन्न जास्त असल्याचे स्पष्ट होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता तो करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत २०.१२ टक्के इतका असून कर उत्पन्नाच्या बाबतीत मात्र तो

१४.६१ टक्के इतका आहे. त्याचबरोबर एकूण उत्पन्न वृद्धी दराचा विचार करता तो १८.२५ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते. प्रचरण गुणांकाचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, सर्वाधिक प्रचरण गुणांक हा देखील करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत दिसून येतो तो ७७.६९ टक्के इतका आहे. तर कर उत्पन्नाच्या बाबतीत तो सर्वात कमी म्हणजेच ३७.७१ टक्के इतका आहे. ह्याचाच अर्थ की फलटण नगरपालिकेने कर रचनेत फारशे बदल केले नाहीत आणि कर दर हा स्थिर ठेवण्याचा प्रयत्न करून करेत्तर उत्पन्न वाढीवर भर दिला आहे. आकृती क्र. ४.३ वरून असे स्पष्ट होते की, कर उत्पन्न, करेत्तर उत्पन्न आणि एकूण उत्पन्न हे सन २००४-०५ पासून सातत्याने वाढत आहे. तर आकृती क्र. ४.४ वरून असे स्पष्ट होते की कर उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे गेल्या दहा वर्षात १० ते ३० टक्के च्या दरम्यान आहे. उलट पक्षी करेत्तर उत्पन्नाचे प्रमाण हे एकूण उत्पन्नात ९० ते ७० टक्के च्या दरम्यान राहिल्याचे दिसून येते. आकृती क्र. ४.३ सर्वात ठळक बाब अशी की, सन २००८-०९ मध्ये करेत्तर उत्पन्न हे १ कोटीच्या जवळपास होत ते सन २००९-१० मध्ये ३ कोटीच्या जवळपास पोहचले. ह्याचाच अर्थ असा होतो की, फक्त एका वर्षाच्या कालावधीत फलटण नगरपालिकेचे करेत्तर उत्पन्न हे तीन पटीने वाढले. तर कर उत्पन्न मात्र काहीशे स्थिर स्वरूपात असल्याचे दिसून येते. तक्ता क्र. ४.३.१ मध्ये कर उत्पन्नाच्या प्रमुख स्रोताची मांडणी केली आहे. ह्या मध्ये संकलित कर, जकात, देणगी कर, जाहीरात कर, आग्निशामक कर, पाणी पट्टी कर, वृक्ष कर, कोंडवाडा विकास आकार इत्यादी स्रोतांचा समावेश होतो. अर्थात कर उत्पन्न हे फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत करेत्तर उत्पन्नाच्या तुलनेत कमी असले तरीही फलटण नगरपालिका कोणत्या कर स्रोतापासून प्रामुख्याने कर गोळा करते हे पाहावे गरजेचे ठरते.

तक्ता क्र. ४.३.१ वरून पुढील बाबी विशद करता येतील.

तक्ता क्र. ४.३.१

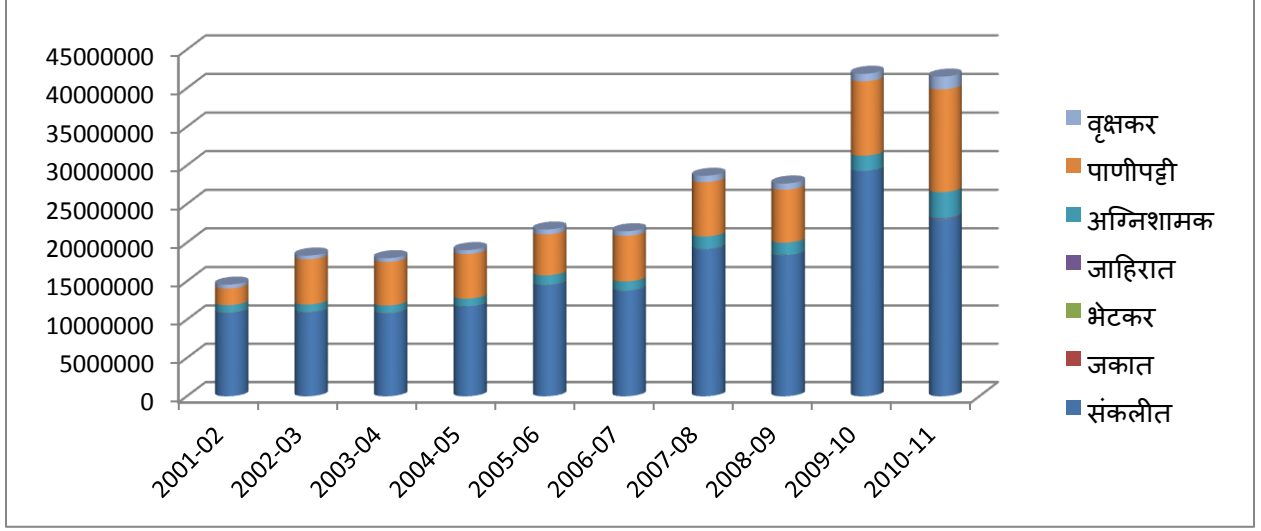
फलटण नगरपालिका करापासूनच्या उत्पन्नाचे विवेचन

| वर्ष | संकलित | जकात | भेटकर | जाहिरात | अग्निशामक | पाणीपट्टी | वृक्षकर | कोंडवाडा | विकास | एकूण |
|---------|-----------|-------|---------|---------|-----------|-----------|---------|----------|-----------|------------|
| | कर | | | कर | कर | कर | | | आकार | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| २००१.०२ | १०८७३००० | १०००० | २६००० | २३००० | ९५६००० | २१९२००० | ४९१००० | ० | ९३९००० | ४६०१००० |
| २००२.०३ | १०९४२००० | ० | २५००० | ४०००० | ९६३००० | ५८७८००० | ४८५००० | ० | ८७९००० | ८२४५००० |
| २००३.०४ | १०८२२००० | ३८० | २७००० | ४१००० | ९४५००० | ५६८५००० | ४७७००० | ० | ७०४००० | ७८५२००० |
| २००४.०५ | ११७१४००० | ० | २१००० | १७००० | ९८०००० | ५८०८००० | ५०१००० | ३०० | ८०४००० | ८११०३०० |
| २००५.०६ | १४५२५००० | ० | २४००० | ६००० | १२१४००० | ५३१३००० | ६२२००० | २०० | ६२८००० | ७७८३२०० |
| २००६.०७ | १३७६३००० | ० | १९९९० | २१००० | ११८१००० | ५९०१००० | ५९७००० | १००० | ९०३००० | ८६०४००० |
| २००७.०८ | १९१४३००० | ० | २०००० | ३१००० | १६१६००० | ७०३७००० | ८१७००० | १०० | ५९५००० | १००९६१०० |
| २००८.०९ | १८३९९००० | ० | २२४६० | १०००० | १५७५००० | ६८६६००० | ७९४५४० | ० | ७६९००० | १००१४५४० |
| २००९.१० | २९२५८००० | ० | ११००० | ३०००० | १९६७००० | ९६४१००० | ९६८००० | २००० | १४२९८०० | १४०३७८०० |
| २०१०.११ | २२९९०००० | ० | ३०००० | १५०००० | ३३८०००० | १३३१०००० | १६५०००० | ५००० | १५००००० | १९९९५००० |
| CGR | ९.६८ | | -३.४५ | ६.४६ | १४.७१ | १६.८६ | २२.७५ | | | ४.८६ |
| mean | १६२४२९०० | १०३८ | २२६४५ | ३६९०० | १४७७७०० | ६७६३१०० | ७४०२५४ | ८६० | ९१५०८० | ९९३३८९४ |
| SD | ६१८१५९५.२ | ३१५१ | ५२०७.८१ | ४१३९४ | ७५३७२३ | २९४०६८५.८ | ३६१५८२ | १५८९.६९ | ३११३०३.१७ | ४२६१५४२.६९ |
| CV | ३८.०५७२१४ | ३०३.६ | २२.९९७६ | ११२.२ | ५४.००६५ | ४३.४८१३३ | ४८.८४६ | १८४.८४८ | ३४.०१९२३ | ४२.८९९०१५१ |

संदर्भ : फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.४

फलटण नगरपालिका करापासूनच्या उत्पन्नाचे विवेचन



त्यामध्ये सुरुवातीला संकलित करापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे विवेचन केले आहे. २००१-०२ मध्ये संकलित करापासून उत्पन्न रु. १,०८,७३,०००/- इतके होते. त्यानंतर ते हळूहळू वाढत जाऊन २००५-०६ मध्ये रु.१,४५,२५,०००/- पर्यंत पोहचले आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये ते रु.२,२९,९०,०००/-पर्यंत जाऊन पोहचले. कॉलम क्र. ५ मध्ये जाहीरात कराचे विवेचन केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ ला ते रु २३,०००/- होते. त्यानंतर २००५-०६ मध्ये ते रु.६,०००/- एवढे कमी झाले. आणि शेवटी ते रु.१५,०००/- पर्यंत वाढले. कॉलम ७ मध्ये पाणीपट्टी कराचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ या वर्षी या करापासून चे उत्पन्न ऐवढे होते रु. २१,९२,०००/- कर जमा झाला होता. त्यानंतर २००५-०६ मध्ये रु.५,३३,१३,०००/- कर इतका जमा झाला आणि शेवटी २०१०-११ साली रु. १३,१०,०००/- इतक्या मोठ्या प्रमाणात कर जमा झाला आहे. कॉलम १० मध्ये विकास आकार हे करापासून मिळणारे उत्पन्न दर्शवण्यात आले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये रु.९,३९,०००/- उत्पन्न जमा झाले होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत गेली आणि रु. ६२,८०,०००/- हे २००५-०६ यावर्षी जमा झाले. आणि शेवटी त्याची रक्कम रु. १५,००,०००/- पर्यंत कमी झाली. शेवटी एकूण उत्पन्नाचे विश्लेषण केले आहे त्यामध्ये रु. ४६,०१,०००/- हे उत्पन्न २००१-०२ मध्ये जमा झाले होते आणि त्यानंतर त्यात

वाढ होत गेली आणि २००५-०६ मध्ये हे उत्पन्न रु.७७,८३,२००/- इतके झाले शेवटी हे उत्पन्न रु. १,९९,९५,०००/- इतके जमा झाले. आणि त्याचा साधा वृद्धीदर हा ४.८६ इतका आहे.

एकूण कर उत्पन्नात संकलित कराचे प्रमाण हे गेल्या दहा वर्षात नेहमीच जास्त राहिले आहे.संकलित कराच्या पाठोपाठ पाणी पट्टी कर हा प्रामुख्याने दुसऱ्या क्रमांका कर उत्पन्नाचा स्रोत असल्याचे दिसून येते.एकूण कर उत्पन्नात संकलित कर आणि पाणीपट्टी कर वगळता इतर स्रोतापासून मिळणारे कर उत्पन्न हे खूपच कमी असल्याचे दिसून येते.सरासरीच्या बाबतीत विचार करता असे स्पष्ट होते की रु. १,५८,३५,१४०.०० इतका सरासरी संकलित कर प्राप्त झाला आहे. त्यापाठोपाठ पाणीपट्टी कराची सरासरी ही रु. ६३,०२,२७२.०० इतकी आहे. संकलित कर स्रोतांच्या वृद्धी दराचा विचार करता तो ९.६८ टक्के इतका आहे. तर पाणीपट्टी कराच्या बाबतीत तो १६.८६ टक्के इतका आहे. यावरून असे स्पष्ट होते की पाणीपट्टी करात संकलित कराच्या तुलनेने झपाट्याने वाढ घडून आली आहे. म्हणजेच फलटण नगरपालिका ही पाणीपट्टी कराकडे संकलित कराच्या स्रोता नंतर दुसरा प्रमुख कराचा स्रोत म्हणून पाहते हे स्पष्ट होते. सर्वच कर स्रोतांच्या वाढीचा वेग विचारात घेतल्यास असे स्पष्ट होते की सन २००१-०२ ते सन २००६-०७ पर्यंत सर्व कर स्रोतांची वाढ ही सर्वसाधारण पण स्थिर स्वरूपाने होत होती. तर २००७-०८ पासून २००८-०९ वगळता ही वाढ झपाट्याने होत असल्याचे दिसून येते.पाणीपट्टी कराच्या बाबतीत २००९-१० आणि २०१०-११ या वर्षी झालेली वाढ ही लक्षणीय आहे. अर्थात पाण्याचे दुर्भिक्ष्य आणि पाणी वापरावर ती नियंत्रण ठेवण्याच्या दृष्टीने केला गेलेला हा प्रयत्न आहे.

इतर कर स्रोतांच्या बाबतीत जसे देणगी कर, जाहीरात कर, अग्निशामक कर, वृक्षकर, जकात कर इ. करांचे एकूण करातील प्रमाण फारच कमी असल्याने आणि त्या स्रोतांच्या बाबतीत वाढ करणे शक्य असल्याने फलटण नगरपालिकेने ह्या स्रोतांकडे महसूल निर्मितीचे स्रोत म्हणून गरजेचे आहे. देणगी कराच्या बाबतीत संयुक्त वृद्धी दर हा -३.४५ टक्के इतका आहे. याचाच अर्थ भेटकरापासून प्राप्त होत असलेल्या महसुलामध्ये प्रतिवर्षी सरासरी ३.४५

टक्के इतक्या दराने घट होत असल्याचे दिसून येते.फलटण नगरपालिकेने वृक्ष जतन आणि संवर्धन करण्याच्या दृष्टिकोनातून वृक्षकराच्या बाबतीत ही खूपच वाढ केली आहे. वृक्षकर हा

प्रतिवर्षी २२.७५ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धी दराने वाढत असल्याचे दिसून येते. विचलन गुणांकाचा विचार करता तो प्रमुख स्रोतांच्यामध्ये कमी म्हणजेच संकलित कराच्या बाबतीत आणि पाणीपट्टी कराच्या बाबतीत अनुक्रमे ३८ टक्के आणि ५० टक्के इतका आहे तर इतर कराच्या बाबतीत तो जास्त असल्याचे दिसून येते. यामध्ये मुख्यत्वे करून जकात कर, जाहीरात कर, वृक्षकर इत्यादीचा समावेश करता येईल.

तक्ता क्र. ४.३.२

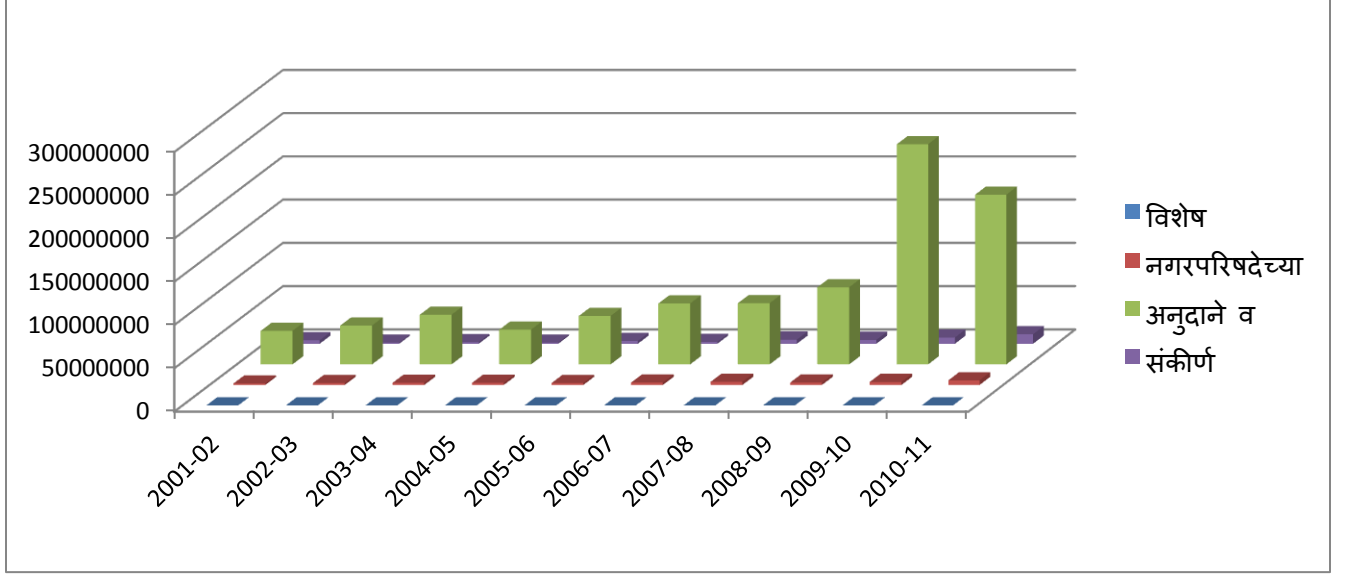
फलटण नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा

| वर्ष | विशेष अधिनियमाखालील उत्पन्न | नगरपालिकेच्या मालमत्ता पासून उत्पन्न | अंशदानें व अनुदाने | संकीर्ण जमा | एकूण |
|---------|-----------------------------|--------------------------------------|--------------------|-------------|-------------|
| २००१.०२ | ९५०० | १६४८००० | ३८५९६००० | ३९७४००० | ४४२२७५०० |
| २००२.०३ | ३००० | २२४०००० | ४४७४८००० | १२६७००० | ४८२५८००० |
| २००३.०४ | २५०० | २३४९००० | ५७२८६००० | १८७४००० | ६१५११५०० |
| २००४.०५ | ३००० | २३४७००० | ४००१४००० | १३१८००० | ४३६८२००० |
| २००५.०६ | २२००० | २२३०००० | ५५८८२००० | ३१६७००० | ६१३०१००० |
| २००६.०७ | १७००० | २६८७००० | ७०२५५००० | २०८३००० | ७५०४२००० |
| २००७.०८ | २७००० | ३५४७००० | ७०६२२००० | ४७४०००० | ७८९३६००० |
| २००८.०९ | १७००० | २७३२००० | ८८९७४००० | ४४९७००० | ९६२२०००० |
| २००९.१० | २०००० | ३४१४००० | २५४५०२००० | ७१७२००० | २६५१०८००० |
| २०१०.११ | २५००० | ५२८२००० | १९६०३६००० | १०९४३००० | २१२२८६००० |
| CGR | -३२.३ | -१०.३ | -१८.३ | -२५.२ | -१८.२ |
| Mean | १४६०० | २८४७६०० | ९१६९१५०० | ४१०३५०० | ९८६५७२०० |
| SD | ९४२४.६०६३७४ | १०२५४६८.९१२ | ७३३८२७९६.०५ | ३०२७७६४.५९५ | ७६६४५०३२.६६ |
| CV | ६४.५३१५५०५१ | ३६.०११६९०९६ | ८०.०३२२७७८५ | ७३.७८४८५६७१ | ७७.६८८२३०२१ |

संदर्भ : फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.५

फलटण नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा



तक्ता क्र. ४.३.२ चा सूक्ष्म अभ्यास केल्यास खालील निरीक्षणे नोंदवता येतील. तक्ता क्र. ४.३.२ मध्ये फलटण नगरपालिकेच्या करेतर उत्पन्नाचे विवेचन केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला एकूण उत्पन्नाचे विश्लेषण पाहता असे दिसून येते की, २००१-०२ या वर्षी ते रु. ४,४२,२७,५००/- इतके आहे. त्यानंतर त्यामध्ये रु. ६,१३,०१,०००/- वाढ होत गेली ही वाढ २००५-०६ ला नोंदविण्यात आली आणि शेवटी २०१०-११ ला रु.२१,२२,८६,०००/- वाढ झाल्याचे दिसून येते. आणि त्याच्या वृद्धीचा दर हा -१८.०२ असल्याचे दिसून येते.

एकूण उत्पन्नात अनुदानापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे प्रमाण हे फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत जवळपास ९० टक्के आहे. ह्याचाच अर्थ फलटण नगरपालिका ही खूप मोठ्या प्रमाणात उत्पन्नाच्या दृष्टीकोनातून अनुदानावरती अवलंबून असल्याचे दिसून येते. संकीर्ण करापासून मिळणारे उत्पन्न हे नगण्य स्वरूपाचे असून ते फक्त जवळपास ५ ते ८ टक्के च्या दरम्यान असल्याचे दिसून येते.सरासरी उत्पन्नाचा विचार करता विशेष आधिनियमाखालील उत्पन्न हे रु. १३,३६३.०० इतके आहे तर नगरपरिषदेच्या मालमत्तेपासून मिळणारे उत्पन्न हे सरासरी रु. २७,२३,२७२.०० इतके आहे तर ते अंशदानाच्या बाबतीत सर्वाधिक म्हणजेच रु. ८,८९,९७,१८४.०० इतके असल्याचे दिसून येते.विचलन गुणांकांचा विचार करता असे स्पष्ट होते

की तो सर्वाधिक म्हणजेच ८४.९९ टक्के इतका अनुदाने व अंशदाने ह्या घटकांच्या बाबतीत दिसून येतो तर त्या खालोखाल संकीर्ण जमा ह्या स्रोतांचा क्रमांक लागतो. वृद्धी दराचा विचार करता सर्वच स्रोतांच्या बाबतीत संयुक्त वृद्धीदर हा श्रवण स्वरूपाचा नोंदवला आहे.

४.४ . सातारा नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप

तक्ता क्र. ४.४ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्चाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे.

तक्ता क्र. ४.४

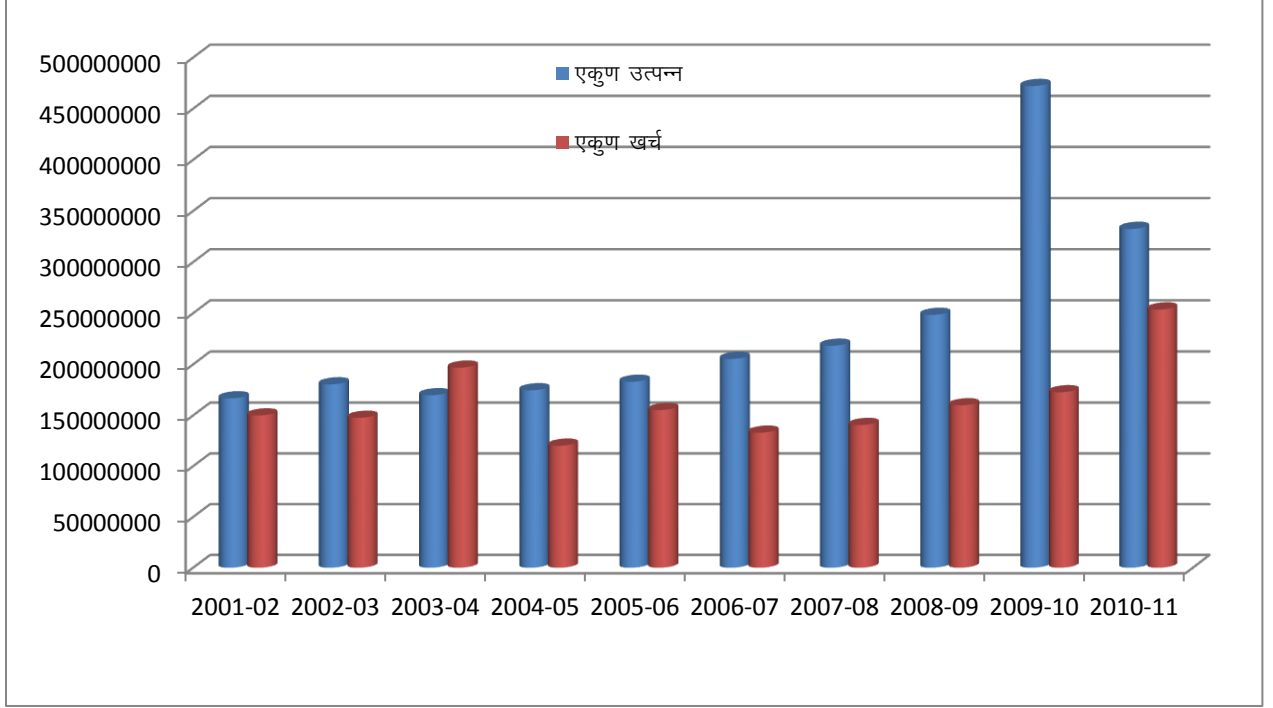
सातारा नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक

| वर्ष | एकूण उत्पन्न | एकूण खर्च | वाढ/घट |
|---------|--------------|-------------|-------------|
| २००१.०२ | १६६७५२००० | १४९९४७००० | १६८०५००० |
| २००२.०३ | १८०४०६००० | १४७६२५००० | ३२७८१००० |
| २००३.०४ | १६९७७२००० | १९६७७१००० | -२६९९९००० |
| २००४.०५ | १७४६१५००० | १२०१५२००० | ५४४६३००० |
| २००५.०६ | १८२९२५००० | १५५२४६००० | २७६७९००० |
| २००६.०७ | २०५३२२००० | १३२९६६००० | ७२३५६००० |
| २००७.०८ | २१८१७३००० | १४०५१०००० | ७७६६३००० |
| २००८.०९ | २४८३७२००० | १५९८८१००० | ८८४९१००० |
| २००९.१० | ४७२१३०००० | १७२७०८००० | २९९४२२००० |
| २०१०.११ | ३३२४१८००० | २५३६१०००० | ७८८०८००० |
| CGR | ९.९४ | ३.१४ | ६.८ |
| mean | २३५०८८५०० | १६२९४१६०० | ७२१४६९०० |
| SD | ९७३६२२७४.६५ | ३८२४६६८४.९३ | ८७३८६९८४.७५ |
| CV | ४४.४१५१५७१२ | २३.४७२६३३७१ | १२४.१२३६८६२ |

संदर्भ : सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.६

सातारा नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक



तक्ता क्र. ४.४ चे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खालील नोंदी नोंदवता येतात. २००१-०२ मध्ये उत्पन्न रु.१६,६७,५२,००० इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात रु.२०,५३,२२,००० इतके झाल्याचे दिसून येते. व त्यानंतर २०१०-११ ला रु. ३३,२४,१८,००० इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात एकूण खर्च दाखवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००४.०२ साली खर्च रु. १४,९९,४७,००० इतका होता. त्यामध्ये घट होत असताना दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात उत्पन्न रु. १३,२९,६६,००० इतके झाले. आणि शेवटी त्यामध्ये वाढ होउन. त्यानंतर २०१०-११ ला ते रु.२५,३६,१०,००० इतके झाले.

सातारा नगरपालिकेचे उत्पन्न हे अभ्यास कालावधीत कमी-जास्त होत असल्याचे दिसून येते.सातारा नगरपालिकेचे सरासरी दहा वर्षातील उत्पन्न हे रु. २३,५०,८८,५००/- इतके होते. तर एकूण खर्चाचा विचार करता ते सरासरी रु.१६,२९,४१,६००/- इतके झाले. म्हणजेच सातारा नगरपालिकेचे गेल्या दहा वर्षातील उत्पन्न आणि खर्चाचा विचार करता असे दिसून येते की

उत्पन्नाच्या तुलनेत खर्च कमी झालेला आहे.सयुंक्त वृद्धीदराचा विचार करता असे लक्षात येते की एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत तो ९.९४ टक्के असून तो एकूण खर्चाच्या बाबतीत ३.१४ टक्के आहे.विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ४४.४१ टक्के तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत २३.४७ टक्के इतके आहे. वाढीचा कींवा घटीचा विचार करता सन २००३-०४ हे वर्ष वगळता इतर सर्व वर्षी उत्पन्नापेक्षा खर्च कमी असल्याचे दिसून येते. यावरून असे म्हणता येईल की सातारा नगरपालिकेने उत्पन्नापेक्षा खर्चावर नियंत्रण करण्यात यश मिळवले आहे. प्रचरणाचा विचार करता ते उत्पन्नाच्या बाबतीत रु. ९,७३,६२,२७१/- होते तर खर्चाच्या बाबतीत ते रु. ३,८२,४६,६८४/- इतके आहे. थोडक्यात सातारा नगरपालिकेचे उत्पन्न हे खर्चाच्या तुलनेने आधिक असल्याचे दिसून येते.सातारा नगरपालिकेच्या उत्पन्न आणि खर्चाच्या वृद्धीमधील प्रवृत्तीचा विचार करता असे दिसून येते की सन २००१-०२ मध्ये उत्पन्न आणि खर्च हे अनुक्रमे रु.१६,६७,५२,०००/- आणि १४,९९,४७,०००/- कोटी इतके होते. त्यामध्ये सन २०१०-११ मध्ये ते अनुक्रमे रु. ३३,२४,१८,०००/- आणि रु.२५,३६,१०,०००/- इतके झाले आहे.

तक्ता क्र. ४.५ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नाचे भांडवली आणि महसुली उत्पन्न याची मांडणी तक्ता क्र. ४.५ मध्ये केली आहे.

तक्ता क्र. ४.५

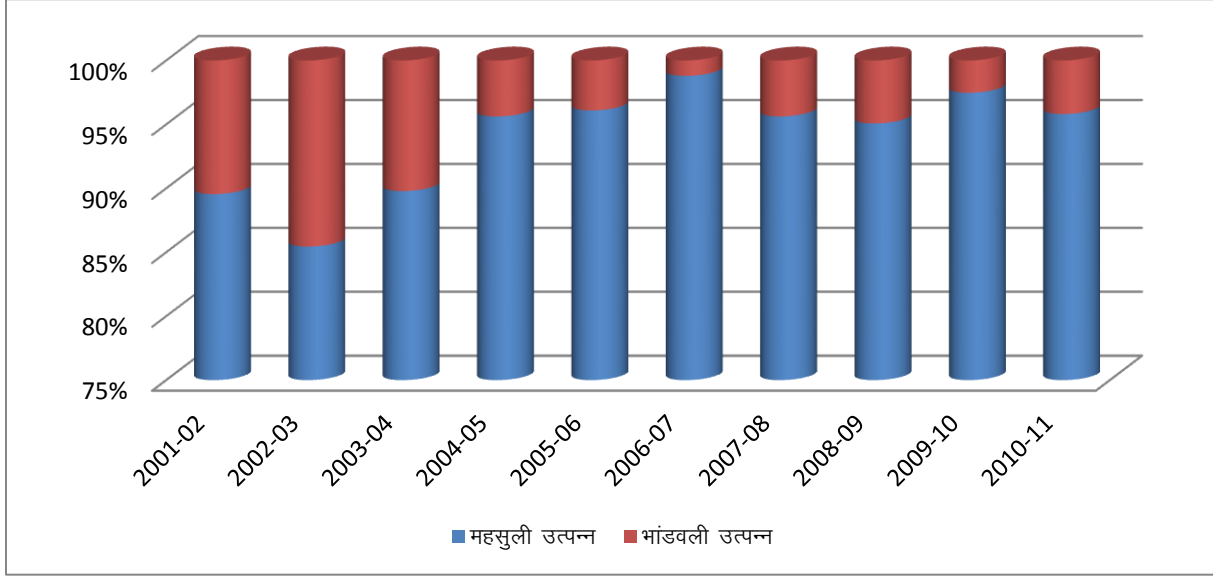
सातारा नगरपालिकेचे एकूण उत्पन्न

| वर्ष | महसुली उत्पन्न | भांडवली उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|-------------|----------------|-----------------|--------------|
| २००१.०२ | १४९३२५००० | १७४२७००० | १६६७५२००० |
| २००२.०३ | १५४१५६००० | २६२५०००० | १८०४०६००० |
| २००३.०४ | १५२४२८००० | १७३४४००० | १६९७७२००० |
| २००४.०५ | १६६९७६००० | ७६३९००० | १७४६१५००० |
| २००५.०६ | १७५७७३००० | ७१५२००० | १८२९२५००० |
| २००६.०७ | १८२९८८००० | २२३३४०० | १८५२२१४०० |
| २००७.०८ | २०८६२९००० | ९५४३००० | २१८१७२००० |
| २००८.०९ | २३६१४०००० | १२२३२००० | २४८३७२००० |
| २००९.१० | ४६०२१५००० | ११९१५००० | ४७२१३०००० |
| २०१०.११ | ३१८४९९००० | १३९१९००० | ३३२४१८००० |
| CGR | १४.१ | -४.४४ | ६.६६ |
| mean | २२०५१२९०० | १२५६५४४० | २३३०७८३४० |

| | | | |
|------|-------------|-------------|-------------|
| SD | ९८७८५००२.९१ | ६७१२८७५.६९३ | ९८२४८५६०.६४ |
| C.V. | ४४.७९७८३४०९ | ५३.४२३३२३७६ | ४२.१५२५९१५५ |

संदर्भ : सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.७
सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.५ चे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खालील नोंदी नोंदवता येतात. २००१-०२ साली महसुली उत्पन्न रु.१४,९३,२५,००० रु. इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात रु. १८,२९,८८,००० इतके झाल्याचे दिसून येते. व त्यानंतर २०१०-११ ला रु ३१,८४,९९,००० इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात भांडवली उत्पन्न दाखवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली खर्च १७४२६८०० इतका होता.त्यामध्ये वाढ झाल्याचे दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात २२३३३००० इतका झाला. आणि त्यानंतर त्यामध्ये घट होत असताना दिसून येते.२०१०-११ ला १३९१९००० इतका झाला. सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नामध्ये महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे नेहमीच अधिक्याचे असल्याचे दिसून येते. उलटपक्षी भांडवली उत्पन्नाचे प्रमाण हे नेहमीच कमी असल्याचे दिसून येते. सरासरीचा विचार करता अभ्यास कालावधीत सरासरी महसुली उत्पन्न हे रु.२२०५२२८००/- कोटी इतके होते तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत ते रु.१४५७५१६०/- इतके होते. एकूण

सरासरी उत्पन्नाचा विचार करता ते अभ्यास काळात रु.२३५०८७९६०/- कोटी इतके होते. संयुक्त वद्धीदराचा विचार केल्यास असे दिसून येते की महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो १४.०१ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत -४.४४ टक्के आणि एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ६.६६ टक्के इतका नोंदवला आहे.

विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत ४४.७९ टक्के भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत ४३ टक्के तर एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ४१ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते. प्रचरणाचा विचार करता महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत रु.९८७८५०६३/- इतके तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत ते रु. ६२७०१४८/- इतके आहे. सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नातील वाढीची प्रवृत्ती विचारात घेतल्यास असे दिसून येते की महसुली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे नेहमीच जास्त आहे. दुसऱ्या शब्दात एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्राबल्य आसल्याचे दिसून येते.२००१-०२ मध्ये एकूण महसुली आणि भांडवली उत्पन्न हे रु.१६ कोटीच्या जवळपास होते ते पुढील दहा वर्षात म्हणजेच सन २००९-१० मध्ये रु. ४७ कोटी पर्यंत वाढझाली. २०१०-११ मध्ये मात्र त्यामध्ये घट होऊन ते रु. ३३ कोटी पर्यंत आल्याचे दिसून येते.थोडक्यात २००१-०२ पासून २०१०-११ पर्यंत सातारा नगरपालिकेच्या महसुली आणि भांडवली उत्पन्नात सातत्याने वाढ घडून येत आसली तरी महसुली उत्पन्नातील वाढ ही भांडवली उत्पन्नातील वाढीपेक्षा कमी आहे.

तक्ता क्र. ४.६ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या उत्पन्नाच्या स्त्रोंतांचे वर्गीकरण केले आहे. त्याचे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खालील नोंदी नोंदविता येतील.

तक्ता क्र. ४.६

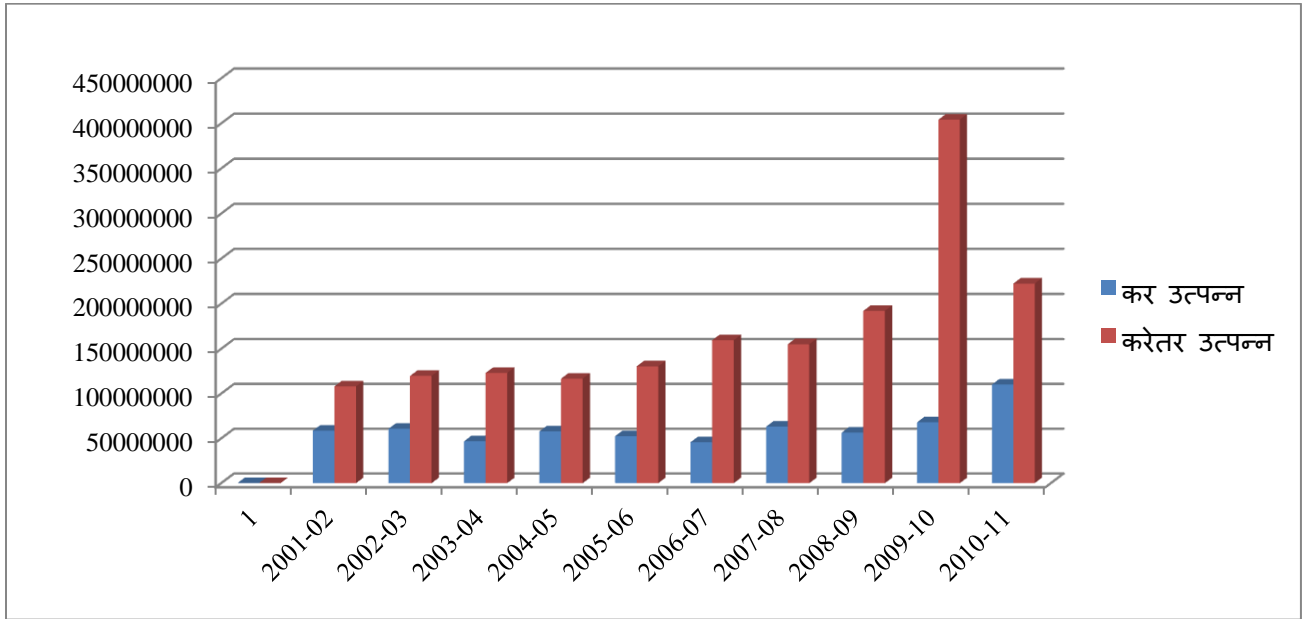
सातारा नगरपालिकाचे कर उत्पन्न

| वर्ष | कर उत्पन्न | करेतर उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|---------|------------|---------------|--------------|
| २००१.०२ | ५८६४६००० | १०८१०६००० | १६६७५२००० |
| २००२.०३ | ६०६६४००० | ११९७४२००० | १८०४०६००० |
| २००३.०४ | ४६७२१००० | १२३०५१००० | १६९७७२००० |
| २००४.०५ | ५७८९७००० | ११६७१८००० | १७४६१५००० |
| २००५.०६ | ५२४७१००० | १३०४५४००० | १८२९२५००० |
| २००६.०७ | ४५७९०००० | १५९५३२००० | २०५३२२००० |
| २००७.०८ | ६३०६७००० | १५५१०६००० | २१८१७३००० |

| | | | |
|---------|-------------|-------------|-------------|
| २००८.०९ | ५६३९७००० | १९१९७५००० | २४८३७२००० |
| २००९.१० | ६७९५४००० | ४०४१७६००० | ४७२१३०००० |
| २०१०.११ | ११००७०००० | २२२३४८००० | ३३२४१८००० |
| mean | ६१९६७७०० | १७३१२०८०० | २३५०८८५०० |
| SD | १८२४३९६४.८१ | ८८९८१५३९.३३ | ९७३६२२७४.६५ |
| CV | २९.४४१०८२७२ | ५४.३९८५२५९६ | ४४.४१५१५७१२ |
| CGR | -६१५ | -१२.३१ | -१०.७७ |

संदर्भ : सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.८
सातारा नगरपालिकाचे कर उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.६ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नाच्या स्रोतांचे वर्गीकरण केले आहे. त्याचे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खालील नोंदी नोंदविता येतात. एकूण उत्पन्नातील कर उत्पन्नांच्या हीस्साचा विचार करता असे लक्षात येते की ते १० टक्के ते ४० टक्केच्या दरम्यानच प्रत्येक वर्षी राहिले आहे. उलटपक्षी करेतर उत्पन्न मात्र ६० ते ९० टक्केच्या दरम्यान राहिले आहे. यावरून असे स्पष्ट होते की अभ्यास कालावधीत सातारा नगरपालिका करेतर उत्पन्न वाढविण्यात यशस्वी झाली आहे. एकूण सापेक्ष उत्पन्न स्रोतांच्या वाढीच्या प्रवृत्तीचा विचार करता असे स्पष्ट होते की सन २००१-०२ ते २०१०-११ या काळात, वाढीच्या वेगवेगळ्या

प्रवृत्ती दिसून येतात. त्या खालीलप्रमाणे विशद करता येतील.अ). सन २००१-०२ ते २००२-०३ पर्यंत कर उत्पन्न आणि करेत्तर उत्पन्न दोन्ही स्रोतात वाढीची प्रवृत्ती आहे.

ब). सन २००२-०३ ते २००३-०४ या काळात दोन्ही स्रोतात घटती प्रवृत्ती आहे तर २००३-०४ ते २००४-०५ या काळात काहीशी स्थिर प्रवृत्ती दिसून येते.क). सन २००४-०५ पासून सन २००८-०९ पर्यंत काहीशी स्थिर दराने या दोन्ही उत्पन्न स्रोतामध्ये वाढ घडून आली आहे.ड). ठळक नोंदवण्यासारखी बाब म्हणजे २००९-१० या वर्षी २००८-०९च्या तुलनेने करेत्तर उत्पन्न हे जवळपास दुप्पट झाले आहे. असे जरी असले तरी २०१०-११ मध्ये करेत्तर उत्पन्न घटले आहे. इ). कर उत्पन्नात नेहमीच चढ-उतार राहिले असल्याचे दिसून येते. सरासरीचा विचार केल्यास कर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी जवळपास रु.५,९४,५१,३६३/- इतका प्राप्त होत त करेत्तर उत्पन्न हे रु.१६,४३,७३,९०९/- इतक मिळत होते यावरून सातारा नगरपालिकेचा प्रमुख उत्पन्नाचा स्रोत हा करेत्तर उत्पन्न असल्याचे स्पष्ट होते. वृद्धीदरांचा विचार केल्यास तो कर उत्पन्नाच्या बाबतीत -६.१५ टक्के तर करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत -१२.३१ टक्के त्याचबरोबर एकूण उत्पन्नात -१०.७७ टक्के असल्याचे दिसून येते. अर्थात संयुक्त वृद्धीदर हा ऋण जरी असला तरी साधा वृद्धी दर हा तीन ही घटकांच्या बाबतीत धन आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो कर उत्पन्नाच्या बाबतीत ३२.३२ टक्के इतका असून करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ५४.३० टक्के इतका आहे.

तक्ता क्र. ४.६.१

तक्ता क्र. ४.६.१ मध्ये करापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नांचे विवेचन केले आहे. यामध्ये प्रामुख्याने संकलित कर, करमणुक कर, जाहीरात कर, खोदाई पाणीपट्टी, कीरकोळ पाणी कर, शिक्षण कर, कोंडवाडा, रोजगार हमी प्रति कर, विकास कर आणि वृक्ष कर या बाबींचा समावेश होतो.

तक्ता क्र. ४.३.१

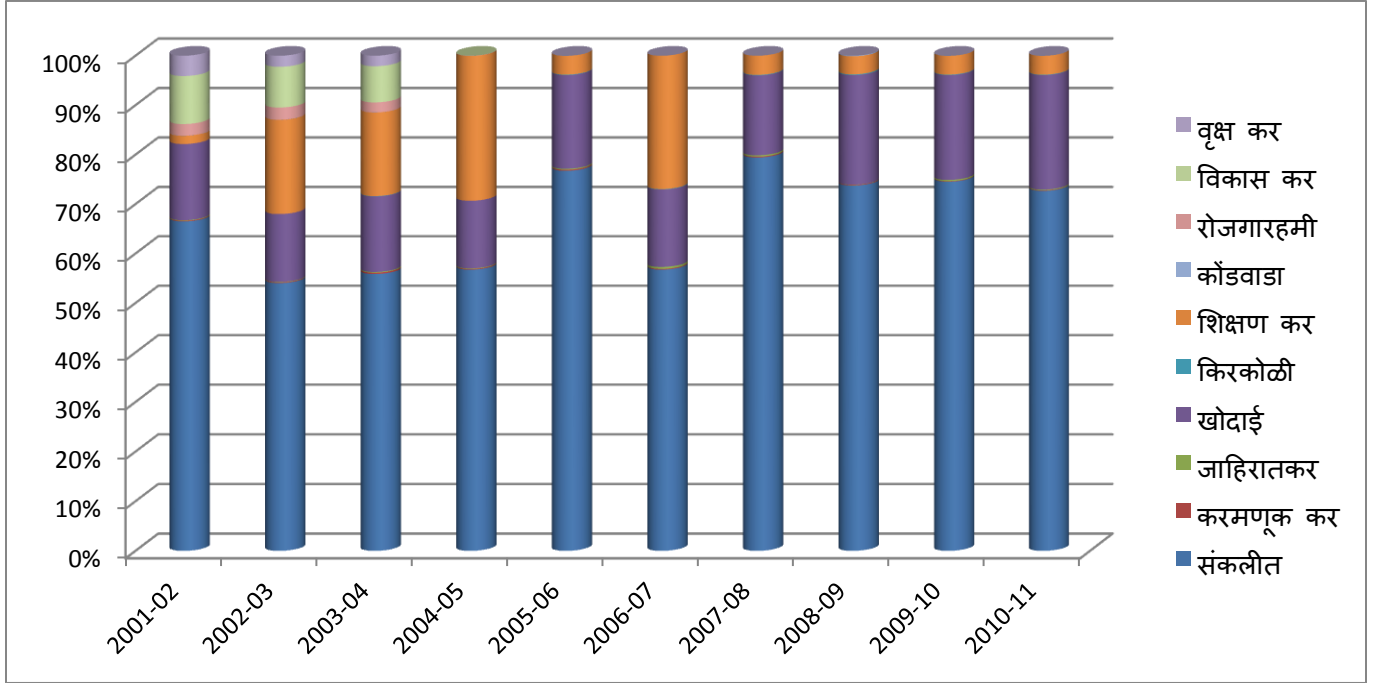
करापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नांचे विवेचन

| वर्ष | संकलीत कर | करमणूक कर | जाहिरातकर | खोदाई | किरकोळ | शिक्षण कर |
|---------|-------------|------------|-------------|-------------|-------------|--------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| | कर | थिएटर कर | | पाणीपट्टी | पाणी कर | विशेष शिक्षण |
| २००१.०२ | ३९०००००० | ८६००० | ६०००० | ९०३०००० | ० | ९८०००० |
| २००२.०३ | ३२७८३००० | ८६००० | ४५००० | ८३३५००० | ० | ११५६१००० |
| २००३.०४ | २६१०१००० | १३०००० | ६६००० | ७१३३००० | २९००० | ७९०३००० |
| २००४.०५ | ४४६०७००० | १३०००० | ८५००० | १०७३८००० | ० | २३०२०००० |
| २००५.०६ | ४०२६६००० | ११८००० | ९७००० | ९९४१००० | ४५००० | १९९९००० |
| २००६.०७ | ३४३१२००० | १०२००० | २३६००० | ९४६०००० | ४९००० | १६३१०००० |
| २००७.०८ | ५००८५००० | ११८००० | १७२००० | १०१८४००० | ६५००० | २४४३००० |
| २००८.०९ | ४१४७२००० | ७३००० | १९००० | १२४६५००० | ८०००० | २०५५००० |
| २००९.१० | ५०६४५००० | ७२००० | १७४००० | १४४०६००० | ५९००० | २५८५००० |
| २०१०.११ | ८००००००० | ११५००० | १६०००० | २५५००००० | ८०००० | ४२००००० |
| Mean | ४३९२७१०० | १०३००० | १११४०० | ११७१९२०० | ४०७०० | ७३०५६०० |
| SD | १४७६८१५४.६५ | २२३४०.७९४८ | ६९९४६.३२८६३ | ५२५९७९४.७७४ | ३१९८६.२८१७८ | ७४३७१६३.५६ |
| CV | ३३.६१९६८२७३ | २४.६९००९२ | ६२.७८८४४५८१ | ४४.८८१८५८६१ | ७८.५९०३७२९३ | १०४.८००८५९१ |
| GGR | -९.५६ | ०.१७ | -७.५१ | ९.६५ | | ४.८६ |

| कोंडवाडा | रोजगारहमी | विकास कर | वृक्ष कर | एकूण |
|-------------|-------------|-----------|------------|-------------|
| | | | | |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| १०००० | १३८०००० | ५७००००० | २४००००० | ५८६४६००० |
| १०००० | १४९०००० | ५०००००० | १३५४००० | ६०६६४००० |
| ३००० | ९४८००० | ३४१९००० | ९८९००० | ४६७२१००० |
| ५००० | ३०००० | ०० | ०० | ७८६१५००० |
| ७००० | ०० | ०० | ०० | ५२४७३००० |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ६०४६९००० |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ६३०६७००० |
| ६१००० | ०० | ०० | ०० | ५६२२५००० |
| १३००० | ०० | ०० | ०० | ६७९५४००० |
| १५००० | ०० | ०० | ०० | ११००७०००० |
| १२४०० | ३८४८०० | १४११९०० | ५२७००० | ६५४९०४०० |
| १७८२७.५६९१६ | ६२७४६३.४६५१ | २३३९१५८.१ | ८७११९७.१६५ | १७८७१४०२.२८ |
| १४३.७७०७१९ | १६३.०६२२३१ | १६५.६७४४९ | १६५.३१२५५५ | २७.२८८५८३१९ |
| | | | | —४.८६ |

संदर्भ : सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.९
करापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नांचे विवेचन



एकूण कर स्रोतांमध्ये संकलित कराचे प्रमाण हे ५० टक्के पेक्षा जास्त आहे. सन २००१-०२ मध्ये हे प्रमाण ५० टक्के होते. २००१-०२ मध्ये ते ६० टक्के झाले आहे. २००२-०३ ते २००४-०५ पर्यंत संकलित कराचे एकूण कर उत्पन्नातील प्रमाण हे जवळपास ५० टक्के पर्यंत असल्याचे दिसून येते. तर २००५-०६ ला हे प्रमाण ७० टक्के इतके झाले होते. २००६-०७ मध्ये त्यात घट ते होऊन ५० टक्के पर्यंत आले होते. २००१-०२ मध्ये ते ८० टक्के पर्यंत पोहचले पुन्हा कमी होऊन २००८-०९ मध्ये ७० टक्के पर्यंत आले. सन २०१०-११ मध्ये ते सर्वाधिक म्हणजेच ९० टक्के इतके झाले आहे. शिक्षण कराच्या बाबतीत चढ उतार दिसून येतात. सन २००१-०२ मध्ये एकूण कर उत्पन्नात शिक्षण कराचे प्रमाण हे जवळपास १० टक्के इतके होते. सन २००२-०३ मध्ये ते १५ टक्केच्या आसपास पोहचले तर २००४-०५ मध्ये ते २५ टक्के पर्यंत पोहचले पुन्हा २००६-०७ मध्ये हे प्रमाण २५ टक्केवर पोहचले आहे तर २००७-०८ ते २०१०-११ या काळात ते ५ टक्के च्या आसपास स्थिर असल्याचे दिसून येते. खुदाई पाणीपट्टी चे एकूण करातील प्रमाण देखील चढ-उतार स्वरूपाचे आहे. २०१०-११ हे वर्ष

वगळता इतर वर्षी पाणीपट्टीचे एकूण कर उत्पन्नातील प्रमाण हे जवळपास १५ ते २० टक्के च्या आसपास राहिले आहे.

थोडक्यात सातारा नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नात संकलित कर, शिक्षण कर, आणि पाणीपट्टी कर यांचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते. सरासरीचा विचार केल्यास रु. ४,१६,३८,४५४/- इतका सरासरी संकलित कर प्रतिवर्षी प्राप्त होत होता तर अभ्यासकाळात करमणूक कर आणि जाहीरात कर सरासरी प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु.१,०३,१८१/- आणि रु. १,०८,३६३/- इतका प्राप्त होत होता. पाणीपट्टीच्या आणि कीरकोळ पाणी पुरवठ्या पासून मिळणाऱ्या कराच्या सरासरीचा विचार केल्यास ते अनुक्रमे रु. ८८,०८,८१८/- आणि रु. ४०,०००/- इतका होता. शिक्षण कराच्या सरासरीचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी रु. ७१,५६,४५४/- इतका प्राप्त होत होता.कोंडवाडा आणि रोजगार हमी पासून सरासरी प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु.११,१८१/- आणि रु.३४,१०,९०९/- इतका कर प्राप्त झाल्याचे दिसून येत. विकास कर आणि वृक्षकर हे अनुक्रमे रु.१५,८६,१८१/- आणि रु.५,४४,८००/- इतके होते हे स्पष्ट होते. संयुक्त वृध्दीदराच्या विचार केल्यास तो खुदाई पाणीपट्टी कराच्या बाबीत सर्वाधिक म्हणजेच ९.६५ टक्के इतका नोंदवला आहे. तर संकलित कराच्या बाबतीत तो -९.५६ टक्के इतका असून जाहीरात कराच्या बाबतीत -७.५१ इतका आहे. तर शिक्षण कराच्या बाबतीत ४.८६ टक्के इतका आहे.

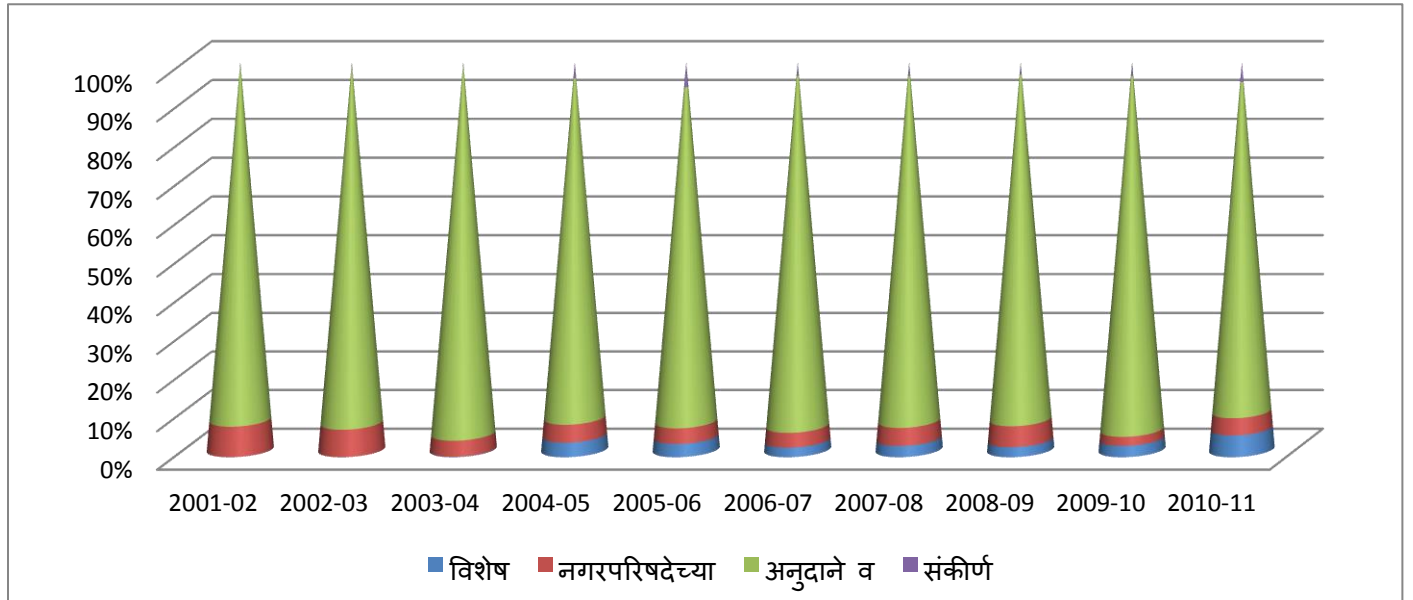
तक्ता क्र. ४.३.२ मध्ये करेत्तर उत्पन्नाच्या स्रोतांचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. सातारा नगरपालिकेचे करेत्तर उत्पन्नाचे प्रमाण हे एकूण उत्पन्नात प्रमाण जास्त आहे. हे स्पष्ट झाले असले तरी करेत्तर उत्पन्नामध्ये कोणते स्रोत प्रमुख आहेत हे वाहणे क्रमप्राप्त ठरते .

तक्ता क्र. ४.६.२
सातारा नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा

| वर्ष | विशेष | नगरपरिषदेच्या | अनुदाने व | संकीर्ण | एकूण |
|---------|---------------|---------------|-------------|-------------|-------------|
| | अधिनियमाखालील | मालमत्तेपासून | अंशदाने | जमा | |
| | उत्पन्न | उत्पन्न | | | |
| २००१-०२ | ४०००० | ८३४६८०० | ९७९७८००० | १७४१२०० | १०८१०६००० |
| २००२-०३ | २०००० | ८३३४८०० | १०९२८६००० | २१०१२०० | ११९७४२००० |
| २००३-०४ | १५७००० | ५००१००० | ११६१४३००० | १७५०००० | १२३०५१००० |
| २००४-०५ | ४३२६००० | ५३०७००० | १०२१४९००० | ४९३६००० | ११६७१८००० |
| २००५-०६ | ४४०९००० | ५१५१००० | ११२४९८००० | ८३९६००० | १३०४५४००० |
| २००६-०७ | ३९०१००० | ५९७३००० | १४३९२६००० | ५७३२००० | १५९५३२००० |
| २००७-०८ | ४४६१००० | ७०९९००० | १३७९८७००० | ५५५९००० | १५५१०६००० |
| २००८-०९ | ४९४६००० | १०१७६००० | १७०६८५००० | ६१६८००० | १९१९७५००० |
| २००९-१० | ११६१९००० | ९३३०००० | ३६८७१२००० | १४५१५००० | ४०४१७६००० |
| २०१०-११ | १२३२८००० | ९७१९००० | १८८९६१००० | ११३४०००० | २२२३४८००० |
| mean | ४६२०७०० | ७४४३७६० | १५४८३२५०० | ६२२३८४० | १७३१२०८०० |
| SD | ४३६१८७४.०१२ | १९९६६८४.७५ | ८०९२१६१८.९४ | ४२०४३३२.९६९ | ८८९८१५३९.३३ |
| CV | ९४.३९८५५४६ | २६.८२३६०४६ | ५२.२६३९७४९ | ६७.५५२०७३४६ | ५४.३९८५२५९६ |
| CGR | -१०३.५५ | -६.११ | -१४.७१ | -२४.३ | -१२.६२ |

संदर्भ : सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१०
सातारा नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा



तक्ता क्र. ४.६.२ मध्ये करेत्तर उत्पन्नाच्या स्रोतांवरून खालील नोंदी नोंदवता येतील.

करेत्तर उत्पन्नात अंशदाने आणि अनुदाने यांचे प्रमाण अभ्यास काळात ९० टक्के पेक्षा जास्त असल्याचे दिसून येत आहे. सन २००१-०२ मध्ये अंशदाने व अनुदाने यांची रक्कम ही रु. ९,७९,७८,०००/- होती की २००९-१० मध्ये सर्वाधिक म्हणजेच रु.३,६८,७१२,०००/- इतकी झाली तर २०१०-११ मध्ये रु.१८,८९,६१,०००/- इतकी होती. सरासरीचा विचार केल्यास प्रतिवर्षी रु. १४,७२,५३,०९०/- इतके अनुदान आणि अंशदानाच्या माध्यमातून सातारा नगरपालिकेला उत्पन्न प्राप्त होत होत हे स्पष्ट होत. अंशदान आणि अनुदान यांच्या वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो -१४.१७ टक्के जरी असला तरी साधा वृद्धीदर हा धनच आहे. तर विचलन गुणांक हा ५४.८५ टक्के असून त्यांचे प्रचरण हे रु.८,०७,७९,९४४/- असल्याचे दिसून येते. नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे नेहमीच २ ते ५ टक्के च्या दरम्यान राहिले आहे. विशेष अधिनियमाखालील उत्पन्नाचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे १ ते २ टक्के च्या आसपास आहे. संकीर्ण जमा उत्पन्नाचा करेत्तर उत्पन्नातील हीस्सा देखील नगण्य स्वरूपाचा आहे. सरासरीचा विचार करता सातारा नगरपरिषदेला अनुदाने व अंशदाने स्वरूपाचे प्रतिवर्षी सरासरी रु. १४,७२,५३,०९०/- प्राप्त होत होते. तर विशेष अधिनियमाखालील उत्पन्न हे प्रतिवर्षी सरासरी रु.४२,०२,३६३/- इतके प्राप्त होत होत तर नगरपरिषदेच्या मालमत्तेपासून आणि संकीर्ण जमा याच्या माध्यमातून सरासरी प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु. ७१,१४,२३६/- आणि रु. ५८,०३,०९०/- उत्पन्न प्राप्त होत होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो सर्वच बाबीत ऋण नोंदविला असला तरी साधा वृद्धीदर मात्र धन आहे.

थोडक्यात सातारा नगरपालिकेचे अंशदान आणि अनुदान हे दोन कर उत्पन्नाचे मुख्य स्रोत आहेत हे स्पष्ट होत.

४.५. रहिमतपूर नगरपालिका उत्पन्नाचे स्वरूप

तक्ता क्र. ४.७ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्चाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे.

तक्ता क्र. ४.७

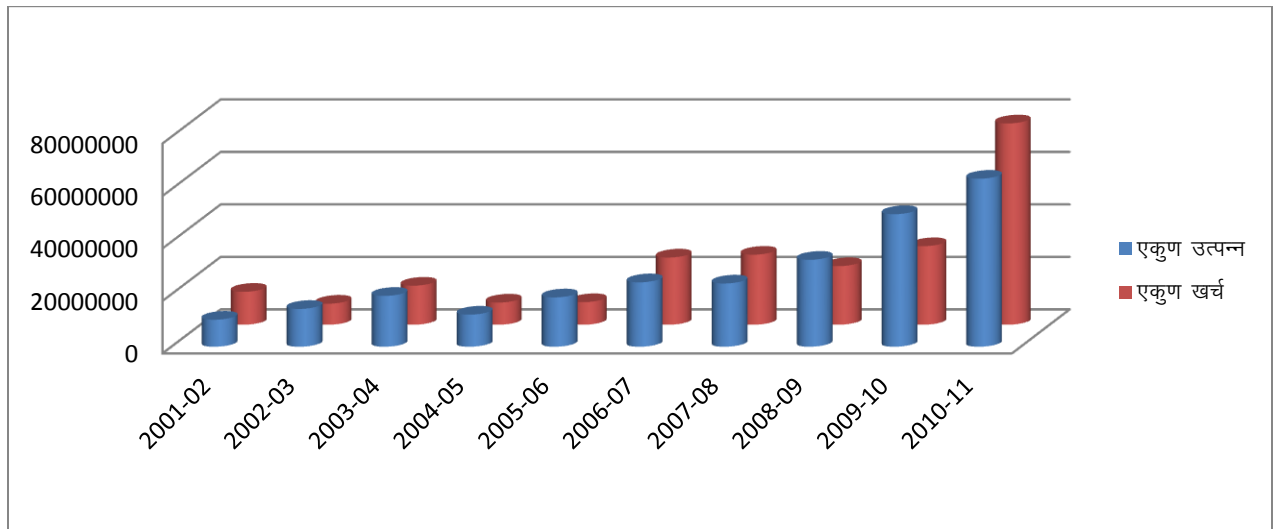
रहिमतपूर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक

| वर्ष | एकूण उत्पन्न | एकूण खर्च | वाढ/घट |
|---------|--------------|-------------|-------------|
| २००१-०२ | १०३०२००० | १२५४७००० | .२२४५००० |
| २००२-०३ | १४४२१००० | ८०२५००० | ६३९६००० |
| २००३-०४ | १९३७६००० | १४८७८००० | ४४९८००० |
| २००४-०५ | १२२३४००० | ८४४७००० | ३७८७००० |
| २००५-०६ | १८७९८००० | ८६१०००० | १०१८८००० |
| २००६-०७ | २४५५५००० | २५६१२००० | १०५७००० |
| २००७-०८ | २४११०००० | २६६८१००० | .२५७१००० |
| २००८-०९ | ३३१२८००० | २२३२५००० | १०८०३००० |
| २००९-१० | ५०५२३००० | २९९२३००० | २०६००००० |
| २०१०-११ | ६४०२२००० | ७६७१७००० | १२६९५००० |
| CGR | २०.०९ | २४.४६ | -४.३७ |
| Mean | २७१४६९०० | २३३७६५०० | ३७७०४०० |
| SD | १७४९९५६८.५९ | २०४७००२९.७३ | ९१४१५६२.७१८ |
| CV | ६४.४६२४९३२८ | ८७.५६६७००४३ | २४२.४५६०४४९ |

संदर्भ : रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.११

रहिमतपूर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक



तक्ता क्र. ४.७ च्या निरीक्षणावरून खालील बाबीची नोंदी नोंदवता येतात. २००१-०२ मध्ये उत्पन्न १,०३,०२,००० रु. इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात ते रु.२,४५,५५,००० इतके झाल्याचे दिसून येते. त्यानंतर २०१०-११ ला रु. ६,४०,२२,००० इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात एकूण खर्च दाखवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१.०२ मध्ये खर्च तो रु.१,२५,४७,००० इतका होता. त्यामध्ये वाढ होत असताना आपल्याला दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात तो रु.२,५६,१२,००० इतका झाला. . त्यानंतर २०१०-११ मध्ये ७,६७,१७,००० इतका झाला. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न आणि खर्चाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की दोन्ही मध्ये सातत्याने वाढ घडून येत आहे. पण सन २००४-०५, २००५-०६ यावर्षी मात्र दोन्ही उत्पन्नामध्ये २००३-०४ च्या तुलनेत घट झाल्याचे दिसून येते. २००६-०७ पासून २०१०-११ पर्यंत एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्च यांच्यामध्ये झपाट्याने वाढ घडून आली आहे. विशेषता एकूण खर्चात घडून आलेली वाढ ही नोंद घेण्यासारखी आहे. सरासरी उत्पन्नाचा विचार करता ते रु. २०,७१,४६,९००/- तर रु.२,३३,७६,५००/- इतका सरासरी एकूण खर्च हा प्रती वर्षी होत होता असे दिसून येते. संयुक्त वृद्धीदर विचारात घेतल्यास एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत तो २० टक्के आहे. तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत २४.४६ टक्के इतका आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ६४.४६ टक्के असून एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ८७ टक्के इतका आहे. एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्च यांच्या वाढीची प्रवृत्ती विचारात घेतल्यास असे स्पष्ट होते की, २००१-०२, २००६-०७, २००७-०८, आणि २०१०-११ ही वर्षे वगळता इतर वर्षी उत्पन्नाच्या तुलनेने खर्च हा कमी झाला आहे. तर उलटपक्षी वरील नमूद केलेल्या वर्षी एकूण उत्पन्नाच्या तुलनेत एकूण खर्च हा जास्त झाला आहे.

तक्ता क्र. ४.८ रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण महसुली उत्पन्नाचा आणि भांडवली उत्पन्नाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे.

तक्ता क्र. ४.८

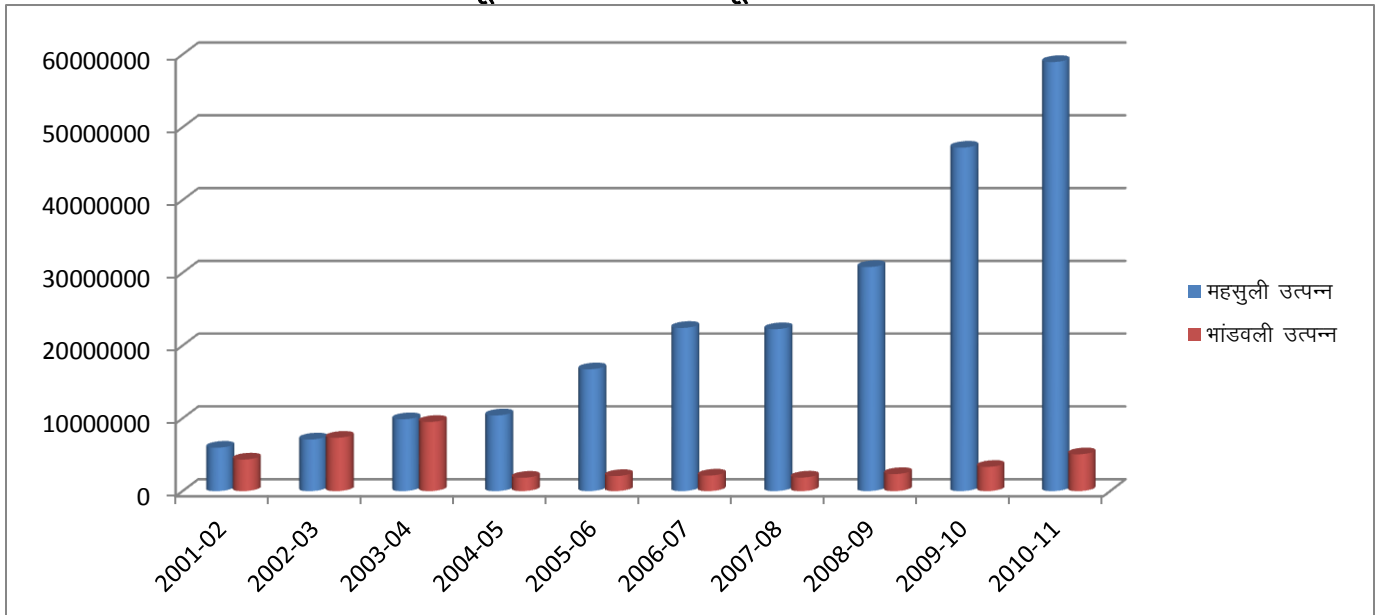
रहिमतपूर नगरपालिका एकूण उत्पन्न

| वर्ष | महसुली उत्पन्न | भांडवली उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|---------|----------------|-----------------|--------------|
| २००१-०२ | ५९६३००० | ४३३९००० | १०३०२००० |
| २००२-०३ | ७०९१००० | ७३३०००० | १४४२१००० |
| २००३-०४ | ९८७३००० | ९५०३००० | १९३७६००० |
| २००४-०५ | १०४००००० | १८३४००० | १२२३४००० |
| २००५-०६ | १६७३५००० | २०६३००० | १८७९८००० |
| २००६-०७ | २२४२५००० | २१३०००० | २४५५५००० |
| २००७-०८ | २२२४८००० | १८६२००० | २४११०००० |
| २००८-०९ | ३०७८६००० | २३४२००० | ३३१२८००० |
| २००९-१० | ४७१९२००० | ३३३१००० | ५०५२३००० |
| २०१०-११ | ५८९६३००० | ५०५९००० | ६४०२२००० |
| CGR | २९.१ | -६.४८ | २२.६२ |
| mean | २३१६७६०० | ३९७९३०० | २७१४६९०० |
| SD | १७८०६०८९.०५ | २६३१२६५.४३५ | १७४९९५६८.५९ |
| CV | ७६.८५७७१९६ | ६६.१२३८२६६८ | ६४.४६२४९३२८ |

संदर्भ : रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१२

रहिमतपूर नगरपालिका एकूण उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.८ चे निरीक्षण केल्यास पुढील बाबी स्पष्ट होतात.

२००१-०२ मध्ये महसुली उत्पन्न ५९,६३,००० रु. इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात २,२४,२५,०००रु. इतके झाल्याचे दिसून येते.व त्यानंतर २०१०-११ ला रु.५,८९,६३,००० इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात भांडवली उत्पन्न दाखवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली ते रु. ४३,३९,००० इतके होते. त्यामध्ये वाढझाल्याचे दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात रु. २१,३०,००० झाले मात्र त्यानंतर त्यामध्ये घट होत असताना दिसून येते.२०१०-११ ला रु. ५०,५९,००० इतके होते. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे भांडवली उत्पन्नाच्या तुलनेत नेहमीचजादा असल्याचे दिसून येते. सन २००१-०२ मध्ये महसुली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे जवळपास ६० टक्के इतके होते. त्यामध्ये सातत्याने वाढ होऊन २०१०-११ मध्ये ते जवळपास ९० टक्के पर्यंत पोहचल्याचे दिसून येते. सरासरी उत्पन्नाचा विचार केल्यास रहिमतपूर नगरपालिकेला रु. २,३१,६७,६००/- इतका महसूल प्रतिवर्षी प्राप्त होता होते तर भांडवली उत्पन्न सरासरी प्रतिवर्षी रु.३९,७८,९००/- इतके होते हे दिसते आहे. संयुक्त वृद्धीदराचा विचसार केल्यास महसुली उत्पन्नाचा वृद्धीदर हा २९.१ टक्के नोंदवला असून तो भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत -६.४८ टक्के इतका झाला आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत ७६.८५ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो ६६ टक्के इतका आहे. तर प्रचरणाचा विचार केल्यास तो रु. १,७८,०६,०८९/- इतका महसुली खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो रु.२६,३१,०६२/- असल्याचे दिसून येते.

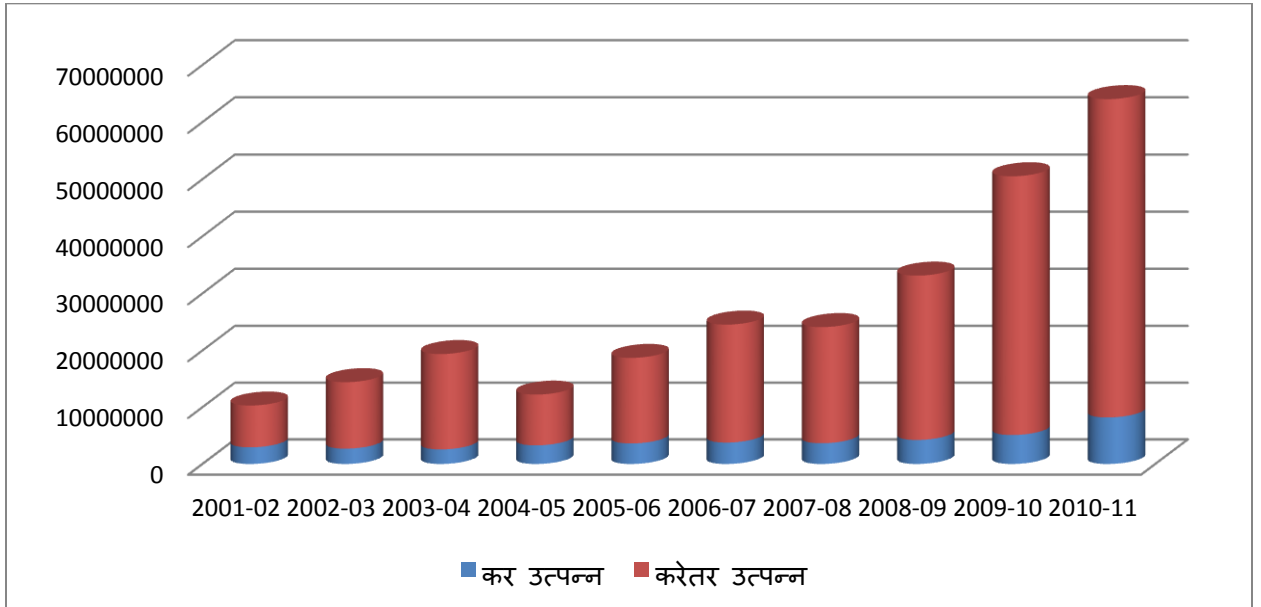
थोडक्यात असे म्हणता येईल की रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्राबल्य असून तो सातत्याने आणि झपाट्याने वाढत असल्याचे दिसून येते. तक्ता क्र. ४.९ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नाचे करेत्तर उत्पन्नाचे वर्गीकरण केले आहे.

तक्ता क्र. ४.९
रहिमतपूर नगरपालिकेच्या उत्पन्नातील वाढ

| वर्ष | कर उत्पन्न | करेत्तर उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|---------|-------------|-----------------|--------------|
| | Tax Revenue | Non tax revenue | Total |
| २०००.०१ | २५१६००० | ६६७५००० | ९१९१००० |
| २००४.०२ | २९३६००० | ७३६६००० | १०३०२००० |
| २००२.०३ | २७०२००० | ११७१९००० | १४४२१००० |
| २००३.०४ | २५७०००० | १६८०६००० | १९३७६००० |
| २००४.०५ | ३२८०००० | ८९५४००० | १२२३४००० |
| २००५.०६ | ३६१७००० | १५०८१००० | १८६९८००० |
| २००६.०७ | ३७७३००० | २०७७७००० | २४५५०००० |
| २००७.०८ | ३६५५००० | २०४५५००० | २४११०००० |
| २००८.०९ | ४२३४००० | २८८९४००० | ३३१२८००० |
| २००९.१० | ५१०४००० | ४५४१९००० | ५०५२३००० |
| २०१०.११ | ८२००००० | ५५८२२००० | ६४०२२००० |
| Mean | ३८७१५४५.४५५ | २१६३३४५४.५५ | २५५०५००० |
| SD | १६३१९२४.१६३ | १५९४३८५८.३१ | १७४६५९०९.६१ |
| CV | ४२.१५१७५००४ | ७३.७०००१०६९ | ६८.४८०३३५६५ |
| CGR | -९.८२ | -२४.९५ | -१९.६ |

संदर्भ : रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१३
रहिमतपूर नगरपालिकेच्या उत्पन्नातील वाढ



तक्ता क्र. ४.९ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नाचे करेत्तर व उत्पन्नाचे वर्गीकरण केले आहे. तक्ता क्र. ४.९ च्या सूक्ष्म निरीक्षणावरून खालील बाबी स्पट होतात.

अभ्यासासाठी विचारात घेतलेल्या इतर तीन नगरपालिकांच्या प्रमाणेच रहिमतपूर नगरपालिकेच्या उत्पन्नात करेत्तर उत्पन्नाचे हे जास्त असल्याचे दिसून येते ते सर्वसाधारण ७० ते ९० टक्के च्या आसपास होते ते २०१०-११ मध्ये ९० टक्के वरती पोहचले आहे. कर उत्पन्नाच्या बाबतीत असे दिसून येते की ते १० ते ३० टक्के च्या दरम्यान आहे. सन २००१ मध्ये २५ टक्के कर उत्पन्न होते तर ते २०१०-११ मध्ये ते फक्त १० टक्के इतके होते म्हणजेच कर उत्पन्न हे रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बाबत कमी आहे असे स्पष्ट होते. सरासरीचा विचार केल्यास कर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी रु.३८,७१,५४५/- इतके होते तर, करेत्तर उत्पन्न हे रु. २,१६,३३,१८१/- होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो सर्वच बाबतीत त्रण आहे. पण साधा वृद्धीदर मात्र धन आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो कर उत्पन्नाच्या बाबतीत ४२.१५, टक्के करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ७३ टक्के आणि एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ६८ टक्के आहे. तर प्रचरणांचा विचार केल्यास तो रु. १६,३१,९२४/- इतका कर उत्पन्नाच्या बाबतीत होता तर करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत तो रु.१५,९४,४३,९३७/- इतके होता. थोडक्यात रहिमतपूर नगरपालिकेच्या उत्पन्नाच्या स्रोतांमध्ये करेत्तर उत्पन्नाचे प्राबल्य अधिक असल्याचे दिसून येते.

तक्ता क्र. ४.९.१

तक्ता क्र.४.९.१ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेच्या करापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे वर्गीकरण केले आहे. यामध्ये प्रामुख्याने संकलित कर, शो टॅक्स, गाडीकर, वृक्षकर, पाणीपट्टी, रोजगार हमी कर, शिक्षण कर, हॉटेल कर, वसुली व्याज. इत्यादी चा समावेश होतो.

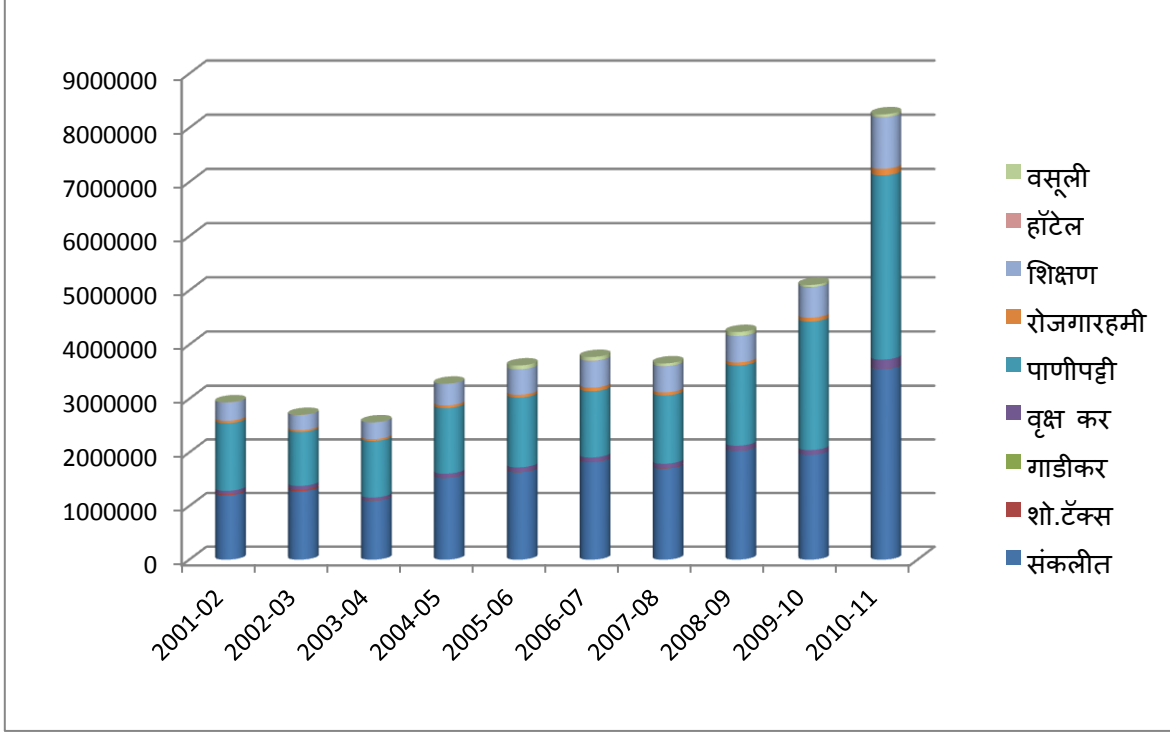
रहिमतपूर नगरपालिका

तक्ता क्र ४.९.१ करापसून मिळणारे उत्पन्न

| वर्ष | संकलीत | शो.टॅक्स | गाडीकर | वृक्ष कर | पाणीपट्टी | रोजगारहमी | शिक्षण | हॉटेल | वसूली | एकूण |
|---------|----------|----------|---------|----------|-----------|-----------|----------|---------|--------|------------|
| | कर | | | | कर | कर | कर | कर | व्याज | |
| २००१.०२ | १२०३००० | २०००० | १००० | ६१००० | १२६२००० | ४५००० | ३४१००० | ३००० | ० | २९३६००० |
| २००२.०३ | १२७६००० | ३०००० | १००० | ६९००० | १००६००० | ३४००० | २८३००० | ३००० | ० | २७०२००० |
| २००३.०४ | १०९९००० | ९००० | ५०० | ५२००० | १०५४५०० | ३५००० | ३११००० | २००० | ० | २५६३००० |
| २००४.०५ | १५२६००० | ७००० | १००० | ७०००० | १२२६००० | ४८००० | ४००००० | २००० | ० | ३२८०००० |
| २००५.०६ | १६३२००० | ९००० | ५०० | ८१००० | १३०३००० | ५१००० | ४६७००० | २००० | ७१००० | ३५४५५०० |
| २००६.०७ | १८१९००० | ७००० | ५०० | ८१००० | १२३५००० | ६५५०० | ४९५००० | ३००० | ६७००० | ३७०६००० |
| २००७.०८ | १६९९००० | ७००० | ५०० | ८३००० | १२७५५०० | ५६००० | ४८२००० | २००० | ५०००० | ३६०५००० |
| २००८.०९ | २०२८००० | ४००० | १००० | ९४००० | १४९१००० | ५५००० | ४८७००० | २००० | ७२००० | ४१६२००० |
| २००९.१० | १९५४००० | ० | १००० | ९०००० | २३८३००० | ७१००० | ५६५००० | १००० | ३९००० | ५०६५००० |
| २०१०.११ | ३५५०००० | ५००० | १००० | १७०००० | ३४००००० | १२०००० | ९५०००० | ४००० | ५०००० | ८२००००० |
| mean | १७७८६०० | ९८०० | ८०० | ८५१०० | १५६३६०० | ५८०५० | ४७८१०० | २४०० | ३४९०० | ३९७६४५० |
| SD | ६९६८०७.७ | ८७५३.४१२ | २५८.१९९ | ३२५११ | ७५१५१५.६ | २४७३२.४ | १८९०४०.५ | ८४३.२७४ | ३१७१९ | १६५४७६४.९५ |
| CV | ३९.१७७३१ | ८९.३२०५३ | ३२.२७४९ | ३८.२०४ | ४८.०६३१६ | ४२.६०५३ | ३९.५३९९६ | ३५.१३६४ | ९०.८८६ | ४४.६१४१२६८ |
| CGR | १०.१ | | ०.६२ | —९.९५ | —८.८८ | —१३.०७ | —११.७६२ | ४.६२ | | —९.८१ |

संदर्भ : रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१४
करापसून मिळणारे उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.९.१ चे निरीक्षण केल्यास खालील गोष्टी स्पष्ट होतात.

कर उत्पन्न हे अभ्यास काळात झापाटयाने वाढले आहे. २००१-०२ मध्ये ते रु. ३० लाखाच्या जवळपास हाते ते २०१०-११ मध्ये ८० लाखापर्यंत पोहचले आहे. संकलित कराचे कर उत्पन्नातील प्रमाण हे नेहमीच जास्त आहे ते नेहमीच ४० टक्के च्या दरम्यान राहिले आहे. संकलित करानंतर, एकूण कर उत्पन्नात पाणीपट्टी कराचे प्राबल्य जास्त असल्याचे दिसून येते; ते सातत्याने ३० ते ४० टक्के दरम्यान राहिले आहे. म्हणजेच संकलित कर आणि पाणीपट्टी कराचे एकूण करातील प्रमाण हे जवळपास ८० टक्के इतके राहिले आहे. सरासरीचा विचार केल्यास तो संकलित करापासून रु. १७,०४,२७२/-, शो टॅक्स पासून रु. १०,७२७, पाणीपट्टीपासून रु. १५,२९,५४५, रोजगारहमी पासून रु. १,०८,९०९, शिक्षण करा पासून रु. ४५,३८,१८, हॉटेल करापासून रु. २,५४५ वसुली पासून रु. ३१,४५४ इतके उत्पन्न प्रतिवर्षी रहिमतपूर नगरपालिकेला मिळत होते. थोडक्यात रहिमतपूर नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नात संकलित कराचे आणि पाणीपट्टी पासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते.

तक्ता क्र ४.९.२

तक्ता क्र. ४.३.२ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेला मिळणाऱ्या करेत्तर उत्पन्नाच्या वेगवेगळ्या मार्गाची मांडणी केली आहे. तक्ता क्र. ४.३.२ चे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खलील बाबी स्पष्ट होतात.

तक्ता क्र. ४.३.२

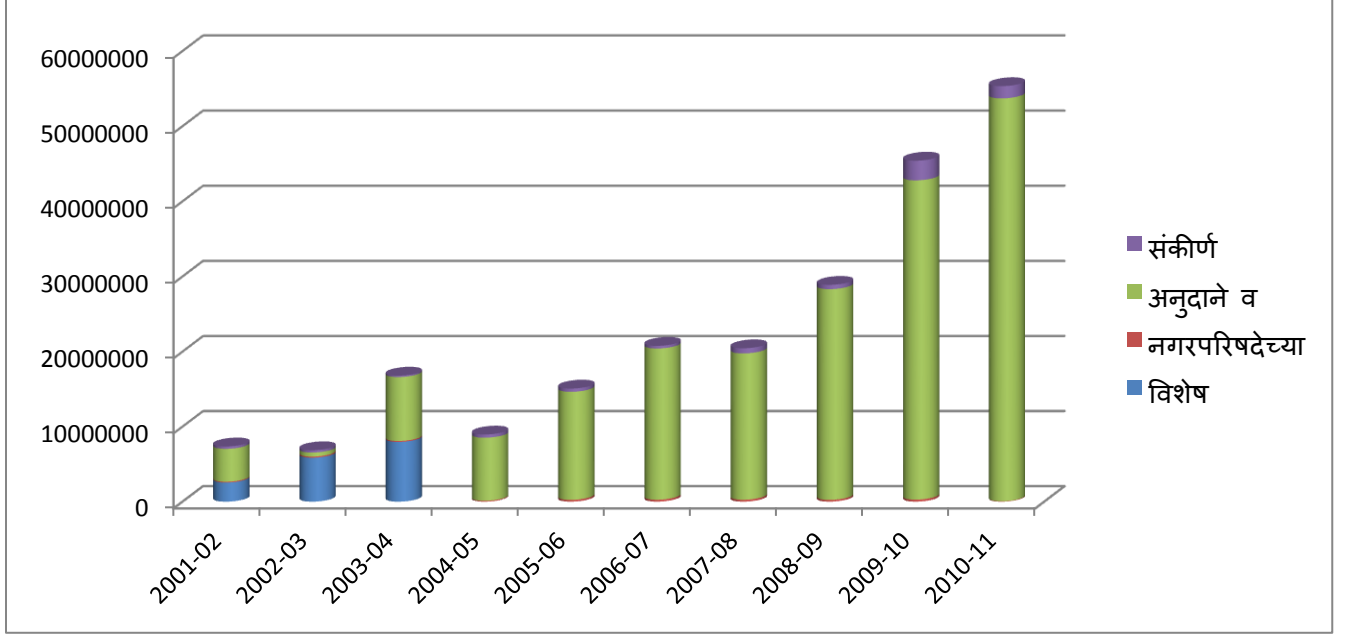
रहिमतपूर नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा

| वर्ष | विशेष | नगरपरिषदेच्या | अनुदाने व | संकीर्ण | एकूण |
|---------|---------------|---------------|-------------|-------------|------------|
| | अधिनियमाखालील | मालमत्तेपासून | अंशदाने | जमा | |
| | उत्पन्न | उत्पन्न | | | |
| २००१.०२ | २५४९००० | ११३००० | ४३८८००० | ३१६००० | ७३६६००० |
| २००२.०३ | ५८६५००० | १४९००० | ५३७००० | ३०८००० | ६८५९००० |
| २००३.०४ | ७९६७००० | १२८००० | ८५२६००० | १८४००० | १६८०५००० |
| २००४.०५ | ० | १२०००० | ८४०९००० | ४२५००० | ८९५४००० |
| २००५.०६ | ० | २४२००० | १४४०३००० | ४३५००० | १५०८०००० |
| २००६.०७ | ० | २६४००० | २०१६०००० | ३५३००० | २०७७७००० |
| २००७.०८ | ० | २६२००० | १९५०८००० | ६८४००० | २०४५४००० |
| २००८.०९ | ० | २३९००० | २८०७७००० | ५७८००० | २८८९४००० |
| २००९.१० | ० | २७४००० | ४२५२७००० | २६१८००० | ४५४१९००० |
| २०१०.११ | ० | ५३००० | ५३६५२००० | १६३१००० | ५५३३६००० |
| Mean | ५४६०३३३.३३३ | १८४४०० | २००१८७०० | ७५३२०० | २२५९४४०० |
| SD | २७३१५७४.१४९ | ८००२४.१०८३३ | १७०७९२२४.३२ | ७७२१५४.२२३ | १६३१६६४०.५ |
| CV | ५०.०२५७७६५ | ४३.३९५३९४९७ | ८५.३१६३३५८३ | १०२.५१६०९४४ | ७२.२१५४१८२ |
| CGR | | १४.७ | ४०.८२ | २२.८६ | १४.७ |

संदर्भ : रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१५

रहिमतपूर नगरपालिकेचा करेतर उत्पन्नाचा आढावा



. तक्ता क्र. ४.९.२ चे निरीक्षण केल्यास खलील बाबी स्पष्ट होतात.

एकूण करेत्तर उत्पन्नात इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणेच रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बाबतीत अंशदाने आणि अनुदाने यांचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते. २००४-०५ पासून २०१०-११ पर्यंत अंशदाने व अनुदाने यांचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे ९० टक्के पेक्षा जास्त असल्याचे दिसून येते. विशेष अधिनियमाखालील उत्पन्नाचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे २००१-०२ ते २००३-०४ या काळात ४० ते १० टक्के दरयान राहिले आहे. पण २००४-०५ पासून हे उत्पन्न बंद झाले आहे. नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे नगण्य स्वरूपाचे आहे. सरासरीचा विचार केल्यास अंशदाने आणि अनुदाने या स्वरूपाने रहिमतपूर नगरपालिकेला प्रतिवर्षी जवळपास रु. १,८४,८४,५४६/- तर संकीर्ण कराच्या रूपाने रु.७,०५,०००/- नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून सरासरी प्रतिवर्षी रु. ०२,२१,९५४/- आणि विशेष अधिनियमांतर्गत रु.४८,९३,५००/- प्राप्त होत होते. वृद्धीदराचा विचार केल्यास अनुदान आणि अंशदाने याचा संयुक्त वृद्धीदर हा सर्वात जास्त म्हणजे ४० टक्के असून, संकीर्ण उत्पन्नाच्या बाबतीत तो २२.८६ टक्के आहे. तर नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत तो १४.७ टक्के आहे.

थोडक्यात इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे रहिमतपूर नगरपालिकेच्या करेत्तर उत्पन्नात अंषदाने व अनुदाने यांचे प्राबल्य अधिक असल्याचे स्पष्ट होते.

४.५ महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या उत्पन्नाचे स्वरूप

तक्ता क्र. ४.१० मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नाचा आणि एकूण खर्चाचा आढावा घेण्यात आला आहे.

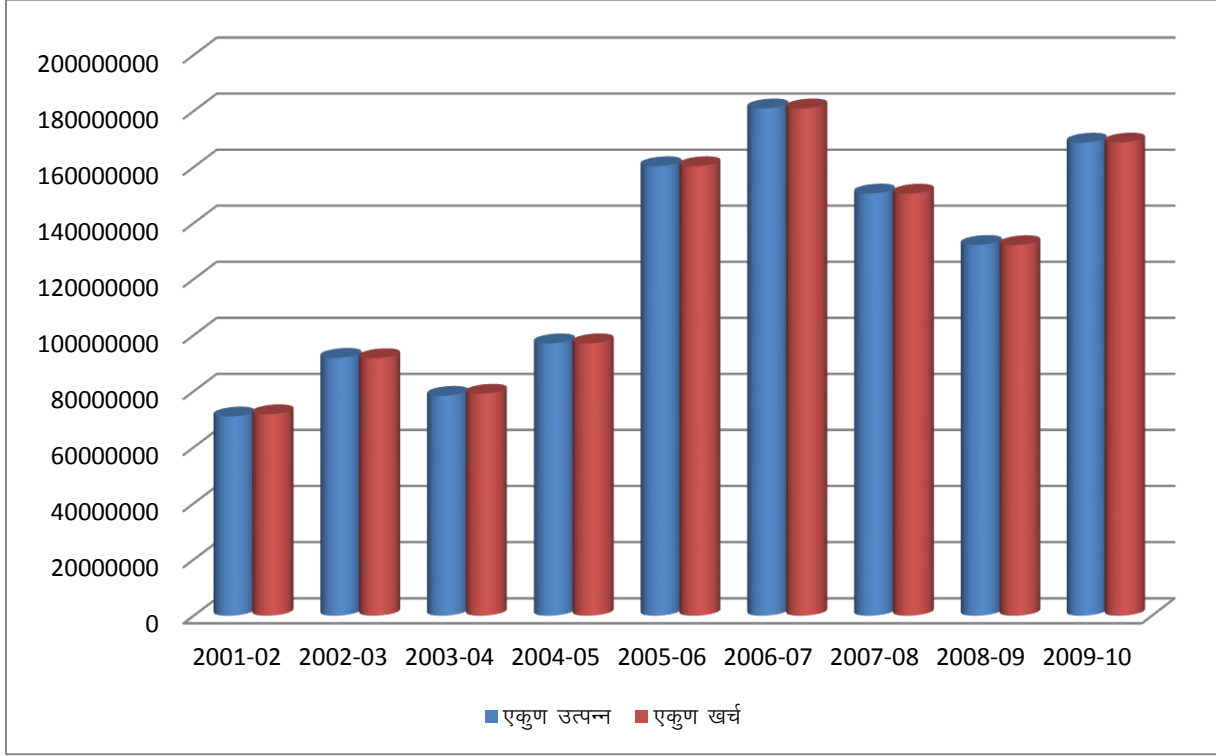
तक्ता क्र. ४.१०

महाबळेश्वर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक

| वर्ष | एकूण उत्पन्न | एकूण खर्च | वाढ/घट |
|---------|--------------|-------------|--------------|
| २००१.०२ | ८७२७३३०० | ७१८०२००० | १५४७१३०० |
| २००२.०३ | ९१९३५००० | ९१७९०००० | १४५००० |
| २००३.०४ | ७८३८२००० | ७९१२५००० | -७४३००० |
| २००४.०५ | ९७०९६००० | ९७११३००० | -१७००० |
| २००५.०६ | १६०३२७००० | १६०३२१००० | ६००० |
| २००६.०७ | १८०९२६००० | १८०९३१००० | -५००० |
| २००७.०८ | १५०५६९००० | १५०५२६००० | ४३००० |
| २००८.०९ | १३२२२२००० | १३२१५१००० | ७१००० |
| २००९.१० | १६८७३३००० | १६८७६६००० | -३३००० |
| २०१०.११ | १४१३४८००० | १५८७७७००० | -१७४२९००० |
| CGR | १४.७ | १४.४१ | ०.२९ |
| Mean | १२८८११३० | १२९१३०२०० | .२४९०७० |
| SD | ३७३८५८४९.०८ | ४०५२३५९७.९८ | ७७६८११२.९४९ |
| CV | २९.००८००८४५ | ३४.३८१९६७९५ | .३११८.८४७२९१ |

संदर्भ : महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१६
महाबळेश्वर नगरपालिका संपूर्ण अंदाजपत्रक



तक्ता क्र. ४.१० चे निरीक्षण केल्यास खालील नोंदी नोंदवता येतात. २००१-०२ साली महाबळेश्वर नगरपालिकेने उत्पन्न ६,६१,०८,००० रु. इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना आपला दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात उत्पन्न १८,०९,२६,००० रु.इतके झाल्याचे दिसून येते.व त्यानंतर २०१०-११ ला १४१३४८००० रु.इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात एकूण खर्च दाखवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली खर्च ६,८६,०७,००० रु. इतका होता. त्यामध्ये घट होत असताना आपल्याला दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात १८०९३१००० रु.इतके झाले. आणि शेवटी त्यामध्ये घट झाल्याचे दिसून येते. त्यानंतर २०१०-११ ला १५८७७७००० रु.इतका झाला.महाबळेश्वर नगरपालिकेचा एकूण खर्चाचा आणि एकूण उत्पन्नाचा विचार केल्यास दोन्ही मध्येही वाढ येत आहे.

वाढीची प्रवृत्ती ही स्थिर असल्याचे दिसून येते.सन २००१-०२ मध्ये एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्च हे जवळपास १४ कोटी होते ते २००६-०७ मध्ये ३६ कोटी पेक्षा जास्त झाले आहे.

सरासरी एकूण उत्पन्नाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की ते रु. १२,१६,९५,५४५/- इतके प्रतिवर्षी होते तर एकूण खर्च हा सरासरी रु. १२,३६,२८,०९०/- इतका आहे. विचलन गुणांकांचा विचार केल्यास तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ३४.४४ टक्के तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ३४.४२ टक्के इतका आहे. वृद्धीदराचा विचार केल्यास एकूण उत्पन्नाचा संयुक्त वृद्धीदर हा १४.७ टक्के इतका असून एकूण खर्चाच्या बाबतीत १४.४१ टक्के इतका आहे. सन २००१-२००२, २००३-०४, २००४-०५, २००६-०७, २००९-१०, २०१०-११ यावर्षी एकूण उत्पन्नापेक्षा खर्च हा जास्त झाला असून इतर वर्षी मात्र एकूण उत्पन्नाच्या तुलनेत खर्च हा कमी झाला आहे. प्रचरणाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की ते एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत रु. ४,१९,१६,८९०/- इतके आहे. तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत रु. ४,२५,५५,२७०/- इतके आहे.

तक्ता क्र. ४.११

महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या भांडवली आणि महसुली उत्पन्नाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न तक्ता क्र. ४.११. केला गेला आहे. तक्ता क्र. ४.११ वरून खालील गोष्टी स्पष्ट होतात.

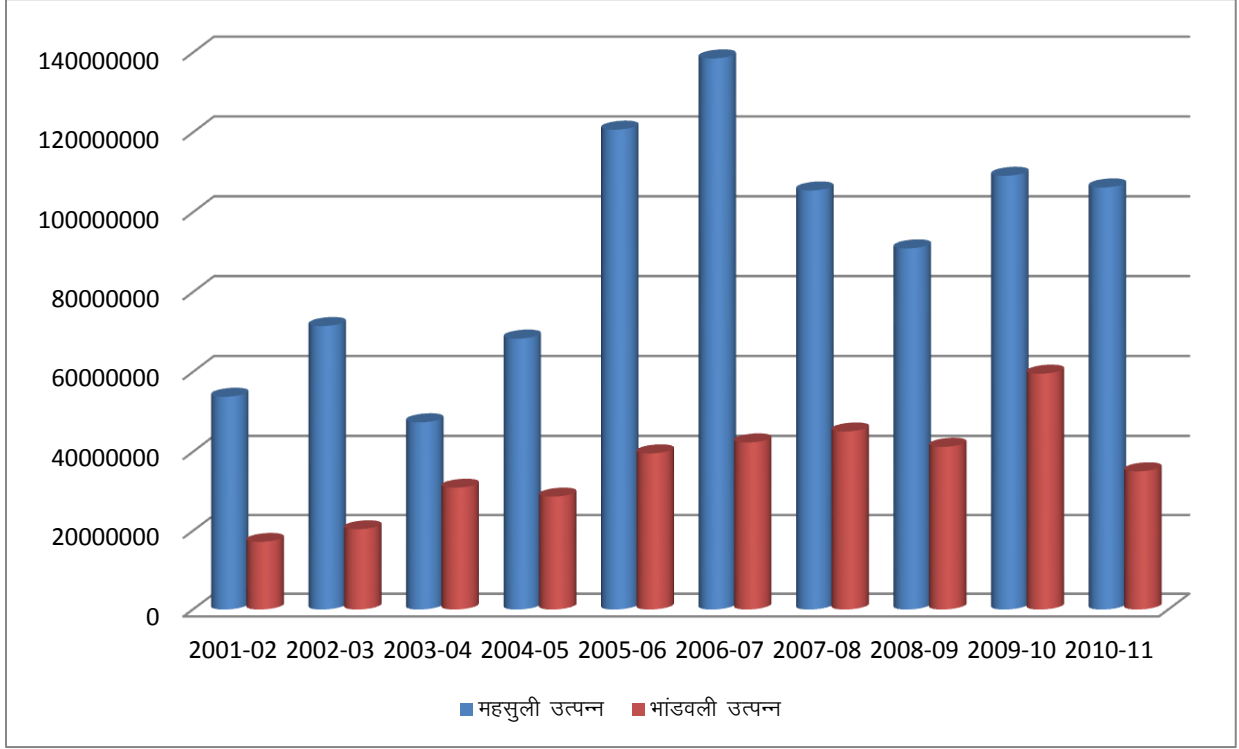
महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण उत्पन्न

| वर्ष | महसुली उत्पन्न | भांडवली उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|-------------|----------------|-----------------|--------------|
| २००१.०२ | ५३८०४००० | १७२०१००० | ७१००५००० |
| २००२.०३ | ७१५१६००० | २०४१९००० | ९१९३५००० |
| २००३.०४ | ४७४०१००० | ३०९८१००० | ७८३८२००० |
| २००४.०५ | ६८३७६५०० | २८७१९५०० | ९७०९६००० |
| २००५.०६ | १२०७०८००० | ३९६१९००० | १६०३२७००० |
| २००६.०७ | १३८५६०००० | ४२३६६००० | १८०९२६००० |
| २००७.०८ | १०५४७४००० | ४५०९५००० | १५०५६९००० |
| २००८.०९ | ९०९६५००० | ४१२५७००० | १३२२२२००० |
| २००९.१० | १०९१५३१०० | ५९५७९९०० | १६८७३३००० |
| २०१०.११ | १०६२४०००० | ३५१०८००० | १४१३४८००० |
| CGR | १९.८७ | ६.१६ | २६.०३ |
| mean | १८९४५७५५० | ३६०३४५४० | २२५४९२०९० |
| SD | ३१८३०८९९१.९ | १२४५०५२२.५८ | ३२७३१६७८६ |
| CV | १६८.०१०७१९ | ३४.५५१६३४५६ | १४५.१५६६५९८ |

संदर्भ : महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१७

महाबळेश्वर नगरपालिका एकूण उत्पन्न



तक्ता क्र. ४.११ चे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खलील नोंदी नोंदवता येतात. २००१-०२ साली महसुली उत्पन्न ५,३८,०४,००० रु. इतके होते. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होत असताना आपल्याला दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात ते १,३८,५६०,००० रु. इतके झाल्याचे दिसून येते. व त्यानंतर २०१०-११ ला १०,६२,४०,००० रु. इतक्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे दिसून आले. दुस-या भागात भांडवली उत्पन्न दाखवण्यात आले आहे. त्यामध्ये ते २००४.०२ साली १,७२,०१,००० इतके होते. ते वाढ झाल्याचे दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात ४,२३,६५,००० इतके होते . आणि त्यानंतर त्यामध्ये घट होत असताना दिसून येते. २०१०-११ ला ३५१,०७,००० इतके होते. नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे भांडवली उत्पन्नाच्या तुलनेत नेहमीच जादा असल्याचे दिसून येते. सरासरी भांडवली खर्चाचा आणि महसुली खर्चाचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु.६,१८,८१,३००/- आणि रु.१८,९४,५७,५००/- इतका असल्याचे दिसते.संयुक्त वृद्धी दराचा विचार केल्यास महसुली उत्पन्नाच्या बाबीत तो १९.८७ टक्के इतका असून भांडवली उत्पन्नाच्या बाबीत तो ६.१६ टक्के इतका आहे.

विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत १६८ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत १२९ टक्के इतका आहे. प्रचरणाचा विचार केल्यास ते महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत रु. १८,९४,५७,५००/- असून भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत रु. ३२,६२,५४,७०८/- इतका आहे. २००४-०५ मध्ये भांडवली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे ९० टक्के होते तर २००५-०६ ते २००६-०७ या काळात महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे ८० टक्के च्या जवळपास होते. सन २००९-१० मध्ये महसुली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे जवळपास ९३ टक्के इतके होते . थोडक्यात महाबळेश्वर नगरपालिकेचे महसुली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नात प्राबल्य असल्याचे दिसून येते.

महाबळेश्वर नगरपालिका- उत्पन्न

तक्ता क्र. ४.१२ मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या उत्पन्नाचे कर उत्पन्न आणि करेत्तर उत्पन्न असे वर्गीकरण केलेले आहे. अभ्यास काळातील महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या उत्पन्नात करेत्तर उत्पन्नाचे प्रमाण हे आधिक आहे. वेगळ्या शब्दात महाबळेश्वर नगरपालिका ही इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे उत्पन्नासाठी करेत्तर साधनावरती अवलंबून आहे असे म्हणता येईल.

तक्ता क्र. ४.१२

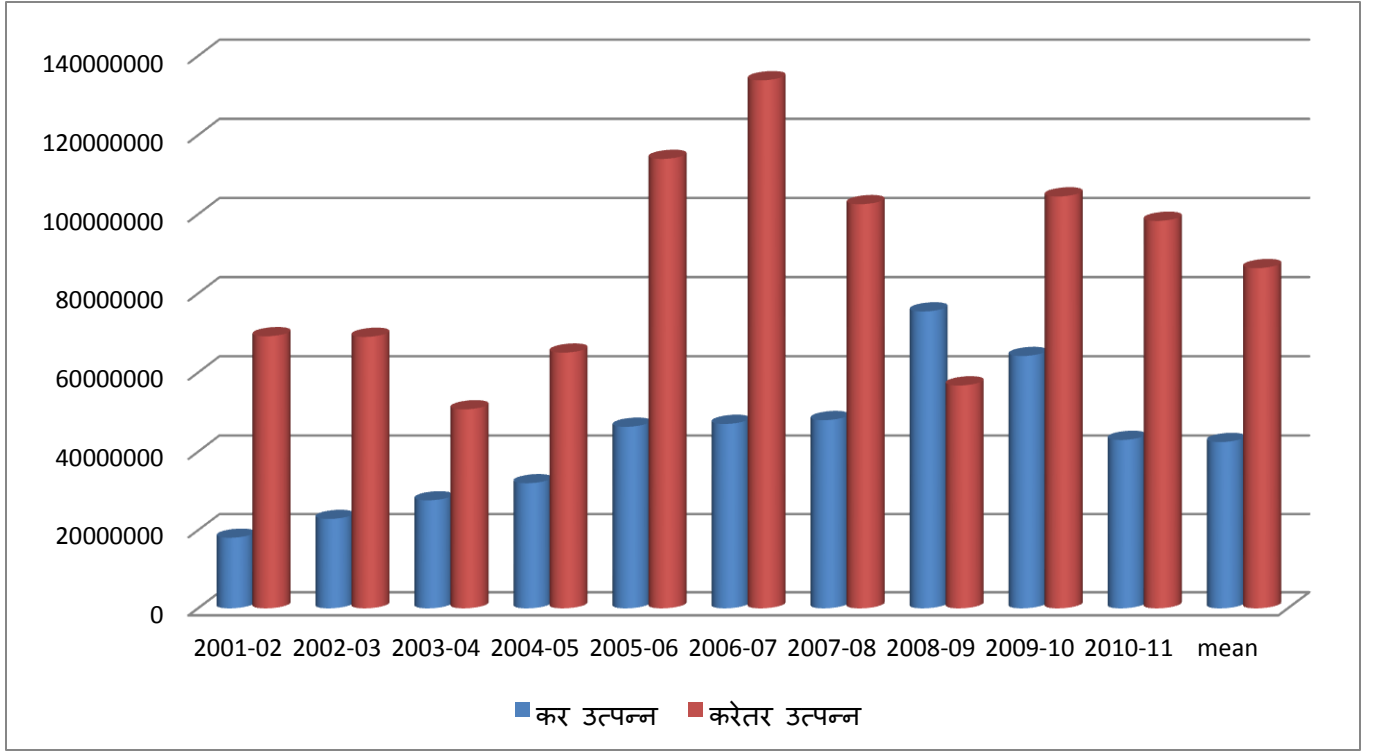
महाबळेश्वर नगरपालिकेचे एकूण उत्पन्न

| वर्ष | कर उत्पन्न | करेत्तर उत्पन्न | एकूण उत्पन्न |
|---------|-------------|-----------------|--------------|
| | Tax Revenue | Non tax revenue | Total |
| २००१.०२ | १८०७५००० | ६९१९८३०० | ८७२७३३०० |
| २००२.०३ | २२८९७००० | ६९०३८००० | ९१९३५००० |
| २००३.०४ | २७६६२००० | ५०७२०००० | ७८३८२००० |
| २००४.०५ | ३२०४०००० | ६५०५६००० | ९७०९६००० |
| २००५.०६ | ४६३२३००० | ११४००४००० | १६०३२७००० |
| २००६.०७ | ४७०५०००० | १३३८७६००० | १८०९२६००० |
| २००७.०८ | ४८००५००० | १०२५६४००० | १५०५६९००० |
| २००८.०९ | ७५४६०००० | ५६७६२००० | १३२२२२००० |
| २००९.१० | ६४२०५००० | १०४५२८००० | १६८७३३००० |

| | | | |
|---------|-------------|-------------|-------------|
| २०१०-११ | ४३०००००० | ९८३४८००० | १४१३४८००० |
| mean | ४२४७१७०० | ८६४०९४३० | १२८८८११३० |
| SD | १८०५४७६०.९९ | २७७९४८४७२३ | ३७३८५८४९.०८ |
| CV | ४२.५१००९७२८ | ३२.१६६४५१३१ | २९.००८००८४५ |
| CGR | १५.३६ | ५.९६ | ८.९७ |

संदर्भ : महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१८
महाबळेश्वर नगरपालिकेचे एकूण उत्पन्न



तक्ता ४.१२ च्या निरीक्षणावरून खालील निरीक्षणे नोंदविता येतात .करेत्तर उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे ४५ टक्के ते ८० टक्के या दरम्यान आहे. तर याउलट कर उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे २० टक्के ते ५५ टक्के या दरम्यान राहिले आहे.सन २००१-०२ मध्ये करेत्तर उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे ८० टक्के होते ते कमी होऊन २००४-०५ मध्ये ७० टक्के झाले, २००८-०९ मध्ये हे प्रमाण सर्वात कमी म्हणजे ४५ टक्के इतके झालेले आहे तर २०१०-११ मध्ये ७२ टक्के च्या जवळपास पोहचले आहे.कर उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण २००१-०२ मध्ये २० टक्के होते ते वाढत जाऊन २००४-०५ मध्ये ३० टक्के झाले, २००८-०९ मध्ये हे प्रमाण सर्वाधिक म्हणजे ५५ टक्के इतके झालेले आहे. तर

२०१०-११ मध्ये ते कमी होऊन २८ टक्के च्या जवळपास पोहचले आहे. वृद्धीची प्रवृत्ती विचारात घेतल्यास असे दिसून येते की, २००१-०२ ते २००२-०३ पर्यंत दोन्ही स्त्रोतांमध्ये वाढीची प्रवृत्ती होती, २००३-०४ मध्ये त्यामध्ये घट झाली पुन्हा २००४-०५ ते २००६-०७ पर्यंत दोन्ही स्त्रोतांपासून उत्पन्नात झपाट्याने वाढ घडून आली आहे. २००७-०८ ते २००८-०९ या काळात दोन्ही उत्पन्न स्त्रोतांमध्ये घटीची प्रवृत्ती दिसून येत आहे. २००९-१० मध्ये पुन्हा वाढीची प्रवृत्ती तर २०१०-११ मध्ये घटची प्रवृत्ती नोंदविली आहे. सरासरी करेत्तर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी रु. ८,३२,८४,३००/- होते तर कर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी रु. ३,९८,९०,३६३/- इतके होते. आणि एकूण सरासरी उत्पन्न हे रु.१२,३१,७४,४६३/- होते हे स्पष्ट होते.

वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो कर उत्पनाच्या बाबतीत १५.३६ टक्के आहे, करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ५.९६ टक्के आहे तर एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ८.९७ टक्के इतका आहे. विचलन गुणांकांचा विचार केल्यास तो कर उत्पनाच्या बाबतीत ४८ टक्के करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ३४ टक्के आणि एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ३२.६२ टक्के इतका आहे. एकूण कर उत्पन्न आणि करेत्तर उत्पन्न हे दोन्ही २०००-०१ मध्ये ६ कोटी च्या जवळपास होते. २००६-०७ मध्ये १८ कोटीच्या जवळपास झालेले आहे, म्हणजेच ६ वर्षांच्या कालावधीत असे म्हणता येईल. थोडक्यात इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे महाबळेश्वर नगरपालिका ही देखील करेत्तर उत्पन्नावरती अवलंबून असल्याचे दिसून येते.

तक्ता क्र ४.३.१

तक्ता क्र ४.१२.१ मध्ये करापासून मिळणाऱ्या एकूण उत्पन्नाच्या स्त्रोतांचे वर्गीकरण केलेले आहे. यामध्ये मुख्यत्वे करून, संकीर्ण कर, रोजगार हमी कर, वृक्ष कर, हॉटेल कर, छप्पर कर, करमणूक कर, जाहीरात कर, बोटीवरील कर, मोटारी कर, घोडा कर, विशेष स्वच्छता कर, व्हॅक्युम कर, कर्मचारी घरभाडे, प्रवासी कर, शिक्षण कर, कोंडवाडा, कार पार्किंग, पर्यावरण कर, पाणीपट्टी, प्रदुषण कर इत्यादी बाबींचा समावेश होतो.

तक्ता क्र. ४.१२.१

करापासून मिळणाऱ्या एकूण कर उत्पन्नाच्या स्रोतांचे वर्गीकरण

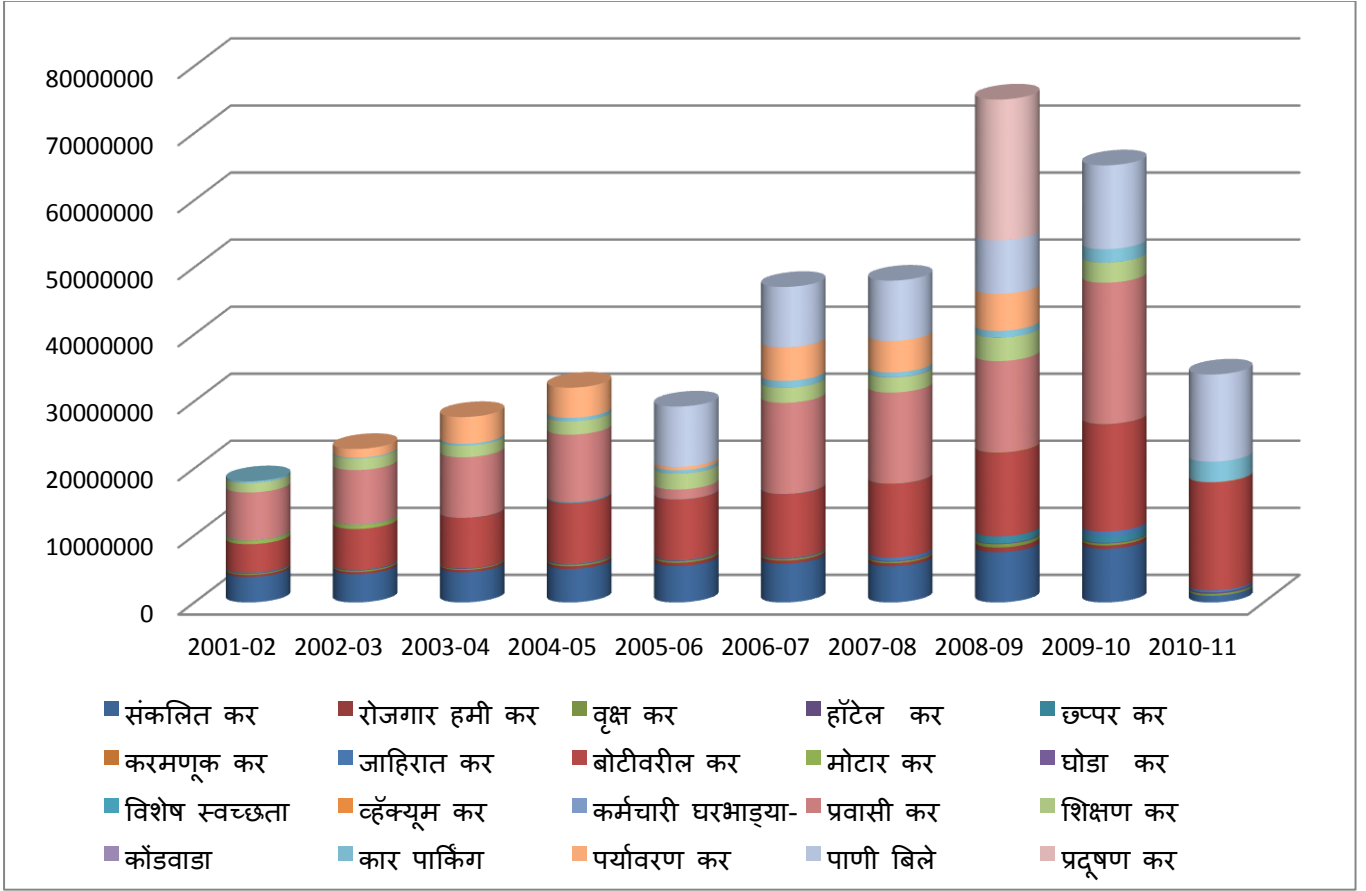
| वर्ष | संकलित | रोजगार | वृक्ष | हॉटेल | छप्पर | करमणूक | जाहिरात | बोटीवरील | मोटार | घोडा | विशेष | |
|---------|------------|---------------|----------|---------|---------|---------|---------|-----------|---------|----------|-----------|-----------|
| | कर | हमी कर | कर | कर | कर | कर | कर | कर | कर | कर | स्वच्छता | |
| | | | | | | | | | | | कर | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | |
| २००१.०२ | ३८००००० | ३२०००० | १७०००० | १००००० | ६०००० | २००० | ८००० | ४२३०००० | ५५०००० | २०००० | ३०००० | |
| २००२.०३ | ४२००००० | ३५०००० | २००००० | १००००० | ५०००० | २००० | १०००० | ६०५०००० | ६००००० | २५००० | २५००० | |
| २००३.०४ | ४५००००० | ३५०००० | १५०००० | ६०००० | ३०००० | ०० | १०००० | ७५००००० | ०० | १५००० | २५००० | |
| २००४.०५ | ५०००००० | ४००००० | २३५००० | १००००० | ५५००० | ०० | २५००० | ९०००००० | ०० | २५००० | १५०००० | |
| २००५.०६ | ५४४३००० | ४७३००० | २४७००० | १००००० | ५५००० | ०० | २५००० | ९०००००० | ०० | २५००० | २५००० | |
| २००६.०७ | ५८००००० | ४५०००० | २४०००० | १००००० | ५०००० | ०० | २५००० | ९५००००० | ०० | २५००० | २५००० | |
| २००७.०८ | ५४००००० | ४५०००० | २४५००० | १००००० | ५००० | ०० | ५००००० | ११०००००० | ०० | ३०००० | २५००० | |
| २००८.०९ | ७५००००० | ७००००० | ५००००० | १००००० | १०००००० | ००० | ५०००० | १२५००००० | ००० | ३०००० | २५००० | |
| २००९.१० | ८०००००० | ५००००० | ३००००० | १००००० | १०००००० | ००० | ७००००० | १६०००००० | ००० | १५००० | २५००० | |
| २०१०.११ | १०००००० | ०० | ३००००० | २००००० | १०००० | ०० | ३००००० | १६०९५००० | ०० | १५००० | २५००० | |
| mean | ५०६४३०० | ४४३६६६. ६७ | २५८७०० | १०६००० | २३१५०० | २००० | १६५३०० | १००८७५०० | ५७५००० | २२५०० | ३८००० | |
| SD | १९५८८८०.१८ | ११४३२८.४७ | ९७७५३.७ | ३५३३९.६ | ४०५४८४ | ० | २४९७५५ | ३९११७७५.१ | ३५३५५.३ | ५८९२.५५७ | ३९३८४.१४८ | |
| CV | ०.३८६८०१७७ | ०.२५७६९ | ०.३७७७८७ | ०. | ३३३३९ | १.७५१५५ | ० | १.५१०९२ | ३८७७८४४ | ०.०६१४९ | ०.२६१८९१ | १.०३६४२४९ |

| व्हॅक्यूम | कर्मचारी | प्रवासी | शिक्षण | कोंडवाडा | कार | पर्यावरण | पाणी | प्रदूषण | एकूण |
|-------------|-----------|-----------|-----------|----------|----------|-----------|-----------|-------------|-------------|
| कर | घरभाड्या- | कर | कर | | पार्किंग | कर | बिले | कर | |
| | तून व इतर | | | | कर | | वसूली | अंतर्गत जमा | |
| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ |
| ५०००० | ६०००० | ७०००००० | १४२०२०० | ४००० | २५०००० | ०० | ०० | ०० | १८०७५००० |
| ६०००० | ७०००० | ८०००००० | १७००००० | ५००० | १५०००० | १३००००० | ०० | ०० | २२८९७००० |
| २०००० | ०० | ९०००००० | १७००००० | २००० | ३००००० | ४०००००० | ०० | ०० | २७६६२००० |
| ३०००० | ०० | १००००००० | २०००००० | २०००० | ५००००० | ४५००००० | ०० | ०० | ३२०४०००० |
| ४०००० | २०००० | १४०००००० | २३५०००० | २०००० | ५००००० | ५००००० | ९०००००० | ०० | ४६३२३००० |
| ४५००० | २०००० | १३५००००० | २२५०००० | २०००० | १०००००० | ५०००००० | ९०००००० | ००० | ४७०५०००० |
| ५०००० | ०० | १३५००००० | २२५०००० | ५०००० | ७००००० | ४७००००० | ९०००००० | ००० | ४८००५००० |
| १००००० | ०० | १३५००००० | ३५००००० | ५००० | १०००००० | ५५००००० | ८०००००० | २१०००००० | ७५४६०००० |
| ५०००० | ०० | २१०००००० | ३०००००० | ५००० | २०००००० | ०० | १२५००००० | ०० | ६४२०५००० |
| ५०००० | ०० | ०० | ००० | ५००० | ३०००००० | ०० | १३०००००० | ०० | ४३०००००० |
| ४९५०० | ४२५०० | १०७६६६६७ | २२४११३३३३ | १३६०० | ९४०००० | ३६४२८५७.१ | १००८३३३३३ | २१०००००० | ४२४७१७०० |
| २११४१.०६०६३ | २६२९९.५५६ | ५४८२०१६.१ | ६६०५२६.३५ | १४७९६.४ | ९०२४०४.२ | १९४२३८४.४ | २१०७५२६ | | १८०५४७६०.९९ |
| ०.४२७०९२१ | ०.६१८८१३१ | ०.५०९१६५६ | ०. | १.०८७९७ | ०.९६००० | ०.५३३२०३६ | ०.२०९०११ | | ०.४२५१००९७३ |

संदर्भ : महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.१९

करापासून मिळणाऱ्या एकूण कर उत्पन्नाच्या स्रोतांचे वर्गीकरण



तक्ता क्र ४.१२.१ मध्ये करापासून मिळणाऱ्या एकूण उत्पन्नाच्या स्रोतांचे वर्गीकरण केलेले आहे. तक्ताच्या निरीक्षणावरून खालील निरीक्षणे नोंदविता येतील. एकूणच वाढीचा वेग विचारात घेतल्यास महाबळेश्वर नगरपालिकेचे कर उत्पन्न हे झपाट्याने वाढत असल्याचे दिसून येते. पण करेत्तर उत्पन्नाच्या वाढीच्या तुलनेने ते नेहमीच कमी राहिले आहे. महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नाचे प्रमुख स्रोत हे प्रवास कर, बोटीवरील कर, संकलित कर, आणि पाणीपट्टी कर असल्याचे दिसून येते. एकूण कर उत्पन्नात या सर्व कराचे प्राबल्य हे नेहमीच सार्वधिक राहिले. बोटीवरील कराचा विचार केल्यास असे दिसून येते की ते सातत्याने वाढत आहे.

एकूण कर उत्पन्नात बोटीवरील करापासूनच्या उत्पन्नाचे प्रमाण हे २००१-०२ मध्ये ३० टक्केच्या जवळपास होते ते २०१०-११ मध्ये ५० टक्के पर्यंत पोहचले होते. प्रवासी कराचे एकूण कर उत्पन्नातील प्रमाण देखील लक्षवेधी आहे. २००१-०२ मध्ये हे प्रमाण २५ टक्के च्या आसपास होते ते २००९-१० मध्ये ३० टक्के पर्यंत पोहचले आहे. पाणीपट्टी पासूनच्या

कर उत्पन्नाचे प्रमाण देखील २००५-०६ पासून लक्षणीय आहे. ते २००५-०६ मध्ये ३० टक्के च्या दरम्यान होते. ते २०१०-११ मध्ये ४० टक्के च्या दरम्यान झालेलं आहे. सरासरीचा विचार केल्यास सरासरी प्रतिवर्षी संकलित कर रु. ४८,४९,३६३/-, रोजगार हमी कर, रु. ४,२९,३००, वृक्षकर रु.२,४८,८१८, हॉटेल कर रु. १०५४५५, छप्पर कर रु.२,१७,२७३, करमणूक कर रु.२०००, जाहिरात कर रु.१५,११,८१८, बोटीवरील कर रु.९५,५२,२७२, मोटार कर रु.५,३३,३३३, घोडा कर रु.२१,८१८, विशेष स्वच्छता कर रु.३७,७२७, व्हॅक्यूम कर रु. ५०,४५४, कर्मचाऱ्यांच्या घरभाड्या पासूनवे उत्पन्न रु.४४,०००, प्रवासी कर रु.१,०१,४०,०००, शिक्षण कर रु.२१,३९,५२०, कोंडवाडा रु.१२,८१८, कार प्रवास कर रु.८,७२,७२७, पर्यावरण कर रु.३६,४२,८५७, पाणीपट्टी रु. १,००,८३,३३३, प्रदुषण कर रु.२,१०,००,००० इतके प्राप्त होत हे स्पष्ट होते. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो कार प्रवास कराच्या बाबतीत १ टक्के जाहीरात कराच्या बाबतीत ४.५९८ टक्के छप्पर कराच्या बाबतीत ४.७८ टक्के आसून थोडक्यात महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या प्रमुख कर उत्पन्नाचे स्रोत हे बोटीवरील कर, प्रवासी कर, पाणी पट्टी कर, आणि संकलित कर हे असल्याचे दिसून येते.

तक्ता क्र. ४.१२.२. मध्ये करेत्तर उत्पन्नाच्या वेगवेगळ्या स्रोतांचे विवेचन करण्याचा प्रयत्न आहे. यामध्ये प्रामुख्याने मालमत्तेपासून मिळणारे उत्पन्न, शुल्कापासूनचे उत्पन्न, दंड आणि शिक्षेपासून मिळणारे उत्पन्न इतर साधनांपासून मिळणारे उत्पन्न आनुदान आणि अंशदाने, रिबीट इत्यादी बाबींचा समावेश केला जातो.

तक्ता क्र. ४.१२.२
करेत्तर उत्पन्नाचा आढावा

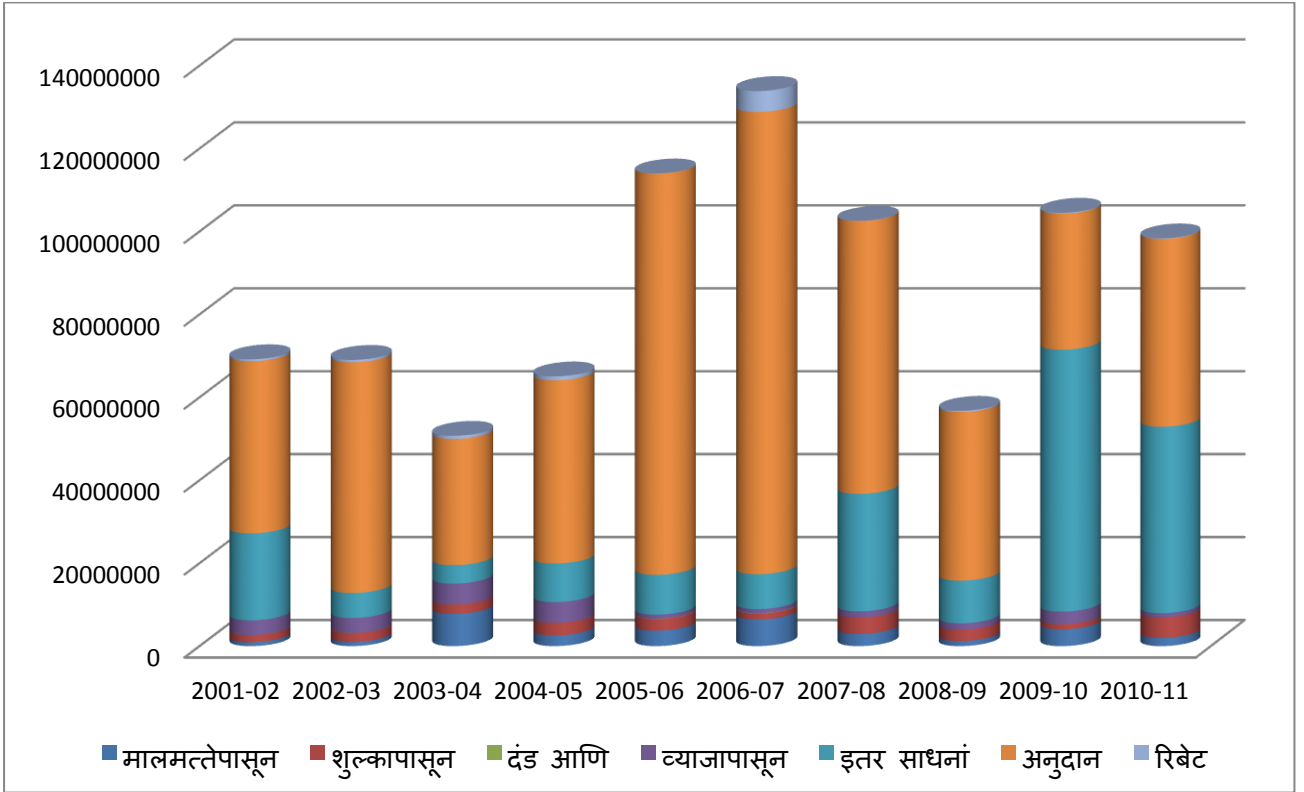
| वर्ष | मालमत्तेपासून मिळणारे | शुल्कापासून मिळणारे | दंड आणि शिक्षेपासून | व्याजापासून मिळणारे | इतर साधनां पासून मिळणारे | अनुदान | रिबेट | एकूण |
|---------|--------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|-----------------------------|-----------|---------|-----------|
| २००१.०२ | ९४०००० | १७१८००० | २२००० | ३५५०००० | २०९५७००० | ४१५२०००० | ४९०००० | ६९१९७००० |
| २००२.०३ | ९८०००० | २१७८००० | २०००० | ३६१०००० | ६०२१००० | ५५६४६००० | ५८०००० | ६९०३५००० |
| २००३.०४ | ७७४९००० | २३०९००० | ५००० | ५०१०००० | ४४४१००० | ३०४४७००० | ७५९००० | ५०७२०००० |
| २००४.०५ | २५५९००० | ३०३८००० | ९००० | ५०१०००० | ९३०७००० | ४४१८५००० | ९४८००० | ६५०५६००० |
| २००५.०६ | ३७१४००० | २८३७००० | ४५००० | १०१०००० | ९५७१००० | ९६७७९००० | ४८००० | ११४००४००० |
| २००६.०७ | ६४१४००० | १४५५००० | ६५००० | १००१००० | ८४०५००० | १११४८०००० | ५०५६००० | १३३८७६००० |
| २००७.०८ | २९१०००० | ३९८१००० | ६००० | १५१०००० | २८३१७००० | ६५७८५००० | ५५००० | १०२५६४००० |
| २००८.०९ | १२११००० | २७६७००० | २००० | १५२०००० | १०३०२००० | ४०६६०००० | ३००००० | ५६७६२००० |
| २००९.१० | ४०२९००० | १२६५००० | २००० | ३०२५००० | ६३१६८००० | ३२८३९००० | २००००० | १०४५२८००० |
| २०१०.११ | १९६२००० | ४९५६००० | २००० | १०२५००० | ४४९५०००० | ४५३३३००० | १२०००० | ९८३४८००० |

| | | | | | | | | |
|------|-------------|-----------|----------|-----------|-------------|----------|----------|-------------|
| Mean | ३२४६८०० | २६५०४०० | १७८०० | २६२७१०० | २०५४३९०० | ५६४६७४०० | ८५५६०० | ८६४०९००० |
| SD | २३०८७३८.८९६ | ११४७०८९.९ | २१३९४.७ | १६२०४२८.८ | १९५५६७६४.१९ | २७३३००७५ | १५०७१५५ | २७७९५१४५७०२ |
| CV | ७१.१०८१३४०३ | ४३.२७९८७७ | १२००.१९५ | ६१.६८१२७८ | ९५.१९४९९३१२ | ४८.३९९७४ | १७६.१५१८ | ३२.१६६९५६०१ |
| CGR | १५.७६ | ५.९८ | .२०.८१ | ११.४६ | २०.८५ | १.०५ | १३.१५ | ६.०१ |

संदर्भ : महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ४.२०

करेतर उत्पन्नाचा आढावा



इतर नगरपालिकाच्या प्रमाणे महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या करेतर उत्पन्नाचा मुख्य स्रोत हा अंशदाने आणि अनुदाने हाच आहे. एकूण करेतर उत्पन्नात, अंशदान आणि अनुदानापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे प्रमाण हे २००९-१० वगळता ६० टक्के पेक्षा जास्तच आहे. करेतर उत्पन्नाच्या सापेक्ष वाढीचा विचार केल्यास सन २००१-०२ मध्ये ७ कोटीच्या जवळपास असणारे हे उत्पन्न २००६-०७ मध्ये १३ कोटीच्या जवळपास पोहचले आहे. अर्थात या उत्पन्नात चढ-उतार देखील आहेत. अंशदाने व अनुदानानंतर करेतर उत्पन्नाचा दुसरा महत्त्वाचा स्रोत हा इतर साधनापासून मिळणारे उत्पन्न हा आहे. सन २००१-०२ मध्ये एकूण करेतर उत्पन्नात त्याचे प्रमाण १० टक्के होते ते २००९-१० मध्ये ६० टक्के च्या जवळपास पोहचले आहे. वृद्धीदराचा विचार केल्यास संयुक्त हा मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत १५.७६ टक्के, शुल्कापासूनच्या उत्पन्नाचा बाबतीत ५.९८ टक्के, व्याजापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत १४.४६ टक्के, इतर साधनांच्या बाबतीत

२०.८५ टक्के तर रिबेट च्या बाबतीत १३.१५ टक्के इतका आहे. तर एकूण करेत्तर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी ६.०१ टक्के संयुक्त दराने वाढत असल्याचे स्पष्ट होते. सरासरीचा विचार केल्यास, मालमत्तेपासून सरासरी रु.३१,५८,६००/- लाख शुल्कापासूनलचे उत्पन्न रु. २६,५०,४००/- दंड आणि शिक्षेपासून रु. १७,८००/- व्याजापासून २६२७१००/-, इतर सांधनाच्या बाबतीत रु.२,०५,४३,८००, अनुदानाच्या बाबतीत रु.५६४८७४००/- आणि रिबेट पासून रु.८५५५००/- लाख आणि एकूण ८,६३,४०,६००/- इत्यादी उत्पन्न हे महाबळेश्वर नगरपालिकेला प्राप्त होत होते.

४.६ सारांश

कोणत्याही स्तरावरील शासनाच्या वित्तीय बाबीमध्ये महसूल हा महत्वाचा घटक असतो. महसूला शिवाय शासन त्यांची ठरलेली उद्दिष्टे पूर्ण करू शकत नाही. म्हणूनच महसूल या घटकाचा अभ्यास करणे आवश्यक ठरते. सातारा जिल्हयातील नगरपरिषदांच्या महसूलाचा अभ्यास करता तो अपूरा असल्याचे दिसून येते. करेत्तर महसूलापेक्षा कर महसूल हा कमी उत्पादक दिसतो. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या वाढत्या जबाबदा-यामुळे कर्ज बाजारीपणात वाढ होत असल्याचे दिसून येत आहे. त्यांना अवश्यकते पेक्षा कमी अनुदाने मिळतात. कर्जाच्या बाबतीत कर्ज उभारणीवर त्यांच्यावर बंधने आसल्याने वरच्या पातळीवरील संस्थावर अवलंबून राहावे लागते. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या महसूलाच्या प्रश्नाचे स्वरूप हे विविध अंगी आहे. या प्रश्नांच्या सोडवणूकीसाठी अस्तित्वातील कराची फेररचना करणे तसेच कर व करेत्तर महसूलाचे नवे मार्ग उपलब्ध होणे त्याच बरोबर कर्ज उभारणीचे नवे पर्याय उभारणे आवश्यक आहे. या मध्ये शासनाबरोबरच लोकप्रतिनिधी आणि नागरिकांची ही भूमिका महत्त्वाची ठरते.

४.७ संदर्भ

१. वार्षिक अहवाल सातारा नगरपरिषद - २००१-०२ ते २०१०-११
२. वार्षिक अहवाल महाबळेश्वर नगरपरिषद - २००१-०२ ते २०१०-११
३. वार्षिक अहवाल फलटण नगरपरिषद - २००१-०२ ते २०१०-११
४. वार्षिक अहवाल रहिमतपूर नगरपरिषद - २००१-०२ ते २०१०-११

- 5 Bose Ashish (1970), Urbanization in India : An Inventory of Source Material, Academic Book Limited, Bombay, p. 98
- 6 Butler W. Edgar (1976), Urban Sociology : A Systemic Approach, Harper and Row Publishers, New York, Hagerstown, San Francisco, London, p. 16
- 7 Sharma K. Rajendra (2004), Urban sociology, published by Atlantic and Distributors, New Delhi, p.54.
- 8 Kornhauser David (1976), Japan : Geographical Background to Urban Industrial Development, Edition 2nd, Longman Publisher, London, p. 148.
- 9 १० .Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur, p. 1.
- 10 डॉ. हावा आश्विन जी. २०१२ नगरपालिका स्वरूप आणि समस्या, पहिली आवृत्ती अरुणा प्रकाशन १०३,ओमकार कॉम्प्लेक्स अ खर्डेकर स्टॉफ,औसा लातूर.

प्रकरण पाच

नगरपालिकांच्या खर्चाचे स्वरूप आणि दिशा

५.१ प्रस्तावना :-

स्थानिक स्वराज्य संस्थांना सार्वजनिक वस्तू व सेवांची पूर्तता करताना अनेक बाबींवर खर्च करावा लागतो. ह्यामध्ये प्रामुख्याने रस्त्यावरील दिवाबत्तीवरील खर्च, आरोग्यावर होणारा खर्च, दवाखाने, साथीचे रोग याबद्दलचा खर्च, बांधकामावरील खर्च, पाणी पुरवठ्यावरती होणारा खर्च, साफसफाईवरती होणारा खर्च, सार्वजनिक उद्याने या वरील खर्च, वेतन, मानधन, कर वसुली, रस्ते दुरुस्ती, वृक्षारोपण इत्यादी बाबींचा समावेश होतो. अधिक कार्यक्षमपणे सार्वजनिक वस्तू व सेवांची पूर्तता करण्यासाठी हा खर्च अत्यंत महत्त्वाचा असतो. वाढत्या लोकसंख्येबरोबर हा खर्च ही वाढत जाते. तसेच स्थानिक स्वराज्य संस्थांना हा खर्च करताना वेगवेगळ्या बाबींचा विचार करावा लागतो. ह्यामध्ये प्रामुख्याने उत्पन्नाचे स्रोत लोकांच्या गरजा, कालावधी, शासकीय निकष इ. चा समावेश होतो.

५.२ नगरपालिकेच्या खर्चाचे कार्यानुसार वर्गीकरण :-

साधारणतः नगरपालिकेने करावयाच्या खर्चाचे प्रमुख उद्दिष्ट म्हणजे नागरी क्षेत्राचा आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक विकास होय. या विकासाच्या उद्दिष्टांसाठी नगरपालिकेला विविध कार्य करावी लागतात ती कार्ये पूर्ण करण्यासाठी खर्च करावा लागतो. विविध प्रकारच्या सामाजिक सेवा, अग्नीशामन कर्मचाऱ्यांचे पगार, दिवाबत्ती, पाणीपुरवठा, शिक्षण, स्वास्थ्य, आरोग्याच्या सोयी, सेफटी संडास, सार्वजनिक बांधकाम, नाले दुरुस्ती, कुटुंब कल्याण, पुतळे उभारणे, अशंदाने, कल्याणकारी योजना, भांडवली खर्च, नगर विकास योजना, गलिच्छ व दलितवस्ती सुधारणा, दारिद्र्य निर्मूलन इतर प्रकारचे खर्च इत्यादी बाबींवर नगरपालिका नागरी क्षेत्राच्या विकासासाठी खर्च करत असते.

नगरपालिकेच्या विविध कार्यानुसार खर्चाचे वर्गीकरण करण्यात येते ते पुढीलप्रमाणे,

भाग 1)

- अ). सामान्य प्रशासन खर्च
- ब). सार्वजनिक सुरक्षा खर्च

क). सार्वजनिक आरोग्य व सोयी व योजनावरील खर्च

ड). सार्वजनिक शिक्षण व अनुदान

इ). अंशदाने

फ). संकीर्ण

भाग 2) भांडवली खर्च

भाग 3) इतर खर्च

एकूण खर्च

अ). सामान्य प्रशासन खर्च :-

सामान्य प्रशासन विभाग यामध्ये नगरपरिषद, मुख्याधिकाऱ्यांचे पगार कार्यालयीन नोकरवर्गाचे, रोजदारी वर्गाची पगार, सभा कामकाज व संगणक अभिलेखा कक्ष, जकात विभाग, वसुली विभागातील कर्मचाऱ्यांचे पगार आकस्मित खर्च, निवृत्ती वेतन व अंशदाने बाबत खर्च सामान्य प्रशासनात करण्यात येतात.

ब). सार्वजनिक सुरक्षा खर्च :-

या शीर्षकामध्ये नगरपरिषदांना अग्निशामक दल व साधनसामुग्री यासाठी केलेल्या सर्व खर्चाचा समावेश असतो. तसेच रस्त्यावरील दिवाबत्ती, कर्मचाऱ्यांचे पगार साधनसामुग्री व दुरुस्ती, दिवाबत्ती, साहित्य खरेदी, विद्युत बिलाची अदाई, मोकाट जनावरे पकडणे इत्यादी खर्च नगरपरिषद करत असते.

क). सार्वजनिक आरोग्य व सोयी योजनावरील खर्च :-

सार्वजनिक आरोग्य व सोयी योजनावरील खर्चामध्ये पुढील घटकांचा समावेश असतो. यामध्ये पाणी पुरवठा, भांडार खरेदीकक्ष, साफ सफाई व सोयी, नाला दुरुस्ती, दारिद्रय निर्मूलन महीला व बालविकास, मिश्रखते (कंपोस्ट), अतिक्रमण मिळकत व बाजार साथीचे रोग व कुटुंब कल्याण, कोंडवाडे, सार्वजनिक उद्याने, सार्वजनिक वाचनालये, मुलांची क्रीडांगणे, सार्वजनिक बांधकाम, उरुस व जत्रा, लेखे व अंदाजपत्रक, सर्वेक्षण बाबत खर्च, लेखा परीक्षण, जन्ममृत्यू नोंदणी व तक्रार, दफन भूमी, नगर रचना बांधकाम परवाना, शहर व आर्थिक विकास इत्यादी खर्च नगरपालिकांना करवावा लागतो.

ड). सार्वजनिक शिक्षण व अनुदान खर्च :-

या शीर्षकामध्ये नगरपरिषदेच्या अंतर्गत येणाऱ्या राष्ट्रीय पुरुषांचे पुतळ्या बाबतचे खर्च, नगरपरिषद तर्फे क्रीडा स्पर्धा बाबत खर्च, सार्वजनिक संस्थाना व इतरांना अनुदान इत्यादी खर्चाचा समावेश असतो.

इ). अंशदाने :-

नगरपरिषदेच्या अंशदाने खर्चामध्ये आगामी वित्तीय वर्षाकरिता भाग २ भांडवली खर्च आणि भाग ३ संवितरण करीता अंशदान बाबत खर्च इत्यादीचा समावेश असतो.

फ). संकीर्ण :-

या शीर्षकामध्ये कर्जाची परतफेड कमी खर्चाचे संडास बांधकाम, रोजगार हमी उपकर, मागासवर्गीयांच्या कल्याणकारी योजना वरील खर्च, निवडणूक खर्च, महाराष्ट्र शिक्षण उपकर, दावे खटले खर्च, स्वागत समारंभ, महीला व बालकल्याण, सुवर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना खर्च, इत्यादी खर्च संकीर्ण विभागात मोडले जातात. अशा रितीने भाग १ महसुली खर्च (अ,ब,क,ड,इ,फ) आहेत.

भाग २). भांडवली खर्च :-

भांडवली खर्चामध्ये दलितवस्ती सुधारणा, रस्ते बांधकाम, नाले बांधकाम, इमारती बांधकाम व एकात्मिक शहर विकास, पाणी पुरवठा पाईप लाईन, नगर विकास योजना, यू. डी. ६ एकात्मिक विकास कार्यक्रम, राज्याचे वैशिष्टपूर्ण कामाबाबतच्या अनुदानातून खर्च इत्यादींचा समावेश या खर्चामध्ये असते.

भाग ३). इतर खर्च :-

नगर परिषदेच्या इतर खर्चामध्ये वेतन राखीव निधी, भविष्य निर्वाह निधी, पाणी पुरवठा निधी, स्पेशल सेप्टी संडासकरिता निधी, घसारा निधी, वृक्ष निधी, रस्ता निधी, कर्मचाऱ्यांना सणाकरीता कर्ज इत्यादी खर्च नगरपालिकेला करावा लागतो.

प्रस्तुत प्रकरणात महाबळेश्वर, रहिमतपूर, सातारा आणि फलटण ह्या चार अभ्यासासाठी निवड केलेल्या नगरपालिकांच्या खर्चाच्या बाबतीत २००१-०२ ते २०१०-११ ह्या कालावधीत घडून आलेल्या बदलांचा आढावा घेण्यात आला. ह्या नगरपालिकांच्या खर्चाचे विश्लेषण करत असताना प्रामुख्याने पाच प्रकारामध्ये खर्चाचे विभाजन केले आहे.

१.फलटण नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप

फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाचे स्वरूप आणि खर्चाचे वेगवेगळे घटक ह्यांचा विचार करताना खालील बाबींचा आधार घ्यावा लागेल.

अ). एकूण खर्चाचे महसुली खर्च व भांडवली खर्चाचे प्रमाण :-

तुलनात्मक दुष्ट्या रहिमतपूर आणि फलटण नगरपालिकांच्या एकूण खर्चाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की रहिमतपूर नगरपालिकेचा एकूण खर्च हा -२५.९३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी घटत आहे तर तो फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत मात्र ७.२४ टक्के इतका दराने प्रतिवर्षी वाढत आहे. तक्ता क्र. ५. १ मध्ये फलटण नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाचे महसुली खर्च व भांडवली खर्चाशी असलेले प्रमाण मांडले आहे. तक्ता क्र ५. १ चा विचार करता पुढील गोष्टी स्पष्ट होतात.

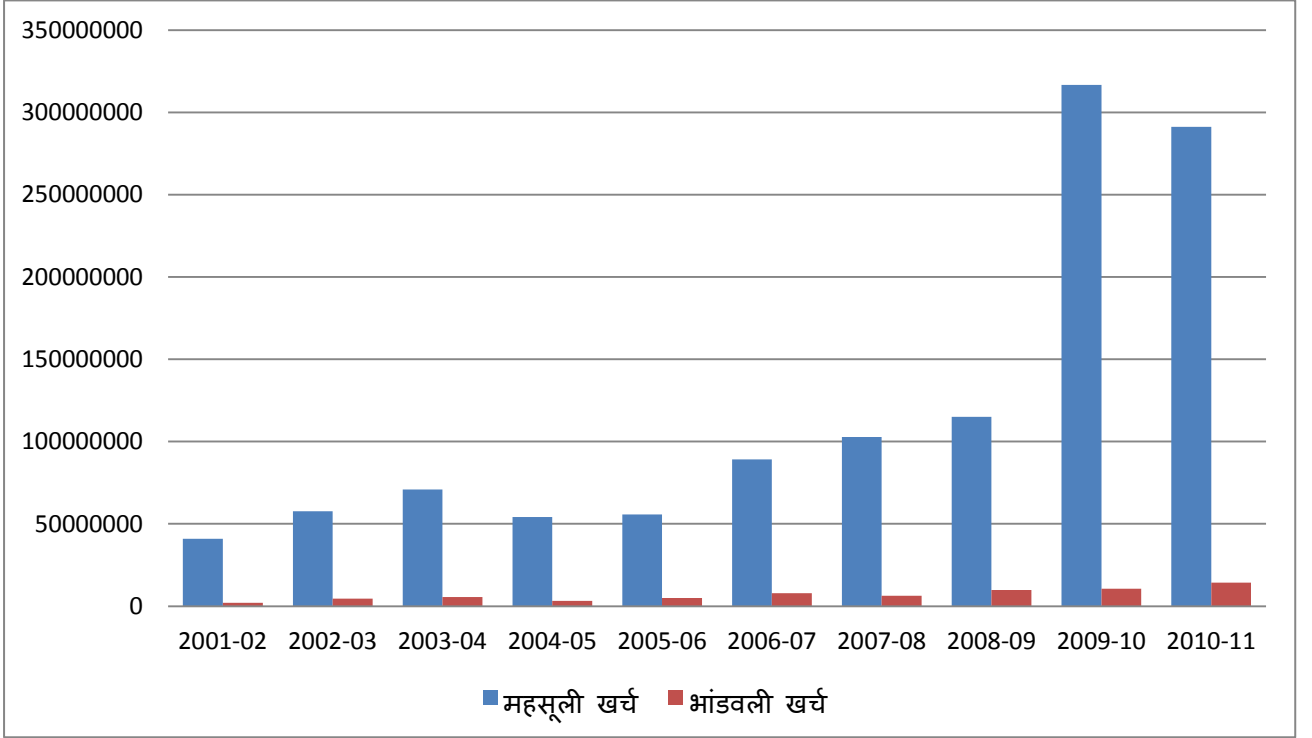
तक्ता क्र ५. १
फलटण नगरपालिकांच्या एकूण खर्च

| वर्ष | महसुली खर्च | भांडवली खर्च | एकूण खर्च |
|---------|-------------|--------------|-----------|
| २००१-०२ | ४०८५८९५८ | २०६८२०८ | ४२९२७१६६ |
| २००२-०३ | ५७६६१४२६ | ४५१३७०६ | ६२१७५१३२ |
| २००३-०४ | ७०९२१०३३ | ५६५३१९५ | ७६५७४२२८ |
| २००४-०५ | ५४१६५४७७ | ३१५२८९६ | ५७३१८३७३ |
| २००५-०६ | ५५६५३३४१ | ५०६२८३३ | ६०७१६१७४ |
| २००६-०७ | ८९१४५३३५ | ७९१८८२४ | ९७०६४१५९ |
| २००७-०८ | १०२७०७१६८ | ६३७४६७६ | १०९०८१८४४ |
| २००८-०९ | ११५००१०१८ | ९८२३५६९ | १२४८२४५८७ |
| २००९-१० | ३१६६००५६७ | १०६५२५६२ | ३२७२५३१२९ |
| २०१०-११ | २९१०९८२८२ | १४२३८९०३ | ३०५३८७१८५ |
| mean | ११२३२०२८८ | ६७१६८५२ | ११९०४१६८६ |

| | | | |
|-----|-----------|-------------|-------------|
| SD | १००१२८४९७ | ३७३८५७४.३९५ | १०३३८८७६४.३ |
| CV | ८९.१४ | ५५.६५ | ८६.८५ |
| CGR | २१.२७ | १५.५४ | ७.२४ |

संदर्भ: फलटण नगरपालिकावार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१
फलटण नगरपालिकांच्या एकूण खर्च



तक्ता क्र. ५.१ मध्ये फलटण नगरपालिकेच्या एकूण महसुली आणि भांडवली खर्चाचे विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला महसुली खर्च हा सन २००१-०२ मध्ये हा रु. ४,०८,५८,९५८/- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ होते तो २००६-०७ या वर्षी रु. ६,९१,४५,३३५/- इतका झाला आणि शेवटी तो २०१०-११ या वर्षी रु. २९,१०,९८,२८२/- इतका झाला आहे. महसुली खर्च वाढीचा साधा वृद्धीदर २१.२७ इतका आहे. त्यानंतर या तक्त्यात भांडवली खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली भांडवली खर्च हा रु.२०,६८,२०८/- इतका झाला होता. त्यानंतर भांडवली खर्चामध्ये ही वाढ होत गेल्याचे आपणास दिसून येते. २००६-०७ या वर्षात तो रु.७,९१,८२४/- इतका करण्यात आला आणि शेवटी तो २०१०-११ या वर्षात रु. १,४२,३८,९०३/- इतका करण्यात आला आहे. आणि याचा वृद्धीदर हा १५.५४ इतका आहे. शेवटी एकूण खर्चाचे विश्लेषण

केले आहे त्यामध्ये २००१-०२ या वर्षी रु.४,२९,२७,१६६/- इतका खर्च होता. त्यामध्ये हळुहळू वाढ होत तो २००६-०७ मध्ये रु. ९,७०,६४,१५९/- इतका झाला होता आणि शेवटी तो २०१०-११ मध्ये रु. ३०५३८७१८५/- इतका झाला होता. एकूण खर्चाचा साधा वृद्धी दर हा ७.२४ इतका आहे.

एकूण खर्चात महसुली खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त आहे. अभ्यास काळात एकूण खर्चात सातत्याने वाढ घडून आली असून तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. ११,९०,४१,६८६.०० . इतका होत होता. भांडवली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर विचारात घेता तो १५.५४ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी वाढत असल्याचे दिसून येते तर याउलट महसुली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता तो २१.२७ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते. महसुली खर्च आणि एकूण खर्च ह्यामध्ये ०.९९ इतके प्रभावी सहसंबंध आढळून येतो ते भांडवली खर्च आणि एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ०.८७ इतका दिसून येतो. सरासरीचा विचार करता प्रतिवर्षी सरासरी रु. ६७,१६,८५२.०० .इतका भांडवली खर्च होता तर तो महसुली खर्चाच्या बाबतीत रु. ११,२३,२०,२८८.०० .इतका होता.प्रचरण गुणांकांचा विचार करता तो सर्वाधिक म्हणजेच ८७.१० इतका महसुली खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो तर सर्वात कमी म्हणजेच ५४.०० इतका भांडवली खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो अभ्यास काळात एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक हा ८४.०० इतका होता.

थोडक्यात फलटण नगरपालिकेचा महसुली खर्च हा सातत्याने जास्त असल्याचे कींवा वाढत असल्याचे स्पष्ट होते. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या महसुल खर्चाची फलटण नगरपालिकेचा महसुल खर्चाशी तुलना करता असे दिसते की रहिमतपूर नगरपालिकेचा महसुल खर्च हा काही प्रमाणात २०१०-११ वगळता स्थिर स्वरूपात वाढत होता. तर याउलट फलटण नगरपालिकेचा हा खर्च सातत्याने आणि झपाट्याने वाढत होता.

ब).एकूण खर्च आणि खर्चाचे मुख्य घटक :-

फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाच्या वेगवेगळ्या बाबी आणि त्यावरती गेल्या दहा वर्षात झालेला खर्च तक्ता क्र. ५.२ वरती मांडला आहे. तक्ता क्र. ५.२ चे निरीक्षण केल्यास खालील बाबी विशद करता येतील.

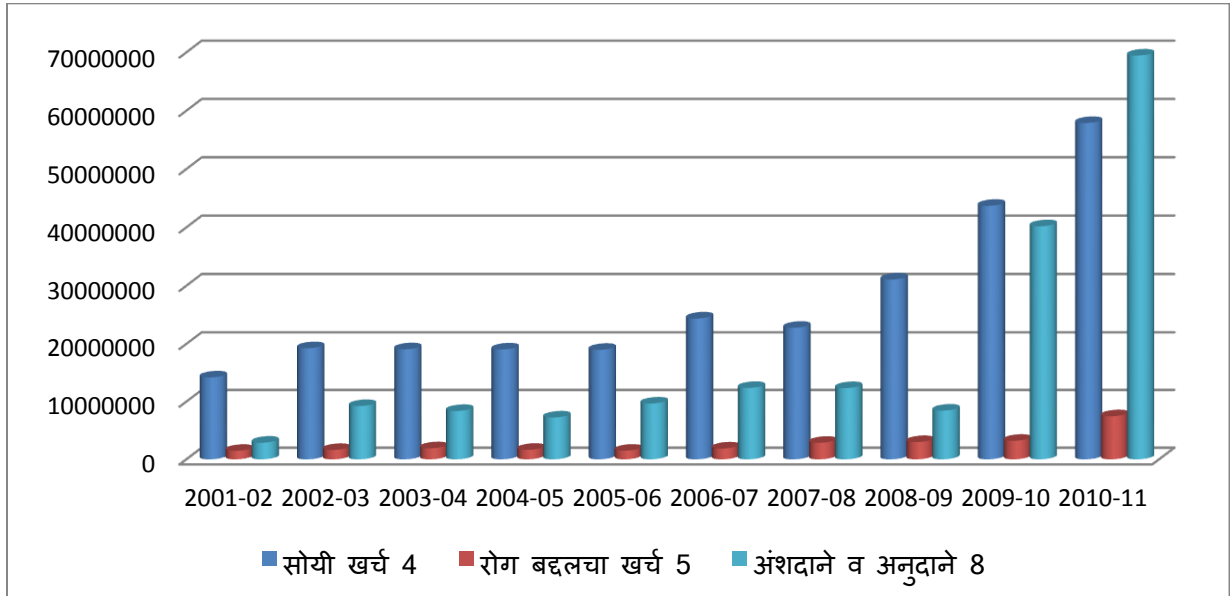
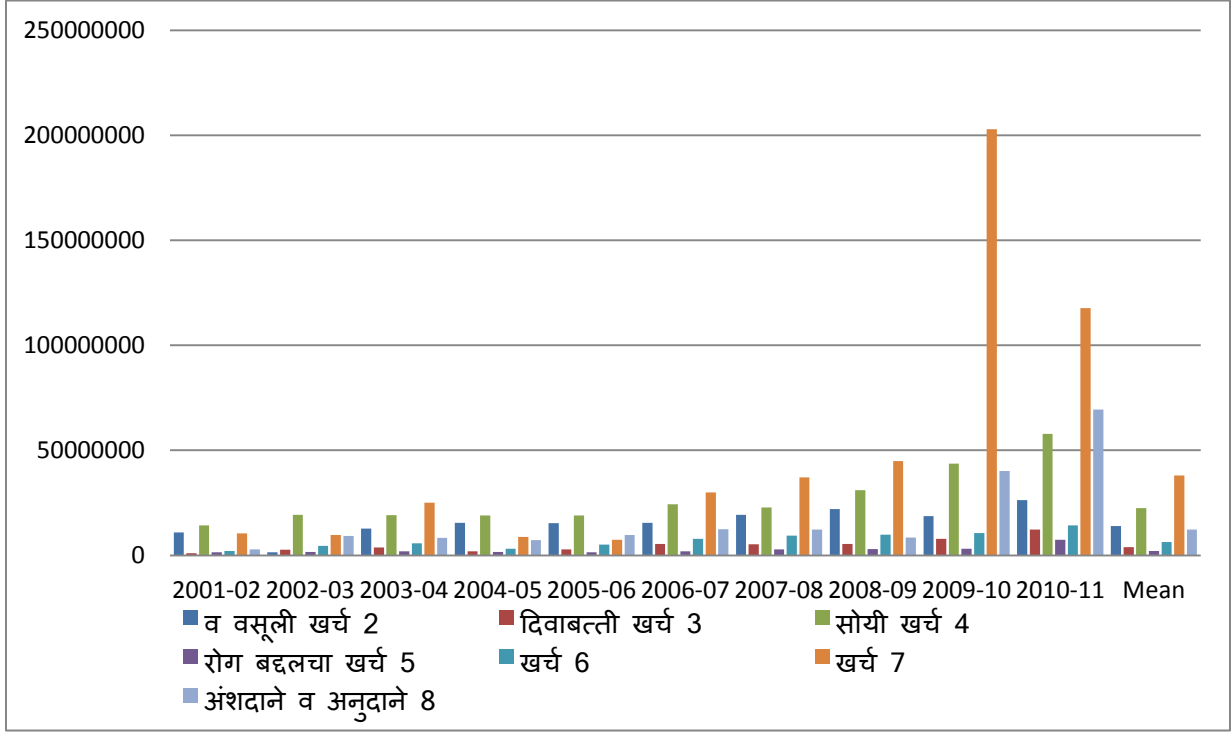
तक्ता क्र. ५.२
फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक

| वर्ष | सामान्य प्रशासन | रस्त्यावरील | आरोग्य व इतर | दवाखाने,साथीचे | बांधकामावरील | संकीर्ण | शिक्षण,उरुस | एकूण |
|---------|-----------------|----------------|--------------|----------------|--------------|-------------|-------------------|-------------|
| | व वसूली खर्च | दिवाबत्ती खर्च | सोयी खर्च | रोग बदलचा खर्च | खर्च | खर्च | अंशदाने व अनुदाने | खर्च |
| 1 | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| २००१-०२ | १०८५७६३१ | १०३५२२४ | १४१८८६१८ | १४६८४९८ | २०६८२०८ | १०४२३९९९ | २८८४९८८ | ४२९२७१६६ |
| २००२-०३ | १५०७६३१ | २७३९७५९ | १९२५६००५ | १६३००१९ | ४५१३७०६ | ९७२५३८१ | ९२३३९०१ | ६२१७५१३२ |
| २००३-०४ | १२८०५१०५ | ३६९९९७६ | १९०६९०९५ | १९१६४६२ | ५६५३१९५ | २५०४९०७९ | ८३८१३२६ | ७६५७४२२८ |
| २००४-०५ | १५४२९६१३ | १९७५२१२ | १९०३९२४० | १६५४४४३ | ३१५२८९६ | ८८१४६३६ | ७२५२३३३ | ५७३१८३७३ |
| २००५-०६ | १५३१६१४३ | २८२२०५५ | १८९७३६७३ | १४९३७०७ | ५०६२८३३ | ७३७४६६४ | ९६७३०९९ | ६०७१६१७४ |
| २००६-०७ | १५५००९९५ | ५४९४५२३ | २४३८९४८२ | १८७७८५९ | ७९१८८२४ | २९९०९८९२ | १२३७२५८४ | ९७०६४१५९ |
| २००७-०८ | १९३१४७९३ | ५२६०२११ | २२७९०३७४ | २८६६१६६ | ९३७४६७६ | ३७१३०१०४ | १२३४५५२० | १०९०८१८४४ |
| २००८-०९ | २२१०३४६१ | ५४८०५०४ | ३१०६८४१२ | २९९८२९५ | ९८२३५६९ | ४४९०९९३३ | ८४४०४१३ | १२४८२४५८७ |
| २००९-१० | १८६७३१६१ | ७९१०६७१ | ४३६९५७७० | ३२१३५२५ | १०६५२५६२ | २०२९१३०३० | ४०१९४४१० | ३२७२५३१२९ |
| २०१०-११ | २६२२४३१० | १२३११२७६ | ५७८८४४१३ | ७४६४००० | १४२३८९०३ | ११७७६२०९५ | ६९४५२१८८ | ३०५३३७१८५ |
| Mean | १४६१२०५९.२२ | ४०४६४५९.४४४ | २३६०७८५२.११ | २१२४३३०.४४४ | ६४६८९४१ | ४१८०५६३५.३३ | १२३०८७३०.४४ | १०६४३७१९९.१ |
| SD | ६७२५८२४.८०२ | ३३११९२२.१८५ | १३६९६९८५.३६ | १८१२२४९.६८५ | ३८०७३७४.१२२ | ६३१४८५६७.१५ | २०७५६८३९.३४ | १०३३७९१४३.६ |
| CV | ४६.०२९२७४१७ | ८१.८४७४०८३३ | ५८.०१८७६९७६ | ८५.३०९२१७७६ | ५८.८५६२१९६२ | १५१.०५२७६२७ | १६८.६३५०९५५ | ९७.१२६८९२२ |
| CGR | १६.४४ | २०.६२ | १३.५३ | १३.५७ | १६.३५ | ३७.१४ | २०.३१ | १२.७२ |

संदर्भ: फलटण नगरपालिकावाि कि अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.२

फलटण नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक



तक्ता क्र. ५.२ मध्ये एकूण खर्चाचे मुख्य घटकाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये कॉलम क्रमांक दोन मध्ये सामान्य प्रशासन वसूली खर्च दर्शविला आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु. १०८५७६३१/- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ घडून

आल्याचे आपणास दिसून येते. म्हणजे २००६-०७ मध्ये रु. १५५००९९५/- इतका करण्यात आला आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ ला तो रु.२६२२४३१०/- इतका वाढला गेला होता.

कॉलम क्र.३ मध्ये रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ या वर्षी रु. १०३५२२४/- इतका करण्यात आला आणि त्यानंतर त्यामध्ये वाढ घडून ती २००६-०७ मध्ये रु.५४९४५२३/- इतका झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये २०१०-११ यावर्षी रु.१२३११२७८/- इतका करण्यात आला.

कॉलम क्र. ६ मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ या साली रु.२०६८२०८/- इतका खर्च करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ घडून येत गेली आणि तो वाढत-वाढत गेला.

कॉलम क्र. ९ मध्ये एकूण खर्च दशविण्यात आला आहे तो म्हणजे २००१-०२ मध्ये रु. ४२९२७१६६/- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये थोड्या प्रमाणात घट झाल्याचे दिसून येत ती म्हणजे २००६-०७ मध्ये रु.९७०६४१५९/- इतका होता आणि शेवटी मात्र या खर्चात वाढझाल्याचे आपणास दिसून येते. ती म्हणजे रु.११७४०७१३७/- इतका खर्च करण्यात आला होता. आणि एकूण खर्चाचा साधा वृद्धीदर हा १२.७२ इतका नोंदविण्यात आला.

संकीर्ण खर्चाचा एकूण खर्चातील हीस्सा नेहमीच जास्त आहे. तो प्रतिवर्षी सरासरी ३७.१४ टक्के इतका प्रचंड वेगाने वाढत आहे. रहिमतपूर नगरपालिकेची स्थिती मात्र वेगळी आहे. त्याचा संकीर्ण खर्च हा कमी आहे. फलटण नगरपालिकेच्या संकीर्ण खर्चाची सरासरी विचारात घेता असे स्पष्ट होते की सरासरी प्रतिवर्षी तो रु. ४,५३,२३,५२६.०० इतका होता. फलटण नगरपालिकेचा संकीर्ण खर्च हा २००६-०७ पासून २००९-१० पर्यंत खूपच झपाट्याने वाढला आहे. तर २०१०-११ मध्ये २००९-१० च्या तुलनेत तो कमी झाला आहे. प्रचरण गुणांक देखील संकीर्ण खर्चाच्या बाबतीत १३५ असल्याचे स्पष्ट होते. एकूण खर्चाचा विचार करता तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. १३,४४,९१,६८६.०० इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी १२.७२ टक्के इतका होता. एकूण वाढीच्या वेगाच्या दराचा विचार करता प्रथम क्रमांक हा संकीर्ण खर्चाचा लागतो त्यापाठोपाठ रस्त्यावरील दिवाबत्तीचा खर्चाचा की जो २०.६२ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी वाढत आहे. त्याचबरोबर शिक्षण ऊरूस आणि अंशदाने यांचा संयुक्त

वृद्धीदर देखील २०.३१ टक्के इतका प्रतिवर्षी राहिला आहे. ह्या तुलनेने आरोग्य व इतर सोयी बाबीवरील खर्चाचा वृद्धीदर हा कमी म्हणजेच १३.५३ टक्के तर दवाखाने आणि साथीच्या रोगावरचा खर्च हा १३.५७ टक्के इतका कमी राहिला आहे. सरासरी प्रत्येक बाबीवर झालेला खर्च विचारात घेता असे स्पष्ट होते की तो संकीर्ण खर्चाच्या बाबतीत सर्वाधिक दिसून येतो.

थोडक्यात फलटण नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाच्या बाबीचा विचार करता असे निष्पण होते की संकीर्ण खर्च, शिक्षण, ऊरूस आणि अशंदाने रस्त्यावरील दिवाबत्ती आणि सामान्य प्रशासन वसुली खर्च इत्यादी बाबीचे विशेष प्राबल्य असल्याचे स्पष्ट होते.

क). सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च :-

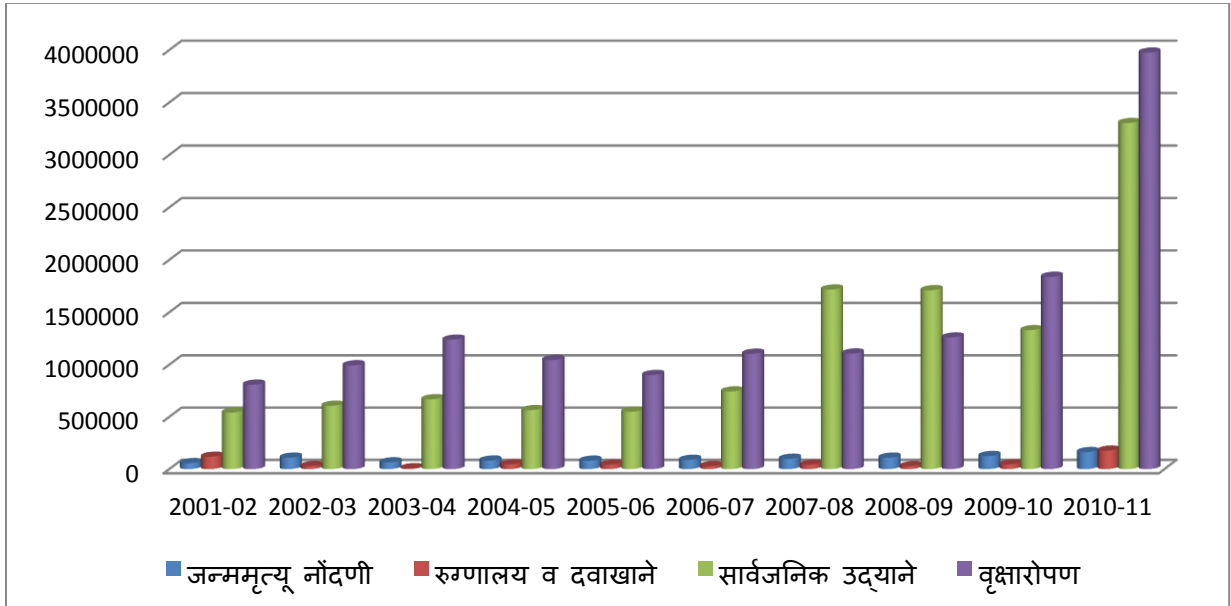
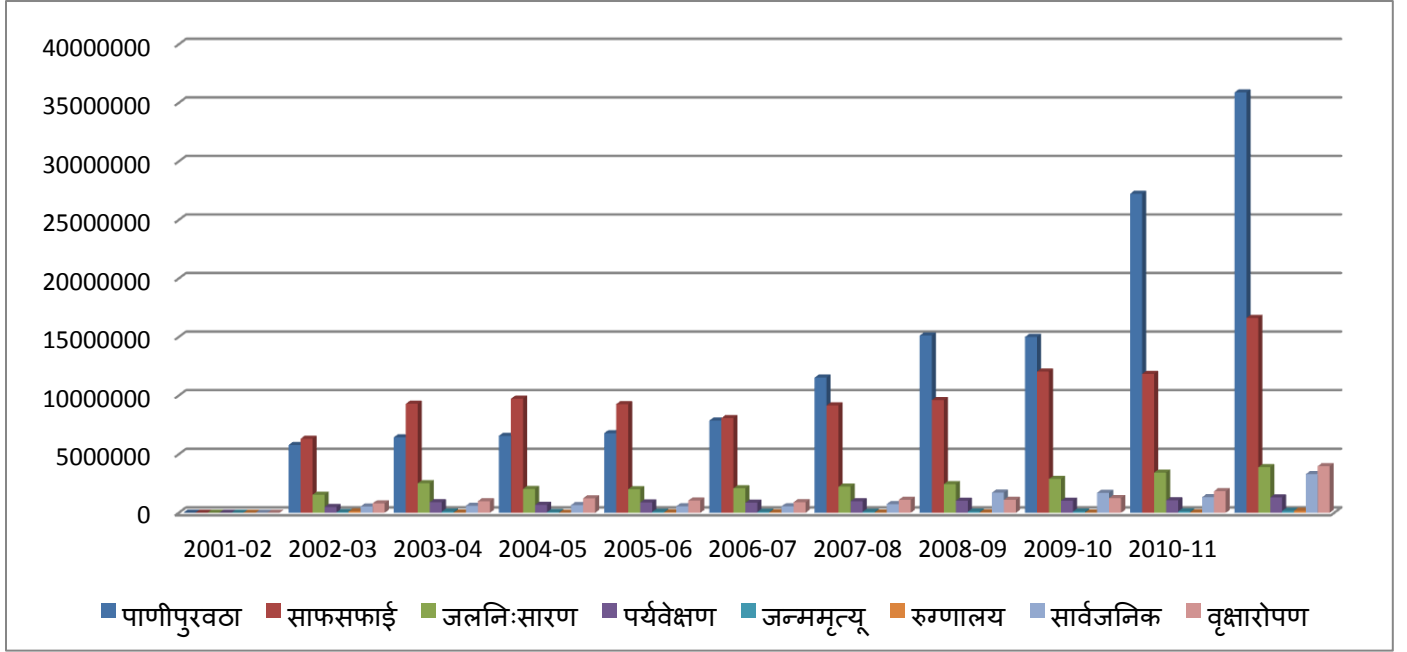
सार्वजनिक आरोग्यावरती होणाऱ्या खर्चांमध्ये प्रामुख्याने पाणीपुरवठा, साफसफाई, जलनिःसारण, रूग्णालये व दवाखाने, वृक्षारोपण ह्यासारख्या बाबींचा समावेश केला जातो. नागरिकांना अधिकात अधिक चांगले राहणीमान देण्याच्या दृष्टीने सर्वच नगरपालिकांना अशा स्वरूपाचा खर्च हा करावाच लागतो. प्रस्तुत तक्ता क्र. ५.३ मध्ये फलटण नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्यावरती होणाऱ्या खर्चाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. तक्ता क्र. ५.३ वरून पुढील अनुमाने काढता येतात.

तक्ता क्र. ५.३
सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च

| वर्ष | पाणीपुरवठा | साफसफाई | जलनिःसारण | पर्यवेक्षण (आरोग्य) | जन्ममृत्यू नोंदणी | रुग्णालय व दवाखाने | सार्वजनिक उद्याने | वृक्षारोपण | एकूण |
|---------|-------------|-------------|-------------|------------------------|----------------------|-----------------------|----------------------|-------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| २००१-०२ | ५७७७३३९ | ६३०९२०५ | १५४२११८ | ५०२६३४ | ५७३२२ | ११८२५० | ५४१९५७ | ८०८२९१ | १५६५७११६ |
| २००२-०३ | ६४३२५१९ | ९२९२३१५ | २५२०४७२ | ९०१०९२ | १०९६०७ | २९७४० | ६०६५८१ | ९९३६९८ | २०८८६०२४ |
| २००३-०४ | ६५६२५२१ | ९७३११४८ | २०३७९८२ | ६७२८३३ | ६४६११ | ८५४० | ६६८७९८ | १२३९१२४ | २०३८०००७ |
| २००४-०५ | ६७८८८८८ | ९२६५४४३ | २०१८७१९ | ८८४१४९ | ८१८४१ | ४५२३५ | ५६४८०३ | १०४४४०५ | २०६९३४८३ |
| २००५-०६ | ७८६९९०७ | ८०७६१९९ | २०८८३६८ | ८५८७१९ | ८०४८० | ४२८७७ | ५४९४३१ | ९००७१८ | २०४६६६९९ |
| २००६-०७ | ११५२३६२१ | ९१५२१३६ | २२३४६८४ | ९९०५१२ | ८८५२९ | २९७५० | ७४३६४२ | ११०४४६७ | २५८६७३४१ |
| २००७-०८ | १५११९६५७ | ९६०८२८९ | २४४८८४५ | १०३३८५० | ९८६८५ | ४२५७१ | १७१६९९३ | ११०६६०२ | ३११७५४९२ |
| २००८-०९ | १४९९६९४६ | १२०४४३१६ | २८८५६६१ | १०३२०७१ | १०९४१८ | २७५९० | १७१०५३३ | १२६०१७२ | ३४०६६७०७ |
| २००९-१० | २७२३११६१ | ११८४३३३५ | ३४३२३०४ | १०६३७९४ | १२५१७६ | ४५५४७ | १३२९५७७ | १८३८४०१ | ४६९०९२९५ |
| २०१०-११ | ३५८९५००० | १६६२३४१३ | ३८९०००० | १३१३००० | १६३००० | १७७००० | ३३०४००० | ३९७५००० | ६५३४०४१३ |
| mean | ११३६६९५१ | ९४८०२६५.१११ | २३५६५७२.५५६ | ८८२१८३.७७७८ | ९०६२९.८८८९ | ४३३४४.४४४४४ | ९३६९२३.८८९ | ११४३९८६.४४४ | २६२३३५७३.७८ |
| SD | १०१७७७६९.६ | २७९६३४८.०२६ | ७११३७९.०५२२ | २२२६१७.३१३७ | ३१०१२.९१६२ | ५११२८.३२७५५ | ८८६१२१.३२८ | ९३८३९५.१५६१ | १५३७८४९१.२४ |
| CV | ८९.५३८२५५२४ | २९.४९६५१७१७ | ३०.१८७०२१ | २५.२३४८००२ | ३४७२१९३०२९ | ११७.९५८२०२५ | ९४.५७७७२८१ | ८२७०२८५२०५९ | ५८.६२१४११५१ |
| CGR | १२.७२ | १२.०० | ९.०० | ९.१५ | ९.७८ | ७.६१ | १८.१८ | १२.०१ | ७.१६ |

संदर्भ: फलटण नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.३
सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च



तक्ता क्रमांक ५.३ मध्ये सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाचे विश्लेषण देण्यात आले आहे. त्या तक्त्यात सुरवातीच्या कॉलम मध्ये पाणीपुरवठा या विभागावर झालेला खर्च दर्शवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरवातीला २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु. ५७७३३९/- इतका करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ नोंदवण्यात आली आणि २००६-०७ ला रु.

११५२३६२१/- इतका खर्च करण्यात आला, आणि त्यानंतर मात्र मोठ्या प्रमाणावर खर्चात वाढ झालेली दिसून येते. २०१०-११ या वर्षी रु. ३५८९५००००/- इतका खर्च करण्यात आला होता.

कॉलम क्र. ४ मध्ये जलनिःसारण या घटकावर खर्च करण्यात आला आहे. सुरुवातीला तो २००१-०२ या वर्षी रु. १५४२११८/- खर्च नोंदविण्यात आला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होत तो २००६-०७ या वर्षात रु.२२३४६८४/- इतका वाढलेला आपणास दिसून येतो. आणि मग शेवटी त्यामधील वाढ वाढतच गेली आणि शेवटी २०१०-११ ला रु. ३८९००००/- इतका झाली. कॉलम ७ मध्ये रूग्णालय व दवाखाणे यावर खर्च झाल्याचे दर्शवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला रु. ११८२५०/- २००१-०२ मध्ये खर्च करण्यात आले होते. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ घडत गेली आणि २००६-०७ मध्ये रु.२९७५०/- खर्च करण्यात आला होता आणि मग शेवटी म्हणजे २०१०-११ ला रु.७७०००/- खर्च करण्यात आला.

कॉलम क्रमांक ९ मध्ये वृक्षारोपणावर झालेला खर्च दर्शवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु.८०८२९१ /- इतका होता. त्यानंतर त्यात हळूहळू वाढ होत तो रु.११०४४६७/- पर्यंत पोहचला आणि शेवटी तो ३९७५०००/-झाला होता. शेवटी कॉलम १० मध्ये एकूण खर्च दर्शवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ ला हा खर्च रु. १५६५७११६/- इतका होता त्यानंतर त्यात मोठ्या प्रमाणात वाढ घडून आली आणि २००६-०७ ला तो रु.२५८६७३४१/- इतका वाढलेला आपणास दिसून येतो. आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षी तो खर्च रु. ६५३४०४१३/- इतका झालेला आपणास दिसून येतो आणि खर्चाच्या वृद्धीचा साधा वृद्धीदर हा ७.१६ इतका होता.

साफसफाई आणि पाणीपुरवठा ह्या दोन बाबींचा विचार करता असे लक्षात येते की २००५-०६ पर्यंत साफसफाई वरती होणारा खर्च हा पाणीपुरवठ्यावरती कराव्या लागणाऱ्या खर्चाच्या तुलनेने कमी होता पण २००५-०६ नंतर पाणी पुरवठ्यावरती होणारा खर्च सातत्याने वाढत जाऊन तो २०१०-११ मध्ये सर्वाधिक झाला म्हणजेच एकूण खर्चाच्या जवळपास ५५ टक्के इतका तो झाला असल्याचे दिसून येते. एकूण खर्चामध्ये सर्वात जास्त प्राबल्य पाणीपुरवठा साफसफाई यानंतर जलःनिसारणाचा लागतो. तो देखील सातत्याने वाढत असल्याचे दिसून येते.

संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता असे लक्षात येते की सर्वाधिक संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी सार्वजनिक उद्याने या बाबीत म्हणजेच १८.१८ टक्के इतका दिसून येत, त्यापाठोपाठ साफसफाई १२ टक्के वृक्षारोपण १२.०१ टक्के पाणीपुरवठा १२.७२ टक्के जन्ममुत्यू नोंदणी ९.७८ टक्के पर्यवेक्षण आरोग्य ९.१५ टक्के आणि जलनिसारण ९.०० टक्के इतका दिसून येतो. प्रचरण गुणांकांचा विचार करता तो सर्वाधिक रूग्णालये आणि दवाखाने च्या बाबीमध्ये म्हणजेच ९१.०० इतका दिसून तर त्यापाठोपाठ सार्वजनिक उद्यानाच्या बाबतीत तो ७७.००, पाणीपुरवठा आणि साफसफाई ह्या बाबीमध्ये ७५.००, वृक्षारोपण ६७.३२ तर जलनिसारण आणि पर्यवेक्षण, आरोग्य याबाबीमध्ये अनुक्रमे ३१.८९ आणि २८.७४ इतका असल्याचे स्पष्ट होते. एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरती होणारा खर्च हा फक्त दहा वर्षात जवळपास ४०० पटीने वाढला आहे. संयुक्त वृद्धी दरचा विचार करता एकूण खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी ७.१६ टक्के इतक्या संयुक्त दराने वाढत होता. एकूण खर्चामध्ये वृक्षारोपणावरती झालेला खर्च हा नगण्य स्वरूपाचा आहे. त्याचे प्रमाण ३ ते ६ टक्के च्या दरम्यान राहिले आहे तर सरासरी प्रत्येक वर्ष १२.०१ टक्के दराने त्यामध्ये संयुक्त वृद्धी दराने वाढ घडून येत आहे. थोडक्यात फलटण नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाचा विचार करता असे लक्षात येते की, पाणीपुरवठा, साफसफाई, जलनिसारण, इत्यादी बाबीचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते.

ड). सामान्य प्रशासन वसुली खर्च :-

प्रशासन वसुली खर्चामध्ये प्रामुख्याने कर वसुली खर्च, वेतन, भत्ते, मानधन, वर्गणी इत्यादी बाबीचा समावेश होतो. फलटण नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचे चित्र तक्ता क्र. ५.४ मध्ये मांडले आहे. तक्ता क्र. ५.४ च्या निरीक्षणावरून खालील बाबी उघड होतात.

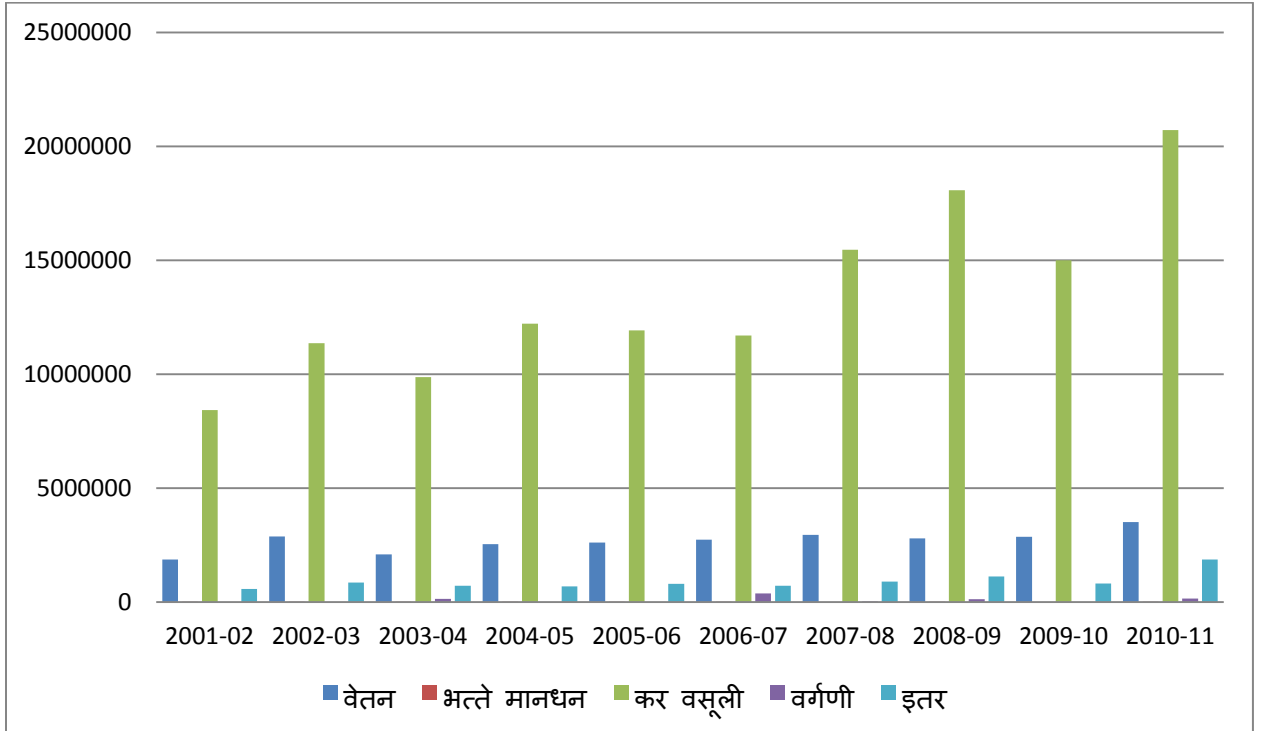
तक्ता क्र. ५.४
सामान्य प्रशासन वसुली खर्च

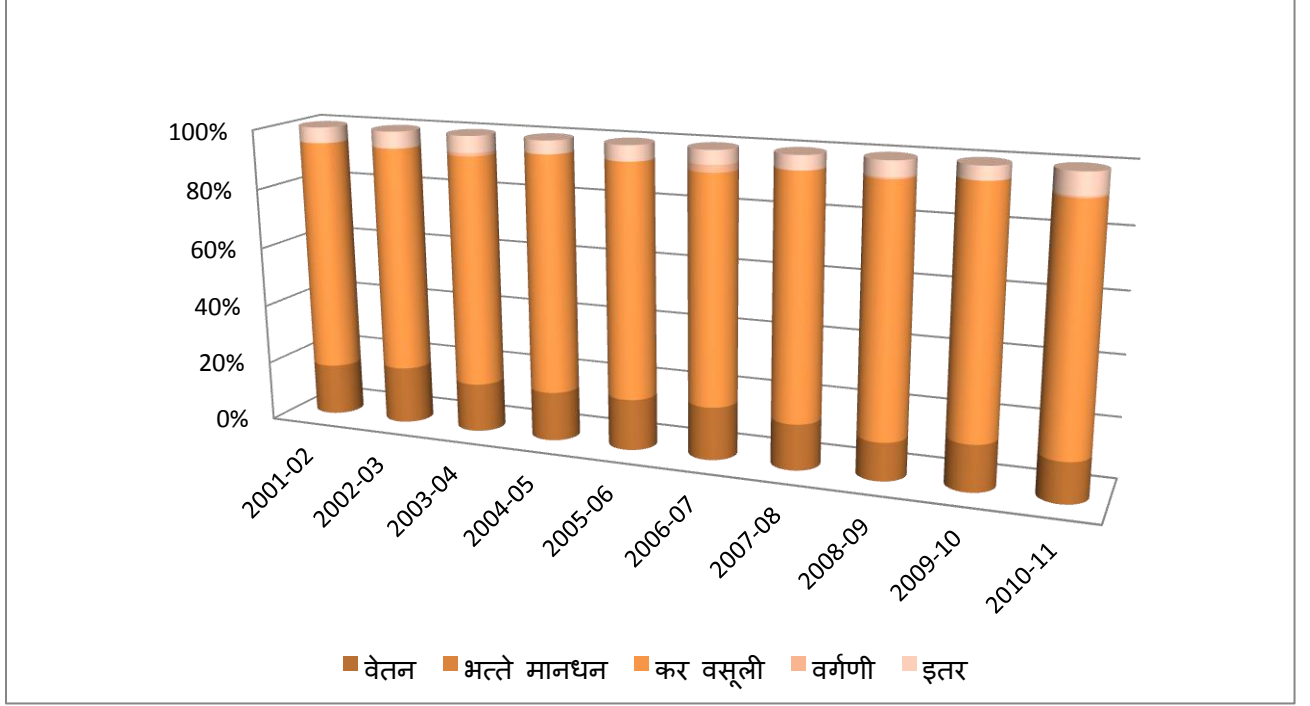
| वर्ष | वेतन | भत्ते मानधन | कर वसुली | वर्गणी | इतर | एकूण |
|---------|---------|-------------|----------|--------|--------|----------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| २००१-०२ | १८६४४९३ | ४९२ | ८४१८१८७ | | ५७४४५९ | १०८५७६३१ |
| २००२-०३ | २८७४९४८ | १६९६ | ११३५३८११ | | ८४५९०६ | १५०७६३६१ |
| २००३-०४ | २०८३६७२ | १५२५ | ९८७२५९४ | १३५९६९ | ७११६४५ | १२८०५१०५ |
| २००४-०५ | २५३४५६७ | ११७३ | १२२११६९५ | | ६८२१७८ | १५४२९६१३ |

| | | | | | | |
|---------|-------------|-------------|-------------|------------|-------------|-------------|
| २००५-०६ | २६०८०६१ | २००० | ११९१४२८४ | | ७९१७९८ | १५३१६१४३ |
| २००६-०७ | २७२८१४७ | २००० | ११६८८२८८ | ३७१४०१ | ७१११५९ | १५५००९९५ |
| २००७-०८ | २९३८६७८ | ०० | १५४६३७७३ | १८९०० | ८९३४४२ | १९३१४७९३ |
| २००८-०९ | २७८८४३६ | २०५ | १८०७२६४७ | ११८९९० | ११२३१८३ | २२१०३४६१ |
| २००९-१० | २८६६२०७ | ०० | १४९९०५२३ | | ८१६२३१ | १८६७३१६१ |
| २०१०-११ | ३५००००० | २००० | २०७१४३१९ | १५०००० | १८५७९९१ | २६२२४३१० |
| mean | २६७८७२०.९ | १३८६.३७५ | १३४७००१२.१ | १५९०५२ | ९००७९९.२ | १७१३०१५७.३ |
| SD | ४५६१९६.४६६४ | ७०५.६६८२६२३ | ३८०१६०९.६ | १२९३७७.७५ | ३६७२४३.०३२२ | ४५४२३४७.२६४ |
| CV | १७.०३०३८४४१ | ५०.९००२४४३३ | २८.२२२७६३०६ | ८१.३४३०५११ | ४०.७६८५७८८६ | २६.५१६६६९९ |
| CGR | ६.४१ | | १३.४१ | | .०.६५ | ९.३५ |

संदर्भ: फलटण नगरपालिकावाि कि अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५. ४
सामान्य प्रशासन वसूली खर्च





तक्ता क्रमांक ५.४ मध्ये सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचे सविस्तर विप्लेषण केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला वेतन या घटकावर झाल्याचे विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु.१८६४४९३/- इतका खर्च झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळुहळू वाढ होत गेली. आणि २००६-०६ या वर्षी रु.२७२८१४७/- पर्यंत वाढला आणि षेवटी ती म्हणजे २०१०-११ या वर्षी रु.३५०००००/- पर्यंत वाढत गेला. दुसत्या भागात भले मानधन यावर केलेल्या खर्चाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ या वर्षी रु.४९२/- होता आणि षेवटी तो खर्च २०१०-११ मध्ये रु.२०००/- इतका होता. तिसऱ्या भागात करवसुली वर झालेला खर्च दर्शवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये रु. ८४१८१८७ /- इतका ढाला होता. त्यानंतर तो २००६-०७ या वर्षी रु .१५४६३७७३/- इतका झाला होता. त्यानंतर त्यात वाढ होत गेली. आणि शेवटी तो २०१०-११ मध्ये रु. २०७१४३१९/- इतका झाला आहे.

षेवटी एकूण खर्चाचे विश्लेषण केले आहे त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये रु.१०८५७६३१/- इतका झाला आहे. त्यानंतर रु.१५५००९९५/- इतका खर्च २००६-०७ ला करण्यात आला होता

आणि षेवटी वाढत-वाढत तो २०१०-११ या वर्षी रु.२६२२४३१०/- इतका झाला होता आणि त्याचा साधा वृद्धीदर हा ९.३५ नोंदवण्यात आला.

सरासरी दहा वर्षांमध्ये वेतनावरील खर्च हा प्रतिवर्षी रु. २५,६५,७३५.०० .तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ६.४१ टक्के इतका होता प्रचरण गुणांक देखील २३ होता.सरासरी कर वसुली खर्च हा प्रतिवर्षी रु. १,२५,३९,०२९.०० .इतका होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा १३.४० टक्के इतका प्रतिवर्षी होता. तर प्रचरण गुणांक हा ३७.८६ टक्के इतका होता. इतर खर्चाच्या बाबीचा विचार करता तो सरासरी प्रत्येक वर्षी रु. ११,५७,२७६.०० .इतका होत होता तर त्यांचा प्रचरण गुणांक हा ७९ इतका होता.एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचा विचार करता तो सरासरी प्रत्येक वर्षी रु. १,६३,३५,६१५.०० .इतका होत होता हे स्पष्ट होते. एकूण खर्चाच्या प्रचरण गुणांक आणि संयुक्त वृद्धी दराचा विचार करता तो अनुक्रमे ३०.९२ व ९.३५ असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात २००१-०२ ते २०१०-११ ह्या कालावधीत फलटण नगरपालिकेच्या एकूण प्रशासन वसुली खर्चांमध्ये प्रामुख्याने तीन बाबीचे वर्चस्व असल्याचे दिसून येते त्या म्हणजे कर, वसुली, वेतन आणि इतर बाबी होय.

इ). बांधकामावरील खर्च :-

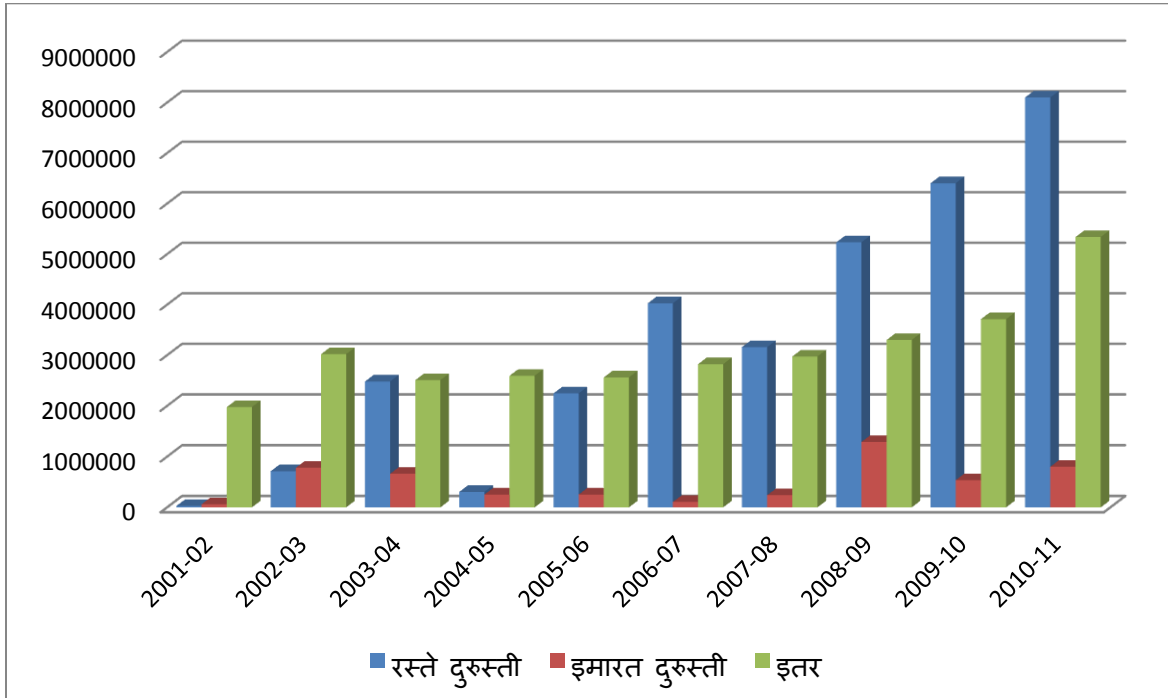
फलटण नगरपालिकेने बांधकामावरील केलेल्या खर्चाची मांडणी तक्ता क्र. ५.५ मध्ये केली आहे. २००१-०२ ते २०१०-११ ह्या कालावधीचा विचार करता बांधकामावरील एकूण खर्च हा २००१-०२, २००४-०५ आणि २००७-०८ मध्ये आधीच्या वर्षांच्या तुलनेत कमी झाला आहे. २००८-०९ ते २०१०-११ ह्या कालावधीत तो वाढत गेल्याचे दिसून येतो. तक्ता क्र. ५ चे निरीक्षण करून खालील निरीक्षणे नमूद करता येतात.

तक्ता क्र. ५.५
बांधकामावरील खर्च

| वर्ष | रस्ते दुरुस्ती | इमारत दुरुस्ती | इतर | एकूण |
|---------|----------------|----------------|-------------|-------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| २००१-०२ | २९११७ | ६२२६८ | १९७६७२० | २०६८२०८ |
| २००२-०३ | ७१२६७६ | ७८०२८१ | ३०२०७४९ | ४५१३७०६ |
| २००३-०४ | २४८२१२६ | ६६३०६२ | २५०८००७ | ५६५३१९५ |
| २००४-०५ | ३०५४९३ | २५२९१० | २५९४४९३ | ३१५२८९६ |
| २००५-०६ | २२४७४४० | २५२९१० | २५६२४८३ | ५०६२८३३ |
| २००६-०७ | ४०२७४५० | १०६८५१ | २८२२८६३ | ७९१८८२४ |
| २००७-०८ | ३१६०३६० | २३९४४८ | २९७४८६८ | ६३७४६७६ |
| २००८-०९ | ५२३३६२५ | १२८८७१६ | ३३०१२२८ | ९८२२५६९ |
| २००९-१० | ६४०३४५२ | ५३५७७३ | ३७१३३३७ | १०६५२५६२ |
| २०१०-११ | ८१००००० | ८००००० | ५३३८९०३ | १४२३८९०३ |
| mean | ३२७०१७३.९ | ४९८२२१.९ | ३०८१३६५.१ | ६९४५८३७.२ |
| SD | २६८९२१५.०९६ | ३८७९६२.९७०१ | ९२३८३९.१०४ | ३७३८४८८.८८४ |
| CV | ८२.२३४६२०५ | ७७.८६९५१३५८ | २९.९८१४८७८८ | ५३.८२३४४५२७ |
| CGR | ४०.६५ | ९.१ | ७.९२ | १५.५४ |

संदर्भ: फलटण नगरपालिकावाि कि अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५.५
बांधकामावरील खर्च



तक्ता क्र. ५.५ मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे आणि त्यामध्ये चार भाग करण्यात आले आहेत. पहील्या भागात रस्ते दुरुस्तीवर करण्यात आला आहे. २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु.२९११७/- करण्यात आला होता. त्यानंतर २००६-०७ मध्ये हा खर्च रु.४०२७५०/- इतका करण्यात आला. नंतर तो वाढत जाऊन २०१०-११ या वर्षी रु. ८१०००००/- इतका झाल्याचे दिसून येते.

त्यानंतर दुसऱ्या भागात इमारत दुरुस्तीवर खर्च करण्यात आला आहे. हा खर्च सुरुवातीला म्हणजे २००१-०२ मध्ये रु.६२२६८/- करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यात हळुहळू घट होत गेली आणि २००६-०७ या वर्षी रु.१०६८५१/- झाला होता आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात रु.८०००००/- पर्यंत वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. आणि शेवटच्या भागात एकूण खर्चाचे विश्लेषण केल्याचे आपण दिसून येते. त्यामध्ये रु.२०६८२०८/- हा २००१-०२ मध्ये झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होत गेली आणि २००६-०७ मध्ये रु.७९१८८२४/- इतका वाढला आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात तो रु.१४२३८९०३/- पर्यंत जाऊन पोहचल्याचे आपणास दिसून येते. या एकूण खर्चाचा साधा वृद्धीदर हा १५.५४ इतका नोंदवण्यात आला.

सरासरी प्रतिवर्षी एकूण बांधकामावरील खर्च हा रु. ६७,१६,७६१.०० .होत होता तर त्याच्या संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी १५.५४ टक्के इतका होता. तसेच प्रचरण गुणांक हा ५४ इतका होता.रस्ते दुरुस्तीच्या खर्चाचा विचार करता सरासरी प्रत्येक वर्षी रस्ता दुरुस्तीवरती रु. ३१,५७,७३९.०० .खर्च होत होते तर त्याच्या वाढीचा दर हा प्रतिवर्षी ४०.६५ टक्के इतका सर्वाधिक होता. तसेच प्रचरण गुणांक देखील सर्वाधिक म्हणजेच ८१.६५ होता. इमारत दुरुस्त्यांवरती होणारा सरासरी दहा वर्षातील खर्च हा जवळपास रु. ४,९८,१६८.०० .इतका होता तर त्याच्या वाढीचा दर प्रतिवर्षी ९.१० टक्के इतका राहिला. तसेच प्रचरण गुणांक हा ७९.८८ इतका होता. इतर बाबीच्या खर्चाचा विचार करता तो सरासरी प्रत्येक वर्षी रु. २९,७३,५११.०० . इतका होत होता तर त्याचा वृद्धीदर हा ७.९२ टक्के इतका होता. तसेच प्रचरण गुणांक हा ३९.८३ इतका असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात फलटण नगरपालिकेच्या बांधकामावरती झालेल्या खर्चाच्या दृष्टिक्षेपावरून असे म्हणता येईल की २००१-०२ ते २०१०-११ ह्या काळात रस्ते दुरुस्ती इतर खर्च ह्या दोन महत्त्वाच्या बाबीवरती लक्ष केंद्रीत केले होते.

२. सातारा नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप

तक्ता क्र. ५.६ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाचे विवेचन केले आहे. या मध्ये प्रामुख्याने महसुली खर्च आणि भांडवली खर्च याचे विवेचन करण्यात आले आहे. तक्ता क्र. ५.६ च्या निरीक्षणावरून खालील गोष्टी स्पष्ट होतील.

तक्ता क्र. ५.६

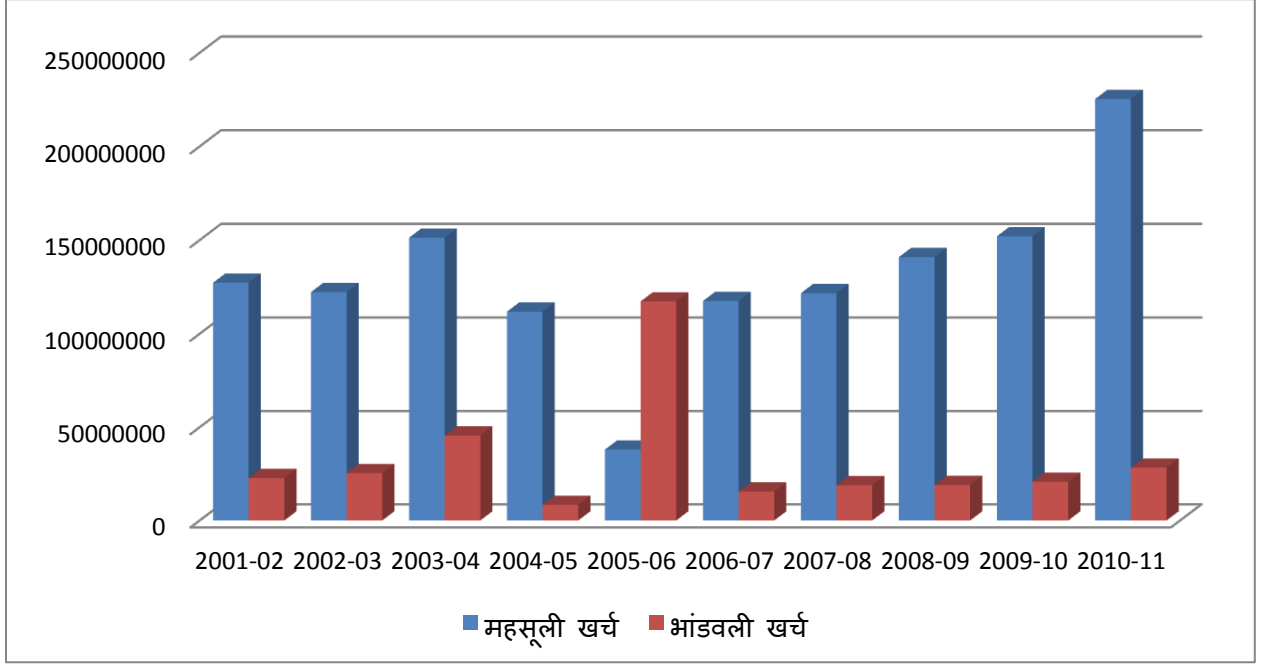
सातारा नगरपालिकेचा एकूण खर्च

| वर्ष | महसुली खर्च | भांडवली खर्च | एकूण खर्च |
|---------|-------------|--------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ |
| २००१-०२ | १२७२३०५४६ | २२७१६७९१ | १४९९४७३३७ |
| २००२-०३ | १२२२४६६३५ | २५३७८३१७ | १४७६२४९५२ |
| २००३-०४ | १५१२५७५६१ | ४५५१३८८४ | १९६७७१४४५ |
| २००४-०५ | १११७७१९०५ | ८३८०७७१ | १२०१५२६७६ |
| २००५-०६ | ३८०२२४०९ | ११७२२३९७२ | १५५२४६३८१ |
| २००६-०७ | ११७४७२३२९ | १५४९४२१६ | १३२९६६५४५ |
| २००७-०८ | १२१६७६७५७ | १८८३३७९७ | १४०५१०५५४ |
| २००८-०९ | १४०९२६५३१ | १८९५४९६१ | १५९८८१४९२ |
| २००९-१० | १५२०१६४६० | २०६९२०३२ | १७२७०८४९२ |
| २०१०-११ | २२५२८३००० | २८३२७१०० | २५३६१०१०० |
| mean | १३०७९०४१३.३ | ३२१५१५८४.१ | १६२९४१९९७.४ |
| SD | ४६२०५७५२.६५ | ३१४३०२३४.०४ | ३८२४६५७७.८९ |
| CV | ३५.३२८०८८२६ | ९७.७५६४०८९५ | २३.४७२५१०७७ |
| CGR | ४.३ | १.५७ | ३.३६ |

संदर्भ: सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५. ६

सातारा नगरपालिकेचा एकूण खर्च



तक्ता क्र. ५.६ मध्ये आपणास असे दिसून येते की, २००१-०२ मध्ये महसुली खर्च रु. १२७२३०५४६ /- इतका होता. तर २००६-०७ मध्ये यामध्ये वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. तो रु. ११७४७२३२९ /- झाला आहे. त्यानंतर महसुली खर्चामध्ये आपणास झपाट्याने वाढ झाल्याचे आढळून येते. सन २०१०-११ मध्ये तो रु. २२५२८३०००/- पर्यंत पोहचल्याचे आपणास आढळून आले.

त्यानंतर आपण भांडवली खर्चाचा विचार केला तर आपणास असे दिसून येते की, सन २००१-०२ मध्ये रु. २२७१६७९१/- इतका झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू संध गतीने घट होत असताना दिसते. २००६-०७ मध्ये हा खर्च रु. १५४९४२१६/- इतका झाल्याचे आपणास दिसून आले. त्यानंतर मात्र यामध्ये झपाट्याने वाढझाली ती म्हणजे २०१०-११ मध्ये रु. २८३२७९०० /- इतकी वाढझाल्याचे निर्देश आले.

आपल्याला तीन नंबरच्या कॉलममध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण आढळून येते त्यामध्ये २००१-०२ यावर्षी तो खर्च रु. १४९९४७३३७ /- इतका होता. त्यानंतर वाढ यामध्ये घडून

आली ती म्हणजे २००५-०६ साली रु. १३२९६६५४५/- इतका झाला. आणि शेवटी यामध्ये मोठ्या प्रमाणावर वाढ घडून आल्याचे दिसून येते. २०१०-११ साली रु. २५३६१०१००/- इतका आल्याचे दिसून येत आहे.

एकूण खर्चाचा विचार करता ते २००१-०२ मध्ये रु. १२८३९७५७२/- .इतका होता तो सातत्याने वाढत जाऊन सन २०१०-११ मध्ये रु. २५३६१०१००/- .इतका झाला. याचाच अर्थ गेल्या १० वर्षात तो दुप्पट झाला आहे. सरासरी एकूण खर्चाचा विचार करता तो प्रतिवर्षी रु. १५९८०१५९५/- .इतका झाला आहे.एकूण खर्चाच्या संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी ३.३६ टक्के दराने वाढत होता असे लक्षात येते.एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक २३.६२ इतका असून रु.३७७४९२२५/- .इतके विचलन गुणांक आहे. सन २००५-०६ वगळता सातारा नगरपालिकेच्या एकूण खर्चात महसुली खर्चाचे प्रमाण हे आधिक असल्याचे दिसून येते. अर्थात महसुली खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण अधिक असणे हे फारसे योग्य नाही. याउलट भांडवली खर्चाचे प्रमाण हे एकूण नेहमीच कमी राहिले आहे.महसुली खर्चाचा वृद्धीदर विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी ४.३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढला तर भांडवली खर्चाचा वृद्धीदर हा - १.५७ टक्के इतका होता हे स्पष्ट होते. एकंदरीत सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाच्या मुख्य महसुली आणि भांडवली बाबीचा विचार करता असे लक्षात येते की तो प्रतिवर्षी एका विषिष्ट दराने वाढत आहे.

तक्ता क्र. २ सातारा नगरपालिका मुख्य घटक व एकूण खर्च:-

तक्ता क्र.५.७ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाच्या मुख्य बाबीचे विवेचन करण्यात आले आहे गेल्या दहा वर्षांचा विचार करता सातारा नगरपालिकेच्या सर्वच बाबीवरील खर्च हा कमी आधिक प्रमाणात वाढला असल्याचे दिसून येते. तक्ता क्र.५.७ च्या सूक्ष्म निरीक्षणावरून खालील बाबी स्पष्ट होतात.

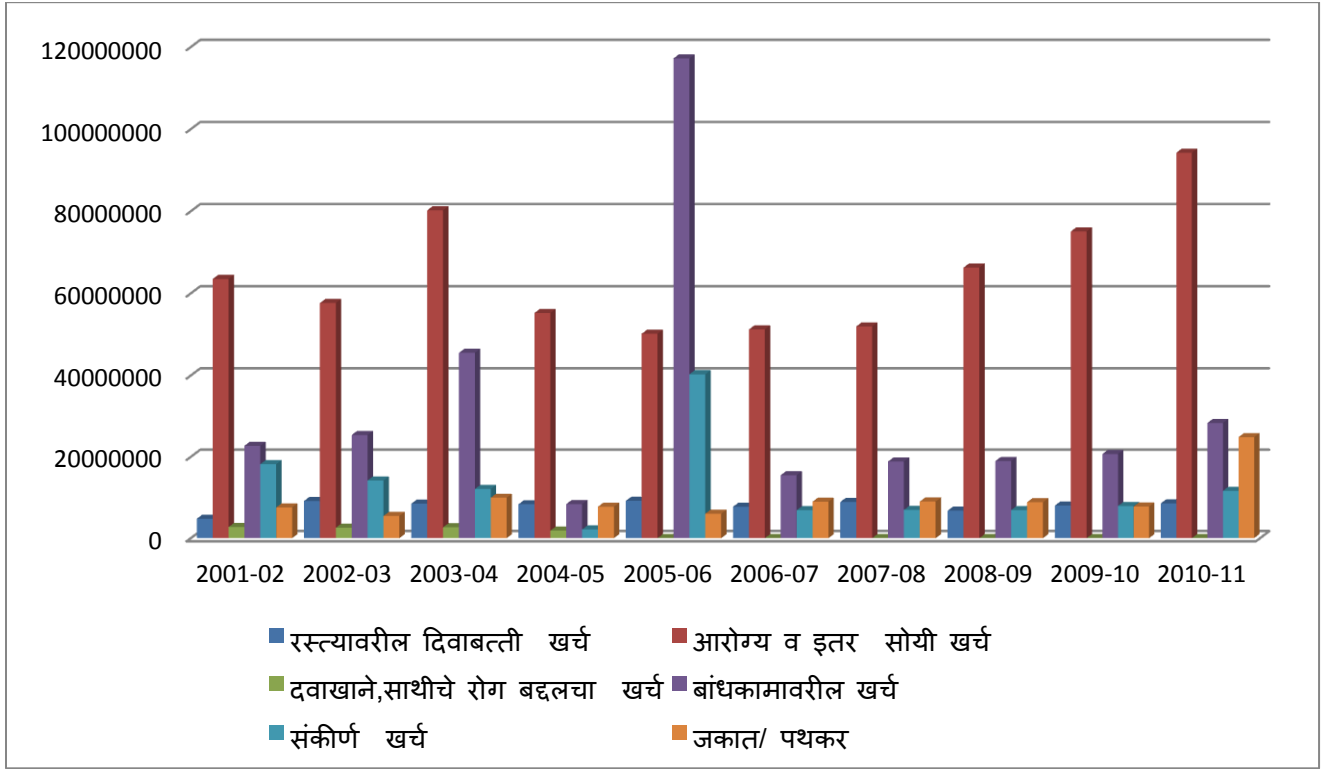
तक्ता क्र.५.७
सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक

| वर्ष | सामान्य प्रशासन व वसूली खर्च | रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्च | आरोग्य व इतर सोयी खर्च | दवाखाने,साथीचे रोग बद्दलचा खर्च | बांधकामावरील खर्च | संकीर्ण खर्च | जकात/ पथकर | एकूण खर्च |
|---------|------------------------------|----------------------------|------------------------|---------------------------------|-------------------|--------------|-------------|-------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| २००१-०२ | ३०४५५७८८ | ४७७०६९० | ६३४९२७४३ | २७४६३६४ | २२७१६७९१ | १८२०४७८७ | ७५६०१७४ | १४९९४७३३७ |
| २००२-०३ | ३३२४६५१४ | ९१५६३०३ | ५७६३८५४० | २५६१३११ | २५३७८३१७ | १४१८७०७२ | ५४५६८९५ | १४७६२४९५२ |
| २००३-०४ | ३७८३५९०१ | ८४८३८७४ | ८०२४१०२९ | २६८५८०२ | ४५५१३८८४ | १२०७२५५१ | ९९३८४०४ | १९६७७१४४५ |
| २००४-०५ | ३६४८१२७५ | ८३४०३४४ | ५५२१७८९९ | १८५५५१२ | ८३८०७७१ | २१३०००० | ७७४६८९७ | १२०१५२६७६ |
| २००५-०६ | ३७८९८०१५ | ९१८४००३ | ५०१५००९४ | ००० | ११७२२३९७२ | ४०२८०४५६ | ६००९८४१ | १५५२४६३८१ |
| २००६-०७ | ४२६६३८७० | ७७३९७३० | ५१२१९२८७ | ००० | १५४९४२१६ | ६८७५००० | ८९७४४४२ | १३२९६६५४५ |
| २००७-०८ | ४४८९९५५७ | ८९२०४०२ | ५१९१६२२७ | ००० | १८८३३७९७ | ६९३५६२१ | ९००४९५० | १४०५१०५५४ |
| २००८-०९ | ५२१५०८८६ | ६७५४९४६ | ६६२७८३८७ | ००० | १८९५४९६१ | ६९१०९१७ | ८८३१३९५ | १५९८८१४९२ |
| २००९-१० | ५३२४१४१५ | ८००८७३६ | ७५०७०८३६ | ००० | २०६९२०३२ | ७९१६२५४ | ७७७९२१९ | १७२७०८४९२ |
| २०१०-११ | ८६०१२५०० | ८५३८००० | ९४२५२५०० | ००० | २८३२७१०० | ११६४५००० | २४८३५००० | २५३६१०१०० |
| mean | ४५४८८५७२.१ | ७९८९७०२.८ | ६४५४७७५४.२ | २४६२२४७.२५ | ३२१५१५८४.१ | १२७१५७६५.८ | ९६१३७२१.७ | १६२९४१९९७.४ |
| SD | १६०८३७०९.९४ | १३४४५६९.७६५ | १४६१६४८१.४२ | ४११७६०.५८७४ | ३१४३०२३४.०४ | १०६९७७७३.१ | ५५२२८६८.६७२ | ३८२४६५७७.८९ |
| CV | ३५.३५७६९३६ | १६.८२८७८३२३ | २२.६४४४४६१२ | १६.७२२९५८५७ | ९७.७५६४०८९५ | ८४.१२९९९४८ | ५७४४७७६९३९ | २३.४७२५१०७७ |
| CGR | ९.२५ | ५.८६ | २.४५ | | -१.५७ | -४.६९ | १३.२४ | ३.३६ |

संदर्भ: सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५. ७

सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक



तक्ता क्र. ५.७ मध्ये आपल्याला असे दिसून येते की, सामान्य प्रशासन वसुली खर्च २००१-०२ मध्ये रु ३०४५५७८८ /- इतका होता. त्यानंतर तो संधगतीने वाढत तो २००५-०६ मध्ये रु. ३७८९८०१५/- इतका झाल्याचे निर्देशनास आले. आणि त्यानंतर मात्र यामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढझाल्याचे आढळून आले म्हणजेच २०१०-११ मध्ये हा खर्च रु. ८६०१२५००/- इतका झाल्याचे आढळून आले. त्याचा वृद्धीदर ९.२५ इतका होता.

तक्ता क्र. ३ मध्ये कॉलम नं. ३ मध्ये रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्च हा दशिवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु. ४७७०६९० /- इतका होता. त्यानंतर खर्चात मोठ्या प्रमाणात वाढ तो २००५-०६ मध्ये रु. ९१८४००३/- इतका करण्यात आला आणि त्यानंतर यात होत घट असल्याचे दिसून आले म्हणजेच तो २०१०-११ या वर्षात रु. ८५३८०००/- इतका करण्यात आल्याचे आपणास आढळून आले. याचा वृद्धीदर ५.८६ इतका होता.

तक्ता क्र. २ मध्ये कॉलम ४ मध्ये आरोग्य सोईवरील खर्च दर्षवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये आरोग्य सेवेवर रु. ६३४९२७४३/- इतका खर्च करण्यात आला होता. व त्यानंतर या खर्चात हळूहळू वाढ होत असल्याचे दिसून आले. २००५-०६ मध्ये रु. ५०१५००९४ /- इतका झाल्याचे आढळले. त्यानंतर खर्चात वाढ ही झपाट्याने झाली ती म्हणजे २०१०-११ या वर्षात रु. ९४२५२५००/- इतकी खर्च करण्यात आला, याचा वृद्धीदर २.४५ इतका होता.

कॉलम ६ मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये रु. २२७१६७९१/- इतका होता. त्यानंतर स्थान संथ गतीने होत राहिली ती म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ११७२२३९७२/- सन इतकी घट झाली, परंतु सन २०१०-११ मध्ये रु. २८३२७१००/- इतकी वाढ झाल्याचे आपणास निदर्षनास आले

कॉलम ७ मध्ये संकीर्ण खर्च विशद करण्यात आला आहे. तो म्हणजे २००१-०२ मध्ये तो रु. १८२०४७८७/- इतका होता. त्यानंतर तो २००५-०६ मध्ये तो रु. ४०२८०४५६ /- इतका कमी झाला आणि शेवटी तो रु. ११६४५०००/- इतका २०१०-११ मध्ये करण्यात आला त्यामधील वाढ आपल्या निदर्षनास आली.

कॉलम ८ मध्ये जकात आणि पतकर यावरील खर्च दर्षवण्यात आला आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये तो रु. ७५६०१७४/- इतका करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यात संथ गतीने वाढझाल्याचे आपणास निदर्षनास आले ती म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ६००९८४१/- इतका नोंदवण्यात आला. त्यानंतर मात्र त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढझाल्याचे दिसून आले. ती म्हणजे २०१०-११ मध्ये रु. २४८३५००० /- करण्यात आला हे आपणाला वरील तक्त्याच्या साह्याने दिसून येते.

कॉलम ९ मध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण केले आहे. एकूण खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली रु. १४९९४७३३७ /- इतका खर्च करण्यात आला आहे. त्यानंतर त्यामध्ये संथगतीने वृद्धी झाल्याचे दिसून येते. म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. १५५२४६३८१/- इतका झाल्याचे आढळते आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ या वर्षात

२५३६१०१०० रु./— खर्च झाल्याचे आढळून येत आहे आणि याचा साधा वृद्धीदर हा ३.३६ इतका आहे.

एकूण सर्वच घटकांच्या खर्चाच्या वृद्धीदराचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की जकात आणि कर या घटकावरील घेणारा खर्च हा १३.२४ टक्के इतक्या संयुक्त आणि सर्वाधिक वृद्धीदराने वाढत आहे. त्या खालोखाल प्रशासन व वसुली खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी ९.२५ टक्के इतक्या दराने वाढत आहे. एकूण सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाच्या बाबीमध्ये आरोग्य आणि इतर सोयीवरील खर्चाचे प्रबल्य अधिक असल्याचे दिसून येते. २००५-०६ या वर्षी बांधकामावरती झालेला खर्च हा खूपच आवाढव्य स्वरूपाचा आहे. सन २००१-०२ मध्ये तो रु.२२७१६७९१/- होता तो सन २००५-०६ मध्ये ११ कोटीच्या वरती गेला आहे. सरासरीचा विचार केल्यास बांधकाम वरील खर्च हा प्रतिवर्षी ३ कोटीच्या वरती होता तर त्याचा विचलन गुणांक ९४.९५ टक्के इतका होता. तर प्रचलनाचा विचार केल्यास तो रु. २९८९८७७४/- इतका आहे.

याचाच अर्थ असा होतो की बांधकामावरील खर्चामध्ये खूपच चढ-उतार आहेत. दिवाबत्ती खर्चाचा वृद्धी दर हा प्रतिवर्षी ५.८६ टक्के इतका होता तो सन २००१-०२ मध्ये रु. ४७७०६९०/- होता तो सातत्याने वाढत जाऊन २०१०-११ मध्ये रु. ८५३८०००/- झाला. सरासरी रस्त्यावरील दिवाबत्तीच्या खर्चाचा विचार केल्यास तो रु. ७५४४२७६/- इतका होता. तर त्याचे प्रचरण हे जवळपास १९ इतके होते. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो २५.८७ टक्के इतका होता असे म्हणता येईल. आरोग्य व इतर सोयी वरती होणारा खर्च हा त्या नगरपालिकेच्या कार्यक्षेत्रातील नागरी आरोग्याची स्थिती दर्शवित असतो. हा खर्च सातारा नगरपालिकेच्या बाबतीत सातत्याने वाढत असल्याचे दिसून येतो. त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा २.४५ टक्के इतका प्रतिवर्षी राहिला आहे. तर सरासरी आरोग्यावर इतर सोयीवरील खर्चाचा विचार केल्यास तो ६ कोटीच्या वरती असल्याचे दिसून येत तर विचलन गुणांक हा २२ टक्के इतका आहे. संकीर्ण खर्चाच्या बाबीवरती होणाऱ्या खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर हा जरी ऋण असला तरी तो एकूण खर्चामध्ये नोंद घेण्यासारखा आहे. सरासरी संकीर्ण खर्चाचा आढावा घेतल्यास असे म्हणता येईल की तो रु. १२५९०५३१/- इतका प्रतिवर्षी होत होता तर त्याचा

विचलन गुणांक हा ८० टक्के इतका प्रभावी असल्याचे दिसून येते. तर विचलनाचा विचार केल्यास तो रु. १०१५७२९४/- .होता हे स्पष्ट आहे.

सातारा नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्यावरती होणाऱ्या खर्चांमध्ये प्रामुख्याने पाणी पुरवठा, साफफाई जल:निसारन पर्यवेक्षण जन्म मृत्यूनोंदणी, रूग्णालय व दवाखाने, सार्वजनिक उद्याने, प्रस्तुतीग्रह, साथीचे रोग इ. बाबीचा समावेश असल्याचे स्पष्ट होते. गेल्या दहा वर्षातील सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाच्या वेगवेगळ्या बाबी विचार घेतल्यास त्यामध्ये प्रामुख्याने आरोग्य व इतर सोयी बांधकामावरील खर्च, रस्त्यावरील दिवाबत्तीचा खर्च इ. बाबीचे प्राबल्य नेहमीच जास्त असल्याचे दिसून येते. एकूणच सातारा नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाच्या बाबीचा विचार केल्यास असे म्हणता येईल की तो या सर्व बाबीवर सरासरी प्रतिवर्षी रु. १५९८०१५९५/- .इतका होत होता ती त्याचा प्रचलन गुणांक हा २३.६२ टक्के इतका होता आणि विचलनाचा विचार केल्यास तो रु. ३७७४९२२५/- .इतका होता हे स्पष्ट आहे.

सातारा नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्य खर्च

तक्ता क्र. ५.८ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्य या बाबावरती होणाऱ्या खर्चाचा गेल्या दहा वर्षीतील आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. अर्थात सार्वजनिक आरोग्य हा सध्या नागरिकरणाच्या प्रक्रियेतील एक कळीचा मुद्दा आहे. या बाबीवरती होणारा खर्च हा सातारा नगरपालिकेच्या कार्यक्षेत्रातील नागरिकांच्या आरोग्याची स्थिती दर्शविणारा एक महत्त्वपूर्ण निर्देशक आहे. कारण ह्या बाबीवरून सार्वजनिक आरोग्याची पातळीची कल्पना येऊ शकते. तक्ता क्र. ५.८ चे निरीक्षण केल्यास बाबी मांडता येतील.

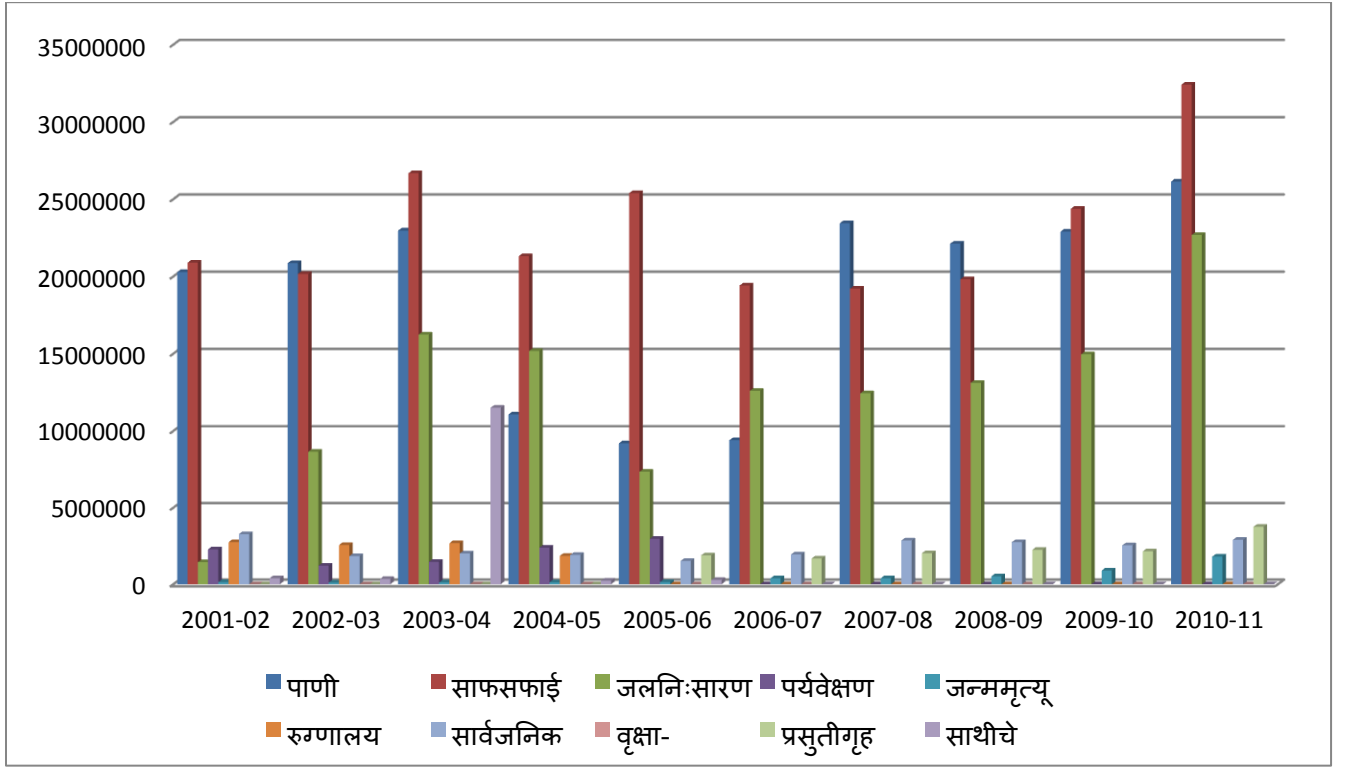
तक्ता क्र. ५.८
सातारा नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च

| वर्ष | पाणी | साफसफाई | जलनिःसारण | पर्यवेक्षण | जन्ममृत्यू | रुग्णालय | सार्वजनिक | वृक्षा- | प्रसुतीगृह | साथीचे | एकूण |
|-------------|----------|-------------|-------------|------------|------------|------------|------------|---------|------------|-----------|----------|
| | पुरवठा | | | (आरोग्य) | नोंदणी | व दवाखाने | उद्याने | रोपण | | रोग | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| २००१.०२ | २०२७५५०२ | २०८८५००१ | १४३७०४९ | २२७३७७१ | १३४८५४ | २७४६३६४ | ३२७०४२० | ००० | ००० | ३९६००० | ६१४१८९६१ |
| २००२.०३ | २०८५५५१५ | २०१५८३८९ | ८६५०७८४ | १२०७६९९ | १०९०६६ | २५६१३११ | १८३०००५ | ००० | ००० | ३४७३३४७ | ५५७२०११६ |
| २००३.०४ | २२९६४०७३ | २६६७३३६९ | १६२२६४७९ | १४६३९४३ | ११३५२९ | २६८५८०२ | २०११०१८ | ००० | ००० | ११४९२७६० | ७३२८७८८९ |
| २००४.०५ | ११०६४५९० | २१३०६९२० | १५१७०५५३ | २३८६१८६ | १२६४०७ | १८५५५१२ | १९०६३६० | ००० | ००० | २२७०८६ | ५४०४३६१४ |
| २००५.०६ | ९१९९५४७ | २५३८९१६३ | ७३४४४८० | २९५७१५९ | १३८५०४ | ००० | १५११९२२ | ००० | १८८२४८० | २७३८९८ | ४८६९७१५३ |
| २००६.०७ | ९३९८४०३ | १९४०६०९६ | १२५९५९९८ | ००० | ३८४४३४ | ००० | १९४१९४९ | ००० | १६७५६८० | ००० | ४५४०२३६० |
| २००७.०८ | २३४३४७५५ | १९१९९७५७ | १२४२८४८० | ००० | ३९४५१९ | ००० | २८५०३२२ | ००० | २०२५५६८ | ००० | ६०३३३४०१ |
| २००८.०९ | २२११२८४२ | १९८१८०१२ | १३१०८१३१ | ००० | ५१४०२७ | ००० | २७४७९४२ | ००० | २२४२९९४ | ००० | ६०५४३७४८ |
| २००९.१० | २२८९५३१७ | २४३७४१८८ | १४९५९३५२ | ००० | ८९२७४९ | ००० | २५३६३७१ | ००० | २१४६४४१ | ००० | ६७८०४४१८ |
| २०१०.११ | २६१३६५०० | ३२४०४५०० | २२६८०००० | ००० | १८००००० | ००० | २८९७५०० | ००० | ३७४८५०० | ००० | ८९६६७००० |
| Mean | १८८३३७०४ | २२९६१५३९.५ | १२४६०१३०.६ | २०५७७५१.६ | ४६०८०८.९ | २४६२२४७.२५ | २३५०३८०.९ | ००० | २२८६९४३.८ | २५४७४१८.२ | ६१६९१८६६ |
| SD | ६३८७२९१ | ४२४८१०४.०८२ | ५७२३७५४.६४२ | ७१३९०९.१८३ | ५३३२६४.८७ | ४११७६०.५८७ | ५८१३१४.८१८ | ००० | ७४३४२०.५९ | ५००१०२२.१ | १२८४९७५३ |
| CV | ३३.९१४१५ | १८.५००९५४९७ | ४५.९३६५४१६ | ३४.६९३६५२२ | ११५.७२३६५ | १६.७२२९५८६ | २४.७३२७९२ | ००० | ३२७५०७१६४ | १९६.३१७२८ | २०.८२८९३ |
| CGR | १.७२ | ३.२ | १३.७६ | १६.४४ | ३२.९१ | .३.८४ | ५.०७ | ००० | १३.०३ | १९.४८ | २.७७ |

संदर्भ: सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५. ८

सातारा नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च



सार्वजनिक आरोग्यात पाणी पुरवठावरती होणाऱ्या खर्चाला सातारा नगरपालिकेने साफसफाई पाठोपाठ अग्रक्रम दिल्याचे दिसून येते. दुसऱ्या शब्दात एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चामध्ये साफसफाईवरती होणाऱ्या खर्चाला अग्रक्रम दिल्याचे दिसून येत. त्या खालोखाल पाणी पुरवठ्यासाठीच्या खर्चाला पसंती दिल्याचे स्पष्ट होते. एकूण सार्वजनिक खर्चाच्या बाबीमध्ये जन्म, मृत्यू नोंदणी खर्च, सार्वजनिक उद्यानांवरती होणारा खर्च, आणि प्रसुती गृहावरती होणाऱ्या खर्च पर्यवेक्षण या खर्चाचे प्रमाण कमी असल्याचे दिसून येते. ढोबळमानाने असे म्हणता येईल की सातारा नगरपालिका ही सार्वजनिक आरोग्याच्या बाबतीत पाणीपुरवठा, साफसफाई, साथीचे रोग, रुग्णालये व दवाखाने या बाबींना अग्रक्रम देते तर सार्वजनिक उद्याने, पर्यवेक्षण, जन्म मृत्यू नोंदणी प्रसुतिगृह ह्या बाबींचा दुय्यम स्थान देते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो साथीच्या रोगांच्या नियंत्रणासाठी होणाऱ्या खर्चाचा बाबतीत सर्वाधिक १९.४८ टक्के प्रतिवर्षी इतका होत होता तर सरासरी तो प्रतिवर्षी रु.

२१४१७८७/- .इतका होता. विचलनाच्या विचार केल्यास रु.४५८२०७३/- गुणांक हा २१३ टक्के होता. प्रस्तुतिगृहाचा संयुक्त वृद्धीदर प्रतिवर्षी १३.०३ टक्के इतका असून सरासरी रु. २२८६९४४/- . इतका खर्च प्रस्तुतीगृहावरती अभ्यास काळात प्रतिवर्षी घडून येत होतो. सार्वजनिक उदयाने यांचा संयुक्त वृद्धीदर प्रतिवर्षी फक्त ५.०७ टक्के इतका होता तर सरासरी प्रतिवर्षी सार्वजनिक उदयान्यावरती होणारा खर्च हा रु. २२४३३३६/- .इतका होता.

विचलनाचा विचार केल्यास तो रु. ६५५८७९/- .इतके होते तर प्रचरण गुणांक हा २९. २३टक्के इतका होता.रुग्णालय व दवाखाने यांच्या बाबतीत सातारा नगरपालिकेचा खर्च सरासरी प्रतिवर्षी रु.२४१६३१८/- .इतका होत होता. अर्थात या बाबीवर २००५-०६ पासून २०१०-११ पर्यंत झालेल्या खर्चाची नोंदी सापडल्या नाहीत. तसेच आरोग्यावरती (पर्यवेक्षण) या बाबीवरती देखील २००५-०६ पासूनच्या खर्चाचा नोंदी सातारा नगरपालिकेच्या बाबतीत उपलब्ध नाहीत ही बाब खूपच गंभीर स्वरूपाची आहे.जन्ममुत्यु नोंदणीच्या बाबीवरती होणारा सातारा नगरपालिकेचा खर्च हा प्रतिवर्षी सरासरी रु.४२६३११/- .इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ३२.९१ टक्के इतका होता. तसेच १२१.६६ टक्के इतका प्रचरण गुणांक होता. तर विचलन हे रु.५१८६७६/- .इतके होत. जलनिसारण या बाबीवर सातारा नगरपालिकेचा प्रतिवर्षी सरासरी रु.१२२०१९३८/- .इतका खर्च हा घडून आलेला आहे. तर त्यांचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी १३.७६ टक्के इतका आहे. तर विचलन गुणांक हा ४५ टक्के इतका आहे. साफसफाईच्या बाबतीत सातारा नगरपालिकेचा सरासरी प्रतिवर्षी रु.२२२९२०१२/- .इतका खर्च हा अभ्यास काळात घडून आल्याचे स्पष्ट होत तर त्याचा विचलन गुणांक हा २०.६४ टक्के इतका असून तो प्रतिवर्षी ३.२ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत होता. पाणी पुरवठा या बाबीला सातारा नगरपालिकेने अग्रक्रम दिलेला दिसून येतो. त्यामुळे अभ्यास कालावधीत या बाबीवर सरासरी प्रतिवर्षी रु. १८९३६५२१/- .हे खर्च होत होते तर तो प्रतिवर्षी १.७२ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात सातारा नगरपालिकेच्या सार्वजनिक खर्चाच्या बाबीमध्ये साफसफाई, पाणी पुरवठा आणि जल:निसारण या बाबीना प्राधान्य देण्यात आले होते हे स्पष्ट आहे.

सातारा नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचा आढावा

तक्ता क्र. ५.९ मध्ये सातारा नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचा आढावा घेण्याच्या प्रयत्न केला आहे. यामध्ये प्रामुख्याने वेतन, भत्ते, मानधन, कर वसुली आणि इतर बाबींचा समावेश करण्यात आला आहे.

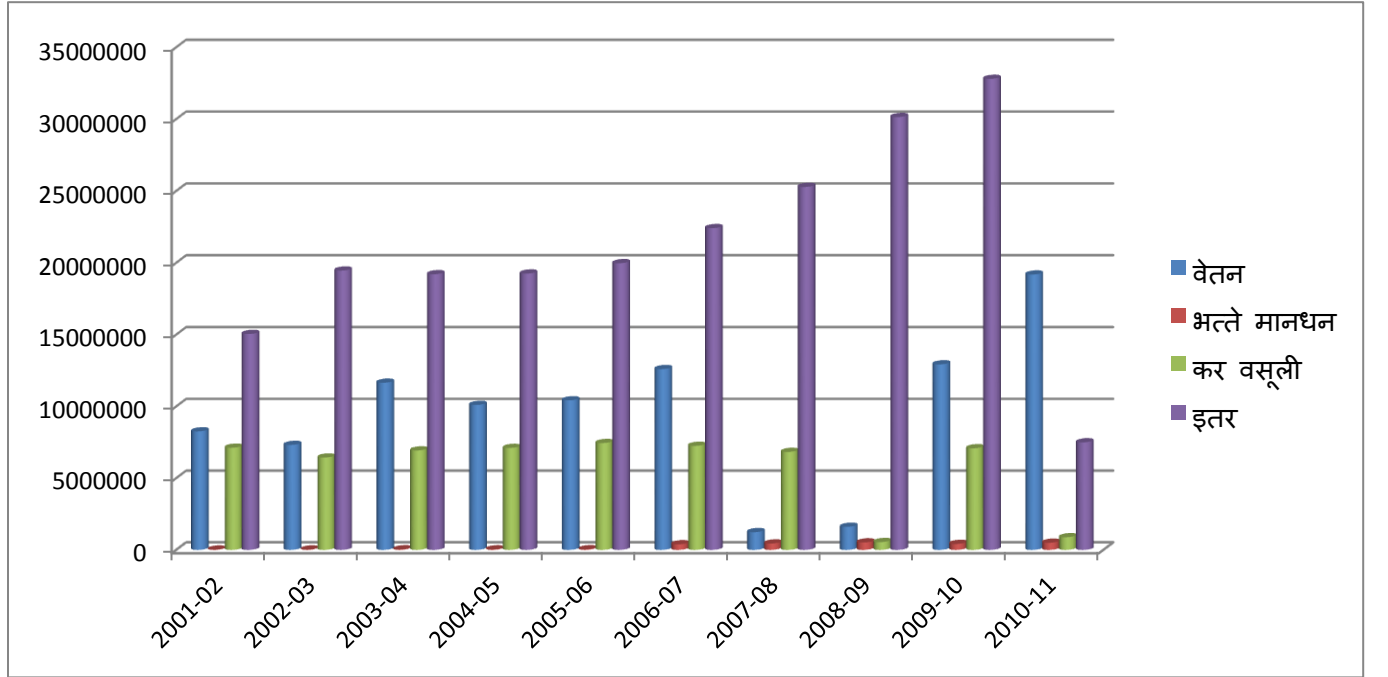
तक्ता क्र. ५.९ सातारा नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च

| वर्ष | वेतन | भत्ते मानधन | कर वसुली | इतर | एकूण |
|---------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ |
| २००१.०२ | ८२६२७६३ | २०९२५ | ७१२३४६४ | १५०४७९२६ | ३०४५५७८८ |
| २००२.०३ | ७३१९७९० | २५४२० | ६४३८३५९ | १९४६३९४५ | ३३२४६५१४ |
| २००३.०४ | ११६५६५६४ | ३७६४१ | ६९३४६१५ | १९२०७०८१ | ३७८३५९०१ |
| २००४.०५ | १०१०८९९४ | ३६७९४ | ७१११२०८ | १९२५४२७९ | ३६४८१२७५ |
| २००५.०६ | १०४२७५०८ | ४३९८२ | ७४४९७५० | १९९७६७७५ | ३७८९८०१५ |
| २००६.०७ | १२६०३४३१ | ३८९८१८ | ७२५६५६० | २२४१४०३६ | ४२६६३८७० |
| २००७.०८ | १२३८०५७ | ४४६३७८ | ६८२९७७५ | २५२८५३४७ | ४४८९९५५७ |
| २००८.०९ | १६०९७३३ | ५२१७७८ | ५४५१७६ | ३०१४५१९९ | ५२१५०८८६ |
| २००९.१० | १२९३४५४६ | ४१६९८२ | ७०८६४८० | ३२८०३४०७ | ५३२४१४१५ |
| २०१०.११ | १९१८६००० | ५००००० | ८८२६५० | ७५००००० | ८६०१२५०० |
| mean | ९५३४७३८.६ | २४३९७१.८ | ५७६५८०३.७ | २११०९७९९.५ | ४५४८८५७२.१ |
| SD | ५३५३२५३.६१२ | २२५५६२.१०३१ | २६७७१९.७०१ | ७२३०६७५.०७७ | १६०८३७०९.९४ |
| CV | ५६.१४४७३३८६ | ९२.४५४१७०१७ | ४६.४३२२३८०८ | ३४.२५२६९४२४ | ३५.३५७६९३६ |
| CGR | ८.९६ | १९.७७ | ६.१७ | ५.६४ | ६.५५ |

संदर्भ: सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५. ९

सातारा नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च



तक्ता क्र. ५.९ मध्ये सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाची मांडणी केली आहे. त्याच्या निरीक्षणारून खालील बाबी स्पष्ट होतात.

सामान्य प्रशासन वसुली खर्चामधील पहील्या कॉलममध्ये वेतनावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये आपणास असे दिसून येते की २००१-०२ मध्ये वेतनावरील खर्च हा रु ८२६२७६३ ./- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ झाल्याचे दिसून आले म्हणजे २००५-०६ मध्ये तो रु. १०४२७५०८ /- इतका करण्यात आला आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये १९१८६००० रु./- इतका झाल्याचे आपणास दिसून येते.

त्यानंतर दोन नंबर कॉलममध्ये मानधन आणि भत्ते यावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये रु.२०९२५ /- इतका खर्च करण्यात आला होता. त्यानंतर २००५-०६ मध्ये तो ४३९८२ रु./- करण्यात आला आणि शेवटी त्यामध्ये वाढ होत तो २०१०-११ या वर्षी रु.५०००००/-इतका झाला. आणि शेवटी एकूण खर्च हा २००१-०२ मध्ये रु. ३०४५५७८८ /- इतका करण्यात आला. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होऊ लागली आणि

२००५-०६ मध्ये तो ३७८९८०१५ /- इतका होता. आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ ला तो ८६०१२५०० रु./- इतका वाढत गेला. आणि त्याचा वृद्धीदर हा ६.५५ टक्के आहे.

वेतन बाबीवर सरासरी प्रतिवर्षी रु.९३११६०२/- .होत होते तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ८.९६/- इतका होता तर विचलन गुणांक हा ५५ टक्के आणि प्रचरण रु.५१३२१८०/- .इतके होते. तक्ता क्र. ४ वरून सातारा नगरपालिकेच्या भत्ते व मानधन या बाबीवरती होणारा खर्च हा झपाट्याने वाढत असल्याचे दिसून येते तो २००१-०२ मध्ये फक्त रु.२०९२५ /- इतका होता तर २०१०-११ मध्ये तो रु.२२४४९२/- इतका झाला होता तर विचलन गुणांक १०० टक्के इतका होता.कर वसुलीवरती होणाऱ्या खर्चाचा विचार करता असे स्पष्ट होते की, तो प्रतिवर्षी ६.१७ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत असून प्रतिवर्षी सरासरी रु. ५६९२९८१/- होत होता. तर त्याचा विचलन गुणांक हा ४४.८१ टक्के इतका असून प्रचरण जवळपास रु. २५५१२६५/- इतके होते.इतर खर्चाचा विचार केल्यास त्याचा प्रतिवर्षी ५.६४ टक्के इतका संयुक्त वृद्धीदर होता तर तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.२०६२०९२६/- .झाला तर त्याचा विचलन गुणांक हा ३४.१८टक्के इतका आहे.

या ठिकणी इतर खर्चाच्या मथळ्याखाली सातारा नगरपालिकेने खूप मोठ्या प्रमाणात खर्च केला असल्याचे स्पष्ट होते.एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी रु.४३८८०१६२/- .इतका होत होता तर अभ्यास काळात त्यांचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ६.५५ टक्के इतका होता. थोडक्यात सातारा नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाच्या बाबीमध्ये इतर खर्चाचे प्रमाण हे वाढत आहे, हे अधिक स्पष्ट आहे.

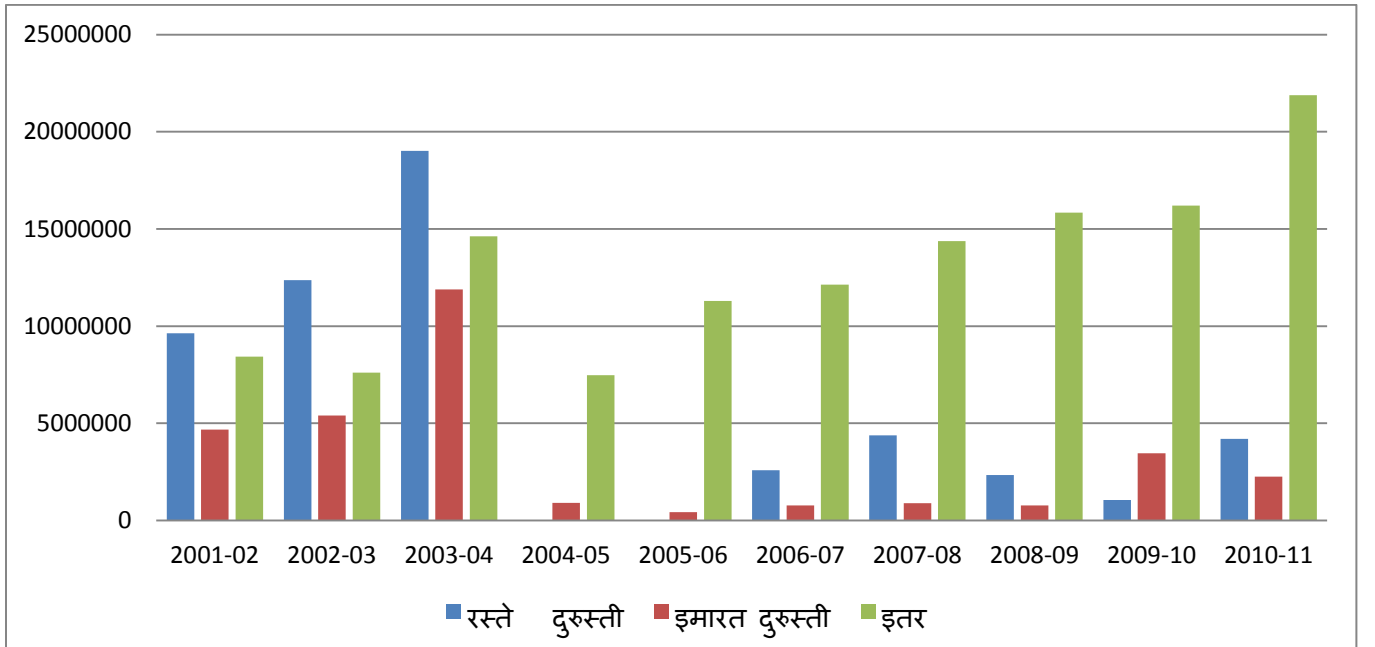
तक्ता क्र. ५.१० मध्ये सातारा नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्चाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. यामध्ये प्रामुख्याने रस्ते दुरुस्ती, इमारत दुरुस्ती आणि इतर बाबीचा समावेश होतो.

तक्ता क्र. ५.१०
सातारा नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च

| वर्ष | रस्ते | इमारत | इतर | एकूण |
|---------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| | दुरुस्ती | दुरुस्ती | | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| २००१-०२ | ९६२७१७४ | ४६६८१८० | ८४२१४३७ | २२७१६७९१ |
| २००२-०३ | १२३६९७७६ | ५४०६५०६ | ७६०२०३५ | २५३७८३१७ |
| २००३-०४ | १९००९२०० | ११८८८४४७ | १४६१६२३७ | ४५५१३८८४ |
| २००४-०५ | ०० | ९००१६१ | ७४८०६१० | ८३८०७७१ |
| २००५-०६ | ०० | ४२४८३२ | ११२९९१४० | ११७२३९७२ |
| २००६-०७ | २५८५४७१ | ७७१५११ | १२१३७२३४ | १५४९४२१६ |
| २००७-०८ | ४३७२५२३ | ८९३३५८ | १४३७१९१६ | १८८३३७९७ |
| २००८-०९ | २३४३७३७ | ७७४२३१ | १५८३६९९३ | १८९५४९६१ |
| २००९-१० | १०४७६५५ | ३४५१०१४ | १६१९३३६३ | २०६९२०३२ |
| २०१०-११ | ४२००००० | २२५०००० | २१८७७१०० | २८३२७१०० |
| mean | ६९४४४४२ | ३१४२८२४ | १२९८३६०६.५ | २१६०१५८४.१ |
| SD | ५८२३१८२.४०३ | ३३६९५६१.९५७ | ४३०९७९०.१३६ | ९७८६१५१.७३४ |
| CV | ८३.८५३८५६१३ | १०७.२१४४६५६ | ३३.१९४०९०८४ | ४५.३०२९३५६ |
| CGR | | -३८.०९ | ६.९५ | -१६.१४ |

संदर्भ: सातारा नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५.
सातारा नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च



तक्ता क्र. ५.१० मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे आणि त्यामध्ये चार भाग करण्यात आले आहेत. पहील्या भागात रस्ते दुरुस्तीवर करण्यात आला आहे. २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु. ९६२७१७४ /- करण्यात आला होता. त्यानंतर २००६-०७ मध्ये हा खर्च २५८५४७१ रु./- इतका करण्यात आला. नंतर तो वाढत जाऊन २०१०-११ या वर्षी ४२००००० रु./- इतका झाल्याचे दिसून येते.

त्यानंतर दुसऱ्या भागात इमारत दुरुस्तीवर खर्च करण्यात आला आहे. हा खर्च सुरुवातीला म्हणजे २००१-०२ मध्ये रु. ४६६८१८० /- करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यात हळुहळू घट होत गेली आणि २००६-०७ या वर्षी ७७१५११ रु./- झाला होता आणि षेवटी २०१०-११ या वर्षात २२५०००० रु./- पर्यंत वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते.

आणि शेवटच्या भागात एकूण खर्चाचे विश्लेषण केल्याचे आपण दिसून येते. २००१-०२ मध्ये त्यामध्ये रु. २२७१६७९१ /- हा झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होत गेली आणि २००६-०७ मध्ये १५४९४२१६ रु./- इतका वाढला आणि षेवटी २०१०-११ या वर्षात तो २८३२७१०० रु./- पर्यंत जाऊन पोहचल्याचे आपणास दिसून येते. या एकूण खर्चाचा साधा वृद्धीदर हा इतका नोंदवण्यात आला.

तक्ता क्र. ५.१० वरून असे स्पष्ट होते की, अभ्यासकाळात रस्ते दुरुस्तीवरती सरासरी प्रतिवर्षी रु.७५०९७६५/- खर्च झालेले आहेत त इमारत दुरुस्ती आणि इतर यावरती अनुक्रमे सरासरी प्रतिवर्षी रु.३३४०३७७/- आणि रु.१२४८४२३३/- खर्च झाले आहेत. एकूण बांधकामावरील खर्चाचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.२८९५७७२/- .इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ऋण १६ टक्के प्रतिवर्षी होता. तक्ता क्र. ५ वरून असे स्पष्ट होते की, बांधकामावरील एकूण खर्च हा घटत्या दराने वाढत आहे. इमारत दुरुस्तीच्या बाबतीत झालेला खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर हा देखील ऋण ३८.०९ टक्के इतका आहे.

थोडक्यात बांधकामावरील सातारा नगरपालिकेचा खर्च हा समाधान कारकरित्या होत नाही असे म्हणता येईल.

३.रहमतपूर नगरपालिका खर्चाचे स्वरूप

महसुली खर्च आणि भांडवली खर्च अशा दोन प्रमुख घटकांमध्ये एकूण नगरपालिकांच्या खर्चाचे विभाजन करता येते; ह्या महसुली आणि भांडवली खर्चाच्या बाबतीत विवेचन करताना प्रामुख्याने त्याचे एकूण खर्चाशी असणारे प्रमाण आणि त्याचे बदलते स्वरूप यांचा उहापोह केला आहे. त्याचबरोबर त्याच्यामधील बदलाचे स्वरूप आणि दिशा ह्याचे ही विवेचन करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे. तक्ता क्र. १ मध्ये रहमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाचे, महसुली खर्च आणि भांडवली खर्चाशी असलेले प्रमाण सन २०००-०१ ते २०१०-११ या कालावधी मधील स्वरूप स्पष्ट केले आहे. तक्ता क्र. ५.११ वरून खालील गोष्ट होतात.

अ). एकूण खर्चाचे, महसुली खर्च व भांडवली खर्चाशी प्रमाण :-

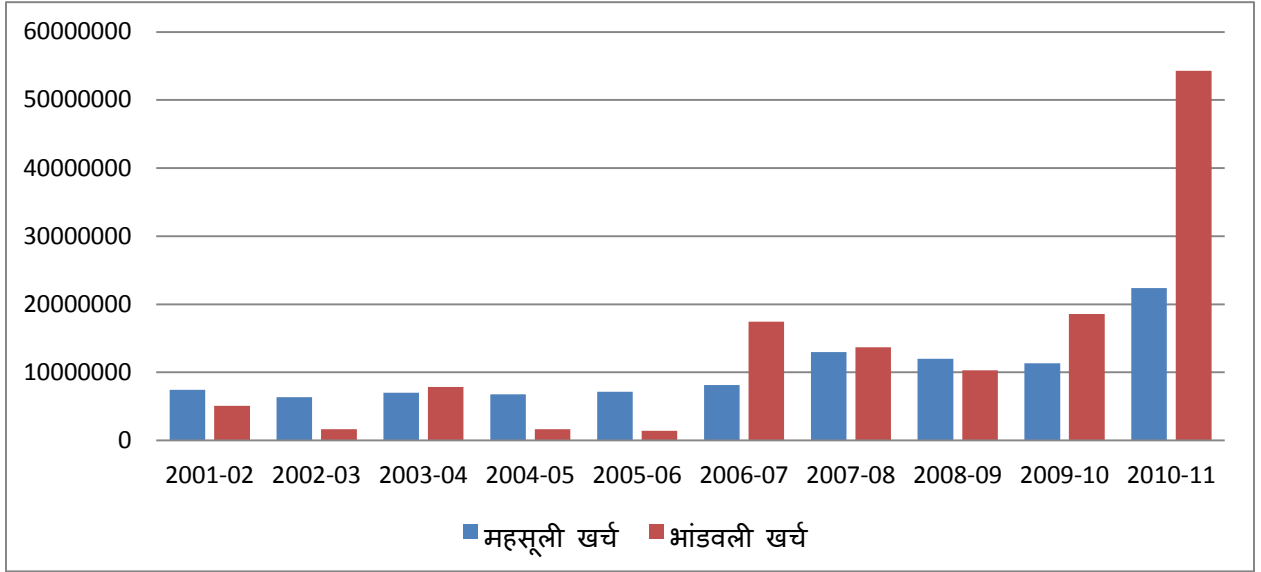
तक्ता क्र. ५.११
रहमतपूर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च

| वर्ष | महसुली खर्च | भांडवली खर्च | एकूण खर्च |
|-----------|-------------|--------------|-------------|
| २००१.०२ | ७४५७६५७ | ५०९००४५ | १२५४७७०२ |
| २००२.०३ | ६३५००५० | १६७५६६९ | ८०२५७१९ |
| २००३.०४ | ७०२९२६५ | ७८४९३४७ | १४८७८६१२ |
| २००४.०५ | ६७८३८५९ | १६६३९०४ | ८४४७७६३ |
| २००५.०६ | ७१६७१४९ | १४४३२६८ | ८६१०४१७ |
| २००६.०७ | ८१५३४७३ | १७४५८६६१ | २५६१२१३४ |
| २००७.०८ | १२९७२९९५ | १३७०८२४९ | २६६८१२४४ |
| २००८.०९ | ११९९७७०१ | १०३२७३३४ | २२३२५०३५ |
| २००९.१० | ११३३८९४३ | १८५८४३९७ | २९९२३३४० |
| २०१०.११ | २२४०५५०० | ५४३११८१५ | ७६७१७३१५ |
| Mean | १०१६५६५९.२ | १३२११२६८.९ | २३३७६९२८.१ |
| SD | ४९२८७५३.०१५ | १५७९१४५९.८४ | २०४६९९१४.१५ |
| CV | ४८.४८४३४२४१ | ११९.५३०२२८ | ८७.५६४६०२४२ |
| CGR | ६ | -७.१५ | -२५.९३ |
| Corr(2,4) | ०.५९ | | |
| Corr(3,4) | ०.७ | | |

संदर्भ: रहमतपूर नगरपालिकावार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११.

आलेख क्र. ५. ११

रहिमतपूर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च



तक्ता क्र. ५.११ मध्ये आपणास असे दिसून येते की, २००१-०२ मध्ये महसुली खर्च रु. ७४५७६५७/- इतका होता. तर २००५-०६ मध्ये यामध्ये वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. तो रु. ७१६७१४९/- झाला आहे. त्यानंतर महसुली खर्चामध्ये आपणास झपाट्याने वाढ झाल्याचे आढळून येते. सन २०१०-११ मध्ये तो रु. ११३३८९४३/- पर्यंत पोहचल्याचे आपणास आढळून आले.

त्यानंतर आपण भांडवली खर्चाचा विचार केला तर आपणास असे दिसून येते की, सन २००१-०२ मध्ये रु. ५०९००४५/- इतका झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू संध गतीने वाढ होत असताना दिसते. २००५-०६ मध्ये हा खर्च रु. १४४३२६८/- इतका झाल्याचे आपणास दिसून आले. त्यानंतर मात्र यामध्ये झपाट्याने वाढ झाली ती म्हणजे २०१०-११ मध्ये रु. ५४३११८१५/- इतकी वाढ झाल्याचे निर्देश आले.

आपल्याला तीन नंबरच्या कॉलममध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण आढळून येते त्यामध्ये २००१-०२ यावर्षी तो खर्च रु. १२५४७७०२/- इतका होता. त्यानंतर यामध्ये घट घडून आली ती म्हणजे २००५-०६ साली रु. ८६१०४१७/- इतका झाला. आणि शेवटी यामध्ये मोठ्या

प्रमाणावर वाढ घडून आल्याचे दिसून येते. २०१०-११ साली रु. ७६७१७३१५/- इतका आल्याचे दिसून येत आहे.

तक्ता क्र. ५.११ मध्ये मिळालेल्या आकडेवारीवर प्रक्रिया केली असता आपणास असे दिसून येते की, महसुली खर्चाचा साधा वृद्धीदर ६.०० इतका आहे तर की, सी. व्ही. हा ५१.४३ इतका आहे. आणि भांडवली खर्चाचा विचार करता साधा वृद्धीदर -७.१५ इतका आहे व सी. व्ही. -१२६.४२ इतका असताना आपल्याला दिसून येतो.

भांडवली खर्चाचे एकूण खर्चाशी असलेले प्रमाण हे इ.स. २००६-०७ पासून झपाट्याने वाढत आहे. एकूण अभ्यास कालावधीचा विचार करता असे दिसून येते की, रहिमतपूर नगरपालिकेच्या भांडवली खर्चाचा संयुक्त वृद्धी दर हा ऋण -७.१५ टक्के आहे. असे जरी असले तरी एकूण खर्चामध्ये २००४-०५, २००५-०६, २०००-०१ आणि २००२-०३ वगळता इतर वर्षी भांडवली खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त राहिले आहे. महसुली खर्चाचा विचार करता असे दिसून येते की, सर्वसाधारण पण प्रतिवर्षी हा खर्च ६.०० टक्के संयुक्त वृद्धी दराने वाढत आहे. अभ्यास कालावधीत रहिमतपूर नगरपालिकेचा सरासरी भांडवली खर्च हा रु. १,२१,६३,७९९.०० .इतका झाला आहे, तर उलटपक्षी महसुलीचा सरासरी खर्च हा रु. ९६,५९,१५५.०० .इतका झाला असून सरासरी एकूण खर्च हा रु. २,६९,६३,५९२.०० .इतका झाला आहे.प्रचरण गुणांकांचा विचार करता ते सर्वाधिक भांडवली खर्चाच्या बाबतीत म्हणजे १२६.४२ इतके दिसून येते तर एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक हा ८४.४५ इतका असून तो महसुली खर्चाच्या बाबतीत ५१.४३ इतका आहे.सहसंबंधाचा विचार करता असे दिसून येते की, महसुली खर्च आणि भांडवली खर्च ह्यामध्ये ०.९३ इतका प्रभावी सहसंबंध आहे तर त्याखालोखाल भांडवली खर्च आणि एकूण खर्च ह्यामध्ये ०.७० इतका सहसंबंध असल्याचे आढळून येते. उलटपक्षी मध्यम स्वरूपाचा सहसंबंध गुणांक हा महसुली खर्च आणि एकूण खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो. तो ०.५९ इतका आहे. एकूण खर्चाचा विचार करता सर्वाधिक खर्च हा २०१०-११ ह्यावर्षात झाला आहे त्या खालोखाल २०००-०१ या वर्षी सर्वाधिक खर्च झालेला आहे. इ.स. २००१-०२ ते २००५-०६ पर्यंत कमी आधिक फरकाने सर्वच खर्च स्थिर दराने वाढल्याने दिसून येते. पण २००६-०७ पासून हे सर्व खर्च झपाट्याने वाढत असल्याचे

दिसून येते. तसेच लक्षणीय बाब एकूण खर्चाच्या बाबतीत दिसून येते ती म्हणजे हा खर्च –२५.१३ टक्के इतका संयुक्त वृद्धी दराने प्रतिवर्षी घटत आहे.

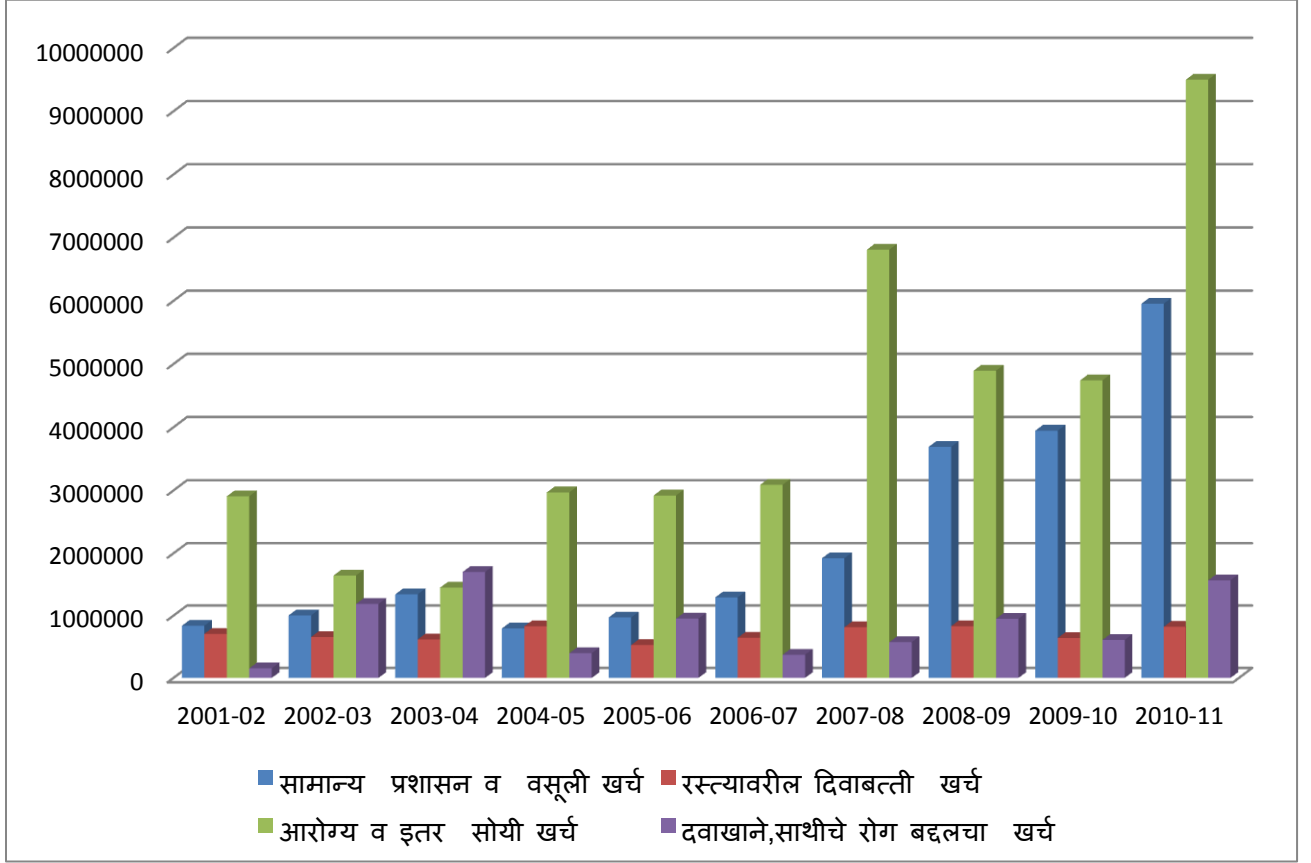
नगरपालिकांना वेगवेगळ्या घटकांच्यावर खर्च करणे कायद्याने बंधनकारक असते. ह्यामध्ये प्रामुख्याने ज्या घटकांचा समावेश होतो ते घटक, त्या घटकांवर झालेला एकूण खर्च आणि एकूण खर्चात त्या संबंधित घटकाचे प्रमाण याची मांडणी तक्ता क्र ५ .१२ मध्ये केली आहे. तक्ता क्र ५ .१२ चे निरीक्षण केल्यास असे दिसून येते की,

तक्ता क्र ५ .१२
रहिमतपूर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक

| वर्ष | सामान्य प्रशासन व वसूली खर्च | रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्च | आरोग्य व इतर सोयी खर्च | दवाखाने,साथीचे रोग बद्दलचा खर्च | बांधकामावरील खर्च | संकीर्ण खर्च | जकात/ पथकर | एकूण खर्च |
|---------|------------------------------|----------------------------|------------------------|---------------------------------|-------------------|--------------|-------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| २००१.०२ | ८३७२८३ | ७०७६३९ | २९०६९२८ | १५३८४१ | ५०९००४५ | २३३४५८६ | ५१७३८० | १२५४७७०२ |
| २००२.०३ | १००३६०८ | ६५६५८८ | १६४३५१३ | ११८५६९३ | १६७५६६९ | ९६६२९२ | ८९४३५६ | ८०२५७९९ |
| २००३.०४ | १३४०८०५ | ६१७८४८ | १४४९३१८ | १६९९९१५ | ७८४९३४७ | १९२१३७९ | ७९३४३५ | १४८७८६१२ |
| २००४.०५ | ७९४४१७ | ८२९२८१ | २९६८९६५ | ३९६९२० | १६६३९०४ | १७१०८९ | १०१३१८७ | ८४४७७६३ |
| २००५.०६ | ९६९८६३ | ५२७३६३ | २९१९८३३ | ९५०९८६ | १४४३२६८ | ७६९९७६ | १०२९१२८ | ८६१०४१७ |
| २००६.०७ | १२९२४८५ | ६४४६७३ | ३०८९१७० | ३७१९५४ | १७४५८६६१ | १६९३७१३ | १०६४४७८ | २५६१२१३४ |
| २००७.०८ | १९१९७५३ | ८१३४१२ | ६८०९६५७ | ५७४०९४ | १३७०८२४९ | ५७५७२२ | ११६०३५७ | २६६८१२४४ |
| २००८.०९ | ३६८९३७७ | ८२९१७८ | ४८९४७१४ | ९४८९६६ | १०३२७३३४ | १६३५४६६ | ००० | २२३२५०३५ |
| २००९.१० | ३९४५६९९ | ६४१६६६ | ४७४२००४ | ६१०१२८ | १८५८४३९७ | १३९९४४६ | ००० | २९९२३३४० |
| २०१०.११ | ५९५४५०० | ८२०००० | ९५००००० | १५६६००० | ५४३११८१५ | ४५६५००० | ००० | ७६७१७३१५ |
| mean | २१७४७७९ | ७०८७६४.८ | ४०९२४१०.२ | ८४५८४९.७ | १३२११२६८.९ | १६०३२६६.९ | ९२४६१७.२८५७ | २३३७६९२८.१ |
| SD | १७५६६७६.४०९ | १०७९३७.२०९४ | २४८८२६३.१२३ | ५१८५०५.४३८१ | १५७९१४५९.८४ | १२३२२४०.००८ | २१५२००.७०४९ | २०४६९९१४.१५ |
| CV | ८०.७७४९३८९४ | १५.२२८९१७८९ | ६०.८०१८९९१७ | ६१.२९९९४९४ | ११९.५३०२२८ | ७६.८५८०७०७३ | २३.२७४५७०८१ | ८७.५६४६०२४२ |
| CGR | २.७१ | १५.१३ | ७.५६ | ३३.९४ | .७११५ | .२१.४८ | | २.९१ |

संदर्भ: रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१२
रहिमतपूर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक



तक्ता क्र ५.१२ मध्ये आपल्याला असे दिसून येते की, सामान्य प्रशासन वसुली खर्च २००१-०२ मध्ये रु ८३७२८३/- इतका होता. त्यानंतर तो संधर्षात वाढत तो २००५-०६ मध्ये रु. ९६९८६३/- इतका झाल्याचे निर्देशनास आले. आणि त्यानंतर मात्र यामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे आढळून आले म्हणजेच २०१०-११ मध्ये हा खर्च रु. ५९५४५००/- इतका झाल्याचे आढळून आले. त्याचा वृद्धीदर २.७१ इतका होता.

तक्ता क्र. ३ मध्ये कॉलम नं. ३ मध्ये रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्च हा दर्शिवण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु. ७०७६३९/- इतका होता. त्यानंतर तो २००५-०६ मध्ये रु. ५२७३६३/- इतका करण्यात आला आणि त्यानंतर या खर्चात मोठ्या प्रमाणात वाढ होत असल्याचे दिसून आले म्हणजेच तो २०१०-११ या वर्षात रु.

८२००००/- इतका करण्यात आल्याचे आपणास आढळून आले. याचा वृद्धीदर १५.१३ इतका होता. तक्ता क्र. २ मध्ये कॉलम ४ मध्ये आरोग्य सोईवरील खर्च दर्शविण्यात आला आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये आरोग्य सेवेवर रु. २९०६९२८/- इतका खर्च करण्यात आला होता. व त्यानंतर या खर्चात हळूहळू वाढ होत असल्याचे दिसून आले. २००५-०६ मध्ये रु. २९१९८३३/- इतका झाल्याचे आढळले. त्यानंतर खर्चात वाढ ही झपाट्याने झाली ती म्हणजे २०१०-११ या वर्षात रु. ९५०००००/- इतकी खर्च करण्यात आला, याचा वृद्धीदर ७.५६ इतका होता.

तक्ता क्र ५ १२ मध्ये कॉलम ५ मध्ये दवाखाने आणि साथिचे रोग यावरचा खर्चाचे विश्लेषण दिले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये रु. १५३८४१/- इतका करण्यात आला. त्यानंतर तो २००५-०६ तो रु. ९५०९८६/- इतका वाढला आणि परत मात्र मोठ्या प्रमाणात वाढ घडून आली. ती म्हणजे सन २०१०-११ मध्ये रु. १५६६०००/- इतकी करण्यात आला होता. याचा साधा वृद्धीदर ३३.९ इतका आहे.

कॉलम ६ मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये रु.५०९००४५/- इतका होतो. त्यानंतर स्थान संथ गतीने होत राहिली ती म्हणजे २००५'-०६ मध्ये रु. ४४३२६८/- सन इतकी घट झाली, परंतु सन २०१०-११ मध्ये रु. ५४३११८१५/- इतकी वाढ झाल्याचे आपणास निदर्शनास आले.

कॉलम ७ मध्ये संकीर्ण खर्च विशद करण्यात आला आहे. तो म्हणजे २००१-०२ मध्ये तो रु. २३३४५८६/- इतका होता. त्यानंतर तो २००५-०६ मध्ये तो रु. ७६९९७६/- इतका कमी झाला आणि शेवटी तो रु. ४५६५०००/- इतका २०१०-११ मध्ये करण्यात आला त्यामधील वाढ आपल्या निदर्शनास आली.

कॉलम ८ मध्ये जकात आणि पतकर यावरील खर्च दर्शविण्यात आला आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये तो रु. ५१७३८०/- इतका करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यात संथ गतीने वाढ झाल्याचे आपणास निदर्शनास आले ती म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. १०२९१२८/- इतका नोंदविण्यात आला. त्यानंतर मात्र त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ

झाल्याचे दिसून आले. ती म्हणजे २००७-०८ मध्ये रु.११६०५७/- करण्यात आला हे आपणाला वरील तक्त्याच्या साहयाने दिसून येते.

कॉलम ९ मध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण केले आहे. एकूण खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली रु. १२५४७७०२/- इतका खर्च करण्यात आला आहे. त्यानंतर त्यामध्ये संधगतीने वृद्धी झाल्याचे दिसून येते. म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ८६१०४१७/- इतका झाल्याचे आढळते आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ या वर्षात रु.७६७१७३१५/- खर्च झाल्याचे आढळून येत आहे आणि याचा साधा वृद्धीदर हा २.९१ इतका आहे.

सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च हा २.७१ टक्के इतका संयुक्त वृद्धी दराने प्रतिवर्षी वाढत आहे. तर सर्वात जास्त संयुक्त वृद्धीदर हा दवाखाने व साथीचे रोग या बदलच्या होणाऱ्या खर्चात नोंदविला गेला आहे. तो ३३.९४ टक्के इतका प्रतिवर्षी वाढत. ह्यावरून नागरिकरण आणि नागरिकांच्या आरोग्याचे प्रश्न कीती प्रमाणात वाढत आहेत हे लक्षात येते. सर्वाधिक घटका संयुक्त वृद्धीदर हा संकीर्ण खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो तो ऋण -२१.१८ टक्के इतका आहे. त्या बरोबर बांधकामावरील खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर देखील ऋण -७.१५ टक्के इतका कमी झाल्याचे दिसून येते. एकूण खर्चाचा विचार करता असे स्पष्ट होते की, तो जवळपास ३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी वाढत आहे. आरोग्य व इतर सोयीवरील खर्च आणि दवाखाने आणि साथीचे रोग बदलच्या खर्चाचा संयुक्त विचार केल्यास असे लक्षात येते की ह्या फक्त दोन बाबीवर होणाऱ्या खर्चात सरासरी प्रतिवर्षी ४० टक्के इतका संयुक्त वृद्धीदराने वाढ घडून येते.

रस्त्यावरील दिवाबत्तीचा खर्च विचारात घेता असे निर्देशनास येते की तो सरासरी प्रतिवर्षी १५.१३ टक्के दराने वाढत आहे. ह्यावरून नागरिकरणाचा वेग आणि विजेचे वाढणारे दर ह्याची तीव्रता लक्षात येते. अभ्यास कालावधीत ह्या सर्व बाबीवरील सरासरी खर्चाचा विचार करता सर्वाधिक सरासरी खर्च हा रु. १,२१,६३,७९९.०० इतका बांधकामावर ती झाला आहे तर उलट पक्षी सर्वात कमी सरासरी खर्च हा रस्त्यावरील,

दिवाबत्तीवरती झाला. तो फक्त रु. ६,६३,७५८.०० इतका असून त्या खालोखाल दवाखाने व साथीचे रोग ह्ययावरील सरासरी खर्चाचा क्रमांक लागतो तो रु. ७,९०,१६८.०० . इतका आहे. प्रचरण गुणांकांचा विचार करता तो सर्वाधिक बांधकामावरील खर्चाच्या बाबतीत म्हणजेच १२६.४२ टक्के इतका आहे तर सर्वात कमी हा रस्त्यावरील दिवाबत्तीच्या बाबीवर होणाऱ्या खर्चामध्ये दिसून येतो. तो फक्त २७.२१ इतका आहे.

एकूण खर्चाचा विचार करता असे स्पष्ट होते की, तो जवळपास ३ टक्के (२.९१ टक्के) इतका वृद्धी दराने वाढत आहे. तर त्यामध्ये प्रचरण गुणांक हा ९२.०६ इतका आहे. एकूण सरासरी खर्च हा रु. २,१८,२२,९५५.०० इतका आहे. २००१-०२ मध्ये एकूण खर्चात बांधकामावरील खर्चाचे प्रमाण ४०.५६ टक्के इतके होते की त्या वर्षातील सर्वाधिक प्रमाण होते. तर सर्वात कमी प्रमाण हे त्यावर्षी दवाखाने, साथीचे रोग बदलच्या खर्चाचे होते. २००२-०३ ते २००३ -०४ पर्यंत एकूण खर्चात बांधकाम खर्चाचेच जास्त प्राबल्य असल्याचे दिसून येते ते अनुक्रमे २०.८८ टक्के आणि ५२.७६ टक्के इतके होते. तसेच २००७-०८ ते २०१०-११ ह्या कालावधीमध्ये बांधकामावरील खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे सर्वाधिक असल्याचे दिसून येते. याउलट एकूण खर्चात रस्त्यावरील दिवाबत्तीचे प्रमाण हे नेहमीच कमी असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात रहिमतपूर नगरपालिकेच्या प्रामुख्याने खर्चाच्या तीन मुख्य बाबी असल्याच्या दिसून येते त्या म्हणजे बांधकामावरील खर्च, आरोग्य व साथीचे रोग यावरील खर्च आणि प्रशासनावरील खर्च होय.

क). रहिमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च:-

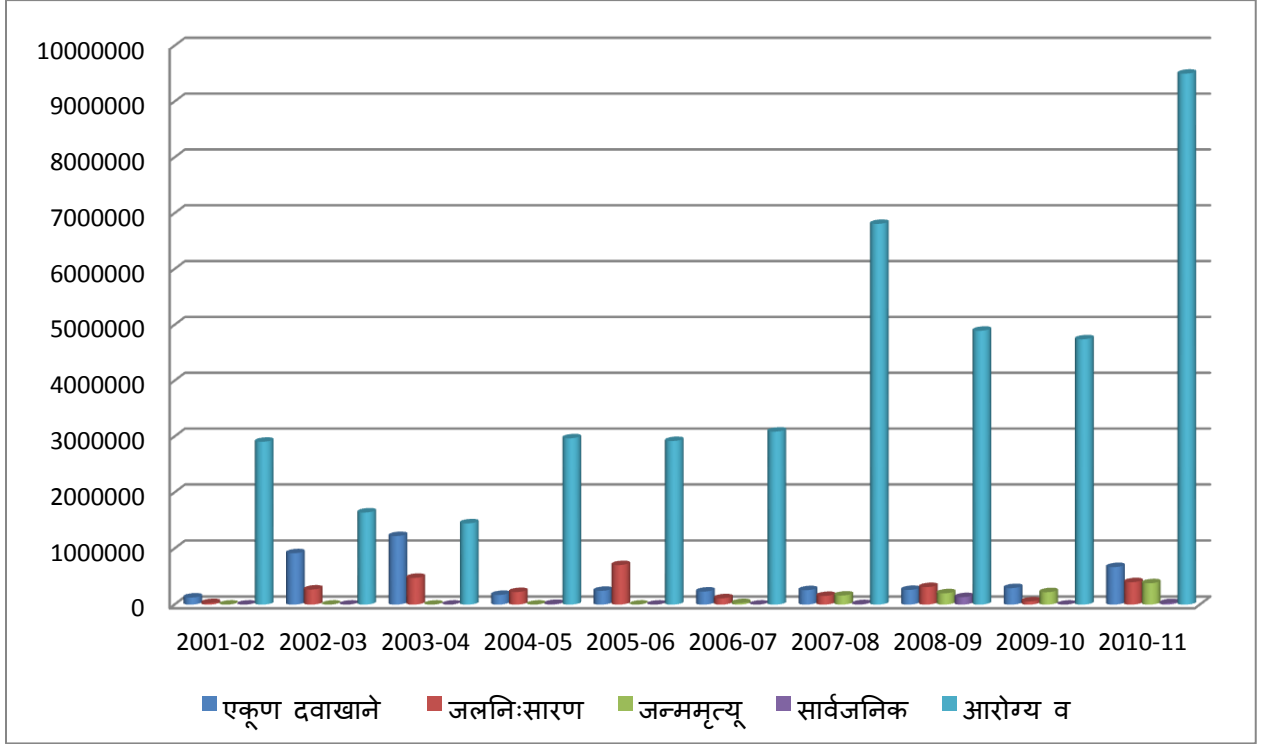
नागरिकांचे आरोग्य चांगले राहण्यासाठी नगरपालिकांना वेगवेगळ्या प्रकारचा खर्च हा करावा लागतो. वाढते शहरीकरण आणि त्याचा नैसर्गिक साधनांच्यावरती पडणारा दबाव यामुळे नागरिकांच्या आरोग्याचे प्रश्न हे आधिक प्रकर्षाने निर्माण होत आहे. तक्ता क्र. ५.१३ मध्ये रहिमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरती झालेल्या खर्चाचा आढावा घेतला आहे. तक्ता क्र. ५.१३ वरून पुढील गोष्टी स्पष्ट होतात.

तक्ता क्र. ५.१३
रहिमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च

| वर्ष | एकूण दवाखाने | जलनिःसारण | जन्ममृत्यू | सार्वजनिक | आरोग्य व | एकूण |
|---------|--------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| | रुग्णालय व | | नोंदणी | उद्याने | इतर सोयी | |
| | दवाखाने खर्च | | | | खर्च | |
| २००१.०२ | १२६३९० | २७४५१ | — | — | २९०६९२८ | ३०६०७६९ |
| २००२.०३ | ९१६३१७ | २६९३७६ | — | — | १६४३५१३ | २८२९२०६ |
| २००३.०४ | १२२२३०२ | ४७७६१३ | — | — | १४४९३१८ | ३१४९२३३ |
| २००४.०५ | १७२५२२ | २२४३९८ | — | १२१४० | २९६८९६५ | ३३७८०२५ |
| २००५.०६ | २४५४५९ | ७०५५३७ | — | — | २९१९८३३ | ३८७०८९१ |
| २००६.०७ | २३२६२१ | ११२८९७ | २६४३६ | — | ३०८९१७० | ३४६११२४ |
| २००७.०८ | २५७४५० | १५४६९० | १६१९५४ | ८५६० | ६८०९६५७ | ७३९२३११ |
| २००८.०९ | २६१९५३ | ३१३०२४ | २०१७८२ | १३३३५७ | ४८९४७१४ | ५८०४८३० |
| २००९.१० | २९४४२७ | ५७११२ | २२१८६४ | — | ४७४२००४ | ५३१५४०७ |
| २०१०.११ | ६७०००० | ४००००० | ३८१००० | २५००० | ९५००००० | १०९७६००० |
| mean | ४३९९४४.१ | २७४२०९.८ | १९८६०७.२ | ४४७६४.२५ | ४०९२४१०.२ | ४९२३७७९.६ |
| SD | ३६९४९४.९९६३ | २०९६५०.०९८७ | १२७२८३.६११३ | ५९४८२.१८३१५ | २४८८२६३.१२३ | २५८८३७९.३६ |
| CV | ८३.९८६८०५६६ | ७६.४५६०९२६४ | ६४.०८८११५२६ | १३२.८७८७६६३ | ६०.८०१८९९१७ | ५२.५६८७९००३ |
| CGR | १६.०१ | ५६.२८ | | | ७.५६ | ११४५ |

संदर्भ: रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१३
रहिमतपूर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च



तक्ता क्र. ५.१३ मध्ये सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामधील वेगवेगळ्या घटकावरील खर्च आपण पाहणे आवश्यक आहे. त्यामध्ये सुरुवातीला एकूण दवाखाण्यावरील खर्चाचे विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ या रु. १२६३९०/- इतका खर्च करण्यात आला होता. व नंतर २००५-०६ ला तो रु. २४५४५९/- इतका वाढण्यात आला आणि शेवटी तो २०१०-११ साली तो रु.६७००००/- इतका जास्त पटीने वाढ झाल्याचे आले, याचा साधा वृद्धीदर १६.०१ इतका आहे. त्यानंतर जलनिःसारणावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये तो रु.२७४५१/- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये संध गतीने वाढझाल्याचे आपणास दिसून येते म्हणजे २००५-०६ मध्ये तो रु.७०५५३७/- इतका झाला आणि शेवटी २०१०-११ ला रु.४०००००/- इतका झाल्याचे आपणास दिसून येते. याचा साधा वृद्धीदर हा ५६.२६ इतका आहे. त्यानंतर तक्त्यामध्ये इतरसोयी सुविधावरील खर्च दर्शविला आहे. तो असा की २००१-०२ मध्ये रु.२९०६९२८/- इतका होता.

त्यानंतर तो २००५-०६ ला तो रु.२९१९८३३/- इतका खर्च नोंदविण्यात आला. आणि शेवटी तो २०१०-११ ला रु.९५००००/- इतका मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. याचा साधा वृद्धीदर ७.५६ इतका आहे. सार्वजनिक आरोग्यावरील एकूण खर्च हा गतीने वाढत आसल्याचे आपणास दिसत आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये तो रु.३०६०७६९/- इतका करण्यात आला. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ घडत गेली ती म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ३८७०८९/- इतका करण्यात आला. त्यानंतर यामध्ये मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे आढळून आले ती म्हणजे २०१०-११ साली रु.१०९७६०००/- इतका झाल्याचे आपणास आढळते. आणि याचा साधा वृद्धीदर ११.४५ इतका आहे.

एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च हा प्रतिवर्षी सरासरी ११.४५ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने झपाट्याने वाढत आहे. तर त्याचा प्रचरण गुणांक देखील ५६.३२ इतका आहे. त्याचबरोबर सरासरी खर्च हा प्रतिवर्षी तो रु. ४६,५४,७४०.०० इतका झाला आहे. आरोग्य व इतर सोयीवरील खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे नेहमीच लक्षणीय राहिले आहे. तो सरासरी प्रतिवर्षी ७.५६ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत आहे, तर त्यांचा प्रचरण गुणांक हा ६३.५८ इतका असून सरासरी खर्च हा प्रतिवर्षी तो रु. ३८,७७,७३६.०० इतका झाला आहे. सांडपाणी व्यवस्थापन हा एक नागरी भागातील गंभीर स्वरूपांचा प्रश्न आहे. त्या अनुषांगाने नगर पालिकांना जलनिःसारणावरती खर्च करावा लागतो. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बाबतीत जलनिःसारण खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी जलनिःसारणावरती होणारा खर्च हा रु. २,६०,४२२.०० इतका आहे. एकूण दवाखाने रुग्णालय व दवाखाने खर्च विचारात घेता असे लक्षात येते की तो सरासरी प्रतिवर्षी १६.०१ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत आहे तर त्यांचा प्रचरण गुणांक हा ८८.८५ इतका आहे. प्रतिवर्षी सरासरी रु. ४,१०,०२२.०० इतका खर्च हा एकूण दवाखाने रुग्णालय व दवाखाने खर्च ह्या बाबीवर होत होता हे स्पष्ट होते. जन्म मुत्यु नोंदणी व सार्वजनिक उद्याने यांचा विचार करता असे लक्षात येते की २००६ -०७ पासून २०१०-११ पर्यंत एकूण खर्चाच्यामध्ये त्यांचा जवळपास ५ टक्के इतका हिस्सा होता. एकूण खर्च हा ८२.१० टक्के साधारण वृद्धीदराने वाढला आहे. तर एकूण दवाखाने रुग्णालय व दवाखाने खर्च हा दहा वर्षांमध्ये ८३.४६ टक्के इतक्या साधारण दराने वाढला आहे. थोडक्यात रहिमतपूर

नगरपालिकेच्या बाबतीत गेल्या दहा वर्षात सार्वजनिक आरोग्यावरती होणाऱ्या खर्चामध्ये रुग्णालये व दवाखाने खर्चाचे प्राबल्य अधिक असल्याचे स्पष्ट होते.

ड). सामान्य प्रशासन वसुली खर्च :-

तक्ता क्र. ५.१४

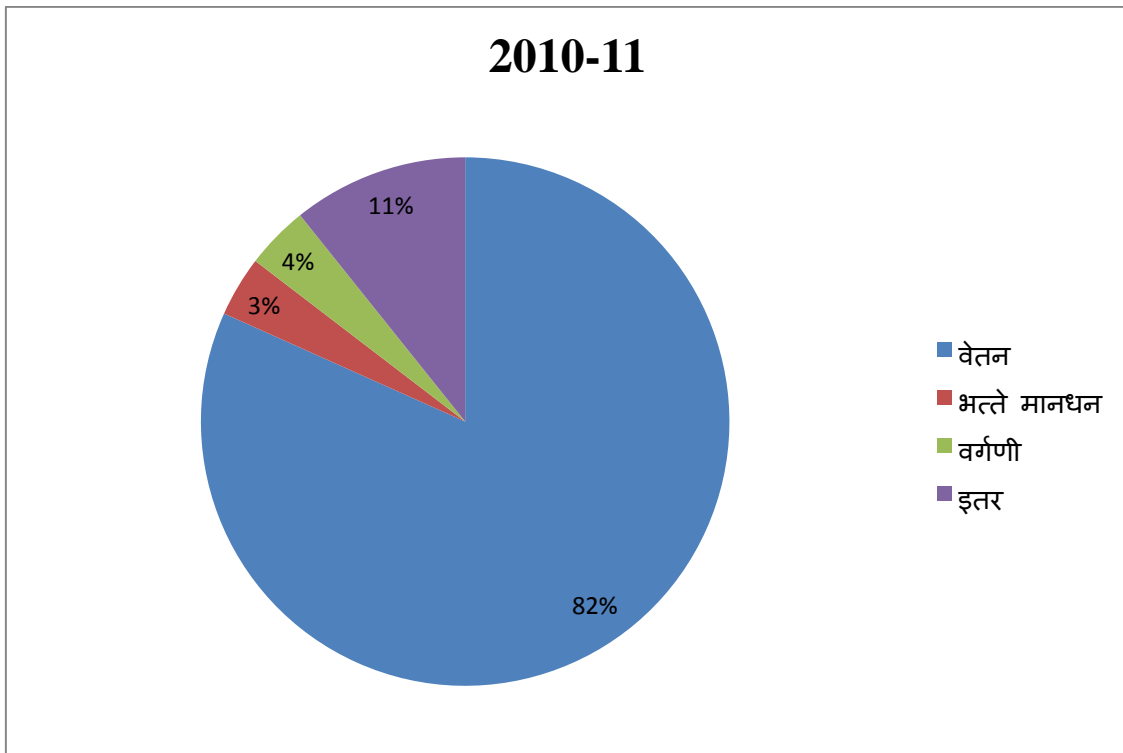
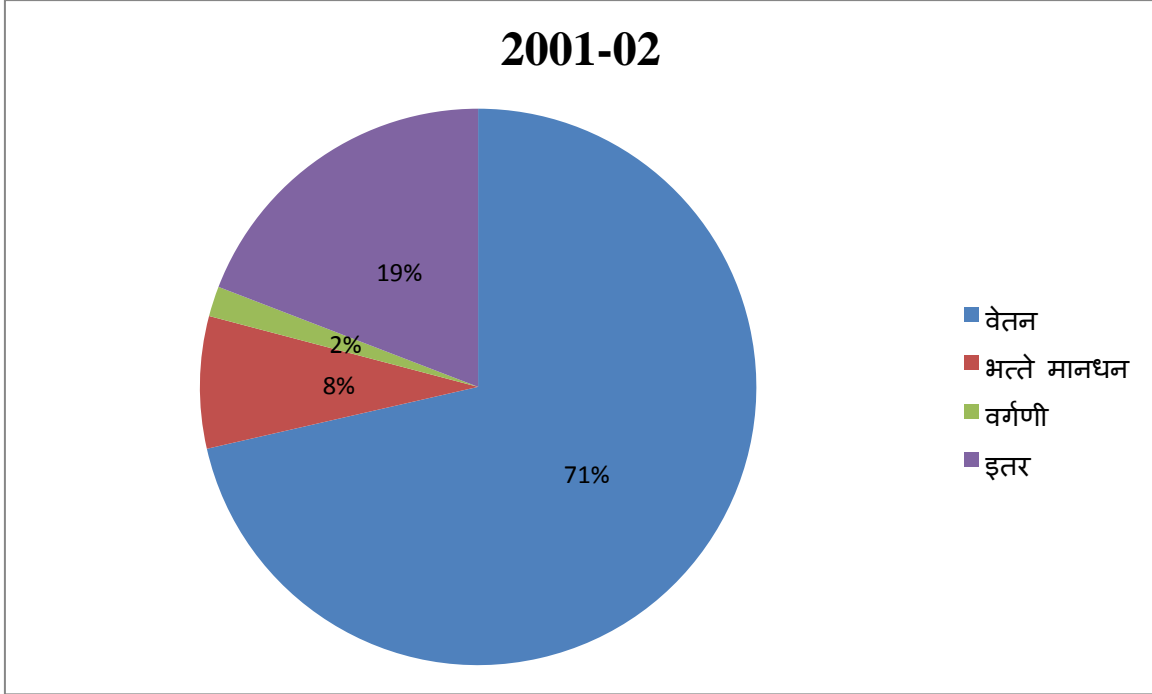
रहिमतपूर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसुली खर्च

| वर्ष | वेतन | भत्ते मानधन | वर्गणी | इतर | एकूण |
|---------|---------|-------------|---------|---------|---------|
| २००१.०२ | ७१७१६५ | ४४०४ | — | ७७७१४ | ८३७२८३ |
| २००२.०३ | ७८९९१३ | ५११९७ | — | १६२४९८ | १००३६०८ |
| २००३.०४ | ९३६१८३ | ९६३३३ | ७१६४ | ३०११२५ | १३४०८०५ |
| २००४.०५ | ५४३४९१ | १०३०९० | — | १४७८४६ | ७९४४१७ |
| २००५.०६ | ६४८७६५ | ८०३५३ | — | २४०७४५ | ९६९८६३ |
| २००६.०७ | ७३२२०३ | ६९१०० | — | ४९११८२ | १२९२४८५ |
| २००७.०८ | १०४६५७० | १४९१७८ | — | ७२४००५ | १९१९७५३ |
| २००८.०९ | ३०६६९७९ | ६९०६८ | ३०८८७ | ५२२४४३ | ३६८९३७७ |
| २००९.१० | ३३२८००४ | १०९५९२ | ००० | ५०८१०३ | ३९४५६९९ |
| २०१०.११ | ४८६५००० | २२०००० | २३०००० | ६३९५०० | ५९५४५०० |
| Mean | १६६७४२७ | ९५२३१.५ | ८९३५०.३ | ३८१५१६ | २१७४७७९ |
| SD | १४३९०७९ | ५५२४८.५ | ९९९२४.८ | २१२८१७ | १६६६५३० |
| CV | ८६.३०५४ | ५८.०१५ | १११.८३५ | ५५.७८१९ | ७६.६२९८ |
| CGR | -०.५२ | ३८.०३ | | १४.२१ | २.७१ |

संदर्भ: संदर्भ: रहिमतपूर नगरपालिकावार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५. १४

रहिमतपूर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च



तक्ता क्र. ५१४ मध्ये सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाची मांडणी केली आहे. त्याच्या निरीक्षणावरून खालील बाबी स्पष्ट होतात.

सामान्य प्रशासन वसुली खर्चामधील पहील्या कॉलममध्ये वेतनावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये आपणास असे दिसून येते की २००१-०२ मध्ये वेतनावरील खर्च हा रु.७१७१६५/- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये वाढ झाल्याचे दिसून आले म्हणजे २००५-०६ मध्ये तो रु.६४८७६५/- इतका करण्यात आला आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये रु.४८६५०००/- इतका झाल्याचे आपणास दिसून येते. त्यानंतर दोन नंबर कॉलममध्ये मानधन आणि भत्ते यावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये रु.४४०४/- इतका खर्च करण्यात आला होता. त्यानंतर २००५-०६ मध्ये तो रु.८०३५३/- करण्यात आला आणि शेवटी त्यामध्ये वाढ होत तो २०१०-११ या वर्षी रु.२२००००/- इतका झाला. आणि शेवटी एकूण खर्च हा २००१-०२ मध्ये रु.८३७२८३/- इतका करण्यात आला. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होऊ लागली आणि २००५-०६ मध्ये तो ९६९८६३/- इतका होता. आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ ला तो रु.५९५४५००/- इतका वाढत गेला. आणि त्याचा वृद्धीदर हा २.७१ टक्के आहे.

एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्च हा २.७१ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढला आहे. अभ्यास काळात रहिमतपूर नगरपालिकेचा वेतनावरील खर्च हा सर्वात कमी म्हणजेच -०.५२ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने घडला आहे.सर्वसाधारण सरासरी रु. २०,५२,०९९.०० . इतका एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्च हा प्रतिवर्षी झाला आहे तर वेतनावरील सरासरी रु. १५,६९,४३३.०० .इतका सरासरी खर्च झाला आहे. २००१-०२ ची २०१०-११ शी तुलना करता असे स्पष्ट होते की एकूण वेतनावरील खर्चाचे एकूण खर्चात ७१ टक्के इतके प्रमाण होते ते २०१०-११ मध्ये ८२ टक्के तर इतर खर्चाचे प्रमाण हे १९ टक्के वरून ११ टक्के झाले त्याचबरोबर भत्ते व मानधन यांचे प्रमाण देखील ८ टक्के वरून ३ टक्के इतके झाले आहे. वर्णणी मात्र जवळ पास दुप्पट झाली आहे त्याचे प्रमाण २ टक्के वरून ४ टक्के वरती आले आहे.सर्वात जास्त संयुक्त वृद्धीदर हा भन्ते आणि मानधन यांच्या बाबतीत नोंदिलेला गेल्या आहे. तो सरासरी ३८ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी वाढत असल्याचे दिसून येते. इतर

खर्चाचा विचार करता असे लक्षात येते की, रहिमतपूर नगरपालिकेचा इतर स्वरूपाचा खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी रु. ३,६१,१९९.०० .इतका झाला आहे तर त्यांचा संयुक्त वृद्धीदर प्रतिवर्षी सरासरी १४.२१ टक्के इतका आहे. इतर खर्चाच्या वाढीचा वेग विचारात घेता तो नियंत्रित करणे गरजेचे आहे.

इ). बांधकामावरील खर्च :-

रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बांधकामावरील खर्चाचा गेल्या दहा वर्षांचा विचार करता असे स्पष्ट होईल की २००६-०७ पासून हा खर्च खूपच झपाट्याने वाढत आहे. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बांधकामावरील खर्चाची आकडेवारी तक्ता क्रमांक ५.१५ मध्ये मांडली आहे. त्यावरून खालील गोष्टी स्पष्ट होतात.

तक्ता क्रमांक ५.१५

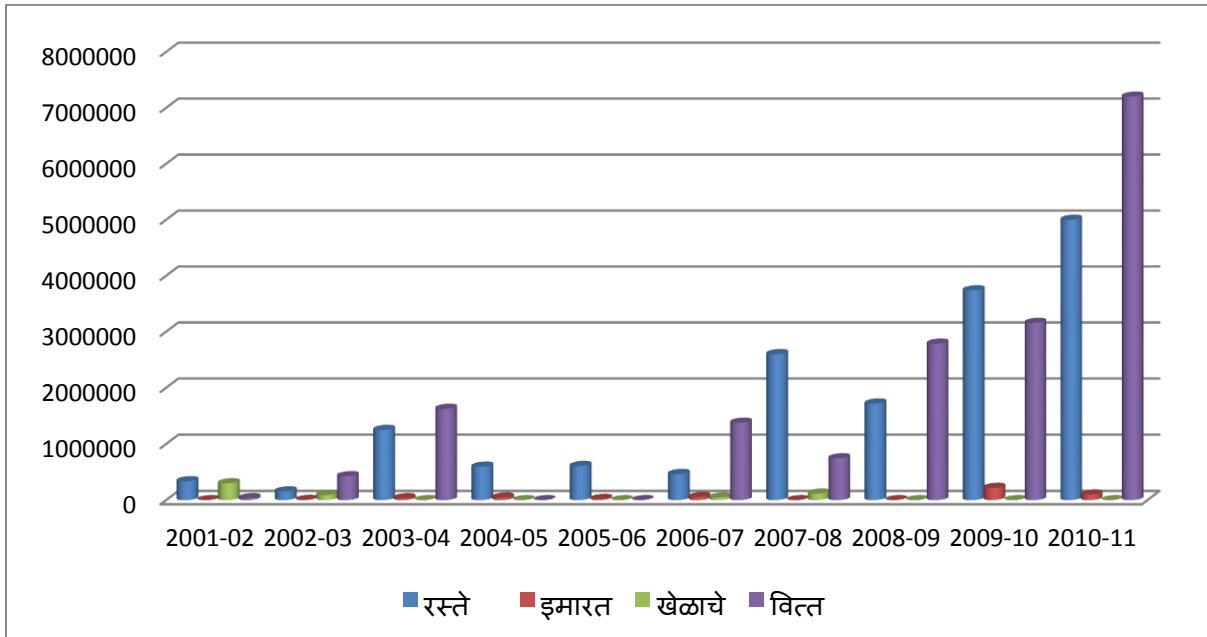
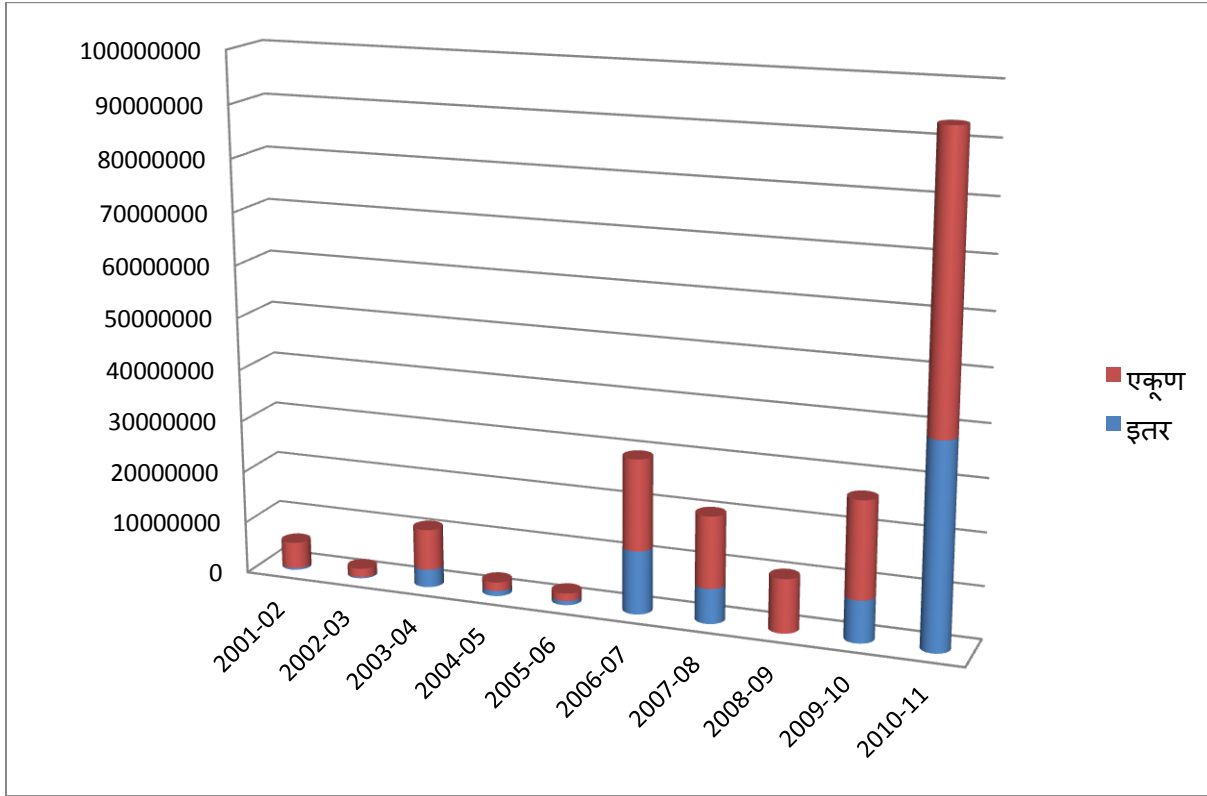
रहिमतपूर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च

| वर्ष | रस्ते | इमारत | खेळाचे | वित्त | दलित | खासदार | उर्वरित | इतर | एकूण |
|---------|------------|-------------|-----------|------------|------------|-------------|-----------|-------------|-------------|
| | दुरुस्ती | दुरुस्ती | मैदान | आयोग | वस्ती | आमदार | वैधानिक | | |
| | | | | | सुधारणा | निधी | | | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| २००१.०२ | ३३६१८८ | — | ३००००० | ३४९८८ | १८०८२७५ | १९७३१२७ | — | ३४७४६७ | ५०९००४५ |
| २००२.०३ | १५५५०५ | ३९९० | ९१००० | ४२५६२३ | — | ७५८३३३ | — | २४१२१८ | १६७५६६९ |
| २००३.०४ | १२४९१८६ | ३४४४३ | — | १६२५३६३ | ७५०००० | ७४५५९५ | — | ३४४४७६० | ७८४९३४७ |
| २००४.०५ | ५९४५८९ | ४६६९८ | — | — | — | — | — | १०२२६१७ | १६६३९०४ |
| २००५.०६ | ६०६६९७ | २११३९ | — | — | — | — | — | ८१५४३२ | १४४३२६८ |
| २००६.०७ | ४६४७५२ | ५५६६८ | ४७५१२ | १३७८०६५ | १४३१०४२ | ४१०७४० | १५३१३४० | १२१३९५४२ | १७४५८६६१ |
| २००७.०८ | २५९९०७४ | — | ११७१४० | ७४४३९१ | २०४५४१५ | १३१८३८३ | १७३४४६ | ६७१०४०० | १३७०८२४९ |
| २००८.०९ | १७२०२४४ | — | — | २७८५६१४ | ७७९२५५ | ४८७६३३ | — | ४५५४५८८.०. | १०३२७३३४ |
| २००९.१० | ३७३८१०६ | २१७९२९ | — | ३१५६५९१ | २६०३१७८.०. | ५९९९९६ | — | ८०५०६६८ | १८५८४३९७ |
| २०१०.११ | ५०००००० | १००००० | — | ७२००००० | १५६१८१५ | १५००००० | — | ३८९५०००० | ५४३११८१५ |
| mean | १६४६४३४.१ | ६८५५२.४२८५७ | १३८९१३ | २१६८८२९.३८ | १३९५९६७ | ९७४२२५.८७५ | ८५२३९३ | ७९६९१२२.६६७ | १३२११२६८.९ |
| SD | १६४०३१४.६९ | ७२४८६.४६७५९ | ११११६४.८७ | २३०५५९९.१ | ५३२५६४.२६१ | ५५८८१३.१२७७ | ९६०१७६.०६ | १२३३१४००००९ | १५७९१४५९.८४ |
| CV | ९९.६२८३२३७ | १०५.७३८७३०३ | ८०.०२४८१२ | १०६.३०६१५४ | ३८०१५०२०४२ | ५७.३५९७०९०८ | ११२.६४४७६ | १५४.७३९७४४९ | ११९.५३०२२८ |
| CGR | १५.३ | | | | | | | ३३.३७ | —७.१५ |

संदर्भ: रहिमतपूर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१५

रहिमतपूर नगरपालिकेचा बांधकामावरील खर्च



तक्ता क्र. ५.१५ मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये कॉलम २ मध्ये रस्ते दुरुस्ती या खर्चाचे विश्लेषण केले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ मध्ये तो खर्च रु.३३६१८८/- इतका करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यामध्ये २००६-०७ मध्ये रु.४६४७५२/- इतका केला आहे. त्यानंतर शेवटी त्यामध्ये वाढ घडून आली म्हणजे २०१०-११ मध्ये तो रु. ५०००००/- इतका करण्यात आला. कॉलम क्रमांक ४ मध्ये खेळाच्या मैदानावरील खर्च दर्शविण्यात आला आहे. तो २००१-०२ मध्ये रु. ३०००००/- इतका होता. त्यानंतर तो २००६-०७ मध्ये रु. ४७५१२/- इतका करण्यात आला. कॉलम क्रमांक ६ मध्ये दलित वस्ती सुधारणा यामध्ये २००१-०२ या वर्षी रु .१८०८२७५/- खर्च करण्यात आला. व त्यानंतर त्यात वाढ होत गेली म्हणजे तो २००६-०७ मध्ये रु. १४३१०४२/- इतका करण्यात आला. आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये रु. १५६१८१५/- इतका करण्यात आल्याचे दिसून येते.

कॉलम ९ मध्ये इतर खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली रु.३४७४६७ /- खर्च करण्यात आले होत. त्यानंतर २००६-०७ साली रु. १२१३९५४२/- इतका खर्च करण्यात आला आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षी रु. ३८९५००००/- इतका करण्यात आल्याचे आढळून आले. आणि कॉलम १० मध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे त्यामध्ये २००१-०२ यावर्षी रु.५०९००४५ /- खर्च करण्यात आले होते. त्यानंतर त्यात चाढ घडून आली म्हणजेच २००५-०६ या वर्षात रु.१७४५८६६१/- इतका केला. आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात मोठ्या प्रमाणात वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. म्हणजे रु. ५४३११८/- इतका खर्च करण्यात आला आहे. पण या खर्चाचा साधा वृद्धी दर हा -७.१५ इतका आपणास दिसून येतो.

संयुक्त वृद्धी दराच्या वाढीचा वेग हा सर्वात जास्त इतर स्वरूपांच्या मथळ्याखाली जास्त दिसून येतो. हा इतर स्वरूपाचा खर्च प्रतिवर्षी २००६-०७ पासून २०१०-११ पर्यंत खुप वेगाने वाढत असल्याचे दिसून येते त्याचा संयुक्त सरासरी वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ३३.३७ इतका असून त्याचा प्रचरण गुणांक सर्वात जास्त म्हणजे १६४.७२ इतका आहे. ह्या इतर स्वरूपाच्या खर्चाचा सरासरीचा विचार करतो तो प्रतिवर्षी जवळपास रु. ७२,०७,५४५.०० .इतका झाला असल्याचे स्पष्ट होते. असे जरी असले तरी दुसऱ्या बाजूला एकूण बांधकामावरील खर्चाचा

संयुक्त वृद्धीदर मात्र ऋण -७.१५ टक्के इतका आहे. तो प्रतिवर्षी सरासरी रु. १,२१,६३,७९९.०० इतका होत होता. इतर बाबीचा जसे- इमारत दुरुस्ती, खेळाचे मैदान, वित्त आयोग, दलित वस्ती सुधारणा, खासदार-आमदार निधी, उर्वरित वैधानिक विचार करता असे स्पष्ट होते की काही ठराविक वर्षे वगळल्यास ह्या बाबीवर होणारा खर्च हा एकूण खर्चाच्या तुलनेत नगण्य स्वरूपाचा आहे. उदा. २००१-०२ या वर्षामध्ये दलितवस्ती सुधारणावरती एकूण खर्चाच्या प्रमाणात जास्त खर्च केला गेला आहे. तसेच २००१-०२ ते २००२-०३ ही दोन वर्षे वगळता इतर वर्षी आमदार-खासदार निधीचा एकूण खर्चातील हीस्सा हा नेहमीच कमी राहिला आहे. एकदरीत सर्व बाबीचा विचार करता बांधकाम खर्चाच्या मथळ्याखाली रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बांधकाम संबंधित इतर खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त राहिल्याचे दिसून येते.

4. महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचे स्वरूप

तक्ता क्र. ५.१६ मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या महसुली खर्चाचे आणि भांडवली खर्चाचे चित्र मांडले आहे. अभ्यास काळात या खर्चाच्या बाबतीत घडून आलेली स्थित्यांतरे खालीलप्रमाणे मांडता येतील.

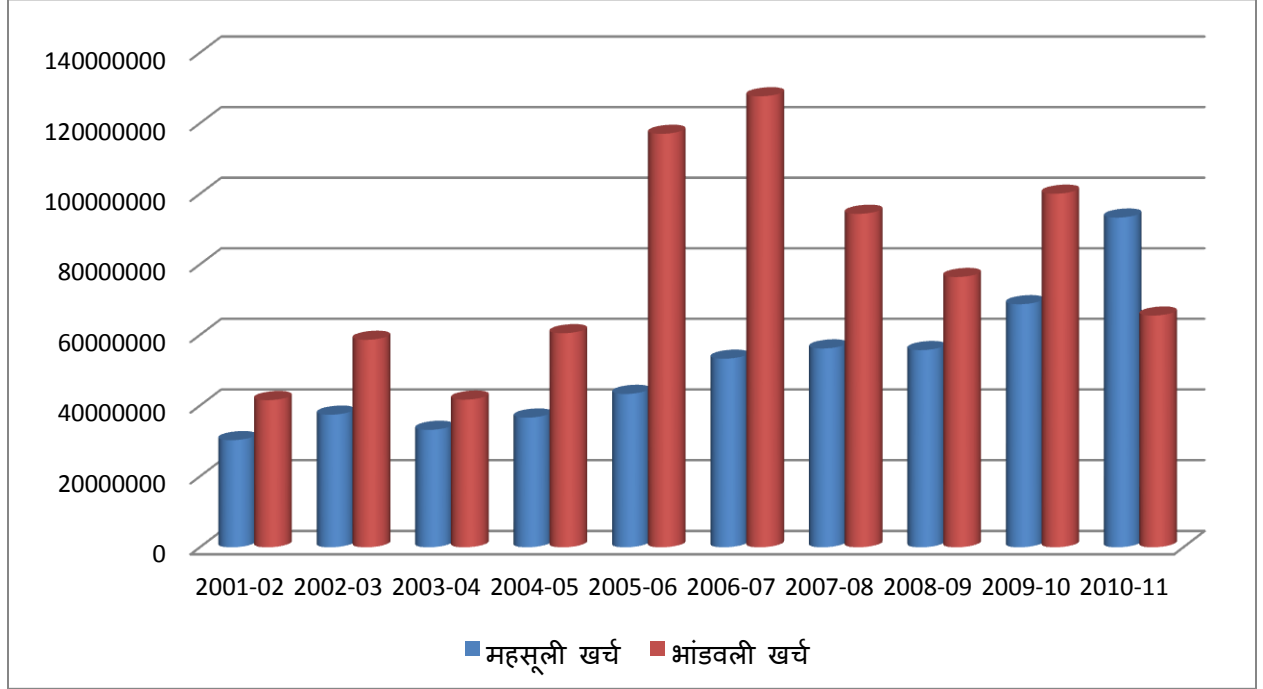
तक्ता क्र. ५.१६
महाबळेश्वर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च

| वर्ष | महसुली खर्च | भांडवली खर्च | एकूण खर्च |
|---------|-------------|--------------|-----------|
| २००१.०२ | ३०२४८००० | ४१५५४८०० | ७१८०२८०० |
| २००२.०३ | ३७४४०५०० | ५८६३२७०० | ९६०७२७०० |
| २००३.०४ | ३३१५७६०० | ४१६८४५०० | ७४८२२१०० |
| २००४.०५ | ३६६१७००० | ६०४९६५०० | ९७११३५०० |
| २००५.०६ | ४३३०६६०० | ११७०१४१३४ | १६०३२०७३४ |
| २००६.०७ | ५३२७८४०० | १२७६५२४३८ | १८०९३०८३८ |
| २००७.०८ | ५६१८३५०० | ९४३४२४०८ | १५०५२५९०८ |
| २००८.०९ | ५५७१८७६० | ७६४३३११० | १३२१५१८७० |
| २००९.१० | ६८७२२६१९ | १०००४४२१९ | १६८७६६८३८ |
| २०१०.११ | ९३२७३९०० | ६५५०३५९८ | १५८७७७४९८ |
| Mean | ४८७६५८८९ | ७४८६२५८२ | १२३६२८४७१ |

| | | | |
|-----|----------|----------|----------|
| SD | १९५१०९१३ | ३०९०८७३१ | ४२५५५०९९ |
| CV | ४० | ४१.२८ | ३४.४२ |
| CGR | ११.४८ | ८.६६ | १०.१३ |

संदर्भ: महाबळेश्वर नगरपालिकावाचि कि अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५. १६
महाबळेश्वर नगरपालिकांच्या एकूण खर्च



तक्ता क्र. ५.१६ मध्ये आपणास असे दिसून येते की, २००१-०२ मध्ये महसुली खर्च रु. ३०२४८००० /- इतका होता. तर २००६-०७ मध्ये यामध्ये वाढ झाल्याचे आपणास दिसून येते. तो रु. ५३२७८४०० /- झाला आहे. त्यानंतर महसुली खर्चामध्ये आपणास झपाट्याने वाढ झाल्याचे आढळून येते. सन २०१०-११ मध्ये तो रु. ९३२७३९०० /- पर्यंत पोहचल्याचे आपणास आढळून आले.

त्यानंतर आपण भांडवली खर्चाचा विचार केला तर आपणास असे दिसून येते की, सन २००१-०२ मध्ये रु. ४१५५४८००/- इतका झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये गतीने वाढ होत असताना दिसते. २००६-०७ मध्ये हा खर्च रु. १२७६५२४३८ /- इतका झाल्याचे आपणास दिसून आले. त्यानंतर मात्र यामध्ये झपाट्याने घट झाली ती म्हणजे २०१०-११ मध्ये रु. ६५५०३५९८ /- इतकी वाढ झाल्याचे निदर्शनास आले.

आपल्याला तीन नंबरच्या कॉलमध्ये एकूण खर्चाचे विश्लेषण आढळून येते त्यामध्ये २००१-०२ यावर्षी तो खर्च रु. ७१८०२८०० /- इतका होता. त्यानंतर वाढ यामध्ये घडून आली ती म्हणजे २००५-०६ साली रु. १८०९३०८३८ /- इतका झाला. आणि शेवटी यामध्ये घट घडून आल्याचे दिसून येते. २०१०-११ साली रु. १५८७७७४९८ /- इतका आल्याचे दिसून येत आहे.

एकूण खर्चात भांडवली खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त असल्याचे दिसून येते उलटपक्षी महसुली खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे नेहमीच कमी असल्याचे स्पष्ट होते. सरासरीचा विचार केल्यास रु. ४८७६५८८९/- इतका महसुली खर्च हा प्रतिवर्षी होत होता तर रु. ७४८६२५८२/- इतका सरासरी खर्च हा भांडवली खर्चाच्या बाबत प्रतिवर्षी घडून येत होता. वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो महसुली खर्चाच्या बाबतीत सर्वाधिक नोंदवला गेला आहे तो ११.४८ टक्के इतका होता तर भांडवली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर हा ८.६६ टक्के होता आणि एकूण खर्चाचा वृद्धीदर हा १०.१३ टक्के इतका होता हे स्पष्ट होते. सन २०००-०१ मध्ये रु. ४०१३००००/- असणारा भांडवली खर्च हा सन २०१०-११ मध्ये रु. ६५५०३५९८/- झाला म्हणजेच तो जवळपास ५० टक्के इतका वाढला आहे.

सन २००१-०२ मध्ये महसुली खर्च हा रु. ३०२४८०००/- इतका होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु. ९३२७३९००/- इतका झाला आहे. म्हणजेच अभ्यास काळात या खर्चात जवळपास ७ कोटीची निव्वळ वाढ घडून आली आहे. महसुली खर्चातील वाढ ही काहीशी स्थिर स्वरूपाची आहे. तर भांडवली खर्चातील वाढीमध्ये काहीसे चढ-उतार दिसून येतात.

महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या महसुली खर्चाचे आणि भांडवली

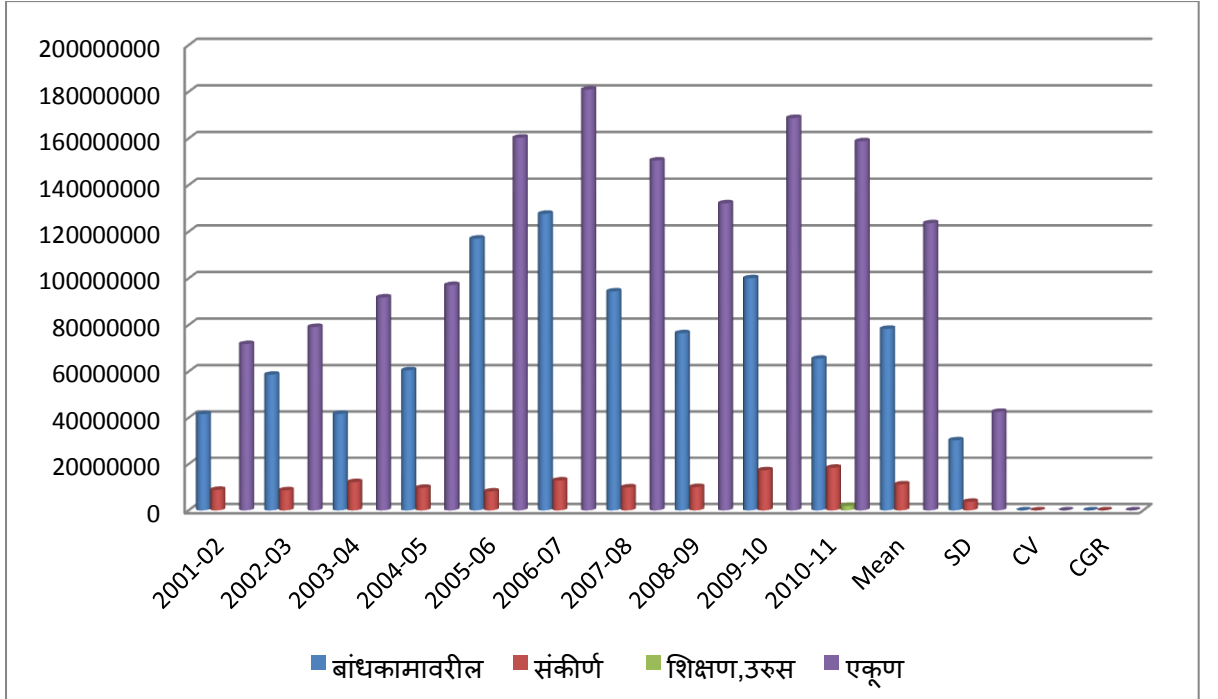
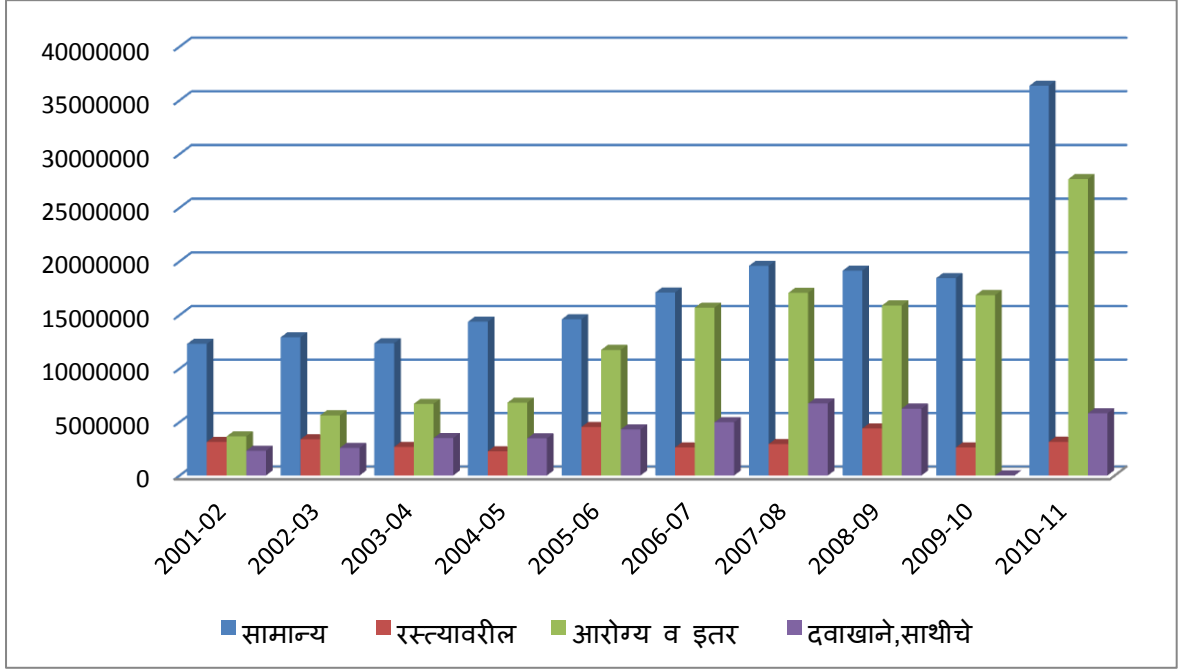
तक्ता क्र. 5.17 मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या महसुली खर्चाचे आणि भांडवली खर्चाचे चित्र मांडले आहे. अभ्यास काळात या खर्चाच्या बाबतीत घडून आलेली स्थित्यातरे खालील प्रमाणे मांडता येतील.

तक्ता क्र. ५.१७
महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक

| वर्ष | सामान्य | रस्त्यावरील | आरोग्य व इतर | दवाखाने,साथीचे | बांधकामावरील | संकीर्ण | शिक्षण,उरुस | एकूण |
|---------|------------|-------------|--------------|----------------|--------------|----------|-------------|-----------|
| | प्रशासन व | दिवाबत्ती | सोयी खर्च | रोग बद्दलचा | खर्च | खर्च | अंशदाने व | |
| | वसूली खर्च | खर्च | | खर्च | | | अनुदाने | खर्च |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| २००१.०२ | १२३०७००० | ३१४०००० | ३६५०००० | २३१०००० | ४१५५४८०० | ८८४१००० | | ७१८०२८०० |
| २००२.०३ | १२९२४४०० | ३३७७५०० | ५६२१६०० | २५८०१०० | ५८६३२७०० | ८६५४००० | | ७९१२५००० |
| २००३.०४ | १२३६६५०० | २६६८००० | ६६९८००० | ३५००००० | ४१६८४५०० | १२२०८००० | | ९१७९०३०० |
| २००४.०५ | १४३७०००० | २२५५००० | ६८१०००० | ३४६७००० | ६०४९६५०० | ९७१५००० | | ९७११३५०० |
| २००५.०६ | १४५९५००० | ४५२५००० | ११७३९६०० | ४३०८००० | ११७०१४१३४ | ८१३९००० | | १६०३२०७३४ |
| २००६.०७ | १७०९४२०० | २६२१३०० | १५६८२७०० | ४९७४४०० | १२७६५२४३८ | १२९०५८०० | | १८०९३०८३८ |
| २००७.०८ | १९५७७२०० | २९३८३०० | १७०६२००० | ६७२६००० | ९४३४२४०८ | ९८८०००० | | १५०५२५९०८ |
| २००८.०९ | १९१३१३६० | ४३९४१०० | १५८८७८०० | ६२५२५०० | ७६४३३११० | १००५३००० | | १३२१५१८७० |
| २००९.१० | १८४३७१०० | २६२२००० | १६८४९००० | १३५१६७३८. | १०००४४२१९ | १७२९७७८१ | | १६८७६६८३८ |
| २०१०.११ | ३६३४६००० | ३१४५९०० | २७६५९००० | ५८१०००० | ६५५०३५९८ | १८३८२००० | १९३१००० | १५८७७७४९८ |
| Mean | १७२१९७९६ | ३१७६१०० | १२०२१७९० | ४९७२२४८ | ७८३३५८४० | ११२००४०७ | | १२३६२८४७२ |
| SD | ६९४३९३५ | ७१६१८८ | ७३७२८६२ | ३११६०८८ | ३०२३३३६९ | ३६८७०५४ | | ४२५५५०९९ |
| CV | ४०.३२ | २२.५४ | ६१.३२ | ६६.६९ | ३८.५९ | ३२.९१ | | ३४.४२ |
| CGR | ८.८३ | ०.२२ | २०१९५ | १८.९३ | ७.७३ | ७.२८ | | १०.३१ |

संदर्भ: महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१७
महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचे मुख्य घटक



तक्ता क्र. ५.१७ मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचा मुख्य घटक मांडले आहेत. यामध्ये प्रामुख्याने सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च, रस्त्यावरील दिवाबत्ती खर्च, आरोग्य व इतर सोयी खर्च, दवाखाने साथीचे रोग या बदलचा खर्च,

बांधकामावरील खर्च संकीर्ण खर्च इत्यादी बाबींचा समावेश आहे. तक्ता क्र. २ च्या निरीक्षणावरून खालील बाबी स्पष्ट होतात.

सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च हा सन २००१-०२ मध्ये रु. १२३०७०००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये वाढत जाऊन रु.३६३४६०००/- झाला. सरासरीचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी रु. १७२१९७९६/- इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ८.८३ टक्के इतका होता. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो ४०.३२ इतका होता तर प्रचरण हे रु.६९४३९३५/- होते हे स्पष्ट होते.रस्त्यावरील दिवाबत्तीच्या खर्चाचा विचार लक्षात घेतल्यास असे म्हणता येईल की तो प्रतिवर्षी ०.२२ टक्के इतका दराने वाढत होता तर तो प्रतिवर्षी सरासरी रु ३१७६१००/- इतका होत होता. प्रचरणाचा विचार केल्यास ते रु.७१६१८८/- इतके होते तर विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो २२.५४/- होता. सन २००१-०२ मध्ये रस्त्यावरील दिवाबत्तीचा होणारा खर्च हा रु.३१४००००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु. ३१४५९००/- झाला आहे. यावरून गेल्या १० वर्षात महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या रस्त्यावरील दिवाबत्तीच्या विकासाची कल्पना येऊ शकते.

आरोग्य व इतर सोयीवरील खर्च हा सन २००१-०२ मध्ये रु.३६५००००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु.२७६५९०००/- इतका वाढला आहे. त्याचा वृद्धीदर लक्षात घेतल्यास तो २०.९५ टक्के इतका होता तर सरासरी रु.१२०२१७९०/- हे प्रतिवर्षी आरोग्य व इतर सोयी या मथळ्याखाली खर्च झालेले आहेत हे स्पष्ट आहे. दवाखाने, साथीच्या रोगाबदलचा खर्च विचार घेतल्यास असे लक्षात येईल की, तो सन २००१-०२ मध्ये रु. २३१००००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु. ५८१००००/- इतका प्रचंड स्वरूपात वाढला आहे. त्याचा वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी जवळपास १८.९३ टक्के इतका होता तर विचलन गुणांक ६६.६९ टक्के इतका होता. सरासरी विचारात घेतल्यास तो रु.४९७२२४८/- असल्याचे दिसून येते. बांधकामावरील खर्चाचा विचार केल्यास तो सन २००१-०२ मध्ये रु.४१५५४८००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु.६५५०३५९८/- झाला. त्याचा वृद्धीदर विचार घेतल्यास तो ७.७३ टक्के इतका असून सरासरी प्रतिवर्षी रु.७८३३५८४०/- खर्च होत होता असे म्हणता येईल.

महाबळेश्वर नगरपालिकेचा संकीर्ण खर्च विचारात घेतल्यास असे दिसून येते की तो सन २००१-०२ मध्ये रु.८८४१०००/- .होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु. १८३८२०००/- .झाला त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ७.२८ टक्के इतका होता तर विचलन गुधांक हा ३२.९१ टक्के इतका होता.एकूण खर्चाचा विचार केल्यास तो सन २००१-०२ मध्ये रु.७१८०२८००/- .होता तो सातत्याने वाढत जाऊन सन २०१०-११ मध्ये रु.१५८७७७४९८/- .इतका झाला आहे. यावरून वाढीचा दर लक्षात येतो. एकूण खर्चाची सरासरी विचारात घेतल्यास ती प्रतिवर्षी रु.१२३६२८७२/- . इतका होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर मात्र १०.३१ टक्के इतका होता. शिक्षण, उरूस आणि अशंदाणे यावरती मात्र नगरपालिकेच्या खर्च हा फारसा झालेला नाही. तो फक्त २०१०-११ मध्ये रु. १९३१०००/- .झाला आहे.एकूण खर्चात सामान्य प्रशासन व वसुली खर्चाचे प्रमाण अभ्यास कालावधीत प्रत्येक वर्षी जास्त असल्याचे दिसून येते.

थोडक्यात महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचा मुख्य घटकांमध्ये सामान्य प्रशासन वसुली खर्च आणि आरोग्य व इतर सोयीवरील खर्च यांचे प्राबल्य सर्वाधिक असल्याचे दिसून येते.

टेबल क्र. ३ सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च

तक्ता क्र. ५.१८ मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्य याबाबीवर होणाऱ्या खर्चाचे विवेचन करण्यात आले आहे. अभ्यास काळात या बाबीवरती झालेल्या खर्चाची दिशा आणि स्वरूप खालील प्रमाणे विशद करता येईल.

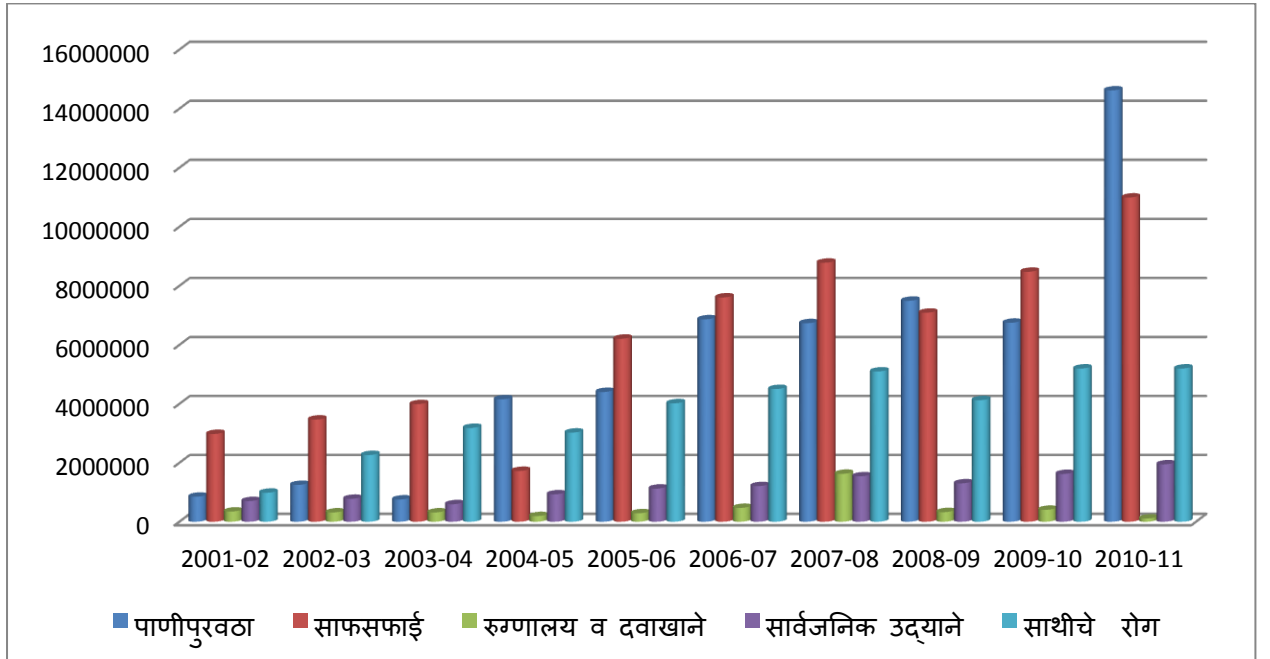
तक्ता क्र. ५.१८
महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च

| वर्ष | पाणीपुरवठा | साफसफाई | रुग्णालय व दवाखाने | सार्वजनिक उद्याने | साथीचे रोग | एकूण |
|---------|------------|----------|--------------------|-------------------|------------|----------|
| २००१-०२ | ८५०००० | २९८०००० | ३४५१०० | ७०२८०० | ९८५२०० | ५८६३१०० |
| २००२-०३ | १२५०००० | ३४६८००० | ३१५७०० | ७७८६०० | २२६४४०० | ८०७६७०० |
| २००३-०४ | ७५५००० | ३९९१००० | ३१६००० | ५९४३०० | ३१८४००० | ८८४०३०० |
| २००४-०५ | ४१५५००० | १७२५००० | १९२००० | ९३०००० | ३०२५००० | १००२७००० |
| २००५-०६ | ४४०५००० | ६२०९६०० | २८८००० | ११२५००० | ४०२०००० | १६०४७६०० |
| २००६-०७ | ६८६६००० | ७६०७३०० | ४६९४०० | १२०९४०० | ४५०५००० | २०६५७१०० |
| २००७-०८ | ६७३५००० | ८७८५००० | १६२६००० | १५४२००० | ५१००००० | २३७८८००० |
| २००८-०९ | ७४९४२०० | ७०९०००० | ३२७५०० | १३०३६०० | ४१२५००० | २०३४०३०० |
| २००९-१० | ६७५०००० | ८४७७००० | ४०५००० | १६२२००० | ५२००००० | २२४५४००० |
| २०१०-११ | १४६२०००० | १०९९१००० | ११०००० | १९४८००० | ५२००००० | ३२८६९००० |
| mean | ४९६३६५४ | ५८२२६२७ | ४२९०६३ | ११३०९७२ | ३४२७३७२ | १५८४९३७२ |
| SD | ४२०७१०९ | ३०१३९६६ | ४०८२३९ | ४४१४०३ | १७२४५४३ | ८९०१७२२७ |
| CV | ८४ | ५१.७६ | ९५.१४ | ३९ | ५० | ५६ |
| CGR | ३५ | १६ | -०.४५ | ११.८१ | ३१.२८ | १९.८२ |

संदर्भ: महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१८

महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च



एकूण सार्वजनिक खर्चात पाणीपुरवठा आणि साफसफाई या घटकांचे प्राबल्य इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे या ही नगरपालिकेच्या बाबतीत दिसून येते. पाणी

पुरवठयावरती होणाऱ्या खर्चाचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.४९६३६५/- .इतका होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा 35टक्के इतका प्रतिवर्षी होता. प्रचरणाच्या बाबतीत तें रु. ४२०७१०१/- .इतके होते. तर विचलन गुणांक हा ८४ टक्के होता. सन २००१-०२ मध्ये पाणी पुरवठयावरती होणारा खर्च हा रु. ८५००००/- .इतका होता त्यामध्ये सातत्याने वाढ होऊन तो सन २०१०-११ मध्ये रु.१४६२००००/- .झाला.साफसफाईच्या बाबतीत ही नोंद घेण्यासारखी वाढ घडून आली आहे. सन २००१-०२ मध्ये साफसफाईवरती होणारा खर्च हा रु.२९८००००/- .होतो तो सन २०१०-११ मध्ये रु. १०९९१०००/- .झाला आहे. साफसफाईवरती सरासरी प्रत्येकवर्षी महाबळेश्वर नगरपालिका रु. ५८२२६२७/- .इतका खर्च करत होती तर त्याचा हा गुणांक हा ५१.७६ टक्के इतका होता. रुग्णालय व दवाखाने या बाबीवर ती प्रतिवर्षी सरासरी रु.४२९०६३/- .खर्च झाला आहे.

तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर आणि विचलन गुणांक अनुक्रमे -०.४५ टक्के आणि ९५.१४ टक्के इतका आहेत. प्रचरणाचा विचार केल्यास तो रु. ४०८२३९/- . इतका आहे. सन २०००-०१ मध्ये रुग्णालय व दवाखाने या बाबीवर रु.३२५०००/- .खर्च झाले होते आणि या खर्चात सातत्याने चढ-उतार घडून येईन तो २०१०-११ मध्ये रु.११००००/- .इतकी कमी झाला आहे. सार्वजनिक उद्याने बाब विचारात घेतल्यास असे निदर्शनास येते की तो सरासरी प्रतिवर्षी ११३०९७२/- .इतका होता. तर सन २००१-०२ मध्ये फक्त रु.७०२८००/- .असलेला हा खर्च २०१०-११ मध्ये मात्र १९४८०००/- .झाला आहे. हया ठिकाणी वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो ११.८१ इतका असून विचलन गुणांक हा ३९ टक्के इतका आहे.

साथीचे रोग हया बाबीवरील खर्चाच्या आकडेवारीचा विचार करता असे म्हणता येईल की तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.३४२७३७२/- .इतका होत आहे. त्याच्या संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो ३१.२८ टक्के इतका आहे. तर विचलन गुणांक ५० टक्के आहे. साथीच्या रोगावरील होणाऱ्या खर्चाचा विचार केल्यास आणखी फक्त रु.९२५००/- खर्च झाले होते. हया खर्चात सातत्याने वाढ होऊन सन २०१०-११ मध्ये तो रु.३४२७३७२/- .इतका झाला आहे. यावरून असे म्हणता येईल की साथीच्या रोगांचे प्रमाण हे महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या कायक्षेत्रातील

नागरिकांमध्ये वाढत आहे. की जे सार्वजनिक आरोग्याच्या दुष्टीने चिंतेचा विषय आहे. एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाच्या आकडेवारीचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, तो सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु.१५८४९३७२/- .इतका होत होता. त्यांचा

संयुक्त वृद्धीदर हा १९.८२ टक्के इतका होता तर विचलन गुणंक हा ५६ टक्के इतका आहे.

सारांश रूपाने थोडक्यात असे म्हणता येईल की सातारा नगरपालिके प्रमाणेच महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या सार्वजनिक खर्चाच्या बाबीमध्ये साफसफाई आणि पाणीपुरवठा या बाबीचा अग्रक्रमाने समावेश होतो. तर साथीचे रोग आणि त्यावरती होणारा खर्च हा महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या बाबतीत चिंतेचा विषय बनत आहे.

तक्ता क्र. ४ महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाची मांडणी

तक्ता क्र. ५.१९ मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाची मांडणी करण्यात आली आहे. यामध्ये मुख्यत्वे करून वेतन भत्ते,मानधन, कर, वसूली, इतर या उपबाबीचा समावेश केला गेला आहे. तक्ता क्र. ५.१९ चे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास खालील बाबी

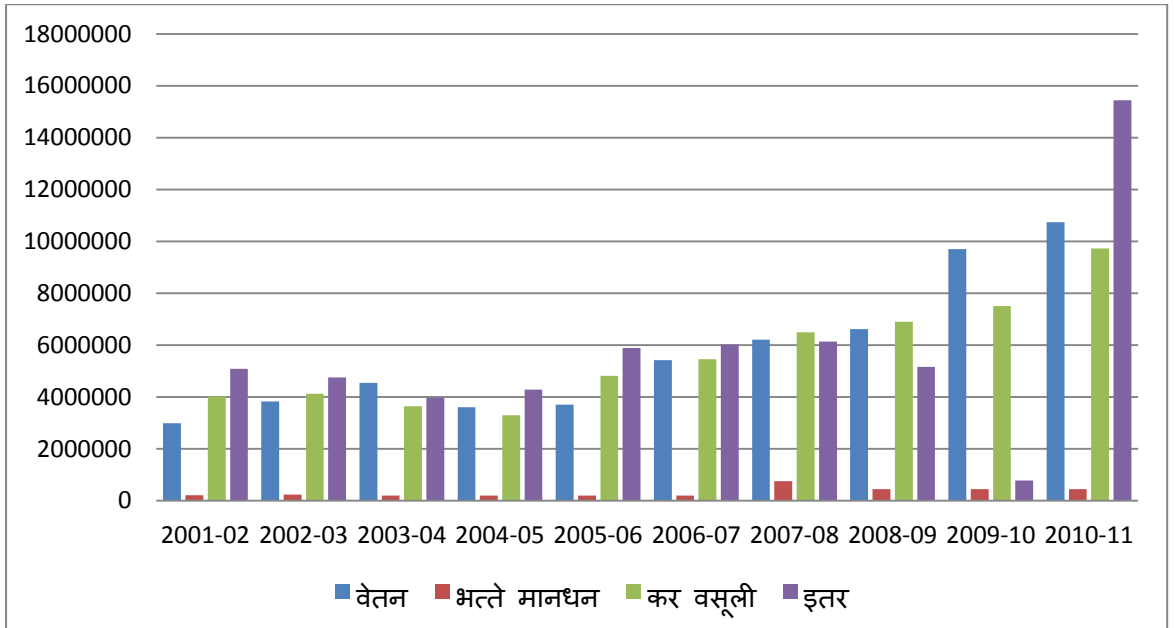
स्पष्ट होतात.

तक्ता क्र. ५.१९
महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च

| वर्ष | वेतन | भत्ते मानधन | कर वसूली | इतर | एकूण |
|---------|----------|-------------|----------|------------|-------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २००१.०२ | २९९०००० | २१०००० | ४०१८२०० | ५०८८८०० | १२३०७००० |
| २००२.०३ | ३८२८६०० | २३०००० | ४११८४०० | ४७४७४०० | १२९२४४०० |
| २००३.०४ | ४५४४५०० | २००००० | ३६४५००० | ३९७७००० | १२३६६५०० |
| २००४.०५ | ३६००००० | २००००० | ३२९०००० | ४२८०००० | ११३७०००० |
| २००५.०६ | ३६९६००० | २००००० | ४८१३००० | ५८८६००० | १४५९५००० |
| २००६.०७ | ५४१५००० | २००००० | ५४५२२०० | ६०२७००० | १७०९४२०० |
| २००७.०८ | ६२०५००० | ७५०००० | ६४९२००० | ६१३०२०० | १९५७७२० |
| २००८.०९ | ६६२००६० | ४५०००० | ६८९९००० | ५१६२३०० | १९१३१३६० |
| २००९.१० | ९७०११०० | ४५०००० | ७५०५००० | ७८१००० | १८४३७१०० |
| २०१०.११ | १०७३३००० | ४५०००० | ९७२६००० | १५४३७००० | ३६३४६००० |
| mean | ५४७१३८७ | ३२०००० | ५४४८९८१ | ५७०६७०० | १५३४५२९८.१८ |
| SD | २६५८३१३ | १८२४८२ | २०००१५१ | ३५५०८२१.६६ | ८३४८६७४ |
| CV | ४८.५८ | ५७.२५ | ३६.७ | ६२.२२ | ५४.४ |
| CGR | १३.५८ | ११.८१ | ९.६९ | -०.५९ | ४.५९ |

संदर्भ: महाबळेश्वर नगरपालिकाचा कि अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५.१९
महाबळेश्वर नगरपालिकेचा सामान्य प्रशासन वसूली खर्च



तक्ता क्र. ५.१९ मध्ये सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाची मांडणी केली आहे. त्याच्या निरीक्षणावरून खालील बाबी स्पष्ट होतात.

सामान्य प्रशासन वसुली खर्चामधील पहील्या कॉलममध्ये वेतनावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये आपणास असे दिसून येते की २००१-०२ मध्ये वेतनावरील खर्च हा रु. २९९०००० /- इतका होता. त्यानंतर त्यामध्ये वाढझाल्याचे दिसून आले म्हणजे २००५-०६ मध्ये तो रु. ३६९६००० /- इतका करण्यात आला आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये रु. १०७३३००० /- इतका झाल्याचे आपणास दिसून येते.

त्यानंतर दोन नंबर कॉलममध्ये मानधन आणि भत्ते यावरील खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये सन २००१-०२ मध्ये रु. २१०००० /- इतका खर्च करण्यात आला होता. त्यानंतर २००५-०६ मध्ये तो रु. २००००० /- करण्यात आला आणि शेवटी त्यामध्ये वाढ होत तो २०१०-११ या वर्षी रु. ४५०००० /- इतका झाला.

आणि शेवटी एकूण खर्च हा २००१-०२ मध्ये रु. १२३०७००० /- इतका करण्यात आला. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होऊ लागली आणि २००५-०६ मध्ये तो १४५९५००० /- इतका होता. आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ ला तो १२२६९००० रु. /- इतका वाढत गेला. आणि त्याचा वृद्धीदर हा ४.५९ टक्के आहे.

सन २००१-०२ मध्ये वेतनावरील महाबळेश्वर नगरपालिकेचा वेतन खर्च हा रु. २९९०००० /- होता, तो २०१०-११ मध्ये रु. १०७३३००० /- झाला आहे. यावरून वेतनावरील खर्चाच्या वाढीची कल्पना येते. सर्व साधारणपणे १३.५८ टक्के ही वाढ घडून आली असून सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु. ५४७१३८७ /- खर्च झाले आहेत. भत्ते, मानधन विचारात घेतल्यास सरासरी प्रत्येक वर्षी रु. ३२०००० /- खर्च होते. तर त्या खर्चाचा वृद्धीदर हा ११.८१ टक्के होता. सन २००१-०२ मध्ये रु. २१०००० /- असणारा हा खर्च २०१०-११ मध्ये रु. ४५०००० /- झाला होता. भत्ते व मानधनातील विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो ५७.२५ टक्के इतका आहे. कर वसुलीचा विचार केल्यास असे लक्षात येईल की महाबळेश्वर नगरपालिके कर वसुली करण्यासाठी प्रतिवर्षी सरासरी रु. ५४४८९८१ /- खर्च करीत होते. तर त्याचा वृद्धीदर हा ९.६९ टक्के इतका होता. आकं विचलन गुणांक हा ३६.७ टक्के इतका

होता.इतर खर्चाचा विचार केल्यास तो सरासरी प्रतिवर्षी रु.५७०६७००/- .होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ऋण -०.५९ टक्के इतका असून विचलन गुणांक हा ६२.२२ टक्के इतका आहे.प्रचरण हे रु.३५५०८२१.६६/- इतका आहे.

थोडक्यात महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की, इतर खर्चाचे प्राबल्य हे एकूण खर्चात जास्त आहे. तुलनात्मक दृष्टीने विचार केल्यास सातारा नगरपालिकेची आणि महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या खर्चाची स्थिती सारखीच आहे.

तक्ता क्र .५.२०

तक्ता क्र .५.२० मध्ये महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या बांधकामावरील खर्चाचे विवेचन केले आहे.

तक्ता क्र.५.२०

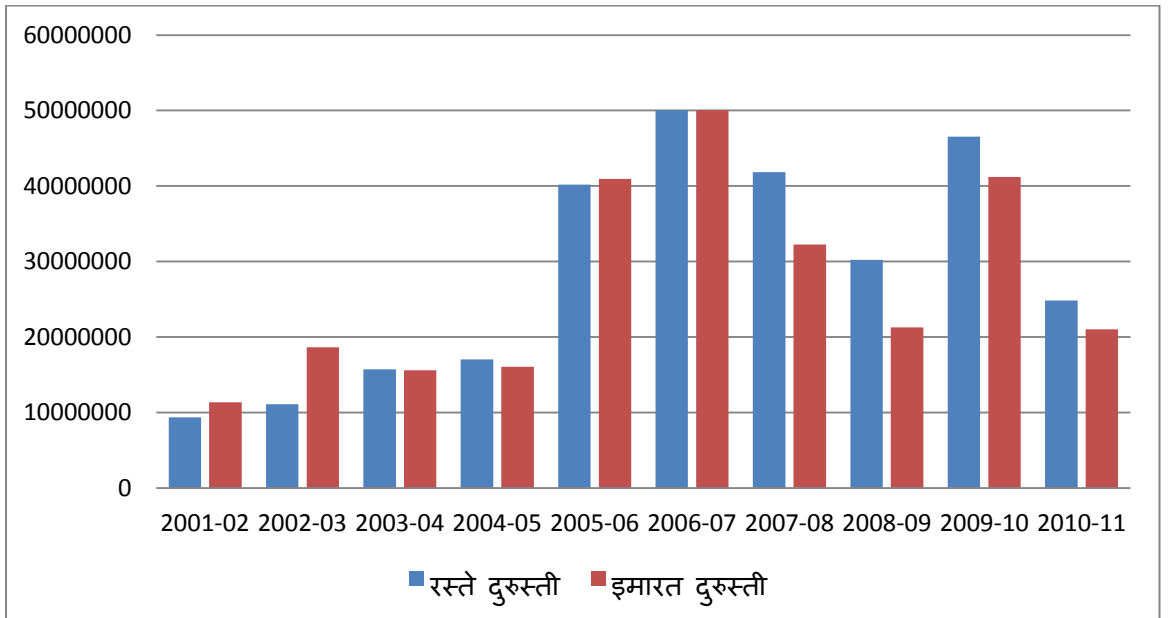
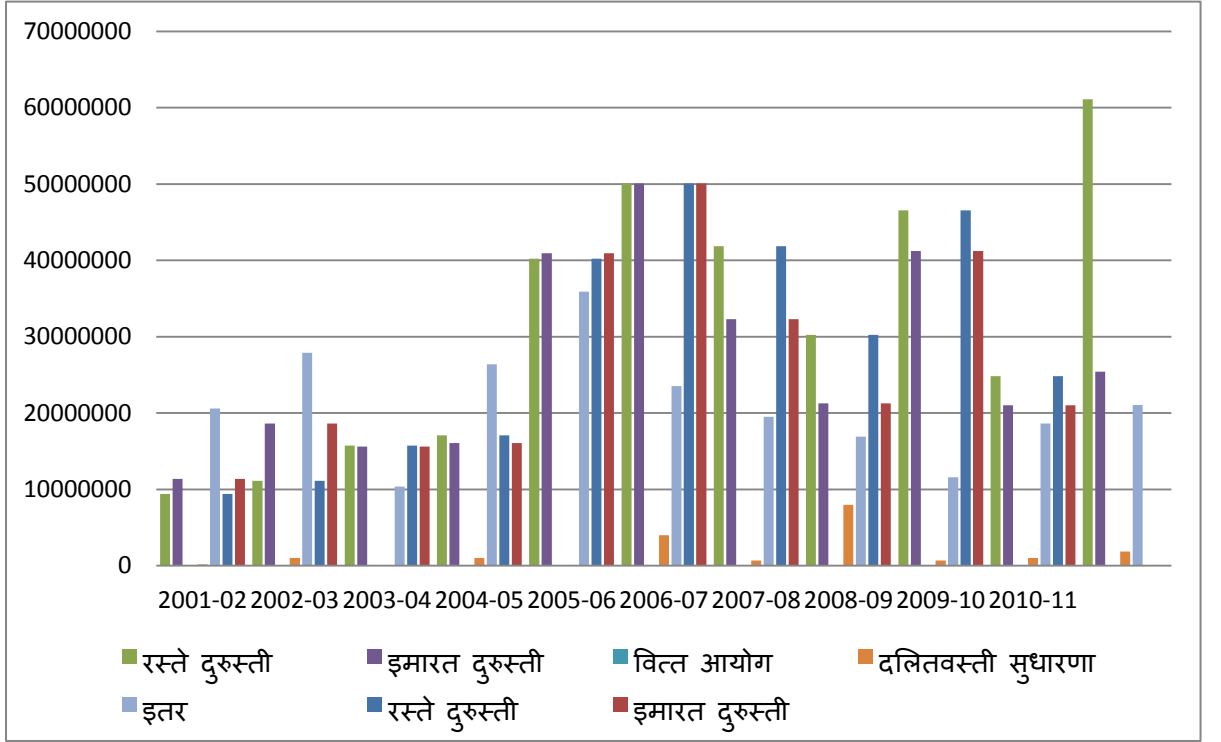
महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या बांधकामावरील खर्च

| वर्ष | रस्ते दुरुस्ती | इमारत दुरुस्ती | दलितवस्ती सुधारणा | इतर | एकूण |
|---------|----------------|----------------|-------------------|-------------|-----------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २००१.०२ | ९३८५००० | ११३६२४०० | २००००० | २०६०७४०० | ४१५५४८०० |
| २००२.०३ | ११११०००० | १८६३५००० | १०००००० | २७८८७७०० | ५८६३२७०० |
| २००३.०४ | १५७३६००० | १५५९५००० | ००००० | १०३५३५०० | ४१६८४५०० |
| २००४.०५ | १७०६०००० | १६०५०००० | १०००००० | २६३८६५०० | ६०४९६५०० |
| २००५.०६ | ४०२००००० | ४०९३०५०० | ०००० | ३५८८३६३४ | ११७०१४१३४ |
| २००६.०७ | ५००८०००० | ५००५०००० | ४०००००० | २३५२२४३८ | १२७६५२४३८ |
| २००७.०८ | ४१८५०००० | ३२२७५००० | ७००००० | १९५१७४०८ | ९४३४२४०८ |
| २००८.०९ | ३०२४५००० | २१२८५००० | ८०००००० | १६९०३११० | ७६४३३११० |
| २००९.१० | ४६५४०००० | ४१२२०००० | ७००००० | ११५८४२१९ | १०००४४२१९ |
| २०१०.११ | २४८५१५०० | २१०२५००० | १०००००० | १८६२७०९८ | ६५५०३५९८ |
| mean | ६१०९९३१८ | २५४१६१७२ | १८६६६६६ | २१०६०७२७ | ७४८६२५८२ |
| SD | १७४२९०५.४२ | १२६०८९०३.८२ | २४९०३२०.७७५ | ७२८६६६१.११४ | २८७०१००४ |
| CV | २८.५२५७८२२ | ४९.६०९७६७४५ | १३३.४१००८९२ | ३४.५९८३३६११ | ३८.३३८२५ |
| CGR | २२.६७ | १०.८३ | २०.९४ | -२.७८ | ८.६६ |

संदर्भ: महाबळेश्वर नगरपालिका वार्षिक अहवाल २००१-०२ ते २०१०-११

आलेख क्र. ५. २०

महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या बांधकामावरील खर्च



तक्ता क्र .५.२० मध्ये बांधकामावरील खर्चाचे सविस्तर विप्लेषण केले आहे आणि त्यामध्ये चार भाग करण्यात आले आहेत. पहील्या भागात रस्ते दुरुस्तीवर करण्यात आला आहे. २००१-०२ मध्ये हा खर्च रु.९३८५००० /- करण्यात आला

होता. त्यानंतर २००६-०७ मध्ये हा खर्च ४०२००००० रु./- इतका करण्यात आला. नंतर तो वाढत जाऊन २०१०-११ या वर्षी २४८५१५०० रु./- इतका झाल्याचे दिसून येते.

त्यानंतर दुसऱ्या भागात इमारत दुरुस्तीवर खर्च करण्यात आला आहे. हा खर्च सुरुवातीला म्हणजे २००१-०२ मध्ये ११३६२४००० रु./- करण्यात आला होता. त्यानंतर त्यात हळुहळू घट होत गेली आणि २००६-०७ या वर्षी ५००५०००० रु./- झाला होता आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात २१०२५००० रु./- पर्यंत वाढझाल्याचे आपणास दिसून येते.

आणि शेवटच्या भागात एकूण खर्चाचे विश्लेषण केल्याचे आपणास दिसून येते. २००१-०२ मध्ये त्यामध्ये रु. ४१५५४८०० /- हा झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळुहळू वाढ होत गेली आणि २००६-०७ मध्ये १२७६५२४३८ रु./- इतका वाढला आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात तो ६५५०३५९८ रु./- पर्यंत जाऊन पोहचल्याचे आपणास दिसून येते. या एकूण खर्चाचा साधा वृद्धीदर हा इतका नोंदवण्यात आला.

सर्वसाधारण निरीक्षणावरून असे स्पष्ट होते की एकूण बांधकामावरील खर्चात रस्ते दुरुस्ती वरती होणारा खर्च हा जास्त असून तो सातत्याने वाढत आहे. सन २००१-०२ मध्ये एकूण खर्चात त्याचे प्रमाण २० टक्के होत ते २००७-०८ मध्ये ४० टक्के पेक्षा जास्त असल्याचे दिसून येते २००९-१० मध्ये ते जवळपास ४५ टक्के असल्याचे स्पष्ट होते. अभ्यास काळातील सुरुवातीच्या तीन वर्षांमध्ये इतर खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे जवळपास ५० टक्के इतके राहिले आहे. इमारत दुरुस्तीचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे कमी आधिक होत आहे.

२००१-०२ ते २००३-०४ या काळात ते ३० टक्के च्या आसपास राहिले असून त्यानंतरच्या काळात मात्र यामध्ये अधिक चढ-उतार दिसून येतात. बांधकामावरील एकूण खर्चात, दलित वस्ती सुधारणावरती झालेला खर्च विचारात घेतल्यास प्रत्येक वर्षी ५ टक्के पेक्षा कमीच राहिला आहे. २००८-०९ या वर्षी अपवादात्मकरित्या फक्त जवळपास १० टक्के इतका खर्च झाला असल्याचे दिसून येते. सरासरीचा विचार करता रस्ते दुरुस्ती वरती झालेला खर्च हा प्रतिवर्षी रु. ६१०९९३१/- इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा २२.६७ टक्के इतका

असुन विचलन गुणांक हा २९.३३ टक्के इतका असुन प्रचरण रु. १७९२३८४/- . इतका आहे.इमारत दुरुस्तीवरती सरासरी रु.२५४१६१७२/- .इतका खर्च झाला आहे. तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा १०.८३ टक्के इतका असुन विचलन गुणांक ५०.४९ टक्के इतका आहे.दलितवस्ती सुधारणाच्या बाबतीत सरासरीचा विचार केल्यास प्रतिवर्षी जवळपास रु.१८६६६६६/- .इतका खर्च होत होता हे स्पष्ट होते. आणि त्याचा संयुक्त वृद्धीदा हा २०.९४ टक्के इतका असुन विचलन गुणांक हा १२९ टक्के इतका आहे.इतर खर्चाच्या बाबतीत संयुक्त वृद्धीदर हा -२.७८ टक्के असुन तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. २१०६०७२७/- .इतका होत आहे. तर त्याचा विचलन गुणांक हा ३३ टक्के इतका असुन प्रचरण हे जवळपास रु.६९५०७२१/- .आहे.एकूण बांधकामावरील खर्चाचा वृद्धीदर विचारात घेतल्यास तो ८.६६ टक्के इतका आहे. तर त्याचा विचलन गुणांक हा ३९.३६ टक्के असुन तो सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु.२९४७०३१९/- .इतका होत होता.

५.७.सारांश

नगरपालिकांच्या खर्चातील प्रवृत्तीचा अभ्यास करता असे स्पष्ट होते की त्यांच्या कार्याच्या बाबतीतीत सातत्याने वाढ होत आहे. मुख्यत्वे सामाजिक व आर्थिक सोयी सुविधा खर्चात वाढ होत आहे.प्रामुख्याने सामाजिक आरोग्य, दवाखान्याच्या सुविधा यावर खर्च वाढत आहे. नगरपालिकांकडे पाणी पुरवठ्याच्या जबाबदारीचे हस्तांतरण केल्यामुळे त्यांच्या एकूण खर्चात वाढ होताना दिसते. भविष्यात हा खर्च आणखी वेगाने वाढण्याची चिन्हे दिसून येतात. या वरून ही बाब स्पष्ट होते की, हा खर्च पेलण्यासाठी नगरपालिकांच्या कर व करेत्तर महसुलात वाढ होण्याची आवश्यकता आहे. त्याच बरोबर एक अत्यंत प्रभावी व सुयोग्य असे खर्च विषयक धोरण आखून खर्च व्यवस्थापनावर भर देणे गरजेचे आहे. तरच नगरपालिका वरील वित्तीय ताण कमी होईल.

गृहितकाची पडताळणी Testing of Hypothesis

| Hypothesis | Variables | Test | P Value | T Stat | One Tail/Two Tail | T Critical one tail/T Critical TWO tail | Accepted/Rejected |
|--|--|-----------------|---------|--------|-------------------|---|---|
| <p>H1= स्थानिक स्वराज्य संस्थाच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे कमी आसून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने आधिक आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळी वरील (केद्र सरकार आणि राज्य सरकार)संस्थावर अवलुण राहावे लागते.</p> <p>H0= स्थानिक स्वराज्य संस्थाच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे जास्त आसून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने कमी आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळी वरील (केद्र सरकार आणि राज्य सरकार)संस्थावर अवलुण राहावे लागत नाही.</p> | <p>Y=Income (dependent variable) X=expenditure (independent variable)</p> | t Test | 0.25 | 3.59 | Two Tail | 2.56 | Since $P(T \leq t)$ e.g 0.28 < 3.59 H1=Accepted H0 (null hypothesis)= rejected |
| <p>H1= नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या अर्थिक दृष्ट्या सक्षम असणे गरजेचे आहे.</p> <p>H0= नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या अर्थिक दृष्ट्या सक्षम असणे गरजेचे नाही .</p> | <p>Y=Total Expenditure on social services & health (dependent variable) X= Income (independent variable)</p> | Regression Test | 0.43 | 4.64 | Two Tail | 2.56 | Since $P(T \leq t)$ e.g 0.43 < 4.64 H1=Accepted H0 (null hypothesis)= rejected |

| | | | | | | | |
|--|---|---------------|----------------|---------------------|----------------------|--------------------------|--|
| <p>H1= सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या आपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले आहे.</p> <p>Ho= सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या आपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले नाही.</p> | <p>Y= total developmental expenditure (dependent variable)</p> <p>X= total other expenditure (independent variable)</p> | <p>F-test</p> | <p>P= 0.11</p> | <p>F stat= 5.15</p> | <p>One tail test</p> | <p>F critical = 3.17</p> | <p>Since $P(T \leq t)$ e.g. $0.11 < 5.15$ H1=Accepted H0 (null hypothesis)= rejected</p> |
|--|---|---------------|----------------|---------------------|----------------------|--------------------------|--|

सांख्यिकिय विश्लेषण

१ गृहितक —: स्थानिक स्वराज्य संस्थाच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे कमी आसून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने अधिक आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळी वरील (केद्रं सरकार आणी राज्य सरकार)संस्थावर अवलुंण राहावे लागते.

$H_1=$ स्थानिक स्वराज्य संस्थाच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे कमी आसून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने अधिक आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळी वरील (केद्रं सरकार आणी राज्य सरकार)संस्थावर अवलुंण राहावे लागते.

$H_0=$ स्थानिक स्वराज्य संस्थाच्या उत्पन्नाचे स्रोत हे जास्त आसून खर्चाच्या बाबी ह्या तुलनेने कमी आहेत,परिणामी उत्पन्न स्रोतासाठी वरच्या पातळी वरील (केद्रं सरकार आणी राज्य सरकार)संस्थावर अवलुंण राहावे लागत नाही.

प्रस्तुत गृहितकाची सत्यता पडताळणी करण्यासाठी T- test चा वापर करण्यात आला आहे. त्यामध्ये दोन सांख्यिकीय सारणी मधील सरासरीच्या प्रचरणचा विचार केला जातो. प्रस्तुत गृहितका मध्ये नगरपालीकांचे उत्पन्न ही पहिली सांख्यिकीय सारणी असून एकुण नगरपालीकांचा खर्च ही दुसरी सांख्यिकीय सारणी आहे. तसेच उत्पन्नची सारणी ही अंवलंबित चल सारणी म्हणून विचारत घेतली असून खर्चाची सारणी ही स्वतंत्र चल सारणी म्हणून विचारता घेतली आहे.

P- value सांख्यिकी मध्ये P- value ला खुप महत्व आहे. P- value च्या मदतीने संभाव्य विचलनाची कल्पना येते. P- value जितकी जास्त असते तितकी ही Null hypothesis ची सत्यता किंवा स्विकार होण्याची जास्तीत जास्त शक्यता असते. थोडक्यात P- value ही Null hypothesis च्या बाबतीत पुरावाच सादर करते असे म्हणता येईल. या उलट P- value जितकी कमी असते तितकी Working hypothesis ची स्वकार्य हार्यता वाढते असे म्हणता येईल. प्रस्तुत मध्ये T-test ही -0.28 इतकी असून estimated 't' पेक्षा कमी आहे. म्हणून Two tail test विचारात घेतल्यास आणि 95 % significance level विचारात घेतल्यास H_1 हे गृहितक स्विकार करावे लागते.

२. गृहितकः नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था हया अर्थिक दृष्टया सक्षम असणे गरजेचे आहे.

H_1 = नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था हया अर्थिक दृष्टया सक्षम असणे गरजेचे आहे.

H_0 = नागरी लोकसंख्येच्या कल्याणासाठी आणि नागरी विकासासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था हया अर्थिक दृष्टया सक्षम असणे गरजेचे नाही .

या गृहितकाच्या बाबतीत. Regression test चा वापर करण्यात आहे. या ठिकाणी Regression line ची goodness of fit विचारात घेतली आहे. हया मध्ये एकुण सार्वजनिक सेवा सुविधावरती होणारा खर्च आणि नगरपालीकांच्या उत्पन्न पातळीवरती अंवलंबून असते असे गृहितक मांडले आहे. ह्या ठिकाणी Regression equation ही खालील प्रमाणे मांडता येतील.

$$\{Y = -1503094 + 0.99 * \beta_1 + 1.04 * \beta_2 + 1.22 * \beta_3 + 2.28 * \beta_4 + (-0.79) * \beta_5 + 8.41 * \beta_6 + 0.81 * \beta_7 + 0.45 * \beta_8\}$$

A = intercept value आहे. म्हणजेच 'शून्य' उत्पन्न असताना सार्वजनिक सेवावरती होणारा खर्च होय. तो -1503094 इतका आहे.

β हे वेगवेगळ्या चलामधील उत्पन्नातील स्थिर बदल दर्शवितो.

β_1 हा पाणीपुरवाठयातील स्थिर बदल दर्शवितो.

β_2 हा साफसफाई मधील स्थिर बदल दर्शवितो.

β_3 हा जलःनिसारनतील स्थिर बदल दर्शवितो.

β_4 हा पर्यवेक्षण मधील स्थिर बदल दर्शवितो.

β_5 हा जन्ममृत्यु स्थिर बदल दर्शवितो.

β_6 हा रूग्णालय स्थिर बदल दर्शवितो.

β_7 हा सार्वजनिक स्थिर बदल दर्शवितो.

प्रस्तुत गृहितकामध्ये P- value हि 0.43 इतकी असुन calculated T value ही 4.64 आहे. त्यामुळे working hypothesis H_1 ही स्विकारला जाऊ शकतो.

३ गृहितक: सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या आपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले आहे.

H_1 = सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या आपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले आहे.

H_0 = सातारा जिल्हयातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या आपेक्षित विकासाकडे शासकीय पातळीवर दुर्लक्ष झाले नाही.

तिस-या गृहितकाच्या सत्यतेसाठी F- test वापरण्यात आली आहे. हयामध्ये विकासावरती होणारा खर्च आणि इतर बाबीतीवर ती कोणारा खर्च हयाचा विचार केला गेला आहे. हया ठिकाणी P-value हि 0.11 असुन calculated F value ही 5.15 इतकी आहे. तसेच F critical चे मुल्य हे 3.17 आहे. त्यामुळे working Hypothesis हा स्विकारावा लागतो.

५.१ संदर्भ सूची

१. वार्षिक अहवाल सातारा नगरपरिषद — २००१-०२ ते २०१०-११
२. वार्षिक अहवाल महाबळेश्वर नगरपरिषद — २००१-०२ ते २०१०-११
३. वार्षिक अहवाल फलटण नगरपरिषद — २००१-०२ ते २०१०-११
४. वार्षिक अहवाल रहिमतपूर नगरपरिषद — २००१-०२ ते २०१०-११
५. Bose Ashish (1970), Urbanization in India : An Inventory of Source Material, Academic Book Limited, Bombay, p. 98
६. Butler W. Edgar (1976), Urban Sociology : A Systemic Approach, Harper and Row Publishers, New York, Hagerstown, San Francisco, London, p. 16
७. Sharma K. Rajendra (2004), Urban sociology, published by Atlantic and Distributors, New Delhi, p.54.
८. Kornhauser David (1976), Japan : Geographical Background to Urban Industrial Development, Edition 2nd, Longman Publisher, London, p. 148.
९. डॉ. हावा आश्विन जी. २०१२ नगरपालिका स्वरूप आणि समस्या, पहीली आवृत्ती अरूणा प्रकाशन १०३,ओमकार कॉम्प्लेक्स अ खर्डेकर स्टॉफ,औसा लातूर.
१०. Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur, p. 1.

प्रकरण सहावे
निष्कर्ष व शिफारशी

- ६.१ प्रस्तावना
- ६.२ नगरपालिका उत्पन्नाच्या बाबतीतील निष्कर्ष
- ६.३ नगरपालिका खर्चाच्या बाबतीतील निष्कर्ष
- ६.४ उत्पन्न आणि खर्चाच्या बाबतीत महत्त्वाच्या शिफारशी

१. प्रस्तावना :-

भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्था ह्या आर्थिक विकासाचे प्रमुख स्तंभ असल्याचे दिसून येते. विशेषतः नागरिकांच्या सार्वजनिक कल्याणाच्या बाबतीत स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिकाही फारच महत्त्वाची आहे. नागरी भागातील लोकांच्या राहणीमानावर स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या धोरणांचा परिणाम हा सातत्याने होत असतो. विशेषतः कर धोरण हे नागरिकांच्या राहणीमानावर अधिक प्रभाव पाडत असल्याचे दिसून येते. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या माध्यमातून अनेक सार्वजनिक वस्तुंचा पुरवठा केला केला जातो. हा पुरवठा कार्यक्षम आणि परिणामकारकरित्या होण्यासाठी त्यांना भक्कम आर्थिक पाठबळाची गरज असते. त्याचबरोबर त्याचे व्यवस्थापन देखील फार महत्त्वाचे आहे. थोडक्यात असे म्हणता येईल स्थानिक स्वराज्य संस्थांची आर्थिक स्थिती आणि त्यांचे व्यवस्थापन हे नागरिकांच्या राहणीमानावर परिणाम करत असतात.

शहरी सर्वसाधारण आणि शहरी स्थानिक स्वराज्य संस्थाना शहरी विकासात अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे. कारण ते त्यांच्या कार्यक्षेत्र अंतर्गत भागात सामाजिक व आर्थिक विकास साध्य करण्यामध्ये फार महत्त्वाची भूमिका पार पाडताना दिसून येतात. ते सामाजिक आणि आर्थिक विकास योग्य कर्तव्याचे पालन करत असतात. त्यांना आर्थिक व सामाजिक विकासाचे ध्येय पूर्ण करण्यासाठी शहरी भागात राहणाऱ्या वेगवेगळ्या समाजाच्या योग्य गरजांचे निवारण करणे गरजेचे आहे. म्हणून त्यांच्या क्षेत्रात सामाजिक व आर्थिक विकासात स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या भूमिकेचा अभ्यास आवश्यक आहे. या पार्श्वभूमीवर सातारा जिल्हयातील निवडक स्थानिक स्वराज्य संस्थेची निवड करून त्यांनी शहरी आणि जिल्हयाच्या विकासात जी भूमिका पार पाडली आहे. त्यांच्या अभ्यासाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. २००१-०२ ते २०१०-११ या आर्थिक वर्षात या स्थानिक स्वराज्य संस्थांनी आपल्या कार्यक्षेत्रात वेगवेगळ्या प्रकारे कार्ये पार पाडली आहेत.

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्रातिनिधीक स्वरूपाच्या चार नगरपालिकांच्या उत्पन्न आणि खर्चाचा आढावा घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. फलटण, सातारा, रहिमतपूर ,

आणि महाबळेश्वर, हया चार नगरपालिकांच्या खर्चाचा एकत्रितपणे विचार केल्यास पुढील प्रमाणे अनुमाने नोंदवता येतील.

२. नगरपालिका उत्पन्नाच्या बाबतीतील निष्कर्ष

१. फलटण नगरपालिकेचे गेल्या दहा वर्षातील सरासरी उत्पन्न हे सरासरी खर्चाच्या तुलनेत जवळपास रु. २७,७८,१६,०९५.०० इतके वाढलेले आहे. एकूण संयुक्त वृद्धीदरांचा विचार करता तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत १९.८६ टक्के तर खर्चाच्या बाबतीत तो ३९.४३ टक्के इतका नोंदवला आहे. ह्याचाच अर्थ उत्पन्नांच्या वाढीचा दर हा खर्चाच्या वाढीच्या दराच्या तुलनेत निमपट आहे असे म्हणता येईल. उत्पन्नातील प्रचरण गुणांकाचा विचार करता १३२ टक्के इतके असून तो सर्वाधिक वाढीच्या बाबतीत म्हणजेच ३०७ टक्के इतके नोंदविला आहे.
२. फलटण नगरपालिकेच्या उत्पन्न आणि खर्चाचा आढावा घेत असताना असे स्पष्ट होते. की, २००७-०८ मध्ये उत्पन्न आणि खर्च हे दोन्ही जवळपास अनुक्रमे १० आणि १० कोटी इतके होते. तर २००९-१० मध्ये ते अनुक्रमे जवळपास २० आणि २० कोटी पर्यंत पोहचल्याचे दिसून येते. म्हणजे अवघ्या दोन वर्षात फलटण नगरपालिकेचे उत्पन्न आणि खर्च हे दुप्पट झाल्याचे स्पष्ट होते.
३. भांडवली उत्पन्नाचा विचार करता त्यामध्ये सुरुवातीला २००१-०२ मध्ये रु. ५२,७१,०००/- इतके होते. त्यानंतर म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ८७,९५,०००/- इतके वाढले आणि शेवटी २०१०-११ मध्ये ते रु. २,१४,७२,०००/- पर्यंत वाढल्याचे आपणास दिसून येते. दहा वर्षातील संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता असे स्पष्ट होते. की एकूण उत्पन्न हे ३०.३३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रत्येक वर्षी वाढले आहे. तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत हा वृद्धी दर सर्वात कमी म्हणजेच ११.४२ टक्के इतका आहे. ह्याचाच अर्थ असा होतो की भांडवली उत्पन्न की जे स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या महसुलाचा प्रमुख स्रोत असतो तो वाढवण्यात फलटण

नगरपालिकेला अपेक्षित यश आले नाही. प्रचरण गुणांकाचा विचार करता तो सर्वाधिक म्हणजेच ७२.२१ टक्के इतका उत्पन्नाच्या बाबतीत दिसून येतो.

४. सरासरी कर उत्पन्न हे अभ्यास कालावधीत रु. २,६२,०१,७३९.०० इतके होते तर करेत्तर सरासरी उत्पन्न हे रु. ९,८६,५३,०२२.०० इतके होते. एकूण अभ्यास कालावधीत करेत्तर सरासरी उत्पन्न जास्त असल्याने स्पष्ट होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता तो करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत २०.१२ टक्के इतका असून कर उत्पन्नाच्या बाबतीत मात्र तो ११.६१ टक्के इतका आहे. त्याचबरोबर एकूण उत्पन्न वृद्धी दराचा विचार करता तो १८.२५ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते. प्रचरण गुणांकाचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, सर्वाधिक प्रचरण गुणांक हा देखील करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत दिसून येतो तो ७७.६९ टक्के इतका आहे. तर कर उत्पन्नाच्या बाबतीत तो सर्वात कमी म्हणजेच ३७.७१ टक्के इतका आहे.

५. फलटण नगरपालिका ही पाणीपट्टी कराकडे संकलित कराच्या स्रोता नंतर दुसरा प्रमुख कराचा स्रोत म्हणून पाहते हे स्पष्ट होते. सर्वच कर स्रोतांच्या वाढीचा वेग विचारात घेतल्यास असे स्पष्ट होते की सन २००१-०२ ते सन २००६-०७ पर्यंत सर्व कर स्रोतांची वाढ ही सर्वसाधारण पण स्थिर स्वरूपाने होत होती. तर २००७-०८ पासून २००८-०९ वगळता ही वाढ झपाट्याने होत असल्याचे दिसून येते. पाणीपट्टी कराच्या बाबतीत २००९-१० आणि २०१०-११ या वर्षी झालेली वाढ ही लक्षणीय आहे. अर्थात पाण्याचे दुर्भिक्ष आणि पाणी वापरावर नियंत्रण ठेवण्याच्या दृष्टीने केला गेलेला हा प्रयत्न आहे.

६. एकूण उत्पन्नात अनुदानापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे प्रमाण हे फलटण नगरपालिकेच्या बाबतीत जवळपास ९० टक्के आहे. ह्याचाच अर्थ फलटण नगरपालिका ही खुप मोठ्या प्रमाणात उत्पन्नाच्या दृष्टिकोनातून अनुदानावरती अवलंबून असल्याचे दिसून येते. संकीर्ण करापासून मिळणारे उत्पन्न हे नगण्य स्वरूपाचे असून ते फक्त जवळपास ५ ते ८ टक्के च्या दरम्यान असल्याचे दिसून येते. विचलन गुणांकाचा विचार करता असे स्पष्ट

होते की तो सर्वाधिक म्हणजेच ८१.९९ टक्के इतका अनुदाने व अंशदाने ह्या घटकांच्या बाबतीत दिसून येतो तर त्या खालोखाल संकीर्ण जमा ह्या स्रोतांचा क्रमांक लागतो. वृद्धी दराचा विचार करता सर्वच स्रोतांच्या बाबतीत संयुक्त वृद्धीदर हा श्रवण स्वरूपाचा नोंदविला आहे.

७. सातारा नगरपालिकेचे उत्पन्न हे अभ्यास कालावधीत सातारा नगरपालिकेचे गेल्या दहा वर्षातील उत्पन्न आणि खर्चाचा विचार करता असे दिसून येते की उत्पन्नाच्या तुलनेत खर्च कमी झालेला आहे. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता असे लक्षात येते की एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ९.९४ टक्के असून तो एकूण खर्चाच्या बाबतीत ३.१४ टक्के आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ४१.४१ टक्के तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत २३.४७ टक्के इतके आहे.
८. सातारा नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नामध्ये महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे नेहमीच आधिक्याचे असल्याचे दिसून येते. उलटपक्षी भांडवली उत्पन्नाचे प्रमाण हे नेहमीच कमी असल्याचे दिसून येते. एकूण सरासरी उत्पन्नाचा विचार करता ते अभ्यास काळात रु.२३,५०,८७,९६०/- इतके होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास असे दिसून येते की महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो ११.०१ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत -४.४४ टक्के आणि एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ६.६६ टक्के इतका नोंदविला आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत ४४.७९ टक्के भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत ४३ टक्के तर एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ४१ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते.
९. सातारा नगरपालिकेच्या उत्पन्नाच्या स्रोतांचे वर्गीकरण केले आहे. त्याचे सूक्ष्म निरीक्षण केल्यास सरासरीचा विचार केल्यास कर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी जवळपास रु.५,९४,५१,३६३/- इतका प्राप्त होत तर करेत्तर उत्पन्न हे रु. १६,४३,७३,९०९/- इतक मिळत होते यावरून सातारा नगरपालिकेचा प्रमुख उत्पन्नाचा स्रोत हा करेत्तर उत्पन्न असल्याचे स्पष्ट होते. वृद्धीदरांचा विचार केल्यास तो कर उत्पन्नाच्या बाबतीत -६.१५ टक्के तूट करेत्तर उत्पन्नाच्या

बाबतीत -१२.३१ टक्के त्याचबरोबर एकूण उत्पन्नात -१०.७७ टक्के असल्याचे दिसून येते. अर्थात संयुक्त वृद्धीदर हा ऋण जरी असला तरी साधा वृद्धी दर हा तीनही घटकांच्या बाबतीत धन आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो कर उत्पन्नाच्या बाबतीत ३२.३२ टक्के इतका असून करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ५४.३० टक्के इतका आहे.

१०. सातारा नगरपालिकेच्या कर उत्पन्नात संकलित कर, शिक्षण कर, आणि पाणीपट्टी कर यांचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते. सरासरीचा विचार केल्यास रु. ४,१६,३८,४५४/- इतका सरासरी संकलित कर प्रतिवर्षी प्राप्त होत होता तर अभ्यासकाळात करमणूक कर आणि जाहीरात कर सरासरी प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु.१,०३,१८१/- आणि रु.१,०८,३६३/- इतके प्राप्त होत होते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो खुदाई पाणीपट्टी कराच्या बाबतीत सर्वाधिक म्हणजेच ९.६५ टक्के इतका नोंदविला आहे. तर संकलित कराच्या बाबतीत तो -९.५६ टक्के इतका असून जाहीरात कराच्या बाबतीत -७.५१ इतका आहे. तर शिक्षण कराच्या बाबतीत ४.८६ टक्के इतका आहे.

११. करेत्तर उत्पन्नात अंशदाने आणि अनुदाने यांचे प्रमाण अभ्यास काळात ९० टक्के पेक्षा जास्त असल्याचे दिसून येत आहे. सन २००१-०२ मध्ये अंशदाने व अनुदाने यांची रक्कम ही रु. ९,७९,७८,०००/- होती ती २००९-१० मध्ये सर्वाधिक म्हणजेच रु.३६,८७,१२,०००/- इतकी झाली तर २०१०-११ मध्ये रु.१८,८९,६१,०००/- इतकी होती. सरासरीचा विचार केल्यास प्रतिवर्षी रु. १४,७२,५३,०९०/- इतके अनुदान आणि अंशदानाच्या माध्यमातून सातारा नगरपालिकेला उत्पन्न प्राप्त होत होते हे स्पष्ट होते. अंशदान आणि अनुदान यांच्या वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो -११.१७ टक्के जरी असला तरी साधा वृद्धीदर हा धनच आहे. तर विचलन गुणांक हा ५४.८५ टक्के असून त्यांचे प्रचरण हे रु.८,०७,७९,९४४/- असल्याचे दिसून येते. नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाचे एकूण करेत्तर उत्पन्नातील प्रमाण हे नेहमीच २ ते ५ टक्के च्या दरम्यान राहिले आहे.

१२. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्न आणि खर्चाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की दोन्ही मध्ये सातत्याने वाढ घडूण येत आहे. संयुक्त वृद्धीदर विचारात घेतल्यास एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत तो २० टक्के आहे. तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत २१.४६ टक्के इतका आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ६४.४६ टक्के असून एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ८७ टक्के इतका आहे. एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्च यांच्या वाढीची प्रवृत्ती विचारात घेतल्यास असे स्पष्ट होते की, २००१-०२, २००६-०७, २००७-०८, आणि २०१०-११ ही वर्षे वगळता इतर वर्षी उत्पन्नाच्या तुलनेने खर्च हा कमी झाला आहे. तर उलटपक्षी वरील नमुद केलेल्या वर्षी एकूण उत्पन्नाच्या तुलनेत एकूण खर्च हा जास्त झाला आहे.
१३. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे भांडवली उत्पन्नाच्या तुलनेत नेहमीच जादा असल्याचे दिसून येते. सन २००१-०२ मध्ये महसुली उत्पन्नाचे एकूण उत्पन्नातील प्रमाण हे जवळपास ६० टक्के इतके होते. त्यामध्ये सातत्याने वाढ होऊन २०१०-११ मध्ये ते जवळपास ९० टक्के पर्यंत पोहचल्याचे दिसून येते. संयुक्त वृद्धीदराचा विचासार केल्यास महसुली उत्पन्नाचा वृद्धीदर हा २९.१ टक्के नोंदवला असून तो भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत -६.४८ टक्के इतका झाला आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत ७६.८५ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो ६६ टक्के इतका आहे.
१४. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या उत्पन्नात करेत्तर उत्पन्नाचे प्रमाण हे जास्त असल्याचे दिसून येते ते सर्वसाधारणे ७५ टक्के च्या आसपास होते ते २०१०-११ मध्ये ९० टक्के वरती पोहचले आहे. कर उत्पन्नाच्या बाबतीत असे दिसून येते की ते १० ते ३० टक्के च्या दरम्यान आहे. सन २००१ मध्ये २५ टक्के कर उत्पन्न होते तर ते २०१०-११ मध्ये ते फक्त १० टक्के इतके होत म्हणजेच कर उत्पन्न हे रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बाबत कमी आहे असे स्पष्ट होते.

१५. एकूण करेत्तर उत्पन्नात इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणेच रहिमतपूर नगरपालिकेच्या बाबतीत अशदाने आणि अनुदाने यांचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते. वृद्धीदराचा विचार केल्यास अनुदान आणि अंशदाने याचा संयुक्त वृद्धीदर हा सर्वात जास्त म्हणजे ४० टक्के असून, संकीर्ण उत्पन्नाच्या बाबतीत तो २२.८६ टक्के आहे. तर नगरपालिकेच्या मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत तो १४.७ टक्के आहे. इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे रहिमतपूर नगरपालिकेच्या करेत्तर उत्पन्नात अंशदाने व अनुदान यांचे प्राबल्य आधिक असल्याचे स्पष्ट होते.

१६. महाबळेश्वर नगरपालिकेचे सन २००१-०२ मध्ये एकूण उत्पन्न आणि एकूण खर्च हे जवळपास १४ कोटी होते ते २००६-०७ मध्ये ३६ कोटी पेक्षा जास्त झाले आहे. सरासरी एकूण उत्पन्नाचा विचार केल्यास असे दिसून येते की ते रु. १२,१६,९५,५४५/- इतके प्रतिवर्षी होते तर एकूण खर्च हा सरासरी रु. १२,३६,२८,०९०/- इतका आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ३४.४४ टक्के तर एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ३४.४२ टक्के इतका आहे. वृद्धीदराचा विचार केल्यास एकूण उत्पन्नाचा संयुक्त वृद्धीदर हा ११.७ टक्के इतका असून एकूण खर्चाच्या बाबतीत ११.४१ टक्के इतका आहे.

१७. महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या एकूण उत्पन्नात महसुली उत्पन्नाचे प्रमाण हे भांडवली उत्पन्नाच्या तुलनेत नेहमीच जादा असल्याचे दिसून येते. सरासरी भांडवली खर्चाचा आणि महसुली खर्चाचा विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी अनुक्रमे रु. ६,१८,८१,३००/- आणि रु. १८,९४,५७,५००/- इतका असल्याचे दिसते. संयुक्त वृद्धी दराचा विचार केल्यास महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो १९.८७ टक्के इतका असून भांडवली उत्पन्नाच्या बाबतीत तो ६.१६ टक्के इतका आहे. विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो महसुली उत्पन्नाच्या बाबतीत १६८ टक्के तर भांडवली उत्पन्नाच्या १२९ टक्के इतका आहे.

१८. महाबळेश्वर नगरपालिकेचे वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो कर उत्पनाच्या बाबतीत १५.३६ टक्के आहे, करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ५.९६ टक्के आहे तर एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ८.९७ टक्के इतका आहे. विचलन गुणांकांचा विचार केल्यास तो कर उत्पनाच्या बाबतीत ४८ टक्के, करेत्तर उत्पन्नाच्या बाबतीत ३४ टक्के आणि एकूण उत्पन्नाच्या बाबतीत ३२.६२ टक्के इतके आहे. एकूण कर उत्पन्न आणि करेत्तर उत्पन्न हे दोन्ही २०००-०१ मध्ये ६ कोटी च्या जवळपास होते. ते २००६-०७ मध्ये १८ कोटीच्या जवळपास झालेले आहे, थोडक्यात इतर नगरपालिकांच्या प्रमाणे महाबळेश्वर नगरपालिका ही देखील करेत्तर उत्पन्नावरती अवलंबून असल्याचे दिसून येते.

१९. एकूण कर उत्पन्नात बोटीवरील करापासूनच्या उत्पन्नाचे प्रमाण हे २००१-०२ मध्ये ३० टक्केच्या जवळपास होते ते २०१०-११ मध्ये ५० टक्के पर्यंत पोहचले होते. प्रवासी कराचे, एकूण कर उत्पन्नातील प्रमाण देखील लक्षणीय आहे. २००१-०२ मध्ये हे प्रमाण २५ टक्केच्या आसपास होते ते २००९-१० मध्ये ३० टक्के पर्यंत पोहचले आहे. पाणीपट्टी पासूनच्या कर उत्पन्नाचे प्रमाण देखील २००५-०६ पासून लक्षणीय आहे.

२०. सन २००१-०२ मध्ये एकूण करेत्तर उत्पन्नात त्याचे प्रमाण १० टक्के होते ते २००९-१० मध्ये ६० टक्के च्या जवळपास पोहचले आहे. वृद्धीदराचा विचार केल्यास संयुक्त हा मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत १५.७६ टक्के, शुल्कापासूनच्या उत्पन्नाचा बाबतीत ५.९८ टक्के व्याजापासून मिळणाऱ्या उत्पन्नाच्या बाबतीत ११.४६ टक्के इतर साधनांच्या बाबतीत २०.८५ टक्के तर रिबेट च्या बाबतीत १३.१५ टक्के इतका आहे. तर एकूण करेत्तर उत्पन्न हे प्रतिवर्षी ६.०१ टक्के संयुक्त दराने वाढत असल्याचे स्पष्ट होते. सरासरीचा विचार केल्यास, मालमत्तेपासून सरासरी रु.३१,५८,६००/- शुल्कापासूनचे उत्पन्न रु.२६,५०,४००/- दंड आणि शिक्षेपासून रु. १७,८००/- व्याजापासून २६,२७,१००/-, इतर साधनांच्या बाबतीत रु. २,०५,४३,८००, अनुदानाच्या बाबतीत रु.५,६४,८७,४००/- आणि रिबेट पासून

रु.८,५५,५००/- आणि एकूण ८,६३,४०,६००/- इत्यादी उत्पन्न हे महाबळेश्वर नगरपालिकेला प्राप्त होत होते.

३ नगरपालिका खर्चाच्या बाबतीतील निष्कर्ष

१. फलटण नगरपालिकेच्या एकूण खर्चात महसुली खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त आहे. अभ्यास काळात एकूण खर्चात सातत्याने वाढ घडून आली असून तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. ११,९०,४१,६८६.०० इतका होता. भांडवली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर विचारात घेता तो १५.५४ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने प्रतिवर्षी वाढत असल्याचे दिसून येते. तर याउलट महसुली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदराचा विचार करता तो २१.२७ टक्के इतका असल्याचे दिसून येते. महसुली खर्च आणि एकूण खर्च ह्यामध्ये ०.९९ इतका प्रभावी सहसंबंध आढळून येतो. भांडवली खर्च आणि एकूण खर्चाच्या बाबतीत तो ०.८७ इतका दिसून येतो. प्रचरण गुणांकांचा विचार करता तो सर्वाधिक म्हणजेच ८७.१० इतका महसुली खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो तर सर्वात कमी म्हणजेच ५४.०० इतका भांडवली खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो अभ्यास काळात एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक हा ८४.०० इतका होता.
२. फलटण नगरपालिकेच्या संकीर्ण खर्चाचा एकूण खर्चातील हीस्सा नेहमीच जास्त आहे. तो प्रतिवर्षी सरासरी ३७.१४ टक्के इतका प्रचंड वेगाने वाढत आहे. रहिमतपूर नगरपालिकेची स्थिती मात्र वेगळी आहे. त्याचा संकीर्ण खर्च हा कमी आहे. तर २०१०-११ मध्ये २००९-१० च्या तुलनेत तो कमी झाला आहे. प्रचरण गुणांक देखील संकीर्ण खर्चाच्या बाबतीत १३५ असल्याचे स्पष्ट होते. त्याचबरोबर शिक्षण ऊरूस आणि अंषदाने यांचा संयुक्त वृद्धीदर देखील २०.३१ टक्के इतका प्रतिवर्षी राहिला आहे. ह्या तुलनेने आरोग्य व इतर सोयी सुविधावरील खर्चाचा वृद्धीदर हा कमी म्हणजेच १३.५३ टक्के तर दवाखाने आणि साथीच्या रोगावरचा खर्च हा १३.५७ टक्के इतका कमी राहिला आहे. सरासरी प्रत्येक बाबीवर झालेला खर्च विचारात घेता असे स्पष्ट होते की तो संकीर्ण खर्चाच्या बाबतीत सर्वाधिक दिसून येतो.

३. फलटण नगरपालिकेच्या एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरती होणारा खर्च हा फक्त दहा वर्षात जवळपास ४०० पटीने वाढला आहे. संयुक्त वृद्धी दरचा विचार करता एकूण खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी ७.१६ टक्के इतक्या संयुक्त दराने वाढत होता. एकूण खर्चामध्ये वृक्षारोपणावरती झालेला खर्च हा नगण्य स्वरूपाचा आहे. त्याचे प्रमाण ३ ते ६ टक्के च्या दरम्यान राहिले आहे तर सरासरी प्रत्येक वर्षी १२.०१ टक्के संयुक्त वृद्धी दराने वाढ घडून येत आहे. थोडक्यात फलटण नगरपालिकेच्या सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाचा विचार करता असे लक्षात येते की, पाणीपुरवठा, साफसफाई, जलनिःसारण, इत्यादी बाबीचे प्राबल्य असल्याचे दिसून येते.
४. फलटण नगरपालिकेच्या सामान्य प्रशासन वसुली खर्चाचे सविस्तर विश्लेषण केले आहे. सरासरी दहा वर्षांमध्ये वेतनावरील खर्च हा प्रतिवर्षी रु. २५,६५,७३५.०० तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ६.४१ टक्के इतका होता प्रचरण गुणांक देखील २३ होता. सरासरी कर वसुली खर्च हा प्रतिवर्षी रु. १,२५,३९,०२९.०० इतका होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा १३.४० टक्के इतका प्रतिवर्षी होता. तर प्रचरण गुणांक हा ३७.८६ टक्के इतका होता.
५. फलटण नगरपालिकेच्या सरासरी प्रतिवर्षी एकूण बांधकामावरील खर्च हा रु. ६७,१६,७६१.०० होत होता तर त्याच्या संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी १५.५४ टक्के इतका होता. तसेच प्रचरण गुणांक हा ५४ इतका होता. रस्ते दुरुस्तीच्या खर्चाचा विचार करता सरासरी प्रत्येक वर्षी रस्ता दुरुस्तीवरती रु. ३१,५७,७३९.०० खर्च होत होते तर त्याच्या वाढीचा दर हा प्रतिवर्षी ४०.६५ टक्के इतका सर्वाधिक होता. तसेच प्रचरण गुणांक देखील सर्वाधिक म्हणजेच ८१.६५ होता.
६. सातारा नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाचा विचार करता ते २००१-०२ मध्ये रु. १२,८३,९७,५७२/- इतका होता तो सातत्याने वाढत जाऊन सन २०१०-११ मध्ये रु. २५,३६,१०,१००/- इतका झाला. याचाच अर्थ गेल्या १० वर्षात तो दुप्पट झाला आहे. सरासरी एकूण खर्चाचा विचार करता तो प्रतिवर्षी रु. १५,९८,०१,५९५/- इतका झाला आहे. एकूण खर्चाच्या संयुक्त वृद्धीदराचा

विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी ३.३६ टक्के दराने वाढत होता असे लक्षात येते. एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक २३.६२ इतका असून रु.३,७७,४९,२२५/- इतके विचलन गुणांक आहे. महसुली खर्चाचा वृद्धीदर विचार केल्यास तो प्रतिवर्षी ४.३ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढला तर भांडवली खर्चाचा वृद्धीदर हा - १.५७ टक्के इतका होता हे स्पष्ट होते. एकंदरीत सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाच्या मुख्य महसुली आणि भांडवली बाबींचा विचार करता असे लक्षात येते की तो प्रतिवर्षी एका विशिष्ट दराने वाढत आहे.

७. सातारा नगरपालिकेच्या एकूणच सर्वच घटकांच्या खर्चाच्या वृद्धीदराचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होत की जकात आणि कर या घटकावरील होणारा खर्च हा १३.२४ टक्के इतक्या संयुक्त आणि सर्वाधिक वृद्धीदराने वाढत आहे. त्या खालोखाल प्रशासन व वसुली खर्च हा सरासरी प्रतिवर्षी ९.२५ टक्के इतक्या दराने वाढत आहे. एकूण सातारा नगरपालिकेच्या खर्चाच्या बाबीमध्ये आरोग्य आणि इतर सोयीवरील खर्चाचे प्राबल्य आधिक असल्याचे दिसून येते. २००५-०६ या वर्षी बांधकामावरती झालेला खर्च हा खुपच अवाढव्य स्वरूपाचा आहे. सन २००१-०२ मध्ये तो रु.२,२७,१६,७९१/- होता तो सन २००५-०६ मध्ये ११ कोटीच्या वरती गेला आहे. सरासरीचा विचार केल्यास बांधकाम वरील खर्च हा प्रतिवर्षी ३ कोटीच्या वरती होता तर त्याचा विचलन गुणांक ९४.९५ टक्के इतका होता. तर प्रचलनाचा विचार केल्यास तो रु. २,९८,९८,७७४/- इतका आहे.

८. सातारा नगरपालिकेच्या वेतन बाबीवर सरासरी प्रतिवर्षी रु.९३,११,६०२/- खर्च होत होते तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ८.९६/- इतका होता तर विचलन गुणांक हा ५५ टक्के आणि प्रचरण रु.५१,३२,१८०/- इतके होते. तक्ता क्र. ४ वरून सातारा नगरपालिकेच्या भत्ते व मानधन या बाबीवरती होणारा खर्च हा झपाट्याने वाढत असल्याचे दिसून येते तो २००१-०२ मध्ये फक्त रु.२०,९२५ /- इतका होता तर २०१०-११ मध्ये तो रु.२,२४,४९२/- इतका झाला होता तर विचलन गुणांक १०० टक्के इतका होता.कर वसुलीवरती होणाऱ्या खर्चाचा विचार करता असे स्पष्ट होते की, तो प्रतिवर्षी

६.१७ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत असुन प्रतिवर्षी सरासरी रु. ५६,९२,९८१/- होत होता. तर त्याचा विचलन गुणांक हा ४४.८१ टक्के इतका असुन प्रचरण जवळपास रु.२५,५१,२६५/- इतके होते.इतर खर्चाचा विचार केल्यास त्याचा प्रतिवर्षी ५.६४ टक्के इतका संयुक्त वृद्धीदर होता तर तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.२,०६,२०,९२६/- झाला तर त्याचा विचलन गुणांक हा ३४.१८ टक्के इतका आहे.

९. रहिमतपूर नगरपालिकेच्या एकूण खर्चाचे विश्लेषण केल्याचे आपण दिसून येते. २००१-०२ मध्ये त्यामध्ये रु. २,२७,१६,७९१ /- हा झाला होता. त्यानंतर त्यामध्ये हळूहळू वाढ होत गेली आणि २००६-०७ मध्ये १,५४,९४,२१६ रु./- इतका वाढला आणि शेवटी २०१०-११ या वर्षात तो २,८३,२७,१०० रु./- पर्यंत जाऊन पोहचल्याचे आपणास दिसून येते. या एकूण खर्चाचा साधा वृद्धीदर हा इतका नोंदवण्यात आला.

१०. अभ्यास कालावधीत रहिमतपूर नगरपालिकेचा सरासरी भांडवली खर्च हा रु. १,२१,६३,७९९.०० इतका झाला आहे, तर उलटपक्षी महसुलीचा सरासरी खर्च हा रु. ९६,५९,१५५.०० इतका झाला असून सरासरी एकूण खर्च हा रु. २,६९,६३,५९२.०० इतका झाला आहे.प्रचरण गुणांकांचा विचार करता ते सर्वाधिक भांडवली खर्चाच्या बाबतीत म्हणजे १२६.४२ इतके दिसून येते तर एकूण खर्चाचा प्रचरण गुणांक हा ८४.४५ इतका असुन तो महसुली खर्चाच्या बाबतीत ५१.४३ इतका आहे.सहसंबंधाचा विचार करता असे दिसून येते की, महसुली खर्च आणि भांडवली खर्च ह्यामध्ये ०.९३ इतका प्रभावी सहसंबंध आहे तर त्याखालोखाल भांडवली खर्च आणि एकूण खर्च ह्यामध्ये ०.७० इतका सहसंबंध असल्याचे आढळून येते. उलटपक्षी मध्यम स्वरूपाचा सहसंबंध गुणांक हा महसुली खर्च आणि एकूण खर्चाच्या बाबतीत दिसून येतो. तो ०.५९ इतका आहे. एकूण खर्चाचा विचार करता सर्वाधिक खर्च हा २०१०-११ ह्यावर्षात झाला आहे त्या खालोखाल २००१-०२ या वर्षी सर्वाधिक खर्च झालेला आहे.

११. एकूण खर्चाचे विश्लेषण करण्यात आले आहे. त्यामध्ये २००१-०२ साली रु. १,२५,४७,७०२/- इतका खर्च करण्यात आला आहे. त्यानंतर त्यामध्ये संधगतीने वृद्धी झाल्याचे दिसून येते. म्हणजे २००५-०६ मध्ये रु. ८६,१०,४१७/- इतका झाल्याचे आढळते आणि शेवटी म्हणजे २०१०-११ या वर्षात रु. ७,६७,१७,३१५/- खर्च झाल्याचे आढळून येत आहे आणि याचा साधा वृद्धीदर हा २.९१ इतका आहे.
१२. सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च हा २.७१ टक्के इतका संयुक्त वृद्धी दराने प्रतिवर्षी वाढत आहे. तर सर्वात जास्त संयुक्त वृद्धीदर हा दवाखाने व साथीचे रोग या बदलाच्या होणाऱ्या खर्चात नोंदविला गेला आहे. तो ३३.९४ टक्के इतका प्रतिवर्षी वाढत आहे. ह्यावरून नागरिकरण आणि नागरिकांच्या आरोग्याचे प्रश्न कीती प्रमाणात वाढत आहेत हे लक्षात येते.
१३. एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्च हा प्रतिवर्षी सरासरी ११.४५ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने झपाट्याने वाढत आहे. तर त्याचा प्रचरण गुणांक देखील ५६.३२ इतका आहे. त्याचबरोबर सरासरी खर्च हा प्रतिवर्षी रु. ४६,५४,७४०.०० इतका झाला आहे. आरोग्य व इतर सोयीवरील खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे नेहमीच लक्षणीय राहिले आहे. सरासरी खर्च प्रतिवर्षी ७.५६ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढत आहे, तर त्यांचा प्रचरण गुणांक हा ६३.५८ इतका असून सरासरी खर्च हा प्रतिवर्षी तो रु. ३८,७७,७३६.०० इतका झाला आहे.
१४. एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्च हा २.७१ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने वाढला आहे. अभ्यास काळात रहिमतपूर नगरपालिकेचा वेतनावरील खर्च हा सर्वात कमी म्हणजेच -०.५२ टक्के इतक्या संयुक्त वृद्धीदराने घडला आहे. सर्वसाधारण सरासरी रु. २०,५२,०९९.०० इतका एकूण सामान्य प्रशासन वसुली खर्च हा प्रतिवर्षी झाला आहे तर वेतनावरील सरासरी रु. १५,६९,४३३.०० इतका सरासरी खर्च झाला आहे. २००१-०२ ची २०१०-११ शी तुलना करता असे स्पष्ट होते की एकूण वेतनावरील खर्चाचे एकूण खर्चात ७१ टक्के इतके प्रमाण होते ते २०१०-११ मध्ये ८२ टक्के तर इतर खर्चाचे प्रमाण हे १९

टक्के वरून ११ टक्के झाले त्याचबरोबर भत्ते व मानधन यांचे प्रमाण देखील ८ टक्के वरून ३ टक्के इतके झाले आहे.

१५. संयुक्त वृद्धी दराच्या वाढीचा वेग हा सर्वात जास्त इतर स्वरूपांच्या मथळ्याखाली जास्त दिसून येतो. हा इतर स्वरूपाचा खर्च प्रतिवर्षी २००६-०७ पासून २०१०-११ पर्यंत खुप वेगाने वाढत असल्याचे दिसून येते त्याचा संयुक्त सरासरी वृद्धीदर हा प्रतिवर्षी ३३.३७ इतका असून त्याचा प्रचरण गुणांक सर्वात जास्त म्हणजे १६४.७२ इतका आहे. ह्या इतर स्वरूपाच्या खर्चाचा सरासरीचा विचार करतो तो प्रतिवर्षी जवळपास रु. ७२,०७,५४५.०० इतका झाला असल्याचे स्पष्ट होते. असे जरी असले तरी दुसऱ्या बाजूला एकूण बांधकामावरील खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर मात्र -७.१५ टक्के इतका आहे. तो प्रतिवर्षी सरासरी रु. १,२१,६३,७९९.०० इतका होत होता. इतर बाबीचा जसे- इमारत दुरुस्ती, खेळाचे मैदान, वित्त आयोग, दलित वस्ती सुधारणा, खासदार-आमदार निधी, उर्वरित वैधानिक इत्यादीचा विचार करता असे स्पष्ट होते की काही ठराविक वर्षे वगळल्यास ह्या बाबीवर होणारा खर्च हा एकूण खर्चाच्या तुलनेत नगण्य स्वरूपाचा आहे. उदा. २००१-०२ या वर्षामध्ये दलितवस्ती सुधारणावरील एकूण खर्चाच्या प्रमाणात जास्त खर्च केला गेला आहे.

१६. महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या एकूण खर्चात भांडवली खर्चाचे प्राबल्य नेहमीच जास्त असल्याचे दिसून येते उलटपक्षी महसुली खर्चाचे एकूण खर्चातील प्रमाण हे नेहमीच कमी असल्याचे स्पष्ट होते. सरासरीचा विचार केल्यास रु. ४,८७,६५,८८९/- इतका महसुली खर्च हा प्रतिवर्षी होत होता तर रु. ७,४८,६२,५८२/- इतका सरासरी खर्च हा भांडवली खर्चाच्या बाबत प्रतिवर्षी घडून येत होता. वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो महसुली खर्चाच्या बाबतीत सर्वाधिक नोंदवला गेला आहे तो ११.४८ टक्के इतका होता तर भांडवली खर्चाचा संयुक्त वृद्धीदर हा ८.६६ टक्के होता आणि एकूण खर्चाचा वृद्धीदर हा १०.१३ टक्के इतका होता हे स्पष्ट होते. सन २००१-०२ मध्ये रु. ४,०१,३०,०००/- असणारा भांडवली खर्च हा सन २०१०-११ मध्ये रु.

६,५५,०३,५९८/- झाला म्हणजेच तो जवळपास ५० टक्के इतका वाढला आहे.

१७. महाबळेश्वर नगरपालिकेचा संकीर्ण खर्च विचारात घेतल्यास असे दिसून येते की तो सन २००१-०२ मध्ये रु.८८,४१,०००/- होता तो सन २०१०-११ मध्ये रु.१,८३,८२,०००/-झाला त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ७.२८ टक्के इतका होता तर विचलन गुणांक हा ३२.९१ टक्के इतका होता.एकूण खर्चाचा विचार केल्यास तो सन २००१-०२ मध्ये रु.७,१८,०२,८००/- होता तो सातत्याने वाढत जाऊन सन २०१०-११ मध्ये रु.१५,८७,७७,४९८/- इतका झाला आहे. यावरून वाढीचा दर लक्षात येतो. एकूण खर्चाची सरासरी विचारात घेतल्यास ती प्रतिवर्षी रु.१,२३,६२,८७२/- इतका होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर मात्र १०.३१ टक्के इतका होता. शिक्षण, उरूस आणि अंशदाने यावरती मात्र नगरपालिकेच्या खर्च हा फारसा झालेला नाही. तो फक्त २०१०-११ मध्ये रु. १९,३१,०००/- लाख झाला आहे. एकूण खर्चात सामान्य प्रशासन व वसुली खर्चाचे प्रमाण अभ्यास कालावधीत प्रत्येक वर्षी जास्त असल्याचे दिसून येते.
१८. साथीचे रोग हया बाबीवरील खर्चाच्या आकडेवारीचा विचार करता असे म्हणता येईल की तो प्रतिवर्षी सरासरी रु.३४,२७,३७२/- इतका होत आहे. त्याच्या संयुक्त वृद्धीदराचा विचार केल्यास तो ३१.२८ टक्के इतका आहे. तर विचलन गुणांक ५० टक्के आहे. साथीच्या रोगावरील होणाऱ्या खर्चाचा विचार केल्यास आणखी फक्त रु.९२,५००/- खर्च झाले होते. हया खर्चात सातत्याने वाढ होऊन सन २०१०-११ मध्ये तो रु.३४२७३७२/- लाख इतका झाला आहे. यावरून असे म्हणता येईल की साथीच्या रोगांचे प्रमाण हे महाबळेश्वर नगरपालिकेच्या कार्यक्षेत्रातील नागरिकांमध्ये वाढत आहे. की जो सार्वजनिक आरोग्याच्या दृष्टीने चिंतेचा विषय आहे. एकूण सार्वजनिक आरोग्यावरील खर्चाच्या आकडेवारीचा विचार केल्यास असे स्पष्ट होते की, तो सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु.१,५८,४९,३७२/- इतका होत होता. त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा १९.८२ टक्के इतका होता तर विचलन गुणांक हा ५६ टक्के इतका आहे.

१९.सन २००१-०२ मध्ये वेतनावरील महाबळेश्वर नगरपालिकेचा वेतन खर्च हा रु.२९,९०,०००/- होता, तो २०१०-११ मध्ये रु.१,०७,३३,०००/- झाला आहे. यावरून वेतनावरील खर्चाच्या वाढीची कल्पना येते. सर्व साधारणपणे १३.५८ टक्के ही वाढ घडून आली असून सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु. ५४,७९,३८७/- खर्च झाले आहेत. भत्ते, मानधन विचारात घेतल्यास सरासरी प्रत्येक वर्षी रु. ३,२०,०००/- खर्च होते. तर त्या खर्चाचा वृद्धीदर हा ११.८१ टक्के होता. सन २००१-०२ मध्ये रु.२,१०,०००/- असणारा हा खर्च २०१०-११ मध्ये रु.४,५०,०००/- झाला होता. भत्ते व मानधनातील विचलन गुणांकाचा विचार केल्यास तो ५७.२५ टक्के इतका आहे.कर वसुलीचा विचार केल्यास असे लक्षात येईल की महाबळेश्वर नगरपालिका कर वसुली करण्यासाठी प्रतिवर्षी सरासरी रु. ५४,४८,९८१/- खर्च करित होती. तर त्याचा वृद्धीदर हा ९.६९ टक्के इतका होता. विचलन गुणांक हा ३६.७ टक्के इतका होता. इतर खर्चाचा विचार केल्यास तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. ५७,०६,७००/- होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा ऋण -०.५९ टक्के इतका असून विचलन गुणांक हा ६२.२२ टक्के इतका आहे.प्रचरण हे रु. ३५५०८२१.६६/- इतका आहे.

२०.२००१-०२ ते २००३-०४ या काळात ते ३० टक्के च्या आसपास राहिले असून त्यानंतरच्या काळात मात्र यामध्ये आधिक चढ-उतार दिसून येतात. बांधकामावरील एकूण खर्चात, दलित वस्ती सुधारणावरील झालेला खर्च विचारात घेतल्यास प्रत्येक वर्षी ५ टक्के पेक्षा कमीच राहिला आहे. सरासरीचा विचार करता रस्ते दुरुस्ती वरती झालेला खर्च हा प्रतिवर्षी रु. ६१,०९,९३१/- इतका होत होता तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा २२.६७ टक्के इतका असून विचलन गुणांक हा २९.३३ टक्के इतका असून प्रचरण रु.१७,९२,३८४/- कोटी इतका आहे. इमारत दुरुस्तीवरती सरासरी रु. २५४१६१७२/- इतका खर्च झाला आहे. तर त्याचा संयुक्त वृद्धीदर हा १०.८३ टक्के इतका असून विचलन गुणांक ५०.४९ टक्के इतका आहे.दलितवस्ती सुधारणाच्या बाबतीत सरासरीचा विचार केल्यास प्रतिवर्षी जवळपास रु.

१८६६६६६/- लाख इतका खर्च होत होता हे स्पष्ट होते. आणि त्याचा संयुक्त वृद्धीदार हा २०.९४ टक्के इतका असून विचलन गुणांक हा १२९ टक्के इतका आहे. इतर खर्चाच्या बाबतीत संयुक्त वृद्धीदार हा -२.७८ टक्के असून तो सरासरी प्रतिवर्षी रु. २१०६०७२७/- कोटी इतका होत आहे. . एकूण बांधकामावरील खर्चाचा वृद्धीदार विचारात घेतल्यास तो ८.६६ टक्के इतका आहे. तर त्याचा विचलन गुणांक हा ३९.३६ टक्के असून तो सरासरी प्रत्येक वर्षी जवळपास रु.२९४७०३१९/- कोटी इतका होत होता.

६.४ उत्पन्न आणि खर्चाच्या बाबतीत महत्त्वाच्या शिफारशी

प्रस्तुत संशोधनात सातारा जिल्हयातील नगरपालिकेचे आर्थिक विकासातील योगदानाचे विश्लेषण करण्यात आले, आणि स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या विकासासंबंधित विशिष्ट समस्या, ओळखून त्यांना सामोरे जाऊन त्यावर उपाययोजना करण्यासाठी खालील प्रमाणे सूचना करण्यात आल्या आहेत.

१ सातारा जिल्हयातील या नगरपालिकांच्या बाबतीत महसुली खर्च जास्त असल्याने तो कमीत-कमी करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे, कारण महसुली उत्पन्नापेक्षा महसुली खर्चाचा वृद्धीदार जास्त आहे. त्यामुळे महसुली खर्चाला आळा घालणे गरजेचे आहे.

२ सातारा जिल्हयातील या नगरपालिकांच्या सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च हा नियंत्रित ठेवणे फार गरजेचे आहे जेणे करून खर्चाचे योग्य नियोजन करता येईल. ऊरूस व इतर कार्यक्रमावरती होणारे अनुत्पादक खर्च हे नगरपालिकांनी कमी करण्याची गरज आहे.

४ सातारा जिल्हयातील या नगरपालिकांच्या मुलभूत सेवा व सुविधांच्यावर एकूण खर्चाच्या अंदाजपत्रकामध्ये जल:निसारण, रस्ते, आरोग्य, रूग्णालय, शिक्षण आणि पर्यावरण हया बाबीना अपेक्षित महत्त्व दिले गेलेले नाही त्यामुळे हया घटकांना खर्चामध्ये अग्रक्रम देण गरजेचे आहे. त्यामुळे नागरी सुविधा जास्त आधुनिक पध्दतीच्या देणे गरजेचे आहे.त्यावरच नागरी भागातील जनतेचा विकास अवलुंबन आसतो.

५ रस्ते, दलितवस्ती सुधारणा, बांधकामावरील खर्च देखील अवास्तव वृद्धीदराणे वाढत आहेत. ते नियंत्रित करणे गरजेचे आहे. अर्थात ज्या ठिकाणी गरज आहे

त्याठिकाणी असा खर्च करणे अपरिहार्य असणार आहे. आणि नागरी लोकांना सेवा पुरवणे हे नगरपालिकांचे आद्य कर्तव्य आहे.

६ सातारा जिल्हयातील या नगरपालिकांच्या पाणीपुरवठ्यावरती होणारा खर्च झपाट्याने वाढत आहे. तो कमी करून आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करून कमीत-कमी कसा करता येईल ह्या बाबीकडे लक्ष देणे गरजेचे आहे. सामान्य प्रशासन व वसुली खर्च हा फारच अवास्तवरित्या होते आहे. विशेषतः इतर खर्चाचे प्रमाण हे कमी करणे फारच गरजेचे आहे.

७. सर्वच नगरपालिका ह्या करेत्तर उत्पन्नावरती अंवलंबून कर उत्पन्नाकडे दुर्लक्ष करत आहेत त्यांनी कर उत्पन्न कसे वाढवता येईल ह्याचा विचार केला पाहीजे अर्थात पर्याप्त आणि योग्य कारणासाठी कर आकारणी करावी.

८. नगरपालिकांचा राज्यसरकार आणि केंद्र सरकार यांच्याकडून अनुदानाच्या रूपाने एकूण करेत्तर उत्पन्नात १० टक्के रक्कम प्राप्त होते आहे. प्राप्त अनुदानाचे योग्य नियोजन आणि व्यवस्थापन करणे गरजेचे आहे. सर्वच नगरपालिका ह्या करापासून उत्पन्न निर्मिती करण्यास कीवा नवीन उत्पन्नाचे स्रोत निर्माण करण्याचे फारशा यशस्वी झाल्या नाहीत त्यामुळे नवीन उत्पन्नाचे स्रोत निर्माण करणे अपेक्षित आहे.

९ भांडवली उत्पन्नाचा विचार करता नगरपालिकांची भांडवली गुंतवणुक ही कमी असल्याने एकूण उत्पन्नात मालमत्तेपासून मिळणारे उत्पन्न कमी आहे. त्यामुळे नगरपालिकांनी स्वताःचे भांडवल निर्मिती करण्यासाठी प्रतिवर्षी एकूण उत्पन्नाच्या ठराविक टक्के रक्कम ही गुंतवणूकीसाठी ठेवली पाहीजे जेणेकरून मालमत्तेपासून मिळणाऱ्या उत्पन्नात वाढ घडून येईल.

१० महसुली खर्चावर नियंत्रण ठेवून भांडवली खर्च वाढवणे म्हणजेच अनुत्पादक खर्च कमी करून उत्पादक खर्च करणे होय. त्यामुळे महसुली खर्च कमी करून त्यातील शिल्लक राहणारी रक्कम गुंतवणुकीसाठी वापरली जावू शकते.

११ अंदाजपत्रकातील एकूण खर्च आणि एकूण उत्पन्न यांच्या मधील वाढीचा विचार केल्यास असे दिसून येते की काही ठराविक वर्षे सोडल्यास इतर वर्षी उत्पन्न हे खर्चापेक्षा जास्त आहे. ही एक समाधानाची बाब आहे. म्हणजेच नगरपालिका ह्या उत्पन्नापेक्षा खर्च जास्त करत नाहीत हे स्पष्ट होते. परंतु काही मुलभुत घटकांवरती

कींवा शाश्वत विकासाच्या दृष्टीने एखादा प्रकल्प जसे की घनकचरा व्यवस्थापन प्रकल्प, दुषित पाणी पुनर्वापर प्रकल्प इ. सारख्या प्रकल्पांना खर्च करावा लागतो. असे प्रकल्प करेत्तर उत्पन्नाच्या माध्यमातून पूर्ण केले जावू शकतात.

१२. नागरी शासन संस्थांच्या वाढणा-या जबाबदा-या पूर्ण करताना नगरपालिकेला खर्च मोठ्या प्रमाणात करावा लागतो. त्या प्रमाणात नगरपालिकेच्या उत्पन्नाची साधने मात्र फारच कमी असतात. शहरातील वाढत्या लोकसंख्येमुळे व वाढत्या औद्योगिकीकरणामुळे नगरपालिकेचा खर्च हा उत्पन्नाच्या तुलनेत अधिक आहे. नगरपालिकेच्या उत्पन्नाचे स्रोत वाढविण्यासाठी जकात कर आकारणे आवश्यक आहे. राज्यशासनाने कायदेशीर जकात कर आकारणे चालू करून त्यात सुधारणा करावी. जेणेकरून नगरपालिकेची अर्थिक स्थिती चांगली राहिल.

१३. स्थानिक स्वराज्य संस्थेला प्राप्त होणा-या विविध उत्पन्नाच्या साधनांपैकी कर उत्पन्न हे एक साधन आहे. कराच्या उत्पन्नावर नगरपालिकेची स्वायत्तता अवलंबून असते. नगरपालिकेतील भ्रष्टाचार, करचुकवेगिरी, कर्मचा-यांची अकार्यक्षमता यामुळे नगरपालिकेला कराच्या स्वरूपात मिळणारे उत्पन्न नियमित स्वरूपात प्राप्त होत नाही. परिणमतः नगरपालिकेचे उत्पन्न वाढविण्यासाठी योग्य उपायोजना करावी. स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या कर पध्दतीत असणारी गुंतागुंत व अकार्यक्षमता कमी करून नगरपालिकेचे उत्पन्न वाढविण्याचे प्रयत्न करणे आवश्यक आहे.

१४. नगरपालिकेच्या कर पध्दतीत समन्याय, कार्यक्षमता व लवचिकता यांचा अभाव आहे. यावर उपाय म्हणून या संस्थानी कर आकारणी लाभतत्व व खर्चावरून न करता करदेय क्षमतेवरून करावी. करदेय क्षमता म्हणजे करदात्याच्या आर्थिक कुवतीनुसार कराची आकारणी करणे होय. ज्याची आर्थिक स्थिती चांगली आहे. त्याला आधिक कर व ज्याची कुवत कमी आहे. त्यावर कमी कर नगरपालिकेने आकारावेत म्हणजेच याचा भार गरीब लोकांना पडत नाही व डाल्टनच्या मतानुसार बदकांचे पंख एवढेच कापावे की जेणेकरून त्याला फक्त उडता येणार नाही हा नियम या नगरपालिकेला तंतोतंत लागू होईल.

१५. सर्वच नगरपालिकेसमोर अनेक वित्तीय अडचणी आहेत. उत्पन्न कमी व खर्च अधिक असल्यामुळे ही संस्था उत्तम नागरिकांच्या सुविधा मोठ्या प्रमाणात देण्यास

असमर्थ ठरत आहेत. वाढती लोकसंख्या, झोपडपट्ट्याचा प्रश्न, गलिच्छ वस्त्या, पाण्याची सुविधा, उद्याने सार्वजनिक संडासाचे बांधकाम इत्यादी कार्य करण्यासाठी नगरपालिकेला खूप खर्च करावा लागतो. याचा विचार करून कार्य करण्यासाठी नगरपालिकेला खूप खर्च करावा लागतो. याचा विचार करून शासनाने आर्थिक व विशेष अनुदानामध्ये वाढ करावी.

१६. शासनाने नगरपालिकेची सीमा वाढवावी कारण स्थानिक लोक शहराबाहेरील जागेत प्लॉट घेवून मोठ्या इमारती बांधतात. या मालमत्तेवर नगरपालिकांना कर आकारता येत नाही मात्र नगरपालिका पुरवित असलेल्या गरजा नगरपालिकेकडून भागविल्या जातात. त्यामुळे नगरपालिकेच्या कार्यक्षेत्रावर मर्यादा येतात. त्यामुळे शासनाने नगरपालिकेची सीमा वाढवावी.

१७. शहरात बराचसा भाग शासकीय व निमशासकीय आहे. नगरपालिकांकडे शासकीय व निमशासकीय जमिनी हस्तांतरण न केल्यास त्यावर अतिक्रमण करून झोपडट्टी निर्माण करतात. तसेच शहरविकासासाठी राखून ठेवलेला उद्देश पूर्ण होवू शकतो. यामुळे ही जमिनी नगरपालिकेकडे हस्तांतरीत करावी.

१८. म्युनिसिपल सर्व्हिस कमिशनद्वारे अधिकारी व कर्मचा-यांची निवड करण्यात यावी. वर्ग १ वर्ग २ व वर्ग ३ या श्रेणीमधील अधिकारी व कर्मचारी यांच्या राज्यातील इतर नगरपालिकांमध्ये बदल्या होणे, त्यांना बढतीच्या संधी मिळणे आवश्यक आहेत. यामुळे प्रशासनाची गतिमानता वाढेल.

१९. नगरपालिकेत कौन्सिलच्या बैठकांमध्ये जाणीवपूर्वक गोंधळ घालण्याचे प्रकार वारंवार घडत असतात. शासनाने यामध्ये टोकाची भूमिका घेउन कौन्सिलच्या कामकाजात अडथळा करण्या-या सदस्याचे सदस्यत्व काही दिवसांसाठी स्थगित ठेवण्याचा अधिकार नगराध्यक्षाला द्यावा.

२०. नगरपालिकांच्या वित्त व प्रशासनविषयक अधिकारांबरोबर थोडेबहुत न्यायविषयक अधिकार देखील देण्याची गरज आहे. शहरात अनेक ठिकाणी अतिक्रमणे होतात, अतिक्रमणाच्या बाबतीत दोन्ही बाजू ऐकून न्यायनिवाडा करण्याचे अधिकार नगरपालिकेला देणे गरजेचे आहे.

२१. नागरी स्थानिक स्वराज्य संस्थामध्ये नगरपालिकेच्या कार्यक्षेत्रातील काम

करण्या—या अधिकारी व कर्मचा—यांवर अन्याय होतो. अशा कर्मचा—यांना न्याय देण्यासाठी म्युनिसिपल ट्रॅब्युनल ची स्थापना करावी या संबंधीची तरतूद नगरपालिका अधिनियमात केली पाहीजे.

२२. नगरपालिकेचे कार्य अधिक गुंतागुंतीचे बनत चाललेले आहे. भ्रष्टाचार नियंत्रण, लोकांच्या अमूल्य वेळेचा योग्य वापर यासाठी एक खिडकी योजना , संगणकीकरण इत्यादी बाबींची सुरुवात करून नगरपालिका प्रशासकीय कामासाठी पारदर्शकता आणली पाहीजे.

२३. शहरात ठिकठिकाणी घाण व गलिच्छपणा आढळून येतो. शहर स्वच्छ ठेवण्याची जबाबदारी नगरपालिकेला असली तरीही हे कार्य नगरपालिकेच्या तृतीय कर्मचा—यांपासून शहर स्वच्छ करून घेतले जाते. मात्र योग्य नियंत्रणाचा अभाव व शासकीय नोकरी यामुळे शहर स्वच्छतेचे कार्य म्हणावे तसे होवू शकत नाही. महात्मा गांधींच्या देशात आणि संथ गाडगेबाबांच्या महाराष्ट्रात नागरिकांनी स्वच्छता मोहीम वार्डा – वार्डात राबवावे. यामध्ये शाळामधील मुला—मुलींचा सहभाग असावा. संथ गाडगेबाबा स्वच्छता हा अभियान हे नगरपालिका व नागरिकांच्या सहभागाने राबवणे आवश्यक आहे. यासाठी नगरपालिकेने योग्य समन्वय समितीची नियुक्ती करून यावर नियंत्रण ठेवले पाहीजे.

२४. दारिद्र्य निर्मूलन, प्राथमिक शिक्षणाचे सार्वत्रिकीकरण आणि कुटुंब कल्याण योजना यात नागरिकांचा सहभाग अपेक्षित आहे. सगळ्यासाठी आरोग्य या दोन मोहीमासाठी नगरपालिका विविध प्रकल्प हाती घेवून नागरिकांना त्यात सहभाग केले पाहीजे.

२५. शहरात दलित वस्त्या ह्या विकासाच्या दृष्टीने दृर्लक्षित राहिल्या आहेत. त्याच्या विकासाकडे नगरपालिकानी लक्ष देवून त्यांना कीमान नागरी सुविधा प्राप्त करून देणे गरजेचे आहे. या भागातील लोकांना नगरपालिकानी फिरत्या दवाखाने इतर सामाजिक, सांस्कृतिक,आर्थिक विकासाची घडामोडी करण्यासाठी आवश्यक प्रयत्न करावेत.

२६. शहरातील गरीब व दुर्बल घटक, दारिद्रेषेखालील कुटुंब आपल्या मुलांना दर्जेदार खाजगी शाळामध्ये घालू शकत नाहीत म्हणून नगरपालिकांनी प्राथमिक

शाळा सुरु कराव्यात व त्यांची गुणवत्ता वाढविण्याचे प्रयत्न करावेत. शिक्षण हे मानवी भांडवल आहे. हे दृष्टीआड न करता नगरपालिकांनी प्राथमिक शिक्षणाच्या सोयी सुविधा पुरवाव्यात अशा उद्दिष्टांचा समावेश नगरपालिकेच्या कायद्यात केला पाहीजे.

२७. नगरपालिकेने झाडे लावणे, पाणी अडविणे आणि जिरविणे यासारख्या योजनांचा समावेश नागरिकांच्या मूलभूत कर्तव्यामध्ये करून घ्यावा. पिण्याच्या पाण्याचा प्रश्न हा जिकीरीचा प्रश्न बनला आहे. जलपुनःर्भनणाची माहीत शहरी तथा ग्रामीण भागत अतिशय काटेकोरने दिली पाहीजे. लोकांना पाणी देतांना प्रत्येक कुटुंबास पाणी मोफत देवून एका विशिष्ट मर्यादेपेक्षा अधिक पाण्यासाठी मीटर बसवावे. जेणेकरून पाण्याचे महत्त्व कळेल व पाण्याचा अपव्यय टाळता येईल ही एक पाण्याची मोठी समस्या कमी हावू शकते.

२८. नगरपालिका कार्यालयात नियंत्रणाचा अभाव व कामचुकारपणा यातून मार्ग काढण्यासाठी नगरपालिकेने कठोर पाउले उचलून प्रशासकीय कामात एक प्रकारचे नियोजन तयार केले पाहीजे.

२९. नगरपालिका वार्षिक नियोजन करत असताना प्राप्त होणा-या उत्पन्नाच्या प्रमाणात समर्पक अशी खर्चाची विभाणी कशा पध्दतीने करता येईल या संबंधीचे नियोजन तज्ञ व्यक्तींच्या सल्ल्यानुसार केले पाहीजे.

संदर्भ सूची (BIBLIOGRAPHY)

1. Ashraf ali (1960) Study of Kolkata Municipal corporation, unpublished Ph. D. thesis submitted to Mumbai University, Mumbai. p. 122
2. Awasthi, D. S., (Ed.) (1990), 'Decentralized Planning in India', The Indian Economic Association, Kanpur.
3. Aronson & Hillen (1986), 'Financing State and Local Governments', The Brooking Institutions, Washington.
4. Alagh, Y. K., (2000), 'Sustainable Development: India 2020', Tokyo, UNU/IAS.
5. Bahl W. Roy and Campbell K. Alan (1976), The Implication of Local Government Reform : Equity Cost and Administrative Dimensions, edited by Campbell and K. Alan and Bahl Roy, State and Local Government The Political Economy of Reform, A Division of Macmillan Publishing Co. Inc., 866, Third Avenue, New York, N. Y. 10022.
6. Bagchi, A. (1991), 'State of Municipal Finances in India: A Note', NIPFP, Staff Papers, New Delhi.
7. Bahl and Linn (1994), 'Fiscal Decentralization and Inter Governmental Transfers in Less Developed Countries, Publish 24, (winter).

8. Baily, S. J., (1990), 'Local Government Economics : Principles and Practice, MacMillan Press Ltd., London.
9. Bhole Vijaya (1988), Housing and Urban Development in India, Classical Publication, New Delhi, p. 199.
- 10 .Bharadwaj R. K. (1974), Urban Development in India, National Publishing House, Delhi (India), p. 145.
- 10.Bose Ashish (1970), Urbanization in India : An Inventory of Source Material, Academic Book Limited, Bombay, p. 98
- 11.Butler W. Edgar (1976), Urban Sociology : A Systemic Approach, Harper and Row Publishers, New York, Hagerstown, San Francisco, London, p. 16
- 12.Babar.P.G.(2013) Finance of Sangola Municipal Council Sangola unpublished M. Phil. Dissertation submitted to Shivaji University, Kolhapur.
- 13.Barthwal, C. P., (2003), 'Good Governance in India', Deep & Deep Publications Pvt. Ltd., New Delhi.
- 14.Baum, Warren, Tolbert (1985), 'Investing in Development: Issues of World Bank Experiences, Oxford University Press
- 15.Bhatnagar, S. (1978), 'Rural Local Government in India', Light and Life, New Delhi.

16. Cheth Vaidya and Hitesh Vaidya (2002), Management Innovations for Municipal Resource Mobilization in India, Indian Infrastructure, Vol. 4, p. 58.
17. Campbell Alan and Birkhead Guthrie (1976), Municipal Reform Revisited : The 1970, Compared with the 1920, edited by Alan and Bahl Roy, State and Local Government, The Political Economy of Reform, published by A Division of Macmillan Co. Inc. 866, Third Avenue, New York, p. 1.
18. Chichester (1979), Nature in Cities : The Natural Environment in the Design and Development of Urban Green Space, published by John Wiley and Sone, Chichester, p. 96.
19. Census of India 2011 Rural Urban Distribution of Population (Provisional Population Total)
20. Dhonde.S.V(2000) A study Finances of Village panchayat unpublished M.PHIL Dissertaion submitted to Shivaji University, Kolhapur.
21. Data.worldbank.org/topic/urban.development
22. Dwivedi R. M. (2007), Urban Development and Housing in India, New Century Publications and Printed Sighai, Print Media, New Delhi, p. 17.

23. Gulati I. S. (1994), *Economic and Political Weekly*, Vol. 29, No. 40, pp. 2622-2624.
24. Goulfing, L., (1995), 'Local Government', London.
25. Gyanchand (1947), 'Local Finance in India', Kitabistan, Allahabad.
26. Harvey, R. S., (1986), 'Studies in State and Local Public Finance', Chicago University Press, Chicago.
27. Hukka, Manorama, (1989), 'Deficit Financing and Economic Development in India', Mittal Publications, New Delhi.
28. Jain R. B. (2001), *Sociological and Environmental Implications of Urban Growth : A Study of Metropolitan Delhi*, edited by Arora K. R. "People Centred Government" Alekh Publishers Jaipur, Duggar Building M. I. Road, Jaipur (India), p. 265.
29. Joshi Ravikant (1974), *Augmenting Capital Resources for Urban Development*, Baroda Municipal Corporation Publication, Baroda, p. 276.
30. Joshi.S.S (1979) *Finance of Maharashtra Government*, unpublished Ph. D. thesis submitted to pune University,pune
31. Kuklinsky A. R. (1971), *Local Government as Promoter of Economic and Social Development*, published by The International Union of Local Authorities, The Hague Netherlands.

32. Kind, David (Ed.) (1992), 'Local Government Economics in Theory and Practice', Routledge, London.
33. Konrad Foundation (1994), 'State Local Fiscal Relations in India', Konrad Adenauer Foundation, Manohar, New Delhi.
34. Konrad Foundation (1998), 'Local Government Finances in India', Konrad Foundation, Manohar, New Delhi.
35. Kamble, P. S. (2001), Finances of Kolhapur Municipal Corporation, unpublished Ph. D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur.
36. Kopardekar H. D. (1986), Social Aspects of Urban Development, PopulaFk Prakashan Private Limited, Bombay, p. 16.
37. Kornhauser David (1976), Japan : Geographical Background to Urban Industrial Development, Edition 2nd, Longman Publisher, London, p. 148.
38. Khanna Anoop and Chaturvedi Adesh (2010), Urbanization in India, Challenges and Responses, Shruti Publication, Jaipur, p. 52.
39. Lodade Anand (1990), Study of Deficit Financing in India, unpublished M. Phil. Dissertation submitted to Shivaji University, Kolhapur.
40. Lekhi R. K. (2002) Public Finance, Kalyani Publication, Ludhiana, 10 Edition .

41. Merriam E. Robert (1976), Multipurpose Districts Modernized Local Government and a More Systematic Approach to Servicing Assignments A Tripartite Strategy for Urban and Rural America, edited by Campbell K. Alan and Bahl W. Roy in his book State and Local Government The Political Economy of Reform, A Division of Macmillan Publishing Co. Inc., 866, Third Avenue, New York, N. Y. 10022.
42. Madhav apte (1765) A study of Maratha Governments Economy, unpublished Ph. D. thesis submitted to pune University, pune
43. Miss. Palsuledesai (1920) a study of kalyan municipal corporation unpublished Ph. D. thesis submitted to Mumbai University, Mumbai.
44. Michael Dear and John Scott Allen (1981), Urbanization and Urban Planning in Capitalist Society, Methuen, New York, p. 48.
45. Mills, Edwin S. Ent. Mitra, Arup (1997), Urban Development and Urban Ills, Commonwealth Publications, New Delhi, p. 114.
46. Muttagi P. K. (1976), Urban Development A Perspective, Tata Institute of Social Sciences, Bombay, p. 152.
47. Mondul R. B. (2000), Urban Geography, Concept Publishing Company, New Delhi (India), p. 389
48. Mankar, V. M. & Sarma, Suseela L. (1992), 'Public Finance, Theory and Practice', Himalaya Publishing House, Mumbai.

49. Musgrave, Richard A., Musgrave, Peggy B., (1989), 'Public Finance in Theory and Practice', McGraw Hill Book Company, New York.
50. Netzer and Drennan (1997), 'State and Local Public Finance', Blackwell Publishers Ltd, Oxford, UK.
51. Nakudkar, B.S. (2006) A study Finances of Sindhudurg Zilla parishad , unpublished Ph. D. thesis submitted to Shivaji University, Kolhapur.
52. Prasad R. C. (1980), International Political Science Review/Revue International de science politique, Vol. 1, No. 2, p. 265.
53. Patil A. R. (2006), Urbanization in Kolhapur District, unpublished Ph. D. Thesis, Shivaji University, Kolhapur, p. 11.
54. Potter and Diamond (1999), 'Guidelines for Public Expenditure Management', IMF Publication, Washington.
55. Rao, N. Ragaopal, (1992), 'Panchayati Raj: Study of Rural Local Government in India', Uppal, New Delhi
56. Roy, Darke & Ray, Walker, (1977), 'Local Government and the Public', Leonard Hill, London.
57. Sharma K. Rajendra (2004), Urban sociology, published by Atlantic and Distributors, New Delhi, p.54.

- 58.Sundaram K.P.M. and Sundaram C.N.(1990) Indian Public Finance and Financial Administration — S. Chand and Son Publishers, New Delhi
- 59.Sinha S. P. (1984), Processes and Pattern of Urban Development in India : A Case Study of Haryana, The Associated Publication, Ambala, p. 328.
- 60.Singh Shamsheer (1992), Urban Planning and Development : Issues and Imperatives, Ashish Publication, New Delhi, p. 153.
- 61.Shukla Vibhaooti (1988), Urban Development and Regional Policy in India : An Econometric Analysis, Himalaya Publishing House, Bombay, p. 158 .
- 62.Wallace F. Smith (1980), Urban Development the Process and Problems, University of California Press, Berkeley, Los Angeles, London, p. 88.
63. Webatomics.com/Jason/images/thesisthree.pdf.
64. बेला मिना (१९९५) मुंबई महानगरपालिका अर्थव्यवहाराचा अभ्यास अप्रकाशित एम.फिल.प्रबंध, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.
65. महामुनी विजयकुमार (१९८७) कोल्हापूर माहानगरपालिकाकर अभ्यास विशेष संदर्भ ऑक्ट्राय अप्रकाशित पीएच.डी.प्रबंध शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर.

66. डॉ. हावा आश्विन जी.(२०१२) नगरपालिका स्वरूप आणि समस्या, पहिली आवृत्ती अरुणा प्रकाशन १०३,ओमकार कॉम्प्लेक्स अ खर्डेकर स्टॉफ,औसा लातूर..
67. चद्रशेखर.टी.. (२०००) ठाणे महानगरपालिकाअर्थव्यवहाराचा अभ्यास, अप्रकाशित पीएच.डी.प्रबंध मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.
68. व्ही.जी.दांडेकर (१९७९) जिल्हा परिषद एक स्थानिक सरकार व विकास संस्था, अप्रकाशित पीएच.डी.प्रबंध पुणे विद्यापीठ, पुणे.
69. राजशिके.एन.वाय.(२०००)कोल्हापूर माहानगरपालिका परिवहन (KMT) च्या प्रशासनाचा अभ्यास अप्रकाशित एम.फिल.प्रबंध शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर.
70. शराविकर.वाय.जी(१९८६) नाशिक जिल्हापरिषदेचे अर्थव्यवहार, अप्रकाशित पीएच.डी. प्रबंध पुणे विद्यापीठ, पुणे.

Websites

- 1 Data.worldbank.org/topic/urban.development
- 2 Webatomics.com/Jason/images/thesisthree.pdf
- 3 <http://www.markosweb.com/www/3pdf.com/>
- 4 <http://www.urbanindia.nic.in/>

5 <http://urban.maharashtra.gov.in/>